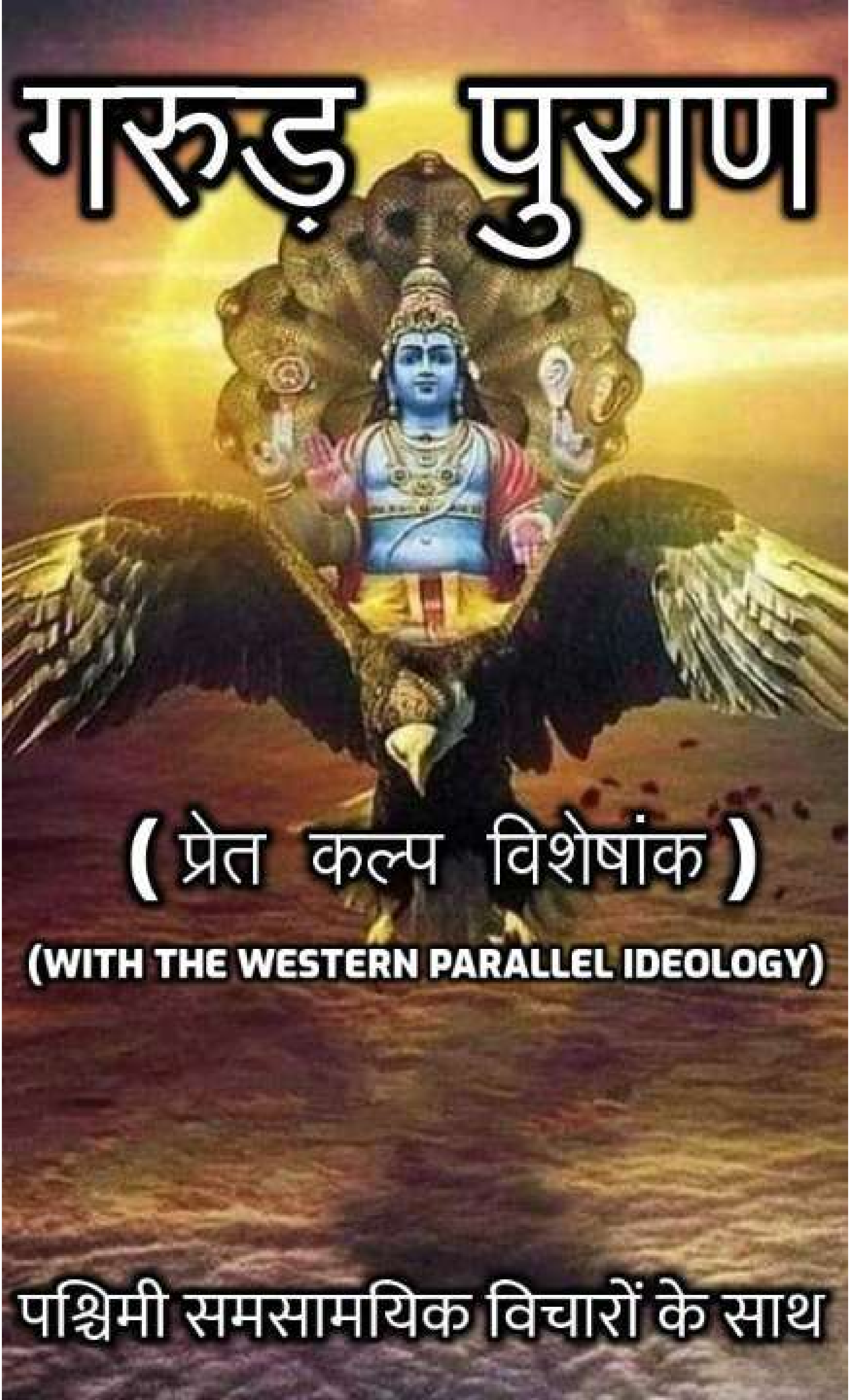
# गरुड़ पुराण



## ( प्रेत कल्प विशेषांक )

(WITH THE WESTERN PARALLEL IDEOLOGY)

पश्चिमी समसामयिक विचारों के साथ

# गरुड़ पुराण

## गरुड़ पुराण

( प्रेत कल्प विशेषांक )

## पाश्चात्य समानांतर विचारधारा के साथ

**(with the western parallel ideology)**

प्रस्तुतकर्ता: वी.सी.सिंह

# अनुक्रमणिका

## INDEX



-------------------

# प्रस्तावना

## मरने के बाद क्या होता है...?

गरुड़ पुराण - इससे स्पष्ट होता है कि - - *मृत्यु के बाद क्या होता है? मृत्यु क्या है? क्या मृत्यु के बाद जीवन है? क्या मृत्यु दुखद है? मृत्यु के बाद क्या होता है? पुनर्जन्म कैसे होता है? मरने के बाद हम कहाँ जाते हैं? इस तरह के सवाल हमारे दिमाग में हमेशा उस सबसे भयावह घटना से जुड़े रहते हैं जो हमारे जीवन को समाप्त कर सकती है, खासकर जब हमारे किसी करीबी या प्रियजन की मृत्यु हो जाती है। हमें लगता है कि रिश्ता अचानक टूट गया है और हम चाहते हैं कि रिश्ता दोबारा बन जाए. इस खोज में, उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर खोजने की हमारी यात्रा शुरू होती है... *तो, मृत्यु के बाद क्या होता है?*

अठारह पुराणों में तीन प्रकार के पुरुषों का वर्णन किया गया है जो तीन अलग-अलग गुणों या विशेषताओं में कार्य करते हैं। : सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण। गरुड़ पुराण छह पुराणों के समूह में से पहला है जो मुख्य रूप से अच्छे गुणों वाले लोगों के लिए है। भागवत पुराण सर्वोपरि है और विष्णु पुराण के बाद गरुड़ पुराण महात्म्य और महत्व में तीसरे स्थान पर है। यह पुराण कश्यप ने गरुड़ को दिया था और बाद में ऋषि वेद व्यास ने इसे मानव जाति तक पहुँचाया। कुछ लोग किसी व्यक्ति के निधन के तुरंत बाद दिवंगत आत्मा की शांति के लिए गरुड़ पुराण के कुछ अंशों का पाठ करते हैं।

मृत्यु वास्तव में एक बहुत ही दिलचस्प प्रक्रिया है!! *पृथ्वी के एकमात्र चक्रों का वियोग* मृत्यु से लगभग 4-5 घंटे पहले, पैरों के नीचे स्थित पृथ्वी के एकमात्र चक्र अलग हो जाते हैं...पृथ्वी तल से वियोग का प्रतीक!! इंसान के मरने से कुछ घंटे पहले उसके पैर ठंडे हो जाते हैं। जब प्रस्थान का वास्तविक समय आता है, तो ऐसा कहा जाता है कि मृत्यु के देवता यम आत्मा का मार्गदर्शन करने के लिए प्रकट होते हैं।

*सूक्ष्म डोर* मृत्यु सूक्ष्म डोर को तोड़ देती है, जो आत्मा का शरीर से संबंध है। एक बार जब यह डोर कट जाती है तो आत्मा शरीर से मुक्त हो जाती है और शरीर से बाहर निकल जाती है। यदि आत्मा उस भौतिक शरीर से जुड़ी हुई है जिसे उसने इस जीवनकाल में धारण किया है, तो वह इसे छोड़ने से इंकार कर देती है और शरीर में प्रवेश करने, उसे स्थानांतरित करने और उसमें निवास करने का प्रयास करती है। इसे हम मरने के बाद व्यक्ति के चेहरे, हाथ या पैरों की बहुत सूक्ष्म या हल्की हरकतों के रूप में देख सकते हैं।

आत्मा यह स्वीकार नहीं कर पाती कि वह मर चुकी है। अभी भी जिंदा होने का एहसास है. चूँकि सूक्ष्म नाल टूट गया है, आत्मा यहाँ नहीं रह सकती और शरीर से ऊपर की ओर धकेल दी जाती है। ऊपर से एक खिंचाव है... ऊपर जाने के लिए एक चुंबकीय खिंचाव। *भौतिक शरीर का अंत* इस अवस्था में आत्मा एक ही समय में कई आवाजें सुनती है। ये कमरे में मौजूद सभी लोगों के विचार हैं. आत्मा स्वयं ही अपने प्रियजनों से बात करती है जैसे वह हमेशा करती थी और चिल्लाती है "मैं मरी नहीं हूँ!"

लेकिन अफ़सोस, उसकी कोई नहीं सुनता. धीरे-धीरे आत्मा को एहसास होता है कि वह मर चुकी है और वापस लौटने का कोई रास्ता नहीं है। इस अवस्था में, आत्मा लगभग 12 फीट या छत की ऊंचाई पर तैरती है, चारों ओर होने वाली हर चीज को देखती और सुनती है, आमतौर पर आत्मा शरीर के चारों ओर तब तक तैरती रहती है जब तक उसका अंतिम संस्कार नहीं हो जाता, इसलिए, अगली बार जब आप किसी शव को अंतिम संस्कार के लिए ले जाते हुए देखें, तो सावधान हो जाएं। बताया कि आत्मा भी जुलूस का हिस्सा है, सबको देख रही है, सुन रही है।

*शरीर से अलग होना* एक बार जब दाह संस्कार पूरा हो जाता है, तो आत्मा को यकीन हो जाता है कि पृथ्वी पर उसके अस्तित्व का मुख्य सार खो गया है। जिस शरीर पर वे इतने वर्षों तक रहे वह पंचतत्व में विलीन हो गया। आत्मा पूर्ण स्वतंत्रता का अनुभव करती है, शरीर में रहते हुए उसकी जो सीमाएँ थीं वे समाप्त हो गई हैं और वह केवल विचार मात्र से कहीं भी अपने रुचि के स्थानों जैसे अपनी पसंदीदा जगह, सुबह की सैर पर यात्रा कर सकती है। उद्यान, कार्यालय, आदि।

यदि आत्मा का उसके धन पर स्वामित्व है, तो वह बस उसकी अलमारी के पास रहेगी, या यदि उसका उसके बच्चों पर स्वामित्व है, तो वह बस उसमें निवास करेगी। उसका कमरा, उससे चिपक गया। 7वें दिन के अंत तक, आत्मा अपने परिवार को अलविदा कहती है और दूसरी ओर जाने के लिए पृथ्वी तल की परिधि

की ओर बढ़ती है। *सुरंग* ऐसा कहा जाता है कि एक बड़ी सुरंग है जिसे सूक्ष्म तल तक पहुंचने से पहले पार करना पड़ता है। इसीलिए कहा जाता है कि मृत्यु के बाद के पहले 12 दिन बहुत महत्वपूर्ण होते हैं।

*हमें अनुष्ठान सही ढंग से करने होंगे, प्रार्थना करनी होगी और आत्मा से क्षमा मांगनी होगी* ताकि दुख, घृणा, क्रोध आदि जैसी नकारात्मक भावनाएं कम से कम प्रियजनों से न आएं। सभी अनुष्ठान, प्रार्थनाएं और सकारात्मक ऊर्जा आत्मा के लिए भोजन की तरह काम करती हैं जो उसे आगे की यात्रा में मदद करेंगी। सुरंग के अंत में एक विशाल चमकदार रोशनी सूक्ष्म दुनिया में प्रवेश का संकेत देती है।

*पूर्वजों से मिलना* 11वें और 12वें दिन हिंदू होम, प्रार्थना और अनुष्ठान करते हैं जिसके माध्यम से आत्मा अपने पूर्वजों, करीबी दोस्तों, रिश्तेदारों और मार्गदर्शकों के साथ एकजुट होती है। सभी दिवंगत पूर्वज आत्मा का ऊपरी स्तर पर स्वागत करते हैं और उन्हें वैसे ही गले लगाते हैं जैसे हम तब करते हैं जब हम अपने परिवार के सदस्यों को लंबे समय के बाद देखते हैं। फिर आत्मा को उसके मार्गदर्शकों के साथ पृथ्वी पर अभी-अभी समाप्त हुए जीवन की गहन समीक्षा के लिए *महान कार्मिक बोर्ड* की उपस्थिति में ले जाया जाता है।*

चूँकि आत्मा शरीर और अहंकार से बंधी नहीं है, इसलिए अंतिम निर्णय अगले जीवन का आधार बनता है। इसके आधार पर आत्मा द्वारा ही संपूर्ण जीवन संरचना का निर्माण किया जाता है, जिसे ब्लू प्रिंट कहा जाता है। इस समझौते में सामना की जाने वाली सभी घटनाएं, सामना की जाने वाली सभी समस्याएं, दूर की जाने वाली सभी चुनौतियां लिखी हुई हैं। वास्तव में आत्मा अनुभव की गई सभी घटनाओं के लिए उम्र, व्यक्ति और परिस्थितियों जैसे सभी सूक्ष्म विवरणों को चुनती है।

उदाहरण: एक व्यक्ति को अपने वर्तमान जीवन में गंभीर सिरदर्द था; किसी भी चीज़ से उसे मदद नहीं मिली, कोई दवा नहीं, कोई रास्ता नहीं। पिछले जीवन के प्रतिगमन के एक सत्र में, उसने खुद को पिछले जीवन में अपने पड़ोसी का सिर एक बड़े पत्थर से कुचलकर हत्या करते हुए देखा। जीवन समीक्षा में जब उसने यह देखा तो उसे बहुत ग्लानि हुई और उसने इसी पीड़ा को इस जीवन में कभी न खत्म होने वाले सिरदर्द के रूप में अनुभव करने को कहा। *ब्लू प्रिंट* इस तरह हम खुद का मूल्यांकन करते हैं और अपराधबोध से सजा चाहते हैं।

आत्मा में अपराध की डिग्री सज़ा की गंभीरता और दर्द के स्तर को निर्धारित करती है। इसलिए माफ़ी बहुत ज़रूरी है. हमें क्षमा करना चाहिए और क्षमा

मांगनी चाहिए!! अपने विचारों और भावनाओं को साफ़ करें, क्योंकि हम उन्हें दूसरी तरफ भी ले जाते हैं। एक बार जब यह समीक्षा हो जाती है और अगले जीवन के लिए हमारा ब्लू प्रिंट तैयार हो जाता है, तो एक विश्राम अवधि होती है। *पुनर्जन्म* हमने अनुबंध में जो मांगा है उसके आधार पर हमारा पुनर्जन्म होता है। शीतलन अवधि हमारी विकसित होने की तैयारी पर भी निर्भर करती है।

हम अपने माता-पिता को चुनते हैं और या तो अंडे के निर्माण के समय या चौथे-पांचवें महीने के दौरान या कभी-कभी जन्म से ठीक पहले आखिरी क्षण में भी मां के गर्भ में प्रवेश करते हैं। ब्रह्मांड इतना परिपूर्ण है, इतनी खूबसूरती से डिज़ाइन किया गया है कि जन्म का समय और स्थान हमारी कुंडली बनाते हैं, जो वास्तव में इस जीवन का एक ब्लू प्रिंट है। हममें से ज्यादातर लोग सोचते हैं कि हमारे सितारे खराब हैं और हम बदकिस्मत हैं, लेकिन असल में वे आपकी सहमति को ही दर्शाते हैं।

एक बार जब हम पुनर्जन्म लेते हैं, तो लगभग 40 दिनों तक बच्चा अपने पिछले जीवन को याद करता है, हंसता है और रोता है, बिना किसी के दबाव के। इसके बाद पिछले जीवन की स्मृति पूरी तरह से मिट जाती है और हम जीवन का अनुभव ऐसे करते हैं मानो अतीत में हमारा अस्तित्व ही नहीं था। *समझौता शुरू होता है...* यहीं पर हम पूरी तरह से पृथ्वी पर होते हैं और समझौता पूर्ण रूप से लागू होता है।

फिर हम अपनी कठिन परिस्थितियों के लिए भगवान/लोगों को दोषी मानते हैं और हमें इतना कठिन जीवन देने के लिए भगवान को कोसते हैं... इसलिए, अगली बार भगवान की ओर इशारा करने से पहले, यह समझ लें कि हमारी परिस्थितियाँ हमें पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं और आपको हमारे समझौते का सम्मान करने में मदद करती हैं, जो पूर्णतः हमारे द्वारा लिखा गया है। हम पहले से जो मांगते हैं, वही हमें मिलता है!! दोस्त, रिश्तेदार, दुश्मन, माता-पिता, जीवनसाथी सभी हमने ब्लू प्रिंट में चुने हैं और इसी समझौते के आधार पर हमारे जीवन में आते हैं।

वह केवल अपनी भूमिका निभा रहे हैं और हमारे द्वारा लिखित, निर्मित और निर्देशित इस फिल्म में एकमात्र अभिनेता हैं!! *क्या मृतकों को उपचार/प्रार्थना/सुरक्षा की आवश्यकता है?* मृतकों को हमेशा कई कारणों से गंभीर उपचार और प्रार्थनाओं की आवश्यकता होती है, सबसे महत्वपूर्ण है... स्वतंत्र होना और सांसारिक नहीं!! ...वह पृथ्वी की सतह में फंस गया है और भागने में असमर्थ है। आत्मा के सांसारिक होने के कई कारण हैं जैसे अधूरे कार्य, अत्यधिक दुःख, मृत्यु पर सदमा, अचानक मृत्यु, सूक्ष्म स्तर पर जाने का डर,

अपराधबोध, सबसे महत्वपूर्ण कारणों में से एक है अंतिम संस्कार और अनुष्ठानों का ठीक से पूरा न होना।

आत्मा को ऐसा महसूस होता है कि आगे बढ़ने से पहले उसे इंतजार करने और खत्म करने के लिए थोड़ा और समय चाहिए। इसके कारण वे पृथ्वी की सतह पर मंडराते रहते हैं। लेकिन समय सीमित है और यह बहुत महत्वपूर्ण है कि वे 12 दिनों के भीतर अपने अस्तित्व के सूक्ष्म स्तर को पार कर लें, क्योंकि कुछ दिनों के बाद सूक्ष्म जगत में प्रवेश बंद हो जाता है। सांसारिक आत्माएं बहुत ही दयनीय अस्तित्व में रहती हैं क्योंकि वे न तो अपने वास्तविक स्तर पर हैं और न ही सांसारिक जीवन जीने के लिए किसी शरीर में हैं।

हो सकता है कि वे नकारात्मक या हानिकारक न हों लेकिन वे अटके हुए और दुखी हैं। इसलिए इस अवधि के दौरान उपचार और प्रार्थनाओं का अत्यधिक महत्व है ताकि दिवंगत आत्मा शांतिपूर्वक निर्दिष्ट सूक्ष्म पड़ाव को पार कर सके। मृतकों को पार करने में मदद करने के लिए पूरे परिवार की प्रार्थनाएँ बहुत महत्वपूर्ण हैं। आत्मा को सूक्ष्म जगत में उसके गंतव्य तक पहुँचने में मदद करने के लिए प्रार्थना के माध्यम से सुरक्षा प्राप्त की जाती है।

कृपया मृत्यु को हल्के में न लें...अब पहले से कहीं अधिक अधिकांश आत्माएं विश्वास की कमी और पारिवारिक उपेक्षा के कारण पृथ्वी पर अटकी हुई हैं। अंततः, उस व्यक्ति के लिए जिसने किसी प्रियजन को खो दिया है, दुखी मत होइए**...** हम कभी नहीं मरते**,** हम जीते हैं**,** मृत्यु का कुछ भी अंत नहीं होता**,'**<u>मृत्यु का अर्थ है भौतिक शरीर का हमारी शाश्वत व्यक्तिगत आत्मा से अलग होना।</u>**'**हम दोबारा मिलने से पहले बस एक छोटा सा ब्रेक है**!!** यह लेख *गरुड़ पुराणम* से लिया गया है।

**'शुद्ध'** इसका शाब्दिक अर्थ है - "प्राचीन कहानी' या 'पुरानी कहानी"'पुरा' शब्द का अर्थ है - अतीत और वर्तमान। 'अना' शब्द का अर्थ है कहना या बताना। रघुवंश में पुराण शब्द का अर्थ है "पुराण पत्रपगा मगन्नतरम्" और वैदिक साहित्य में इसे "प्राचिनः वृत्तान्तः" दिया गया है।

गरुण पुराण को पढ़ने से आम लोग इसलिए डरते हैं क्योंकि गरुण पुराण किसी की मृत्यु के बाद ही पढ़ा जाता है ऐसी गलत एवं निराधार मान्यता आम लोगों के मन में अनावश्यक रूप से प्रचलित है। यह अत्यंत विकृत भावना है और शास्त्र विरुद्ध है। दरअसल, गरुण पुराण में किसी की मृत्यु के बाद होने वाली घटनाओं का वर्णन है। गरुड़ पुराण सनातन धर्म के 18 महापुराणों में से एक

माना जाता है। इसका उपयोग कहीं भी, किसी भी परिस्थिति में किया जा सकता है।
यह ज्ञानवर्द्धक, मानव-कल्याणकारी पवित्र ग्रन्थ है। क्योंकि ज्ञान प्रकाश स्वरूप दिव्य है।

इस परम पवित्र, महान मुक्तिदायक एवं ज्ञानवर्धक पुस्तक को कोई भी सामान्य बुद्धिजीवी व्यक्ति पढ़ सकता है - गरुड़ पुराण  डर लगता है, अज्ञानता के कारण.  , इससे बचने की कोशिश करता है कि कहीं उसके संपर्क में आने से भगवान को न लगे कि यह आदमी अब मौत के लिए तैयार है। है, इसे कहते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है. गरुड़ पुराण इसमें मृत्यु के बाद आत्मा की गति का वर्णन है।

पुराण इसका शाब्दिक अर्थ है पुराना यानि प्राचीन। अथर्ववेद के बाद कुल 4 वेदों का वर्णन किया गया है। पुराणों उल्लेखित है। वेदों की भाषा शैली कठिन है इसलिए पुराणों में वेदों की बातों को कहानियों के आधार पर सरल भाषा में समझाया गया है। पुराणों इसमें सृष्टि की रचना से लेकर उसके अंत तक का वर्णन है।

वेद प्राचीन भारतीय धार्मिक ग्रंथों का एक विशाल संग्रह हैंसंस्कृत में लिखे गए ये ग्रंथ हिंदू धर्म में भगवान के शब्द हैं। चार वेद हैं: ऋग्वेद (छंदों का ज्ञान), यजुर्वेद (वैदिक संस्कृत गद्य का संग्रह), सामवेद (गीतों की पुस्तक), और अथर्ववेद (ज्ञान का भंडार)।  पुराण संस्कृत में लिखा गया एक धार्मिक ग्रंथ है।

गरुड़ पुराण यह एक ऐसा ग्रंथ है जिसमें जन्म, मृत्यु, पुनर्जन्म, कर्म, आत्मा, पाप-पुण्य, नीति-नियम, धर्म और ज्ञान से संबंधित बातें बताई गई हैं।इसके अलावा यह मृत्यु के बाद आत्मा के मनुष्य योनि और प्रेत योनि में जाने के बारे में भी बताता है कि किन कर्मों के बाद आत्मा प्रेत योनि में जाती है।

इसमें भगवान विष्णु ने गरुण को यह भी बताया है कि मृत्यु के समय और मृत्यु के तुरंत बाद मनुष्य का भाग्य क्या होता है और वह किस योनि में जन्म लेता है।
गरुड़  पुराण के अनुसार जब किसी व्यक्ति की मृत्यु होने वाली होती है तो वह बोलने की कोशिश करता है लेकिन बोल नहीं पाता।

उसे अपने कर्मों के अनुसार कौन सी गति मिलेगी वह नीचे दिया गया है। पुराण में है, तो आम आदमी पढ़ना का डर हैलेकिन, किसी भी इंसान को मौत से कभी नहीं डरना चाहिए।  "योगवशिष्ठ" में महर्षि वशिष्ठ जी ने स्पष्ट कहा है कि-

कोई भी प्राणी मृत्यु के निश्चित समय के अनुसार ही मरता है; न एक क्षण पहले, न एक क्षण बाद।

गरुड़ पुराण यह किसी व्यक्ति के कार्यों के परिणामों का वर्णन करता है, इस बात पर जोर देता है कि जो लोग धर्मार्थ कार्य करते हैं उन्हें अगली दुनिया में मोक्ष मिलता है। इसके विपरीत बुरे कर्म करने वालों को नर्क में भेजा जाता है और तरह-तरह की यातनाएं दी जाती हैं।

गरुड़ पुराण इसके अनुसार जो लोग भूख, हत्या, फांसी, जहर खाने, आग से जलने, पानी में डूबने, सांप के काटने, दुर्घटना, गंभीर बीमारी और आत्महत्या आदि के कारण मरते हैं। मौत प्राप्त हुआ था वह अकालमृत्यु से पीड़ित है मौत की श्रेणी में रखा गया है. इन सबके बीच आत्महत्या को बहुत बड़ा पाप माना जाता है।

पौराणिक साहित्य विश्वकोश है और इसमें विविध विषयों जैसे ब्रह्मांड विज्ञान, देवी-देवताओं, राजाओं, नायकों, ऋषियों और देवताओं की वंशावली, लोक कथाएँ, तीर्थयात्रा, मंदिर, चिकित्सा, खगोल विज्ञान, व्याकरण, खनिज विज्ञान, हास्य आदि शामिल हैं। , प्रेम कहानियाँ, साथ ही धर्मशास्त्र और दर्शन।

यह गरुड़ पुराण-प्रेतकल्प का एक विशेष भाग है। उसे आपके सामने प्रस्तुत किया जा रहा है. यह गरुड़ पुराण के संक्षिप्त संस्करण का अनुवाद है। गरुड़ पुराण विष्णु पुराणों में से एक है। यह विष्णु और पक्षियों के राजा गरुड़ के बीच संवाद के रूप में है। इस पुराण का दूसरा भाग (यहां दिया गया है) मृत्यु से संबंधित मुद्दों, विशेष रूप से अंतिम संस्कार और पुनर्जन्म के तत्वमीमांसा से संबंधित है। गरुड़ पुराण के कुछ हिस्सों का उपयोग कुछ हिंदुओं द्वारा अंतिम संस्कार के लिए किया जाता है।

यह ग्रंथ अत्यंत पवित्र एवं पुण्यदायी है। यह सभी पापों को नष्ट कर देता है और श्रोताओं की सभी इच्छाओं को पूरा करता है। इसके पाठ से दिव्य ज्ञान की प्राप्ति होती है और पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसमें तनिक भी संदेह नहीं है. इस पुस्तक का ज्ञान इस लोक और परलोक में भी सुख, आनंद और शांति प्रदान करता है। जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति के लिए इससे बढ़कर कोई धर्मग्रंथ नहीं है।

जो मनुष्य इसे पढ़ते और दूसरों को सुनाते हैं वे पाप से मुक्त हो जाते हैं और कभी दुःख में नहीं पड़ते। अतः समस्त दुःखों का नाश करने वाले तथा धर्म, अर्थ,

काम और मोक्ष प्रदान करने वाले इस पवित्र ग्रन्थ को जो कोई पढ़ता और सुनता है,

उसे इस चतुर्विध पुरुषार्थ, सुख और मोक्ष की प्राप्ति होती है। दुख आते रहेंगे, लेकिन जीवन में कभी भी उन दुखों से दुखी नहीं होना चाहिए।

दरअसल यह गरुड़ पुराण है,
यह शास्त्रों की कहानियों और शिक्षाओं का सार है। हमें मोह त्याग कर त्याग की ओर बढ़ना चाहिए। सांसारिक बंधनों से मुक्त होने के लिए हमें केवल भगवान की शरण में जाना चाहिए। हम इस लक्ष्य को कैसे प्राप्त कर सकते हैं? यह कर्म योग, ज्ञान योग या भक्ति योग के माध्यम से किया जा सकता है, जो सबसे अच्छा मार्ग है, जो सरल और तुरंत लाभकारी मार्ग है, ऐसा कहा जाता है।

इस गरुड़ पुराण को सुनने और पढ़ने से मनुष्य स्वाभाविक रूप से सद्गुण प्राप्त करता है और अंतःकरण की पवित्रता, भगवान के प्रति प्रेम और वस्तुओं के प्रति घृणा विकसित करता है। साथ ही मनुष्य को लौकिक एवं पारलौकिक लाभ-हानि का भी यथार्थ ज्ञान हो जाता है। इस प्रकार यह अत्यंत लाभकारी, ज्ञानवर्धक, मधुर तथा वास्तविक विकास एवं कल्याण में पूर्णतया सहायक है। आशा है इसे पढ़कर सभी पाठक लाभान्वित होंगे।

जहाँ जीवन है, वहाँ मृत्यु निश्चित है। जो भी प्राणी जन्म लेता है उसे समय आने पर मरना ही पड़ता है। और जो मरता है उसे जन्म लेना ही पड़ता है। पूर्वजन्म का यह अटल सिद्धांत ही सनातन धर्म की विशेषता है।

इस भौतिक शरीर का जीवन मृत्यु के साथ समाप्त होता है। इस अटल सत्य को हर कोई स्वीकार कर रहा है। यह भी स्पष्ट प्रतीत होता है कि कोई भी दवा, दान, माता-पिता या रिश्तेदार हमें असामयिक मृत्यु से नहीं बचा सकते। लेकिन निराकार प्रबुद्ध आत्मा शाश्वत है; यह अरबों-खरबों वर्षों से, अनंत कल्पों से, अनंत युगों से अस्तित्व में है, अब भी अस्तित्व में है और भविष्य में भी अस्तित्व में रहेगा, इस पर किसी भी दार्शनिक की कोई दो राय नहीं है। इसमें संदेह की कोई गुंजाइश नहीं है।

आत्मा इतनी सूक्ष्म है कि जब वह शरीर से निकलती है तो उसे भौतिक आँखों से कोई नहीं देख सकता। सूक्ष्मदर्शी महात्मा इसे दिव्य चक्षुओं से देख और अनुभव कर सकते हैं। यह आत्मा अपने कर्मों का फल भोगने के लिए अंगूठे के आकार का सूक्ष्म शरीर धारण करती है। जो इस पंचभौतिक, भौतिक शरीर से भिन्न है।

जिसे अतीन्द्रिय शरीर या सूक्ष्म शरीर भी कहा जाता है। इस सूक्ष्म शरीर के माध्यम से आत्मा अपने पापों और पुण्यों का फल भोगती है।

जो धार्मिक लोग पुण्य कर्म करते हैं वे प्रसन्नतापूर्वक यमराज के पास जाते हैं और सुख भोगते हैं। जो लोग पाप करते हैं वे बुरे मार्ग पर अनेक कष्ट भोगकर यमपुरी जाते हैं। ध्यान देने योग्य बात यह है कि मृत्यु के बाद केवल मनुष्य प्रजाति को ही सूक्ष्म शरीर प्राप्त होता है, अन्य प्रजातियों के प्राणियों को नहीं। क्योंकि मरने के बाद वे तुरंत दूसरी प्रजाति में स्थानांतरित हो जाते हैं।

पशु, पक्षी आदि तिरछी योनि वाले जीव वायु योनि में विचरण करते हुए एक विशेष योनि में जन्म लेते हैं। मनुष्य को अपने अच्छे व बुरे कर्मों का फल इस लोक व परलोक में स्वयं ही भोगना पड़ता है।

मृत्यु के बाद अपने कर्मों के फलस्वरूप आत्मा सूक्ष्म शरीर धारण करती है और स्वर्ग या नरक में जाती है। इसके बाद उसका पुनर्जन्म होता है या उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। कई महापुरुषों को मृत्यु के तुरंत बाद मोक्ष की प्राप्ति होती है। यह सब मनुष्य की व्यक्तिगत इच्छाओं और अच्छे कर्मों पर आधारित है।

भारतीय धर्मग्रंथों और पुराणों में मृत्यु की प्रकृति, मरने वाले व्यक्ति की स्थिति और उसके कल्याण के लिए किए जाने वाले अंतिम संस्कार का विस्तृत वर्णन मिलता है। यह और बात है कि आम लोग इस पर ध्यान नहीं देते, क्योंकि मौत का नाम सुनते ही इंसान डर जाता है। जब मृत्यु के समान कोई हितैषी मित्र न हो।

जन्म और मृत्यु के बंधन से मुक्त होने के लिए सबसे पहले आत्मज्ञान आवश्यक है। आप नहीं जानते कि मुक्ति किसे चाहिए, आप किसे मुक्ति दिलाने का प्रयास करेंगे?

इन सभी विषयों का शास्त्रोक्त संकलन गरुड़ पुराण के इस विशेषांक में प्रस्तुत है। इसे प्रेत कल्प नाम दिया गया है. इसमें 16 अध्याय हैं। यह मूल गरुड़ पुराण पाठ से भिन्न है। इस पुस्तक में जीवन से लेकर मृत्यु तक, स्वर्ग-नर्क और उच्चतर लोकों तक सब कुछ विस्तार से वर्णित किया गया है। इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि उसके बाद जीवन में क्या होगा।

हमारे सनातन धर्म में यह कैसी विडम्बना है? और यह कहते हुए मुझे लज्जा और खेद का अनुभव होता है; कुछ लोग अंतिम संस्कार के अलावा इस पाठ को पढ़ना अशुभ मानते हैं। वस्तुतः 'गरुड़ पुराण' के इतने महत्व के पुनर्जन्म रहस्य

को पढ़ने और उसका ज्ञान प्राप्त करने के लिए किसी विशेष समय या अवसर की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए।

सच कहें तो आम आदमी मृत्यु जैसी सच्ची प्रक्रिया से डरता है, इसलिए ऐसे मृत्यु संबंधी ग्रंथों से दूर भागता है। यह भ्रांति घर कर गई है और जब कोई उसे मृत्यु का सत्य सत्य बताता है तो वह रस्सी में बंधे सांप के भय से मुक्त हो जाता है और दोगुनी रुचि से ऐसे शास्त्रों और पुराणों का अध्ययन करने लगता है। यथार्थ में !

जन्म और पुनर्जन्म के बीच की मध्यवर्ती अवस्थाएँ दिलचस्प हैं, जो मोटे तौर पर नर्क और स्वर्ग की पश्चिमी अवधारणाओं के अनुरूप हैं। चूँकि यह मध्यकालीन युग के दौरान लिखा गया था, पहले के हिंदू ग्रंथों में 'नरक' और 'स्वर्ग' के बारे में विस्तार से नहीं बताया गया है, कम से कम इस हद तक नहीं, और सबसे पुराने ग्रंथों में इस विषय पर बिल्कुल भी चर्चा नहीं की गई है। तब से खोजा नहीं गया. अनुपस्थित है। यहां, नर्क की यातनाओं का वर्णन ऐसे शब्दों में किया गया है जो बैपटिस्ट पुनरुद्धार तम्बू (या, उस मामले के लिए, दांते के) में जगह से बाहर नहीं होंगे।

इसके अलावा, मृत्यु के देवता यम का चार वर्गाकार शहर, प्रकाशितवाक्य में स्वर्गीय शहर की याद दिलाता है। हालाँकि, ये अवतारों के बीच रास्ते में पड़ने वाले पड़ाव हैं (या, जैसा कि मृतकों की तिब्बती पुस्तक में कहा गया है, बारदोस), कोई स्थायी गंतव्य नहीं। यह सूक्ष्म जगत का वातावरण और सूक्ष्म आत्माओं का साम्राज्य है।

गरुड़ पुराण की शुरुआत मृत्यु के बाद के जीवन के वर्णन से होती है। फिर अंत्येष्टि प्रक्रियाओं का वर्णन किया जाता है, जिसमें अनुष्ठान, मृत्यु के बाद के अनुष्ठानों का ज्योतिषीय समय और अनुष्ठान उपहार शामिल हैं। दस्तावेज़ के पहले भाग में नरक के विस्तृत दृश्य को संतुलित करते हुए यम शहर का संक्षिप्त विवरण है। स्थूल जगत और मानव शरीर के बीच पत्राचार की गणना निम्नानुसार की जाती है।

इस पाठ का अंतिम भाग मोक्ष की कुंजी के रूप में तपस्या और धर्मग्रंथों के अध्ययन से आगे बढ़कर आत्म-ज्ञान की ओर बढ़ने की अपील है। "मूर्ख, यह नहीं जानता कि सत्य उसके भीतर बैठता है, धर्मग्रंथों से भ्रमित होता है," - एक मूर्ख बकरी चराने वाला, अपनी बांह के नीचे एक बच्चे के साथ, कुएं में झांकता है।

इस पुस्तक को पढ़कर आम लोगों को मृत्यु के बाद अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए विशेष ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और तदनुसार अच्छे और शुभ कर्म करते रहना चाहिए। मनुष्य को अपने भविष्य और सूक्ष्म जीवन को स्वर्णिम बनाना चाहिए और मृत्यु के बाद परलोक में अपना जीवन सुख और बड़े आनंद के साथ जीना चाहिए।

कुछ लोगों का मानना है कि यह पुस्तक - गरुड़ पुराण - घर में नहीं रखनी चाहिए। इसे केवल किसी की मृत्यु पर ही पढ़ा जाना चाहिए। ये कैसी मूर्खता है? यह वैसा ही है जैसे कोई कहे कि जब तुम्हें प्यास लगे तो कुआँ खोदो। आख़िर कब तक इंसान सच्चाई से भागता रहेगा? मृत्यु अपरिहार्य है. बच्चे के जन्म के बाद यह संदेह हो सकता है कि वह शिक्षा प्राप्त करेगा या नहीं, यह संदेह हो सकता है कि वह कमाएगा या नहीं, यह संदेह हो सकता है कि वह शादी करेगा या नहीं। यह संभव है, लेकिन इसमें संदेह हो सकता है कि वह मरेगा या नहीं. इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता. प्रत्येक प्राणी की मृत्यु अवश्यंभावी है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

तो ऐसे में हर किसी को इस आध्यात्मिक ग्रंथ गरुड़ पुराण का ज्ञान होना चाहिए। ताकि वह जान सके कि इस धरती पर पाप करने का इस लोक और अगले जन्म में क्या परिणाम होता है।

और यह स्पष्ट कहा गया है कि जो इस गरुड़ पुराण को पढ़ता है, पाठ करता है, हृदय से इसका पाठ करता है, उसे सहज ही मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। उसे यम की यातना नहीं सहनी पड़ती। उसे यमराज का आशीर्वाद प्राप्त होता है। तब उसे नरक के दंडात्मक एवं कठोर यातना द्वार में प्रवेश नहीं करना पड़ता। उस महापुरुष को स्वर्ग से भी श्रेष्ठ गोलोक, कैलाश लोक, महर्लोक तथा वैकुण्ठ लोक आदि भव्य एवं सुन्दर लोकों में प्रवेश का अधिकार स्वतः ही प्राप्त हो जाता है।

ऐसा शास्त्रों में कहा गया है गरुड़ पुराण इसका पाठ करने से मुक्ति या मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसीलिए इसका पाठ करना महत्वपूर्ण माना जाता है। सवाल यह उठता है कि क्या गरुड़ पुराण का पाठ कोई भी जीवित मनुष्य कर सकता है, कोई भी जीवित प्राणी इसका पाठ कर सकता है। ऐसा इसलिए क्योंकि इस किताब में सिर्फ मौत के ही नहीं बल्कि जिंदगी को बेहतर बनाने के भी राज छिपे हैं। इसमें नरक, स्वर्ग, रहस्य, नीति, धर्म और ज्ञान का उल्लेख है। इस पुस्तक को पढ़ने से व्यक्ति को ज्ञान, यज्ञ, तपस्या और आत्मज्ञान तथा सदाचार की जानकारी मिलती है।..

जब किसी व्यक्ति की मृत्यु आत्महत्या, वाहन दुर्घटना, रेल दुर्घटना, हत्या जैसी घटनाओं में हो जाती है तो उसे असामयिक मृत्यु कहा जाता है। अकाल मृत्यु के बाद आत्मा का जीवन काल पूर्ण नहीं हुआ था, इसलिए यह तब तक भटकता रहता है जब तक इसका जीवन चक्र पूरा नहीं हो जाता है । अगर आदमी का अकाल मृत्यु हो जाती। ( If so, then he keeps wandering in the form of ghost, vampire, Kushmanda, Brahmarakshas, Betal or Kshetrapala. )

गरुड़ पुराण में कहा गया है कि जब मृत्यु निकट हो। जिसके कारण पास बैठा व्यक्ति भी दिखाई नहीं देता है। ऐसे समय में यम के दूत प्रकट होने लगते हैं, जो व्यक्ति के मन में डर पैदा कर देते हैं। जब तक सांस है तब तक जीवन है।

इस पुस्तक को पढ़ने से व्यक्ति को ज्ञान, यज्ञ, तपस्या और आत्मज्ञान तथा सदाचार की जानकारी मिलती है।मान्यता के अनुसार यदि किसी की मृत्यु के बाद इस ग्रंथ का पाठ किया जाए तो उसकी आत्मा को मोक्ष मिलता है और नकारात्मक शक्तियां खत्म हो जाती हैं। इसके अलावा घर का वातावरण शुद्ध होता है। इसके अलावा इस पवित्र ग्रंथ को सामान्य रीति से पढ़ने से मनुष्य को ऋषि-महात्माओं के समान दिव्य ज्ञान की प्राप्ति होती है, जो भविष्य में मुक्ति या मोक्ष का द्वार है।

अतः सभी बुद्धिजीवियों से अनुरोध है कि वे बिना किसी भय एवं झिझक के निडर होकर कार्य करें। समय की उपलब्धता के अनुसार किसी भी समय इस पवित्र ग्रंथ **-** "गरुड़ पुराण" का अध्ययन करें।, मूर्खों की बातों पर विश्वास न करें कि इस गरुड़ पुराण को केवल किसी की मृत्यु पर ही पढ़ना चाहिए, ये केवल मेरे विचार नहीं हैं बल्कि जानकार महात्माओं के भी पवित्र विचार हैं।

हे बुद्धिमान प्राणियों! क्या घर में आग लगने के बाद ही कुआँ खोदना शुरू करना चाहिए (मूर्ख की तरह) या एक समझदार व्यक्ति की तरह आग लगने से पहले ही कुआँ खोदने की तैयारी शुरू कर देनी चाहिए? आग लगने के बाद यदि कुवां खोदा जाय तो तब तक घर जलकर राख बन जाएगा। अंत में यही कहा जा सकता है कि यह आपके व्यक्तिगत निर्णय का विषय है , क्या किया जाय ?

- संपादक

स्थान: हैदराबाद - तेलंगाना - भारत
दिनांक: 21. 06.2024, (शुक्रवार).

# परिचय

मनुष्य इच्छाओं, अर्जित, अंतर्निहित प्रवृत्तियों का एक संग्रह है। वह तीन गुणों से प्रभावित है। श्रील प्रभुपाद उन्हें मोड कहते हैं। सात्विक, राजसिक और तामसिक गुणों को क्रमशः अच्छाई, जुनून और अज्ञान के गुणों के रूप में वर्णित किया गया है। अठारह भव्य ग्रंथों को तीन समूहों में विभाजित किया गया है: प्रत्येक समूह त्रिदेवों में से एक की शक्ति और महिमा का गुणगान करता है: ब्रहमा, विष्णु और महेश्वर। विष्णु पुराणों में सबसे महत्वपूर्ण भागवत पुराण, विष्णु पुराण और गरुड़ पुराण हैं।

गरुड़ पुराण इस मायने में अद्वितीय है कि इसे स्वयं विष्णु ने अपने भक्त गरुड़ को सुनाया था, जिन्होंने उनसे जन्म और मृत्यु के चक्र, पापपूर्ण व्यवहार के परिणामों, दंड की प्रकृति के बारे में पूरी भक्ति और विनम्रता के साथ बात की थी।

ऋषि वेद व्यास को अशांत संकट (संकट) में डाल दिया गया जब उन्होंने देखा कि लोग कमजोर और अल्पायु हो रहे थे, पतित जीवन जी रहे थे। मानव जाति के प्रति अपनी असीम अच्छाई और करुणा में उन्होंने वैदिक ज्ञान के बड़े हिस्से को चार वेदों में विभाजित करने के अलावा अठारह पुराण (भव्य ग्रंथ) लिखे।

पुराणों को पांचवां वेद कहा जाता है। इनका उद्देश्य मनुष्य के नैतिक, धार्मिक एवं बौद्धिक स्तर को ऊपर उठाना है। कई पुराण गरुड़पुराण के महत्व का गुणगान करते हैं। नारद पुराण, अग्नि पुराण और मत्स्य पुराण इस महान ग्रंथ की प्रशंसा करते हैं। इसकी एक विश्वकोशीय सीमा है क्योंकि यह सृष्टि, विकास, मानव विकास के दौरान घटनाओं के क्रम, विभिन्न युगों के विशिष्ट गुणों, पूजा के तरीकों, विष्णु के अवतारों, विभिन्न विज्ञानों और सार के बारे में विस्तार से बताती है। भगवत गीता का दिव्य गीत।

आम तौर पर अज्ञानियों के बीच एक गलत धारणा और भ्रांति प्रचलित है कि गरुड़ पुराण को अपने घरों में रखना शुभ नहीं है क्योंकि यह दाह संस्कार आदि से संबंधित अनुष्ठानों से संबंधित है और इसमें पापियों को मृत्यु के बाद और नरक में मिलने वाली सजाओं का वर्णन है।

लेकिन बार-बार ऋषि-मुनि यही कहते आए हैं कि इस पुराण को पढ़ने और समझने से महान पुण्य की प्राप्ति होती है। यह अन्य पुराणों के समान ही कल्याणकारी है। ब्रह्मश्री मल्लादि चन्द्रशेखर शास्त्री ने लिखा है कि अठारह पुराणों में से एक होने के कारण यह अन्य पुराणों के समान ही पूजनीय है।

दरअसल, यह बहुमूल्य बातें सिखाता है। इसमें कुछ अध्याय ऐसे हैं जो केवल कुछ निश्चित अवसरों पर ही पढ़े जाते हैं, लेकिन हमारे लिए मरणोपरांत जीवन के बारे में सब कुछ जानना वांछनीय है। इस ग्रंथ को ध्यान से पढ़ने और समझने से हमें खुद को अनुशासित करने और अच्छाई और सच्चाई के मार्ग पर चलने में मदद मिलती है। यह हमें अपने पूर्वजों का सम्मान करने और यहां और अभी जीवन को अस्तित्व के उच्च स्तर के लिए एक कदम के रूप में उपयोग करने के लिए प्रबुद्ध और प्रेरित करता है।

-------------------

यह गरुड़ पुराण सारोधर (गरुड़ पुराण का सार) श्री हरि नारायण के पुत्र नवनिधिराम द्वारा संकलित या लिखा गया था, जो झुंझुनू शहर में रहते थे, जिस पर राजा श्री सुखलालजी का शासन था। यह उन लोगों की मदद करने के लिए किया गया था जो पहले के कठिन कार्यों को नहीं समझ सकते थे; लेकिन स्वयं को समझना आसान नहीं है, और इसके लिए बहुत मेहनत की आवश्यकता होती है, लेखक हमें बताता है।

वह कहते हैं, यह पूरी तरह से मूल रूप में लिखा गया है, और इसमें पवित्र पुस्तकों के बहुत गहन अध्ययन के परिणाम और उन विषयों का सार शामिल है जिनसे यह संबंधित है। इसका उपयोग पूरे भारत में अंतिम संस्कार समारोहों में किया जाता है। लेकिन कुछ लोग इसे अशुभ मानकर अन्य अवसरों पर पढ़ने से डरते हैं। ये उनकी बहुत बड़ी गलती है.  इसके समान पवित्र, ज्ञानवर्धक एवं व्यावहारिक कोई अन्य पुस्तक नहीं है।

दिव्य द्रष्टाओं और आध्यात्मिक योगियों ने दुनिया के लिए जो महान सेवाएँ की हैं, उनमें से एक इस विचार को पुनर्जीवित करना है कि नरक एक जीवित

वास्तविकता है, न कि मानवता को उसके अच्छे व्यवहार पर बनाए रखने के लिए कुछ षडयंत्रकारी पुजारियों द्वारा बनाया गया अंधविश्वास।

पढ़े-लिखे लोगों में परलोक के प्रति आस्था ख़त्म होने के साथ-साथ नर्क के प्रति आस्था भी ख़त्म हो गयी है। लेकिन साइकिकल रिसर्च सोसाइटी और अन्य समान संगठनों के प्रयासों के कारण, अब बहुत कम शिक्षित व्यक्ति बचे हैं जो मृत्यु के बाद जीवन के अस्तित्व से इनकार करते हैं, जैसा कि उन्होंने लगभग तीस साल पहले किया था।

लेकिन यद्यपि मृत्यु के बाद जीवन में विश्वास पुनर्जीवित हो गया है, स्वर्ग और नरक में समान विश्वास अभी भी बहुत अस्पष्ट है। हालाँकि, हमारे हिंदू पुराण, जो बहुत सारी रूढ़िवादी विचारों  से भी भरे हुए हैं, स्वर्ग और नर्क के इस प्रश्न पर हमेशा स्पष्ट रहे हैं। यहां तक कि याज्ञवल्क्य और विष्णु जैसे कानून की पुस्तकों के गंभीर लेखकों ने भी विभिन्न नरकों के अस्तित्व का उतना ही गंभीरता से वर्णन किया है जितना कि उन्होंने स्वर्ग के विभिन्न सुखों का वर्णन किया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि नरक का विषय बहुत दिलचस्प नहीं है और घबराए हुए लोग अस्तित्व के इस अप्रिय विभाग का अध्ययन करने से हमेशा कतराते हैं।

लेकिन, चाहे सुखद हो या अप्रिय, विज्ञान मानवीय भावनाओं को ध्यान में नहीं रखता। किसी को भी इस विषय का अध्ययन करने के लिए मजबूर नहीं किया जाता है जब तक कि वह ऐसा करने के लिए पर्याप्त मजबूत महसूस नहीं करता है, जैसे किसी को भी चिकित्सा का अध्ययन करने के लिए मजबूर नहीं किया जाता है जब तक कि वह ऐसा करने का मन न करे।

तो सवाल यह है कि क्या ये नर्क सचमुच मौजूद हैं? यदि हां तो कहां? यह तथ्य का प्रश्न है, और तथ्य के सभी प्रश्नों की तरह, इसका निर्णय विश्वसनीय गवाहों के साक्ष्य पर किया जाना चाहिए जिन्होंने व्यक्तिगत अनुभव से क्षेत्र का वर्णन किया है। एक हिंदू को योगी याज्ञवल्क्य से बड़ी गवाही की आवश्यकता नहीं है, जिन्होंने अपने धर्मग्रंथ के तपस्या अध्याय में 21 नरकों का उल्लेख किया है।

विष्णु स्मृति के लेखक भी उन्हीं के पदचिन्हों पर चले हैं। हिंदू संतों के अनुसार, नरक एक विशेष स्थान है, जिसे नरक के शासक यम के दूतों द्वारा अंतरिक्ष के आसपास के क्षेत्रों से अलग किया गया है। यह विशेष स्थान इतना विशेष रूप से संरक्षित है कि कोई भी आनंद इसमें प्रवेश नहीं कर सकता। यह दर्द का क्षेत्र है - तीव्र। तीखा और गंभीर पापी अपने दर्दनाक शरीरों में लिपटे रहते हैं (जतना देहा)

- भौतिक शरीर, हालांकि सूक्ष्म पदार्थ से बने होते हैं, फिर भी उनके पापों के अनुसार दंड भुगतते हैं।

लेकिन नरक की हिंदू धारणा और सेमेटिक संप्रदायों के उपासकों की धारणा के बीच एक स्पष्ट अंतर है। नरक में सज़ा शाश्वत नहीं है। यह सुधारात्मक एवं शिक्षाप्रद है। जब आत्मा का पुनर्जन्म होता है तो उसे नरक की सज़ा याद नहीं रहती, ठीक उसी तरह जैसे उसे स्वर्ग के सुख याद नहीं रहते। परन्तु आत्मा के उस भाग में, जिसे अन्तःकरण कहते हैं, स्थायी शिक्षाप्रद प्रभाव बना रहता है।

पाप के प्रलोभन को देखकर कुछ आत्माओं को जो स्वाभाविक भय महसूस होता है, वह नरक की भट्टी में विवेक के सूक्ष्म विकास का परिणाम है। यह वह स्थायी लाभ है जो आत्मा ने अर्जित किया है, और जिसे वह आने वाले युगों में नरक के दयालु शासक यम की घाटी की कड़वाहट से गुज़रकर कभी नहीं खोएगी।

तो फिर यह नरक कहाँ स्थित है? हिंदू मान्यता के अनुसार, इसका स्थान भौतिक दक्षिणी ध्रुव के सूक्ष्म क्षेत्र में है, जैसे स्वर्ग भौतिक उत्तरी ध्रुव के सूक्ष्म क्षेत्र में स्थित है। जैसे जेल केवल अपराधी के लिए जेल है, लेकिन उस आगंतुक के लिए नहीं जो दया और दान के अपने मिशन पर वहां जाता है, उसी तरह नरक केवल पापियों के लिए सजा और पीड़ा का स्थान है, उनके बराबर के लिए नहीं। वहां एक मिशन पर जाएं।

हिंदू पवित्र साहित्य के पाठकों को निस्संदेह नचिकेता की नरक यात्रा और उसके शासक से ब्रह्मांडीय विकास के रहस्य की सीख का सुंदर प्रसंग याद होगा, जिसे से मृत्यु का रहस्य कहा जाता है।

विष्णु स्मृति में बाईस नरकों का वर्णन किया गया है। (पूर्व का पवित्र ग्रंथ, विष्णु स्मृति, पृष्ठ 140-141, श्लोक 22, लोहचारक देखें)। इस प्रकार नरक की आग से शुद्ध होने के बाद, आत्मा को एक तेज विवेक के साथ और ऐसी परिस्थितियों में पुनर्जन्म मिलता है जहां वह चाहे तो अपनी क्षमताओं का बेहतर उपयोग कर सकती है। तीसरे अध्याय के श्लोक 218 में याज्ञवल्क्य कहते हैं कि दयालु भगवान ऐसी आत्माओं को बाद में बहुत अनुकूल परिस्थितियों में रखते हैं।

परंतु यदि आत्मा इतनी अनुकूल स्थिति में होते हुए भी अच्छे कर्म नहीं कर पाती या बुरे कर्म करने लगती है और अपनी इंद्रियों को अनियंत्रित छोड़ देती है

तो आत्मा का पुनः पतन हो जाता है, जैसा कि अगले श्लोक में बताया गया है। गया है।

क्या कोई भौतिक नरक है, या यह केवल सूक्ष्म स्तर पर है? जैसे स्वर्ग भौतिक और सूक्ष्म दोनों है, और जैसे स्वर्ग भौतिक स्तर पर भी है, जहां व्यास, अश्वत्थामा, मार्कंडेय और अन्य जैसे महान ऋषि अभी भी अपने भौतिक शरीर में निवास करते हैं, वैसे ही भौतिक नरक भी हैं, हालांकि उन्हें नरक के रूप में जाना जाता है। प्रत्येक सुशासित समुदाय में ये जेलें भौतिक नरक के अलावा और क्या हैं? समाज द्वारा बहिष्कृत होना, या यूँ कहें कि नरक की यातना का अनुभव करना, वास्तव में गौतम ने अपनी कानून की किताब में निश्चित रूप से इस राज्य को नरक कहा है, और कुछ लोग कहते हैं कि गौतम किसी अन्य प्रकार के नरक में विश्वास नहीं करते थे।

इस प्रकार नरक के ठोस अस्तित्व के तथ्य पर संदेह नहीं किया जा सकता। हिंदू संतों की गवाही को छोड़कर, आधुनिक समय में हमारे पास स्वीडनबॉर्ग जैसे कठोर विज्ञान के लोगों, दांते जैसे परिष्कृत कलाकारों और कवियों और महान संत रामकृष्ण परमहंस की गवाही है।

क्या कोई रास्ता है जिससे मनुष्य नरक की पीड़ा से बच सकता है? इस विषय पर हमारे प्राचीन लेखकों की अलग-अलग राय थी। विचारकों के एक वर्ग का मानना था कि किसी व्यक्ति के पापों का प्रायश्चित किसी भी कार्य से नहीं किया जा सकता, चाहे वह कितना भी पुण्यात्मा क्यों न हो, लेकिन उसे अपने पापों का पूरा फल अवश्य भुगतना पड़ता है। दूसरा दृष्टिकोण, जो अब प्रचलित हो गया है, वह यह है कि जानबूझकर किए गए नश्वर पापों - कामकृतमहापातक - के लिए मृत्युदंड के अलावा कोई अन्य प्रायश्चित नहीं है जो मनुष्य को भविष्य के कष्टों से बचा सके।

हमारे धर्मग्रंथों में कई प्रकार के मृत्युदंडों का वर्णन है और इस युग में पंडितों ने एक बहुत ही लाभकारी नियम बनाया है कि यदि कोई पापी व्यक्ति पंडित से अपने पाप का उचित प्रायश्चित करने के लिए कहता है, तो उसके लिए कभी भी मृत्युदंड निर्धारित नहीं किया जाता है। इस प्रकार, अनाचार के कुछ मामलों में, एकमात्र व्यावहारिक प्रायश्चित लाल-गर्म लोहे की मूर्ति को गले लगाना और उसी तरह मरना है।

इसी प्रकार नशीली शराब पीने का प्रायश्चित खौलती हुई शराब या मक्खन पीकर मरना है। लेकिन वर्तमान लौह युग के नियमों के अनुसार, किसी भी पुजारी को किसी भी पापी को इन नश्वर प्रायश्चितों को निर्धारित करने की अनुमति नहीं है। इसलिए, इसका परिणाम यह है कि कानून के अनुसार, प्रत्येक नश्वर पापी को नरक की शुद्धिकरण प्रक्रिया की अवधि से गुजरना होगा। छोटे पापों के लिए नियम अलग हैं। उचित तपस्या करके मनुष्य परलोक के परिणामों से बच सकता है।

और यहीं एक समृद्ध क्षेत्र है जिसका भारत के ब्राह्मण पुजारी वर्ग ने अपने भक्तों की मासूमियत का फायदा उठाकर चरम सीमा तक शोषण किया है। इसमें हर पाप का प्रायश्चित किया जाता है और तीर्थयात्रा भी की जाती है, जिसके फलस्वरूप ब्राह्मण को दक्षिणा देनी पड़ती है।

आधुनिक भारत में तपस्या एक तमाशा बनकर रह गई है। रोम के पोप की तरह ब्राह्मणों को एक पैसे से लेकर हजारों रुपये तक की रकम देकर प्रायश्चित को और भी जटिल बनाया जा सकता है। ऐसा नहीं है कि किसी योग्य व्यक्ति को दान देने से पाप धुल जाते हैं, क्योंकि आधुनिक हिंदू धर्म ने उस तर्कसंगत विचार को पृष्ठभूमि में धकेलने की पूरी कोशिश की है, लेकिन ब्राह्मण को दान देना चाहे कितना भी बुरा क्यों न हो, जैसा कि कहा जाता है। जो दूध के लिये दीन गधे को दूध पिलाता है, परन्तु जो गाय को लात मारता है। एक पूर्वधारणा है कि लात मारने वाले ब्राह्मण के पास देने के लिए दूध है, जो सच्चाई से बहुत दूर है।

प्रायश्चित या प्रायश्चित का अभ्यास अधिक तर्कसंगत आधार पर आधारित है। पाप के लिए पश्चाताप सर्वोच्च प्रायश्चित है, शारीरिक पीड़ा पहुंचाना गौण महत्व का है। जो व्यक्ति ऐसी तपस्या करता है, उसके पापों के बुरे प्रभाव समाप्त हो जाते हैं और उसके लिए कोई प्रायश्चित नहीं होता।

*** इसके बाद, वे सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं और एक उच्च परिवार में जन्म लेते हैं, जहाँ वे सुख भोगते हैं, कला और विज्ञान में निपुण होते हैं और धनवान बन जाते हैं।

. . . . . . . . . . . . . . . . . . . .

# पश्चिमी देशों के गरुड़ पुराण के समकक्ष दर्शन

## (पश्चिमी गरुड़ पुराण)



# Emanuel Swedenborg

**Born: 29 January 1688,   Stockholm, Sweden.**

**Died: 29 March 1772 (age 84 years),  London, United Kingdom.**




## Swedenborg's Tomb.

**Born: 29 January 1688, Stockholm, Sweden.**

**Died: 29 March 1772 (age 84 years), London, United Kingdom.**

**----------**

उपरोक्त समानांतर विषयों को अनुभवी पश्चिमी संत और दूरदर्शी इमैनुएल स्वीडनबॉर्ग जी के महान कार्य "स्वर्ग और उसके चमत्कार और नर्क" से संकलित किया गया था।

आईये देखते हैं; हमारा - गरुड पुराणऔर उनके , **"पश्चिमी स्वर्ग और उसके चमत्कार और नर्क"** के विचारों में कितनी निकटता और एकता पाई गई है !

# खंड - I

# पाश्चात्य गरुड़ पुराण

## प्रारम्भ



## Part - I

## The Western Garuda Purana begins

# इमैनुएल स्वीडनबॉर्ग का जीवन चरित्र

इमैनुएल स्वीडनबॉर्ग (1688-1772) का जन्म 29 जनवरी, 1688 (जूलियन कैलेंडर) को स्टॉकहोम, स्वीडन में इमैनुएल स्वेडबर्ग (या स्वेडबर्ग) के रूप में हुआ था। वे जेस्पर स्वेडबर्ग (1653-1735) और सारा बेहम (1666-1696) के नौ बच्चों में से तीसरे थे। आठ साल की उम्र में उन्होंने अपनी माँ को खो दिया। दस दिन बाद अपने इकलौते बड़े भाई की मृत्यु के बाद, वे सबसे बड़े जीवित पुत्र बन गए। 1697 में उनके पिता ने सारा बर्गिया (1666-1720) से विवाह किया, जिन्होंने इमैनुएल के लिए बहुत स्नेह विकसित किया और उन्हें एक महत्वपूर्ण विरासत छोड़ी।

उनके पिता, एक लूथरन पादरी, बाद में एक प्रसिद्ध और विवादास्पद बिशप बन गए, जिनके सूबा में पेन सिल्वेनिया और लंदन, इंग्लैंड में स्वीडिश चर्च शामिल थे। उप्साला विश्वविद्यालय (1699-1709) में अध्ययन करने के बाद, इमानुएल ने पश्चिमी यूरोप के प्रमुख वैज्ञानिकों के साथ अध्ययन और काम करने के लिए इंग्लैंड, हॉलैंड, फ्रांस और जर्मनी (1710-1715) की यात्रा की।

अपनी वापसी पर उन्होंने एक इंजीनियर के रूप में प्रतिभाशाली स्वीडिश आविष्कारक क्रिस्टोफर पोलहेम (1661-1751) के अधीन प्रशिक्षुता प्राप्त की। उन्होंने स्वीडन के राजा चार्ल्स XII (1682-1718) का पक्ष लिया, जिन्होंने उन्हें स्वीडन के खनन उद्योग के पर्यवेक्षक के रूप में एक वेतनभोगी पद दिया गया (1716-1747)।

हालाँकि उनकी सगाई हो चुकी थी, लेकिन उन्होंने कभी शादी नहीं की। चार्ल्स XII की मृत्यु के बाद, इमानुएल को रानी उल्रिका एलोनोरा (1688-1741) द्वारा प्रतिष्ठित किया गया, और उनका अंतिम नाम बदलकर स्वीडनबॉर्ग (या स्वेडेनबॉर्ग) कर दिया गया। स्थिति में इस परिवर्तन ने उन्हें स्वीडिश हाउस ऑफ नोबल्स में एक सीट दी, जहाँ वे जीवन भर स्वीडिश सरकार में एक सक्रिय भागीदार बने रहे।

रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंसेज के एक सदस्य के रूप में, उन्होंने खुद को वैज्ञानिक अध्ययन और दार्शनिक चिंतन के लिए समर्पित कर दिया, जिसकी परिणति कई प्रकाशनों में हुई, सबसे उल्लेखनीय रूप से खनिज विज्ञान पर एक व्यापक तीन-खंड का काम (1734) जिसने उन्हें एक वैज्ञानिक और दार्शनिक के रूप में पूरे यूरोप में पहचान दिलाई।

1734 के बाद उन्होंने अपने शोध और प्रकाशन को शरीर रचना विज्ञान के अध्ययन में बदल दिया, जिसमें आत्मा और शरीर के बीच के संबंध की खोज की गई, जिससे शरीर विज्ञान में कई महत्वपूर्ण खोजें हुईं। 1743 से 1745 तक वे एक संक्रमणकालीन चरण में प्रवेश कर गए, जिसके परिणामस्वरूप उनका मुख्य ध्यान विज्ञान और दर्शन से धर्मशास्त्र की ओर चला गया।

अपने शेष जीवन के दौरान उन्होंने कहा कि यह बदलाव ईसा मसीह द्वारा लाया गया था, जो उनके सामने प्रकट हुए, उन्हें एक नए मिशन के लिए बुलाया, और इस 'जीवन और मृत्यु के बाद के जीवन' -  की एक स्थायी दोहरी चेतना के लिए उनकी धारणा को खोला।

उन्होंने अपने जीवन के अंतिम दशकों को शास्त्र का अध्ययन करने और अठारह धार्मिक शीर्षकों को प्रकाशित करने के लिए समर्पित किया, जो बाइबल, तर्क और उनके अपने आध्यात्मिक अनुभवों पर आधारित हैं। ये कार्य ईसाई धर्मशास्त्र को अद्वितीय दृष्टिकोणों के साथ प्रस्तुत करते हैं - ईश्वर की प्रकृति, आध्यात्मिक दुनिया, बाइबल, मानव मन और मोक्ष का मार्ग।

स्वीडनबॉर्ग की मृत्यु 29 मार्च, 1772 को लंदन में चौरासी वर्ष की आयु में हुई।

------------------

श्री केनेथ  रिंग जी के विचार  - श्री स्वीडेनबर्ग जी के प्रति और - ' मृत्यु पर्यन्त स्वर्ग नरक जीवन' विषय के प्रति :

स्वीडन बोर्ग के लेखन के प्रति मेरी प्रशंसा शुरू से ही मेरे निकट-मृत्यु अनुभवों के अध्ययन और मृत्यु के बाद और पहले के जीवन के लिए उनके स्पष्ट निहितार्थों पर मेरे चिंतन से बढ़ी है। अब आप जिस पुस्तक का सारांश  पढ़ रहें हैं ;  वह

वास्तव में स्वीडनबोर्ग की इस विषय पर सबसे प्रसिद्ध और स्थायी रूप से लोकप्रिय कृति, स्वर्ग और नर्क से प्रेरित होकर, स्वीडनबोर्ग की दृष्टि और परे के जीवन की समझ का एक उत्कृष्ट परिचय प्रदान करती है।

जैसा कि कोई जल्दी से सीखता है, यह प्रतिपादन धार्मिक हठधर्मिता से नहीं उपजा है, बल्कि स्वीडन बोर्ग के आध्यात्मिक दुनिया में अपने व्यक्तिगत और असाधारण प्रवास में निहित है। हालाँकि, उनके रहस्योद्घाटन, उस तरह की संक्षिप्त झलकियों से नहीं निकले हैं, जो निकट-मृत्यु अनुभव करने वालों ने अक्सर मुझे और अन्य NDE शोधकर्ताओं को बताई हैं, बल्कि इस क्षेत्र में निरंतर और जानबूझकर किए गए प्रयासों से निकले हैं।

जैसा कि स्वीडनबॉर्ग खुद कहते हैं, उन्हें न केवल बताया गया था बल्कि प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से दिखाया गया था कि मरने वाले व्यक्ति को शारीरिक मृत्यु के समय और उसके बाद क्या सामना करना पड़ता है, और उन्हें अपने जीवनकाल के अंतिम तीसरे भाग में, लगभग तीन दशकों की अवधि में अक्सर ऐसे अनुभव होने में सक्षम बनाया गया था।

इस प्रकार स्वीडनबॉर्ग आज के NDEers के लिए केवल एक अग्रदूत नहीं हैं; वह एक सच्चे द्रष्टा हैं और इस तरह, उन्होंने पहले से ही उस क्षेत्र का नक्शा बना लिया था जिसे NDE शोध ने अपने तरीकों से रेखांकित करने की कोशिश की है। इस दुनिया की प्रकृति क्या है? यहाँ, स्वीडनबॉर्ग यह स्पष्ट करते हैं, हम एक ऐसे क्षेत्र में प्रवेश करते हैं जहाँ हमारा "सार" प्रकट होता है, और जहाँ हम - और दूसरे - खुद को उस सटीक तरीके से देखते हैं कि हम वास्तव में कौन हैं।

मृत्यु कुछ भी नहीं बदलती, लेकिन हमारे बारे में सब कुछ प्रकट करती है। यह स्वीडनबॉर्ग की शिक्षाओं और एनडीई शोध के निष्कर्षों के बीच पत्राचार के कई बिंदुओं में से एक है, जो दर्शाता है कि कई लोगों के पास एक विस्तृत "जीवन समीक्षा" होती है जिसमें उन्हें न केवल यह देखने के लिए प्रेरित किया जाता है कि उन्होंने कैसे जीवन जिया है, बल्कि उनके कार्यों के आंतरिक अर्थ और प्रेरणाएँ और उन कार्यों का दूसरों पर क्या प्रभाव पड़ता है।

मृत्यु के समय, हम एक ऐसी दुनिया में प्रवेश करते हैं जहाँ, संक्षेप में, हमारा आंतरिक सार "पर्यावरण" बन जाता है जिसमें हम खुद को पाते हैं। अंत में, स्वीडनबॉर्ग कहते हैं, "हर कोई मृत्यु के बाद अपने जीवन में लौटता है।" एक व्यक्ति जिसने आत्म-केंद्रित क्रूरता का जीवन जिया है, वह खुद को भगवान के प्रकाश से दूर, उसी तरह से जीना जारी रखता है। दूसरी ओर, एक व्यक्ति जो

वास्तव में दूसरों के लिए जीता है और जिसके लिए ईश्वर का अस्तित्व उसके जीवन के केंद्र में है, वह पहले से ही स्वर्ग में है।

स्वीडनबॉर्ग का दावा है, 'आत्मा' - मृत्यु के बाद सीधे स्वर्ग के प्रकाश का अनुभव करना जारी रखता है और खुद को समान विचारधारा वाले अन्य लोगों की संगति में पाता है। किसी भी तरह से, स्वीडनबॉर्ग के अनुसार, हर कोई "उसके स्नेह या उसके प्यार की छवि बनने जा रहा है।" इसलिए, अगर हम स्वीडनबॉर्ग की शिक्षाओं का पालन करते हैं, तो हम अभी अपने स्वर्ग और नर्क का निर्माण कर रहे हैं, और अभी उनमें रह रहे हैं, जो दुनिया में हमारे कार्यों के आंतरिक अर्थ पर निर्भर करता है।

यह, मेरे लिए, स्वीडनबॉर्ग के परलोक के दृष्टिकोण में महान नैतिक सबक है - और यह एक ऐसा सबक है जो एक बार फिर NDE (Near Death Experience) के नैतिक निहितार्थों से मेल खाता है।

जैसा कि प्रिय सूफी कवि कबीर ने कहा है, "जो अभी पाया जाता है वह तब पाया जाता है।" मृत्यु के निकट अनुभव करने वाले लोग दुनिया से जुड़े रहने के महत्व पर जोर देते हैं, उससे दूर नहीं हटते; दूसरों की सेवा करने और पारंपरिक धार्मिक रीति-रिवाजों के प्रति केवल दिखावा न करने पर जोर देते हैं; जानने और समझने पर जोर देते हैं।

निश्चितता, कि ईश्वर मौजूद है और मृत्यु के बाद भी जीवन है। उनके लिए, यह उनकी NDE ही है जिसने इन बातों की निर्विवाद सच्चाई को स्पष्ट किया है। फिर भी स्वीडनबॉर्ग आध्यात्मिक क्षेत्र में अपने अतुलनीय अनुभवों के माध्यम से यह सब और इससे भी कहीं अधिक देखने में सक्षम थे। और उनकी उल्लेखनीय बुद्धि और अभिव्यक्ति की शक्तियों के कारण, उनके लेखन, जैसा कि इस पुस्तक में उद्धृत किया गया है, में ज्ञान और समझ की एक ऐसी गहराई है जिसकी बराबरी कोई आधुनिक NDEer कभी नहीं कर सकता।

यही कारण है कि मैं कहता हूँ कि NDE का अध्ययन केवल स्वीडनबॉर्ग की दुनिया तक ही ले जाता है - यह शायद ही इसके कम्पास का सुझाव दे सकता है। फिर भी NDE शोध, मुझे लगता है, स्वीडनबॉर्ग के समकालीन छात्रों के लिए मृत्यु के बाद के जीवन में उनकी अंतर्दृष्टि की एक महत्वपूर्ण पुष्टि है।

स्वीडनबॉर्ग के जीवनकाल के दौरान और निश्चित रूप से उसके बाद भी, ऐसे कई लोग थे जिन्होंने उनके कथित दर्शन को खारिज कर दिया, जबकि उन्होंने स्वीकार किया कि उनके पास असाधारण मानसिक या दिव्य शक्तियाँ थीं।

बेशक, कुछ लोगों ने उन्हें काफी पागल समझा। हालाँकि, NDEs के प्रकाश में - और सचमुच दुनिया भर में लाखों लोगों ने ये अनुभव किए हैं - अब इस बात से इनकार करना संभव नहीं है कि स्वीडनबॉर्ग के दर्शन का एक निश्चित अनुभवात्मक आधार है।

बहुत से लोगों ने देखा है कि स्वीडनबॉर्ग ने क्या किया - यदि अब तक नहीं - और मूल रूप से वही निष्कर्ष निकाले हैं जो उन्होंने निकाले थे, इसलिए उनके अनुभवों को केवल किसी प्रकार की अजीबोगरीब कल्पना या अधिक भयावह भ्रम के रूप में समझाना तर्कसंगत है। यह विडंबना है कि जबकि कई विश्व-प्रसिद्ध हस्तियों ने निश्चित रूप से स्वीडनबॉर्ग को सम्मानित किया है और उनकी महानता को मान्यता दी है, यह लाखों साधारण पुरुषों और महिलाओं की सामूहिक गवाही है जिन्होंने वर्णन किया है कि यह कैसा है जो आज कई नए पाठकों तक मृत्यु के बाद जीवन के बारे में उनके गंभीर लेकिन प्रेरक दृष्टिकोण को पहुँचाने में मदद कर रहा है।

स्वीडनबॉर्ग फाउंडेशन ने इस खंड को संकलित करने में एक वास्तविक सेवा प्रदान की है, जो अब आपको मृत्यु के बाद जीवन पर इमैनुएल स्वीडनबॉर्ग के कुछ आवश्यक लेखों से सीधे परिचित कराएगा। यह आपको इस आध्यात्मिक प्रतिभा के कार्यों की और अधिक जाँच करने के लिए प्रेरित करे।

अगले पृष्ठों में आप जानिये - 'मृत्यु के बाद हमारा जीवन' या आप कह सकते हैं - 'पाश्चात गरुड़ पुराण' के विशेष विषय में श्री इमेनुएल स्वीडेनबर्ग जी; जो एक महान दूरदृष्टा और सत्य के और आध्यात्मिक / अलौकिक दुनिया के व्यावहारिक अन्वेषक थे ; उनके श्रेष्ठ उपदेश और महत्वपूर्ण विचार।

--------------

# मृत्यु के बाद हमारा जीवन

## आत्माओं की दुनिया क्या है ?

आत्माओं की दुनिया न तो स्वर्ग है और न ही नर्क, बल्कि यह दोनों के बीच की एक जगह या अवस्था है। यह वह जगह है जहाँ हम मृत्यु के बाद सबसे पहले पहुँचते हैं। वहाँ से समय के साथ हमें या तो स्वर्ग में उठाया जाता है या नर्क में फेंक दिया जाता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हमने इस दुनिया में कैसे जीवन जिया है।

मेरे लिए यह स्पष्ट हो गया कि यह एक आधी जगह है जब मैंने देखा कि नर्क इसके नीचे है और स्वर्ग इसके ऊपर है, और यह एक आधी जगह है जब मैंने सीखा कि जब तक हम इसमें हैं, तब तक हम न तो स्वर्ग में हैं और न ही नर्क में। अगले पन्नों में, जहाँ मैं "आत्माएँ" कहता हूँ, मेरा मतलब आत्माओं की दुनिया में रहने वाले लोगों से है; जबकि "स्वर्गदूतों" से मेरा मतलब स्वर्ग में रहने वाले लोगों से है।

आत्माओं की दुनिया में बहुत सारे लोग हैं, क्योंकि वहाँ सबसे पहले सभी लोग मृत्यु के बाद पहले इकट्ठे होते हैं और जहाँ हर किसी की जाँच की जाती है और उसे तैयार किया जाता है। वहाँ हमारे रहने की कोई निश्चित सीमा नहीं है। कुछ लोग मुश्किल से ही इसमें प्रवेश करते हैं और तुरंत या तो स्वर्ग में ले जाए जाते हैं या नरक में फेंक दिए जाते हैं। कुछ लोग वहाँ केवल कुछ हफ़्तों के लिए रहते हैं, जबकि अन्य कई सालों तक, हालाँकि तीस सालों से ज़्यादा नहीं।

हमारे ठहरने की अवधि में भिन्नताएँ इसलिए होती हैं क्योंकि हमारे गहरे और बाहरी स्वभाव के बीच समन्वय  की कमी। अगले पन्नों में मैं यह समझाऊँगा कि हम कैसे एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाने के लिए तैयार और प्रेरित होते हैं।

मरने के बाद, जैसे ही हम आत्माओं की दुनिया में पहुँचते हैं, भगवान , मतलब ; यमराज जी के शासन अधिकारी / विशिष्ठ यमदूत ; हमें सावधानीपूर्वक छाँटते हैं। बुरे लोग तुरंत ही उस नारकीय समुदाय से जुड़ जाते हैं, जिसके साथ उनके शासक प्रेम ने उन्हें दुनिया में जोड़ा था, और अच्छे लोग तुरंत ही उस स्वर्गीय समुदाय से जुड़ जाते हैं, जिसके साथ उनके प्रेम और दया और विश्वास ने उन्हें दुनिया में जोड़ा था। हालाँकि हम इस तरह से छाँटे गए हैं, फिर भी हम उस दुनिया में एक साथ हैं और जब चाहें किसी से भी बात कर सकते हैं, अपने भौतिक जीवन के दोस्तों और परिचितों से, खासकर पतियों और पत्नियों से, और भाइयों और बहनों से भी।

मैंने एक पिता को अपने छह बेटों को पहचानते और उनसे बात करते देखा है। मैंने कई अन्य लोगों को उनके रिश्तेदारों और दोस्तों के साथ देखा है। हालाँकि, चूँकि वे दुनिया में अपने जीवन के कारण चरित्र में भिन्न थे, इसलिए वे थोड़े समय बाद अलग हो गए।

हालाँकि, जो लोग आत्मा की दुनिया से स्वर्ग जाते हैं, वे नरक में जाने वाले लोगों को नहीं देखते हैं, और इसके विपरीत। न ही प्रत्येक समूह के लोग दूसरों को पहचानते हैं जब तक कि उनके पास प्रेम में समानता के कारण समान चरित्र न हो।

जब वे आत्माओं की दुनिया में होते हैं तो वे इन अन्य लोगों को देख सकते हैं, लेकिन जब वे स्वर्ग या नरक में होते हैं तो नहीं, इसका कारण यह है कि जब वे आत्माओं की दुनिया में होते हैं तो वे एक के बाद एक ऐसी अवस्थाओं में आ जाते हैं, जैसे वे अपने भौतिक जीवन के दौरान थे। हालाँकि, थोड़ी देर के बाद, वे एक ऐसी स्थिर अवस्था में आ जाते हैं जो उनके प्रमुख प्रेम की स्थिति से सहमत होती है।

इस अवस्था में, लोग दूसरों को तभी पहचानते हैं जब वे जो पसंद करते हैं वह समान हो, क्योंकि समानता जोड़ती है और असमानता अलग करती है। जिस तरह आत्माओं की दुनिया स्वर्ग और नरक के बीच में होने की स्थिति है, यह भी एक आधी जगह है, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है।

नरक इसके नीचे हैं और स्वर्ग इसके ऊपर हैं। सभी नरक उस दुनिया का सामना करने वाली तरफ से बंद हैं, और केवल चट्टानों में मौजूद छेदों और दरारों के माध्यम से और चौड़े अंतरालों के माध्यम से पहुँचा जा सकता है जो किसी को

भी बिना अनुमति के बाहर आने से रोकने के लिए सुरक्षित हैं, जो केवल वास्तविक आवश्यकता के मामलों में दी जाती है।

स्वर्ग भी, सभी तरफ से घिरा हुआ है, और किसी भी स्वर्गीय समुदाय तक पहुँचने का एकमात्र रास्ता एक संकीर्ण मार्ग है जिसका प्रवेश भी सुरक्षित है। ये निकास और प्रवेश द्वार ही हैं जिन्हें पाश्च्यात शास्त्रों  में नरक और स्वर्ग के द्वार और द्वार कहा जाता है।

आत्माओं की दुनिया पहाड़ों और चट्टानों से घिरी घाटी की तरह दिखती है, जिसमें जगह-जगह घाटियाँ और ऊँची-नीची ज़मीन है। स्वर्गीय समुदायों के द्वार और प्रवेश द्वार केवल उन लोगों को दिखाई देते हैं जो स्वर्ग के लिए तैयार हो चुके हैं, और कोई भी उन्हें नहीं पा सकता।

आत्माओं की दुनिया से प्रत्येक समुदाय में जाने के लिए एक प्रवेश द्वार है, और उसके आगे केवल एक ही रास्ता है; लेकिन जैसे-जैसे रास्ता ऊपर की ओर जाता है, यह कई भागों में विभाजित हो जाता है। नरक के द्वार और द्वार केवल उन लोगों को दिखाई देते हैं जो उनमें प्रवेश करने वाले हैं। उनके लिए द्वार खुलते हैं, और फिर वे नीचे की ओर गहराई में अंधेरे, कालिख जैसी दिखने वाली गुफाओं को देख सकते हैं, जहाँ और भी द्वार हैं।

उनसे बदबूदार, गंदी बदबू निकलती है। अच्छी आत्माएँ इन गंधों से दूर भागती हैं क्योंकि वे इनसे दूर रहना चाहती  हैं, लेकिन बुरी आत्माएँ इनकी ओर आकर्षित होती हैं क्योंकि उन्हें ये अच्छी लगती हैं। वास्तव में, जिस तरह हम इस संसार में अपनी बुराई का आनंद लेते हैं, उसी तरह हम मृत्यु के बाद भी आनंद पाते हैं।          वह बदबू जो हमारी बुराई से मेल खाती है।

इसकी तुलना सड़े हुए पक्षियों और जानवरों, जैसे कौवे, भेड़िये और सूअरों द्वारा दिखाए जाने वाले आनंद से की जा सकती है, जो सड़ती हुई लाशों की ओर उड़ते या दौड़ते हैं जैसे ही उन्हें उनकी भनक लगती है।

मैंने एक आदमी को सुना जो स्वर्ग से हवा के झोंके पर बहुत पीड़ा में चिल्ला रहा था, लेकिन जब नरक से एक सांस उसके पास पहुंची तो वह शांत और खुश था। हम में से प्रत्येक के भीतर भी दो दरवाजे हैं, एक नरक का सामना करता है और वहाँ से बुराई और झूठी चीजों के लिए खुला है, दूसरा स्वर्ग का सामना करता है और वहाँ से अच्छी और सच्ची चीजों के लिए खुला है।

नरक का द्वार उन लोगों के लिए खुला है जो बुराई और बुराई से आने वाले झूठ पर ध्यान केंद्रित करते हैं, हालांकि स्वर्ग से बस थोड़ा सा प्रकाश कुछ दरारों से बहता है, जो हमें सोचने, तर्क करने और बोलने में सक्षम बनाता है। दूसरी ओर, स्वर्ग का द्वार उन लोगों के लिए खुला है जो अच्छाई पर ध्यान केंद्रित करते हैं और इस प्रकार सत्य पर।

वास्तव में दो रास्ते हैं जो हमारे तर्कसंगत मन तक ले जाते हैं, एक मन के ऊपर से या उसके अंदर से, जिसके माध्यम से भगवान से अच्छाई और सच्चाई प्रवेश करती है, और एक मन के नीचे से या उसके बाहर से, जिसके माध्यम से बुराई और झूठ नरक से घुसपैठ करते हैं। तर्कसंगत मन स्वयं बीच में है, जहाँ ये दोनों रास्ते मिलते हैं।

इसलिए स्वर्ग से जितना अधिक प्रकाश अंदर आने दिया जाता है, हम उतने ही अधिक तर्कसंगत होते हैं, और जितना अधिक वह प्रकाश बाहर रखा जाता है, हम उतने ही कम तर्कसंगत होते हैं, चाहे परिस्थिति हमें कैसी भी लगे।

मैंने इन बातों का उल्लेख इसलिए किया है ताकि स्वर्ग और नरक के साथ हमारा व्यवहार या समन्वय जाना जा सके। जब हमारा तर्कसंगत मन बनने की प्रक्रिया में होता है, तो यह आत्माओं की दुनिया से मेल खाता है। जो ऊपर है वह स्वर्ग का है, और जो नीचे है वह नरक का है।

उन लोगों में जो स्वर्ग के लिए तैयार हो रहे हैं स्वर्ग में, मन के उच्चतर पहलू खुल जाते हैं, और निचले हिस्से बुराई और झूठ के प्रवाह के खिलाफ बंद हो जाते हैं। जो लोग नरक के लिए तैयार हो रहे हैं, उनमें निचले पहलू खुल जाते हैं, और उच्च हिस्से अच्छाई और सच्चाई के प्रवाह के खिलाफ बंद हो जाते हैं।

नतीजतन, बाद वाले लोग केवल नीचे की ओर, नरक की ओर देख सकते हैं, और पहले वाले लोग केवल ऊपर की ओर, स्वर्ग की ओर देख सकते हैं। ऊपर की ओर देखना भगवान की ओर देखना है, क्योंकि वह वह सामान्य केंद्र है जिसका सामना स्वर्ग में हर चीज करती है।

हालाँकि, नीचे की ओर देखना भगवान से दूर विपरीत केंद्र की ओर देखना है, वह केंद्र जिसकी ओर नरक में हर चीज का सामना होता है और वह आकर्षित होता है।

# हममें से हर कोई आंतरिक रूप से एक आत्मा है

जो कोई भी चीजों के बारे में ध्यान से सोचता है, वह देख सकता है कि यह शरीर नहीं है जो सोचता है, क्योंकि शरीर भौतिक है। बल्कि, यह आत्मा है, क्योंकि आत्मा आध्यात्मिक है। मानव आत्मा, जिसकी अमरता कई लेखकों का विषय रही है, हमारी आत्मा है; यह वास्तव में सभी मामलों में अमर है, और यह हमारे शरीर में सोचने का काम भी करती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह आध्यात्मिक है और आध्यात्मिक उन्नति  के लिए खुला है और सोचने और इच्छा के माध्यम से आध्यात्मिक रूप से रहता है। इसलिए हम अपने शरीर में जो भी तर्कसंगत जीवन देख सकते हैं, वह आत्मा का है और इसमें से कुछ भी शरीर का नहीं है।

वास्तव में, शरीर भौतिक है, जैसा कि अभी उल्लेख किया गया है, और शरीर को बनाने वाला पदार्थ एक अतिरिक्त तत्व है, लगभग आत्मा के विस्तार की तरह। इसका उद्देश्य हमारी आत्मा को अपने जीवन का नेतृत्व करने और एक भौतिक दुनिया में अपनी सेवाएँ करने में सक्षम बनाना है जो सभी मामलों में भौतिक है और अनिवार्य रूप से बेजान है।

चूँकि पदार्थ जीवित नहीं है - केवल आत्मा जीवित है - हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि हमारे अंदर जो कुछ भी जीवित है वह हमारी आत्मा है और शरीर केवल उसी तरह से उसकी सेवा करता है जिस तरह से एक उपकरण एक जीवित शक्ति की सेवा करता है जो उसे चलाती है। हम, निश्चित रूप से, यह कह सकते हैं कि एक उपकरण काम करता है या चलता है या प्रहार करता है, लेकिन यह मानना गलत है कि यह उपकरण की विशेषता है, न कि उसे चलाने वाले की।

चूँकि शरीर में जो कुछ भी जीवित है - जो कुछ भी कार्य करता है और चीज़ों को महसूस करता है क्योंकि वह जीवित है - वह सिर्फ़ आत्मा का है और उसमें से कुछ भी शरीर का नहीं है, इसलिए यह माना जाता है कि आत्मा ही वास्तविक व्यक्ति है।

दूसरे शब्दों में, जब हम वास्तव में जो हैं, उसे देखा जाए तो हम आत्मा हैं और हमारा रूप भी हमारी आत्मा जैसा ही है। आप देखिए, हमारे अंदर जो कुछ भी जीवित है और चीज़ों को महसूस करता है, वह हमारी आत्मा का है और हमारे अंदर सिर से पैर तक ऐसा कुछ भी नहीं है जो जीवित न हो और इंद्रियों का अनुभव करने में सक्षम न हो। यही कारण है कि जब हमारे शरीर हमारी आत्माओं से अलग हो जाते हैं, जिसे मरना कहते हैं, तब भी हम इंसान बने रहते हैं और जीवित रहते हैं।

मैंने स्वर्गीय स्रोतों से सुना है कि कुछ मृत लोग - जब वे ताबूत में लेटे होते हैं, मृत्यु के बाद जीवन में वापस आने से पहले - अपने ठंडे शरीर में भी सोचना जारी रखते हैं। वे यह महसूस करने से खुद को रोक नहीं पाते कि वे जीवित हैं, सिवाय इसके कि वे अपने शरीर को बनाने वाले पदार्थ के एक भी परमाणु को हिला नहीं सकते।

अगर हमारे विचार और इच्छा को सहारा देने वाली कोई चीज़ न हो - कोई ऐसा पदार्थ जहाँ सोचना और इच्छा करना पैदा हो और जिसमें वे घटित हों, तो हम कुछ भी नहीं सोच सकते या इच्छा नहीं कर सकते। हम कल्पना कर सकते हैं कि किसी सहायक पदार्थ के अलावा कुछ हो रहा है, लेकिन ऐसा कुछ भी मौजूद नहीं है।

हम इसे इस तथ्य से बता सकते हैं कि हम अपनी दृष्टि का समर्थन करने वाले अंग के बिना नहीं देख सकते, या अपनी श्रवण शक्ति का समर्थन करने वाले अंग के बिना नहीं सुन सकते। इनके अलावा, दृष्टि और श्रवण कुछ भी नहीं होंगे, अस्तित्व में नहीं होंगे। यही बात विचार के लिए भी सही है, जो आंतरिक दृष्टि है, और अनुभूति के लिए, जो आंतरिक श्रवण है। जब तक ये ऐसे पदार्थों से उत्पन्न और घटित नहीं होते जो सहायक अंगों का रूप लेते हैं, वे नहीं होंगे ऐसा बिल्कुल नहीं होता।

हम इससे यह समझ सकते हैं कि हमारी आत्मा भी एक रूप में है, इसका रूप एक इंसान जैसा है, और जब यह अपने शरीर से अलग होती है, तो इसमें अपनी इंद्रियाँ और संवेदी अंग होते हैं, जैसे कि जब यह अपने शरीर में थी। हम यह समझ सकते हैं कि आँख का पूरा अनुभव, कान का पूरा अनुभव, वास्तव में हमारा संवेदी अनुभव शरीर का नहीं बल्कि आत्मा का है, जो इंद्रियों पर पूरी तरह से, उनकी सबसे छोटी विशेषता तक का कब्ज़ा कर लेती है।

यही कारण है कि आत्माएँ अपनी इंद्रियों को देखती हैं, सुनती हैं और अनुभव करती हैं, ठीक वैसे ही जैसे हम करते हैं, हालाँकि शरीर छोड़ने के बाद यह अनुभूति भौतिक दुनिया में नहीं बल्कि आध्यात्मिक दुनिया में होती है। जब वे शरीर में थे, तो भौतिक स्तर पर इंद्रियों का उनका मानसिक अनुभव भौतिक भाग के माध्यम से हुआ जो उनकी आत्मा का एक अतिरिक्त तत्व था। हालाँकि, वे उस समय पूरी तरह से आध्यात्मिक स्तर पर अपनी सोच और इच्छा के माध्यम से मानसिक अनुभव कर रहे थे।

मैंने इसे तर्कसंगत लोगों को यह समझाने के लिए प्रस्तुत किया है कि, जब हम वास्तव में जो हैं, उसे देखा जाए तो हम आत्माएं हैं, और भौतिक भाग जो हमें

भौतिक और भौतिक दुनिया में कार्य करने के लिए जोड़ा गया है, वह वास्तविक व्यक्ति नहीं है, बल्कि केवल हमारी आत्मा का उपकरण है।

बहुत सारे अनुभवों ने मुझे सिखाया है कि हमारे आंतरिक स्व के संबंध में हम आत्माएं हैं - ऐसा अनुभव जो पूरी मात्रा में भर जाएगा, जैसा कि वे कहते हैं, अगर मैं इसे सब कुछ शामिल करूँ। मैंने आत्माओं के साथ एक आत्मा के रूप में बात की है और मैंने उनके साथ एक शरीर में एक व्यक्ति के रूप में बात की है।

जब मैंने उनके साथ एक आत्मा के रूप में बात की है, तो वे यह नहीं बता सकते थे कि मैं स्वयं एक आत्मा नहीं था, एक ऐसे रूप में जो उनके समान ही मानव था। मेरा आंतरिक स्व उन्हें ऐसा ही लगा, क्योंकि जब मैंने उनके साथ एक आत्मा के रूप में बात की, तो वे मेरे भौतिक शरीर को नहीं देख सके।

हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि हम अपने आंतरिक स्व के संबंध में आत्मा हैं, इस तथ्य से कि जब हम अपने शरीर से विदा होते हैं, जो तब होता है जब हम मर जाते हैं, तब भी हम जीवित रहते हैं और पहले की तरह ही इंसान होते हैं।

मुझे इस बात का यकीन दिलाने के लिए, मुझे लगभग सभी लोगों से बात करने की अनुमति दी गई, जिनसे मैं उनके भौतिक जीवन के दौरान कभी मिला था, कुछ लोगों से कुछ घंटों के लिए, कुछ के साथ हफ्तों और महीनों के लिए, और कुछ के साथ सालों तक। यह मुख्य रूप से इसलिए था ताकि मैं आश्वस्त हो सकूं और गवाही दे सकूं।

मैं यहां यह भी जोड़ सकता हूं कि जब हम अपने शरीर में रहते हैं, तब भी हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपनी आत्माओं के संबंध में, अन्य आत्माओं के साथ एक समुदाय में होता है, भले ही हम इसके बारे में अनजान हों। अपनी आत्माओं के माध्यम से, अच्छे लोग स्वर्गदूतों के समुदायों में होते हैं और बुरे लोग नारकीय समुदायों में होते हैं।

इसके अलावा, हम मरने पर उन्हीं समुदायों में आते हैं। जो लोग मृत्यु के बाद आत्माओं की संगति में आते हैं, उन्हें अक्सर यह बताया और दिखाया जाता है। दरअसल, जब हम दुनिया में रहते हैं, तो हम अपने आध्यात्मिक समुदायों में आत्माओं के रूप में दिखाई नहीं देते हैं, क्योंकि हम भौतिक स्तर पर सोच रहे होते हैं।

हालाँकि, अगर हमारी सोच हमारे शरीर से दूर होती है, तो हम कभी-कभी अपने समुदायों में दिखाई देते हैं क्योंकि हम तब आत्मा में होते हैं। जब हम दिखाई देते

हैं, तो हमें वहाँ रहने वाली आत्माओं से अलग पहचानना आसान होता है क्योंकि हम गहरे विचारों में डूबे हुए, मौन, दूसरों की ओर देखे बिना चलते हैं, जैसे कि हमने उन्हें नहीं देखा; और जिस क्षण कोई आत्मा हमसे बात करती है, हम गायब हो जाते हैं।

इस तथ्य को स्पष्ट करने के लिए कि हम आंतरिक रूप से आत्मा हैं, मैं व्यक्तिगत अनुभव से समझाना चाहूँगा कि जब हमें शरीर से बाहर निकाला जाता है, तो क्या होता है और कैसे आत्मा हमें किसी दूसरी जगह ले जाती है। शरीर से बाहर निकाले जाने का पहला अनुभव इस तरह होता है।

हमें एक विशेष अवस्था में लाया जाता है जो नींद और जागने के बीच की अवस्था होती है। जब हम इस अवस्था में होते हैं, तो ऐसा लगता है जैसे हम जाग रहे हों; हमारी सभी इंद्रियाँ उतनी ही सजग होती हैं जितनी तब होती हैं जब हम शारीरिक रूप से पूरी तरह से जागते हैं - दृष्टि, श्रवण और आश्चर्यजनक रूप से स्पर्श, जो तब शारीरिक रूप से जागने के दौरान की तुलना में कहीं अधिक तीव्र होता है।

यह वह अवस्था है जिसमें लोगों ने आत्माओं और स्वर्गदूतों को सबसे स्पष्ट रूप से देखा है, यहाँ तक कि उन्हें सुना भी है और, अजीब बात यह है कि उन्हें छुआ भी है, जिसमें शायद ही कोई शारीरिक हस्तक्षेप होता है। यह वह अवस्था है जिसे किसी के शरीर से बाहर निकाले जाने और यह न जानने के रूप में वर्णित किया गया है कि वह अपने शरीर में है या बाहर है ।

मुझे इस अवस्था में तीन या चार बार भर्ती कराया गया है, बस मुझे यह बताने के लिए कि यह कैसा था, और मुझे यह भी सिखाने के लिए कि आत्माएँ और देवदूत सभी इंद्रियों का उपयोग कर सकते हैं और हम भी, अपनी आत्माओं के संबंध में, जब हमें हमारे शरीर से बाहर निकाला जाता है।दूसरे प्रकार के अनुभव के लिए, आत्मा द्वारा किसी अन्य स्थान पर ले जाया जाना, मुझे प्रत्यक्ष अनुभव से दिखाया गया है कि क्या होता है और यह कैसे होता है, लेकिन केवल दो या तीन बार।

मैं केवल एक अनुभव का हवाला देना चाहूंगा। जब मैं शहर की सड़कों और ग्रामीण इलाकों से गुजर रहा था, आत्माओं के साथ बातचीत में लीन था, तो ऐसा लग रहा था जैसे मैं हमेशा की तरह ही जागृत और चौकस था, बिना खोए चल रहा था, हालांकि इस दौरान मुझे दर्शन हो रहे थे। मैं जंगल, नदियाँ, हवेली, घर, लोग और बहुत कुछ देख रहा था। कुछ घंटों तक चलने के बाद, हालांकि, मैंने

अचानक खुद को अपनी शारीरिक दृष्टि के प्रति जागरूक पाया और महसूस किया कि मैं कहीं और था।

मैं इससे पूरी तरह से चकित था, और मुझे एहसास हुआ कि मैं ;  मैं उन लोगों की स्थिति में था जिन्हें आत्मा द्वारा किसी अन्य स्थान पर ले जाया जाता है ; जब तक यह चला, मैं अपने मार्ग के बारे में नहीं सोच रहा था, भले ही यह कई मील का हो सकता था, या समय के बारे में, भले ही यह कई घंटे या दिन भी हो सकता था। मुझे किसी भी थकान का एहसास भी नहीं था। इस तरह हम उन मार्गों से आगे बढ़ सकते हैं जिनके बारे में हम कुछ नहीं जानते, किसी पूर्वनिर्धारित स्थान पर, बिना खोए।

हालाँकि, ये दो अवस्थाएँ, जो हमारे पास तब होती हैं जब हम अपनी गहरी प्रकृति या (जो एक ही बात है) अपनी आत्मा के प्रति जागरूक होते हैं, सामान्य से अलग हैं। मुझे ये केवल मुझे सिखाने के लिए दिखाए गए थे कि वे कैसे थे क्योंकि चर्च के लोग उनके बारे में जानते हैं।

लेकिन आत्माओं से बात करना, उनके साथ रहना - यह कुछ ऐसा है जो मुझे तब करने की अनुमति दी गई थी जब मैं शारीरिक रूप से पूरी तरह से जागृत था, और यह कई सालों से ऐसा ही है। यह कहना कि हम अपने भीतर आत्मा हैं, यह कहने के समान है कि जो चीजें हमारी सोच और इच्छा से जुड़ी हैं वे आध्यात्मिक हैं, क्योंकि सोच और इच्छा वास्तव में हमारा आंतरिक अस्तित्व है। वे ही हमें मानव बनाते हैं, और हम किस तरह के इंसान हैं यह इस बात पर निर्भर करता है कि हमारी सोच और हमारी इच्छा कैसी है !

## मृत्यु से हमारा पुनरुत्थान

जब किसी व्यक्ति का शरीर आध्यात्मिक दुनिया से आने वाली उसकी आत्मा के विचारों और भावनाओं के जवाब में भौतिक दुनिया में अपने कार्य नहीं कर सकता, तो हम कहते हैं कि व्यक्ति की मृत्यु हो गई है। ऐसा तब होता है जब फेफड़ों की सांस और हृदय की पंपिंग गति बंद हो जाती है।

लेकिन वास्तव में वह व्यक्ति बिल्कुल भी नहीं मरा है। वह केवल उस भौतिकता से अलग है जो उस व्यक्ति के लिए दुनिया में उपयोगी थी। मूल व्यक्ति वास्तव में अभी भी जीवित है। मैं ऐसा इसलिए कहता हूँ क्योंकि यह हमारा शरीर नहीं है जो हमें मानव बनाता है, बल्कि हमारी आत्माएँ हैं।

आखिरकार, यह हमारे अंदर की आत्मा है जो सोचती है; और विचार, भावना के साथ, हमें मानव बनाते हैं।हम देख सकते हैं कि जब हम मरते हैं तो हम बस एक दुनिया से दूसरी दुनिया में चले जाते हैं।
यही कारण है कि शब्द के आंतरिक अर्थ में, "मृत्यु" का अर्थ है पुनरुत्थान और जीवन की निरंतरता।

हमारी आत्माएँ हमारी सांस और हमारे दिल की धड़कन से बहुत निकटता से जुड़ी हुई हैं। विचार हमारी सांसों से जुड़ा है और प्रेम की भावना हमारे हृदय से जुड़ी है। नतीजतन, जब शरीर में ये दोनों गतियाँ बंद हो जाती हैं, तो तुरंत अलगाव हो जाता है।

ये दो ही हैं गति, फेफड़ों की श्वसन गति और हृदय की पंपिंग, ये आवश्यक संबंध हैं। एक बार जब ये टूट जाते हैं, तो आत्मा अपने आप पर छोड़ दी जाती है; और शरीर, अब अपनी आत्मा के जीवन के बिना, ठंडा हो जाता है और सड़ जाता है।

हमारी आत्माएं हमारी सांस और हमारे हृदय से बहुत निकटता से जुड़ी हुई हैं, इसका कारण यह है कि हमारी सभी महत्वपूर्ण प्रक्रियाएं इन पर निर्भर करती हैं, न केवल पूरे शरीर में, बल्कि हर हिस्से में भी। इस अलगाव के बाद, हमारी आत्मा कुछ समय के लिए शरीर में रहती है, लेकिन हृदय के पूरी तरह से बंद हो जाने के बाद नहीं, जो मृत्यु के कारण के आधार पर अलग-अलग समय पर होता है।

कुछ मामलों में हृदय की गति काफी समय तक जारी रहती है, और अन्य में नहीं। जिस क्षण यह बंद हो जाती है, हम जाग जाते हैं, लेकिन केवल प्रभु ही हमें जगाते हैं। "जागृत होना" का अर्थ है हमारी आत्मा को हमारे शरीर से बाहर निकालकर आध्यात्मिक दुनिया में ले जाना। इसे आमतौर पर "पुनरुत्थान" कहा जाता है।

जब तक हृदय की गति बंद नहीं हो जाती, तब तक हमारी आत्मा हमारे शरीर से अलग नहीं होती, इसका कारण यह है कि हृदय प्रेम की भावना से मेल खाता है, जो हमारा आवश्यक जीवन है, क्योंकि हम सभी को प्रेम से ही प्राणवायु मिलती

है। इसलिए जब तक हृदय और भावनाएँ जुड़ी रहती हैं, तब तक मेल बना रहता है, और आत्मा का जीवन अभी भी शरीर में है।

मुझे न केवल यह बताया गया है कि जागृति कैसे होती है, बल्कि मुझे प्रत्यक्ष अनुभव से दिखाया गया है। वास्तविक अनुभव मेरे साथ हुआ ताकि मुझे इस बात का पूरा ज्ञान हो सके कि यह कैसे होता है। मुझे एक ऐसी स्थिति में लाया गया जिसमें मेरी शारीरिक इंद्रियाँ निष्क्रिय थीं - बिल्कुल वैसी ही, जैसे मरने वाले लोगों की स्थिति होती है।

हालाँकि, मेरा गहरा जीवन और विचार बरकरार रहे, इसलिए  मैं यह समझ सकता था और याद रख सकता था कि मेरे साथ क्या हो रहा है और मृत्यु से जागने वाले लोगों के साथ क्या होता है।

मैंने देखा कि मेरी शारीरिक साँस लगभग रुक गई थी, और एक गहरी साँस, आत्मा की साँस, एक बहुत ही हल्की और शांत शारीरिक साँस के साथ जारी थी। सबसे पहले मेरे दिल की धड़कन और स्वर्गीय राज्य के बीच एक संबंध स्थापित हुआ, क्योंकि वह राज्य मानव हृदय से मेल खाता है। मैंने उस राज्य के स्वर्गदूतों को भी देखा, कुछ दूर पर, लेकिन दो मेरे सिर के पास बैठे थे।

इसका प्रभाव यह हुआ कि मेरी सारी भावनाएँ दूर हो गईं, लेकिन मुझे अभी भी विचार और उच्च धारणा के कब्जे में छोड़ दिया। मैं कई घंटों तक इसी अवस्था में रहा। फिर मेरे आस-पास की आत्माएँ धीरे-धीरे दूर चली गईं, यह सोचकर कि मैं मर चुका हूँ।

मुझे एक सुगंधित शरीर की तरह एक मीठी गंध महसूस हुई, क्योंकि जब स्वर्गीय स्वर्गदूत मौजूद होते हैं तो लाश से जुड़ी कोई भी चीज़ मीठी गंध देती है। जब आत्माएँ इसे महसूस करती हैं, तो वे पास नहीं आ सकतीं। इसी तरह से बुरी आत्माओं को हमारी आत्मा से दूर रखा जाता है जब हमें अनंत जीवन में प्रवेश कराया जाता है।

मेरे सिर के पास बैठे देवदूत चुप थे, बस अपने विचार मेरे साथ साझा कर रहे थे। जब मृतक उन विचारों को स्वीकार करता है, तो देवदूत जानते हैं कि व्यक्ति की आत्मा शरीर से बाहर निकलने के लिए तैयार है। उन्होंने मेरे चेहरे को देखकर विचारों को साझा करने का काम पूरा किया। वास्तव में स्वर्ग में विचारों को साझा करने का यही तरीका है।

चूँकि मुझे विचार और उच्चतर धारणा के कब्जे में छोड़ दिया गया था ताकि मैं सीख सकूँ और याद रख सकूँ कि जागृति कैसे होती है, मैंने देखा कि पहले तो देवदूत मेरी जाँच कर रहे थे , यह देखने के लिए कि क्या वे मरने वाले व्यक्तियों की तरह थे, जो आम तौर पर अनंत जीवन के बारे में सोचते हैं। वे मेरे दिमाग को इन विचारों में रखना चाहते थे।

मुझे बाद में बताया गया कि जब शरीर अपनी आखिरी सांस ले रहा होता है, तो हमारी आत्मा अपने अंतिम विचार में तब तक रहती है जब तक कि वह अंततः उन विचारों पर वापस नहीं आ जाती जो दुनिया में हमारे मूल या शासक प्रेम से प्रवाहित होते हैं।

मुझे विशेष रूप से यह समझने और महसूस करने की अनुमति दी गई थी कि मेरे दिमाग के गहरे स्तरों से एक तरह का खिंचाव, एक तरह का खिंचाव था और इसलिए मेरी आत्मा मेरे शरीर से बाहर निकल रही थी; और मुझे बताया गया कि यह प्रभु द्वारा किया जा रहा था और यही वह है जो हमारे पुनरुत्थान को लाता है।

जब स्वर्गीय स्वर्गदूत उन लोगों के साथ होते हैं जो जागृत हो चुके होते हैं तो वे उन्हें नहीं छोड़ते, क्योंकि वे सभी से प्यार करते हैं। लेकिन कुछ आत्माएँ स्वर्गीय स्वर्गदूतों की संगति में बहुत लंबे समय तक रहने में असमर्थ होती हैं और चाहती हैं कि वे चले जाएँ।

जब ऐसा होता है, तो प्रभु के आध्यात्मिक साम्राज्य से स्वर्गदूत आते हैं, जिनके माध्यम से हमें प्रकाश का उपयोग करने की अनुमति दी जाती है, क्योंकि इससे पहले हम कुछ भी नहीं देख सकते थे, लेकिन केवल सोच सकते थे। मुझे यह भी दिखाया गया कि यह कैसे किया जाता है। ऐसा लगा जैसे स्वर्गदूतों ने मेरी बाईं आंख से मेरी नाक के पुल की ओर एक आवरण हटा दिया ताकि मेरी आंख खुल जाए और मैं देख सकूं।

आत्मा को ऐसा लगता है जैसे यह वास्तव में हो रहा था, लेकिन यह केवल ऐसा प्रतीत होता है। जैसे ही यह आवरण हटा, मैं एक प्रकार का उज्ज्वल लेकिन फैला हुआ प्रकाश देख सकता था, जैसा कि हम अपनी पलकों के माध्यम से देखते हैं जब हम पहली बार जागते हैं।

मुझे ऐसा लगा जैसे इस उज्ज्वल, फैले हुए प्रकाश का एक स्वर्गीय रंग था, लेकिन बाद में मुझे बताया गया कि यह अलग-अलग होता है। उसके बाद, ऐसा लगा जैसे मेरे चेहरे से कुछ धीरे से हटाया जा रहा था, और एक बार ऐसा करने

से मुझे आध्यात्मिक विचारों तक पहुँच मिली। चेहरे से कुछ हटाना एक दिखावा है, और यह इस तथ्य को दर्शाता है कि हम भौतिक सोच से आध्यात्मिक सोच की ओर बढ़ रहे हैं।

देवदूत जागृत व्यक्ति को किसी भी ऐसी अवधारणा से बचाने के लिए सबसे अधिक सावधानी बरतते हैं जिसमें प्रेम नहीं है। फिर वे व्यक्ति को बताते हैं कि वह एक आत्मा है। आध्यात्मिक स्वर्गदूतों द्वारा हमें प्रकाश का उपयोग करने के बाद, वे हमारे लिए वह सब कुछ करते हैं जो हम उस अवस्था में चाहते हैं।

वे हमें दूसरे जीवन की वास्तविकताओं के बारे में बताते हैं, या कम से कम उनके बारे में उतना ही बताते हैं जितना हम समझ सकते हैं। हालाँकि, अगर हम ऐसे लोग हैं जो नहीं चाहते कि हमें सिखाया जाए, तो एक बार जब हम जागृत हो जाते हैं तो हम स्वर्गदूतों की संगति से बाहर निकलना चाहते हैं। फिर भी, स्वर्गदूत हमें नहीं छोड़ते; इसके बजाय हम उन्हें छोड़ देते हैं।

स्वर्गदूत वास्तव में सभी से प्यार करते हैं। वे लोगों की मदद करने, उन्हें सिखाने, उन्हें स्वर्ग में ले जाने के अलावा और कुछ नहीं चाहते। यही उनका सबसे बड़ा आनंद है। जब आत्माएं स्वर्गदूतों की संगति छोड़ती हैं, तो उनका स्वागत उन अच्छी आत्माओं द्वारा किया जाता है जो उनके साथ होती हैं और जो उनके लिए वह सब कुछ करती हैं जो वे कर सकती हैं।

हालाँकि, अगर उन्होंने दुनिया में ऐसा जीवन जिया है जिसके कारण उनके लिए अच्छे लोगों की संगति में रहना असंभव है, तो वे इनसे भी दूर जाना चाहते हैं। यह तब तक और जितनी बार आवश्यक हो उतनी बार होता है, जब तक कि उन्हें ऐसे लोगों की संगति न मिल जाए जिनके लिए उनका सांसारिक जीवन उपयुक्त है।

यहाँ वे अपना जीवन पाते हैं; और यह सुनने में भले ही आश्चर्यजनक लगे, फिर भी वे उसी तरह का जीवन जीते हैं जैसा वे कभी दुनिया में जीते थे। हालाँकि, मृत्यु के बाद हमारे जीवन का यह पहला चरण कुछ दिनों से अधिक नहीं रहता है।

अगले पन्नों में मैं वर्णन करूँगा कि कैसे हम एक अवस्था से दूसरी अवस्था में तब तक लाए जाते हैं जब तक कि  अंत में हम या तो स्वर्ग में या फिर नरक में पहुँचते हैं। यह भी कुछ ऐसा है जो मैंने अपने अनुभवों से सीखा है।

मैंने कुछ लोगों से उनकी मृत्यु के तीसरे दिन बात की, जब पहले वर्णित घटनाएँ पूरी हो चुकी थीं। मैंने दुनिया में जिन तीन लोगों को जाना था, उनसे बात की और उन्हें बताया कि अब उनके अंतिम संस्कार की योजना बनाई जा रही है ताकि उनके शवों को दफनाया जा सके। जब उन्होंने यह सुना, तो वे एक तरह की घबराहट से स्तब्ध रह गए। उन्होंने कहा कि वे जीवित हैं और जो दफनाया जा रहा है वह उनके लिए केवल भौतिक दुनिया में ही उपयोगी था।

बाद में, वे इस तथ्य से काफी आश्चर्यचकित हुए कि जब वे अपने शरीर में रह रहे थे, तब उन्होंने मृत्यु के बाद इस तरह के जीवन पर विश्वास नहीं किया था, और इससे भी अधिक यह कि इस अविश्वास को चर्च में लगभग सभी लोगों ने साझा किया था। कुछ लोगों ने अपने सांसारिक जीवन के दौरान यह विश्वास नहीं किया कि शरीर के जीवन के बाद आत्मा का कोई जीवन होता है।

जब उन्हें पता चलता है कि वे अभी भी जीवित हैं, तो वे बहुत शर्मिंदा होते हैं। हालाँकि, जो लोग खुद को यह विश्वास दिला चुके हैं कि कोई शाश्वत जीवन नहीं है, वे उन लोगों के साथ जुड़ जाते हैं जो ऐसा ही सोचते हैं, और वे उन लोगों से दूर हो जाते हैं जो धरती पर रहते हुए आस्था में रहते थे।

उनमें से ज़्यादातर लोग किसी नर्कवासी समुदाय से जुड़ जाते हैं क्योंकि ऐसे लोग ईश्वर को अस्वीकार करते हैं और चर्च की सच्चाइयों का उन्हें कोई फ़ायदा नहीं होता। वास्तव में, जितना ज़्यादा हम खुद को यह विश्वास दिलाते हैं कि आत्मा का शाश्वत जीवन नहीं हो सकता, उतना ही ज़्यादा हम खुद को यह विश्वास दिलाते हैं कि स्वर्ग और चर्च या मंदिर से कोई लेना-देना नहीं है।

## मृत्यु के बाद, हम पूर्णतः मानव रूप में होते हैं

यह तथ्य कि आत्मा-व्यक्ति का रूप मानव रूप है, पहले प्रस्तुत की गई बातों से पता चलता है। यह इस तथ्य से और भी स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है कि हम अपनी आत्मा के कारण मानव हैं, अपने शरीर के कारण नहीं, और क्योंकि हमारा भौतिक रूप आत्मा के रूप के अनुसार आत्मा से जुड़ा हुआ है, न कि इसके विपरीत, क्योंकि आत्मा को उसके रूप से मेल खाने वाले शरीर से सुसज्जित किया जाता है।

परिणामस्वरूप, मानव आत्मा शरीर के अलग-अलग हिस्सों पर कार्य करती है, जिसमें सबसे छोटे हिस्से भी शामिल हैं, यहाँ तक कि कोई भी हिस्सा जो आत्मा द्वारा सक्रिय नहीं होता है, कोई भी हिस्सा जिसमें आत्मा कार्य नहीं करती है, वह जीवित नहीं है। कोई भी व्यक्ति यह विचार करके इसे देख सकता है कि विचार और इच्छाशक्ति शरीर में हर चीज को सक्रिय करती है और इस तरह पूरी तरह से नियंत्रित होती है कि शरीर का कोई भी हिस्सा असहमति नहीं जताता।

अगर कोई चीज सहमति नहीं देती है तो वह शरीर का हिस्सा नहीं है, और उसे वास्तव में बिना किसी जीवन के बाहर निकाल दिया जाता है। विचार और इच्छा आत्मा से संबंधित हैं, शरीर से नहीं।

हम शरीर छोड़ चुकी आत्माओं और हमारे मिलने वाले लोगों के अंदर मौजूद आत्माओं के मानवीय रूप को नहीं देख पाते हैं, इसका कारण यह है कि हमारी दृष्टि का भौतिक अंग, आँख, इस दुनिया में देखने के संबंध में भौतिक है, और जो भौतिक है वह केवल भौतिक ही देखता है।

हालाँकि, जो आध्यात्मिक है, वह आध्यात्मिक ही देखता है; इसलिए जब भौतिक आँख ढक जाती है और आत्मा के साथ अपना समन्वय खो देती है, तब आत्माएँ अपने स्वयं के रूप में दिखाई देती हैं, जो कि मानवीय है। और यह न केवल आध्यात्मिक दुनिया में मौजूद आत्माओं के लिए बल्कि उन लोगों के लिए भी मानवीय रूप है जिनसे हम मिलते हैं, जबकि वे अभी भी अपने शरीर में हैं।

आत्मा का मानवीय रूप होने का कारण यह है कि हमारी आत्माओं के संबंध में हमें स्वर्ग के रूप में बनाया गया है, क्योंकि स्वर्ग और उसके सभी डिज़ाइन मानव मन में समाहित हैं। यह हमारी बुद्धि और ज्ञान को ग्रहण करने की क्षमता का स्रोत है। (इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि आप हमारी बुद्धि और ज्ञान को ग्रहण करने की क्षमता के बारे में बात करते हैं या स्वर्ग को ग्रहण करने की हमारी क्षमता के बारे में।)

वर्षों के दैनिक अनुभव ने मुझे इस बात का प्रमाण दिया है कि शरीर से अलग होने के बाद मानव आत्मा एक व्यक्ति है और एक समान रूप में है। मैंने इसे हज़ारों बार देखा है, मैंने ऐसी आत्माओं को सुना है, और मैंने उनसे इस तथ्य के बारे में भी बात की है कि दुनिया में लोग यह नहीं मानते कि वे वही हैं जो वे हैं।

मैंने उन्हें बताया है कि विद्वान सोचते हैं कि जो लोग ऐसी बातों पर विश्वास करते हैं वे भोले हैं। आत्माएँ इस बात से दुखी हैं कि इस तरह की अज्ञानता अभी भी दुनिया में और विशेष रूप से चर्च में आम है। लेकिन उनका कहना है कि यह

विश्वास विशेष रूप से शिक्षाविदों द्वारा फैलाया गया है जिन्होंने आत्मा के बारे में केवल शारीरिक आधार पर सोचा है - इंद्रियाँ।

इस तरह से सोचने से ये शिक्षाविद केवल यही निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि आत्मा केवल एक अवधारणा है, और चूँकि यह किसी भी माध्यम में मौजूद नहीं है जिसमें और जहाँ से इसे देखा जा सकता है, यह शुद्ध ईथर की तरह है, जो आसानी से वाष्पित हो जाता है, और यह केवल शरीर के मरने पर ही शून्य में विलीन हो सकता है।

लेकिन चूँकि चर्च वचन के आधार पर आत्मा की अमरता में विश्वास करता है, इसलिए ये विद्वान यह मानने के लिए मजबूर हैं कि आत्मा में जीवन का कुछ रंग है, कुछ विचार-संबंधी। इस रियायत के बावजूद, वे आत्मा को चीजों को महसूस करने की कोई क्षमता नहीं देते हैं जिस तरह से हम करते हैं, या कम से कम तब तक नहीं जब तक कि यह अपने शरीर के साथ फिर से जुड़ न जाए।

पुनरुत्थान का उनका सिद्धांत इस विचार पर आधारित है, जैसा कि उनका विश्वास है कि अंतिम निर्णय ( इसका सीधा और सरल अर्थ यही निकाला जा सकता है की यह वाक्य ‘ अंतिम निर्णय’ ; व्यक्तिगत सम्बन्धी तथ्य है , न ही जनसामान्य के लिए उपयोग किया गया है। हर एक व्यक्ति का अपना व्यक्तिगत जीवन पर आधारित अंतिम निर्णय, उसके व्यक्तिगत रूपसे मृत्यु हो जाने के बाद लिया जाता है। जो यमराज जी की विशेष सभा में , यमराज जी के उच्चस्तरीय अधिकारी गणों द्वारा निर्धारित किया जाता है और पूर्ण रूप से न्याय प्रधान होता है। न की अंधविश्वास या रूढ़िवादी प्रधान। ) आने पर आत्मा और शरीर का पुनर्मिलन होगा।

इसका परिणाम यह होता है कि जब लोग सिद्धांत और अटकलों को एक साथ रखते हैं और उस आधार पर आत्मा के बारे में सोचते हैं, तो वे इस तथ्य को समझ ही नहीं पाते कि आत्मा, आत्मा है और इसका एक मानवीय रूप है। इस तथ्य के बारे में तो कहना ही क्या कि आजकल शायद ही कोई जानता हो कि “आध्यात्मिक” का क्या अर्थ है, अकेले यह जानना तो दूर की बात है कि आत्मा वाले लोग (यानी आत्माएँ और देवदूत) का मानवीय रूप होता है।

इस प्रकार इस दुनिया से आने वाले लगभग सभी लोग यह जानकर बिल्कुल चकित हो जाते हैं कि वे जीवित हैं और वे पहले की तरह ही इंसान हैं, वे देख और सुन सकते हैं और बात कर सकते हैं, उनके शरीर में अभी भी स्पर्श की भावना है और कुछ भी नहीं बदला है।

लेकिन एक बार जब वे इससे उबर जाते हैं, तो वे इस बात से चकित हो जाते हैं कि चर्च को मृत्यु के बाद हमारे होने की इस स्थिति के बारे में कुछ भी पता नहीं है, और इसी तरह स्वर्ग और नरक के बारे में भी वह अनभिज्ञ है, भले ही इस दुनिया में रहने वाले सभी लोग दूसरे जीवन में हैं और जीवित लोग हैं।

क्योंकि वहाँ के लोग यह सोचते रहे कि यह बात पृथ्वी पर लोगों को दर्शन के माध्यम से स्पष्ट क्यों नहीं की गई, क्योंकि चर्च के विश्वास के लिए इसके बारे में जानना महत्वपूर्ण है, उन्हें एक स्वर्गीय स्रोत द्वारा बताया गया कि जब भी प्रभु प्रसन्न होंगे, तब ऐसे दर्शन दिए जा सकते हैं - इससे आसान कुछ भी नहीं हो सकता।

लेकिन, उन्हें बताया गया कि भले ही लोगों को ऐसे दर्शन हों, कोई भी उन पर विश्वास नहीं करेगा, क्योंकि वे सभी इसके बिल्कुल विपरीत होने का विश्वास कर चुके हैं। जब हम पहली बार आत्माओं की दुनिया में प्रवेश करते हैं (जो कि अभी वर्णित पुनर्जागृति के तुरंत बाद होता है), हमारा चेहरा और हमारी आवाज़ वैसी ही होती है जैसी वे दुनिया में थीं।

ऐसा इसलिए है क्योंकि उस समय हम ऐसी स्थिति में होते हैं जिसमें हम अपने बाहरी स्व पर केंद्रित होते हैं, और हमारा आंतरिक स्व अभी तक हमारे सामने प्रकट नहीं हुआ है। यह हमारी मृत्यु के बाद की प्रारंभिक अवस्था है। हालाँकि, बाद में हमारा चेहरा बदल जाता है और काफी अलग हो जाता है।

यह उस शासक प्रेम की तरह दिखाई देता है जिस पर हमारा मन दुनिया में गहराई से केंद्रित है, हमारे शरीर के भीतर आत्मा की विशेषता वाला प्रेम, क्योंकि हमारी आत्मा का चेहरा हमारे शरीर के चेहरे से बहुत अलग है। हमें अपना भौतिक चेहरा अपने माता-पिता से मिलता है और हमारा आध्यात्मिक चेहरा हमारे शासक प्रेम से, जिसका हमारा चेहरा एक छवि बनाता है।

हमारी आत्मा हमारे भौतिक जीवन के समाप्त होने के बाद, जब बाहरी आवरण हटा दिए जाते हैं, यह चेहरा धारण करती है। मैंने दुनिया से कुछ नए लोगों को देखा है और उनके चेहरों और आवाज़ों से उन्हें पहचाना है; लेकिन जब मैंने उन्हें बाद में देखा, तो मैं उन्हें पहचान नहीं पाया। जिन लोगों का शासक प्रेम अच्छा था उनके चेहरे सुंदर थे, जबकि जिन लोगों का शासक प्रेम बुरा था उनके चेहरे बदसूरत थे।

अगर हमारी आत्मा को उसके वास्तविक रूप में देखा जाए, तो यह हमारे प्रेम के समान है। और हमारा चेहरा हमारे प्रेम का बाहरी आकार मात्र है। हमारे चेहरे

बदलने का कारण यह है कि दूसरे जीवन में किसी को भी किसी ऐसी चीज़ से प्यार करने का दिखावा करने की अनुमति नहीं है जिसे वह वास्तव में प्यार नहीं करता है, इसलिए हम ऐसा चेहरा नहीं बना सकते जो उस प्यार के विपरीत हो जो हमें मार्गदर्शन करता है।

हम सभी एक ऐसी स्थिति में चले जाते हैं जिसमें हम वही कहते हैं जो हम सोचते हैं और अपने भावों और कार्यों में वही दिखाते हैं जो हम करना चाहते हैं। यही कारण है कि हमारे चेहरे उस चीज़ का आकार लेते हैं जिसे हम प्यार करते हैं और उसकी एक छवि बनाते हैं; और यही कारण है कि दुनिया में एक-दूसरे को जानने वाले सभी लोग अभी भी आत्माओं की दुनिया में एक-दूसरे को पहचानते हैं, लेकिन स्वर्ग या नर्क में नहीं।

पाखंडियों के चेहरे दूसरे लोगों की तुलना में अधिक धीरे-धीरे बदलते हैं, क्योंकि निरंतर अभ्यास से उन्होंने अपने भीतर के स्व को अच्छे के लिए प्यार के नकली रूप में व्यवस्थित करने की आदत बना ली है। इसलिए लंबे समय तक वे काफी आकर्षक लगते हैं। हालाँकि, चूँकि यह झूठा मुखौटा धीरे-धीरे हटा दिया जाता है और उनके मन के गहरे तत्व धीरे-धीरे उस आकार में व्यवस्थित हो जाते हैं जिससे वे प्यार करते हैं, वे दूसरे लोगों की तुलना में अधिक बदसूरत हो जाते हैं।

पाखंडी वे लोग हैं जो स्वर्गदूतों की तरह बात करते हैं लेकिन जो अंदर से केवल भौतिक चीज़ों का सम्मान करते हैं, ईश्वरीय सत्ता का नहीं, और इसलिए वे चर्च और स्वर्ग से जुड़ी किसी भी चीज़ की वास्तविकता को नकारते हैं। एक बात जिसके बारे में हमें निश्चित होना चाहिए वह यह है कि अगर हमने ईश्वरीय सत्यों से गहराई से प्यार किया है और उनके अनुसार जीवन जिया है, तो मृत्यु के बाद हमारा मानव रूप और भी अधिक सुंदर होगा, क्योंकि हमारे गहरे स्तर इन सत्यों के प्रति हमारे प्यार और हमारे जीने के तरीके के अनुसार खुलते और आकार लेते हैं।

इसलिए हमारा प्यार जितना गहरा होगा और जितना अधिक यह स्वर्ग जैसा होगा, हमारे चेहरे उतने ही सुंदर होंगे। यही कारण है कि जो स्वर्गदूत सबसे गहरे स्वर्ग में हैं वे सबसे सुंदर हैं - क्योंकि वे स्वर्गीय प्रेम के रूप हैं। दूसरी ओर दूसरी ओर, ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने ईश्वरीय सत्यों को अपने बाहरी व्यक्तित्व से अधिक प्यार किया है और इस कारण से वे उनके अनुसार अधिक सतही तरीके से जीते हैं, और वे कम सुंदर हैं।

ऐसा इसलिए है क्योंकि उनके चेहरे से केवल अधिक सतही गुण ही चमकते हैं; और उन सतही गुणों के माध्यम से कोई गहरा, स्वर्गीय प्रेम नहीं चमक सकता।

और अगर वह प्रेम नहीं चमकता है, तो स्वर्ग का वास्तविक स्वरूप भी नहीं चमकता है। उनके चेहरों में आप कुछ ऐसा देख सकते हैं जो स्वर्ग की तुलना में धुंधला है - कुछ ऐसा जो जीवन में नहीं आ सकता, क्योंकि अंदर कोई गहरा जीवन उसे रोशन नहीं कर रहा है।

संक्षेप में कहें तो: कोई भी चीज़ जितनी गहरी होती है, वह पूर्णता के उतने ही करीब होती है; यह जितनी अधिक सतही होती है, यह पूर्णता से उतनी ही दूर होती है। और हमारी सुंदरता इस बात पर निर्भर करती है कि हम पूर्णता के कितने करीब हैं।

मैंने तीसरे स्वर्ग के स्वर्गदूतों के चेहरे इतने सुंदर देखे हैं कि कोई भी चित्रकार, अपने सभी कौशल और रंग के साथ, उनके प्रकाश का एक अंश भी नहीं बना सकता या उनके चेहरों पर दिखाई देने वाली चमक और जीवन शक्ति के हज़ारवें हिस्से का भी मुकाबला नहीं कर सकता।

इसके विपरीत, सबसे बाहरी स्वर्ग के स्वर्गदूतों के चेहरे को संभवतः एक पेंटिंग में कैद किया जा सकता है। अंत में, मैं एक ऐसा रहस्य बताना चाहूँगा जो पहले कभी नहीं बताया गया: प्रभु से आने वाली हर अच्छी और सच्ची चीज़ जो स्वर्ग बनाती है, वह एक इंसान के रूप में है।

यह न केवल स्वर्ग की समग्रता के लिए, बड़े पैमाने पर, बल्कि स्वर्ग के प्रत्येक व्यक्तिगत भाग के लिए, सबसे छोटे पैमाने पर भी सच है। इस स्वर्गीय रूप का उन सभी पर प्रभाव पड़ता है जो प्रभु से अच्छी और सच्ची चीज़ों को ग्रहण करते हैं: स्वर्ग में जितने ज़्यादा लोग इन चीज़ों को ग्रहण करते हैं, वे उतने ही ज़्यादा सच्चे इंसान बनते हैं।

यही कारण है कि स्वर्ग हर जगह एक जैसा है, दोनों ही मामलों में जो साझा किया जाता है  सभी और उसके अलग-अलग हिस्सों में। यही कारण है कि मानव रूप पूरे स्वर्ग का, और प्रत्येक समुदाय का, और प्रत्येक देवदूत का रूप है। और, यह जोड़ा जाना चाहिए, यही कारण है कि मानव रूप स्वर्गदूतों के बीच पाए जाने वाले स्वर्गीय प्रेम से पैदा हुए व्यक्तिगत विचारों द्वारा लिया गया रूप है।

यह रहस्य शायद धरती पर किसी को समझ में न आए, लेकिन यह स्वर्गदूतों के लिए बिल्कुल सही है, क्योंकि वे स्वर्ग के प्रकाश में खड़े हैं।

## हम अपने पीछे कुछ नहीं छोड़ते सिवाय अपने सांसारिक शरीर के

बार-बार के अनुभव ने मुझे साबित कर दिया है कि जब हम भौतिक दुनिया से आध्यात्मिक दुनिया में जाते हैं, जो तब होता है जब हम मरते हैं, तो हम अपने साथ वह सब कुछ ले जाते हैं जो हमारे चरित्र से संबंधित है सिवाय अपने सांसारिक शरीर के।

वास्तव में, जब हम आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश करते हैं, या मृत्यु के बाद अपने जीवन में, हम उसी शरीर में होते हैं जैसे हम इस दुनिया में थे। चूँकि हम कोई अंतर महसूस नहीं करते या देखते नहीं हैं, ऐसा लगता है जैसे कुछ भी नहीं बदला है। हालाँकि, अब हमारा शरीर आध्यात्मिक है, जिसका अर्थ है कि यह सांसारिक पदार्थ से अलग हो गया है और शुद्ध हो गया है।

इसके अलावा, जब कोई आध्यात्मिक चीज़ आध्यात्मिक चीज़ को छूती है और देखती है, तो यह ठीक वैसा ही है जैसे कोई भौतिक चीज़ किसी भौतिक चीज़ को छूती और देखती है।

इसलिए जब हम आत्मा बन जाते हैं, तो हमारी कोई भी इंद्रिय हमें यह नहीं बताती कि हम उस शरीर में नहीं हैं जिसमें हम दुनिया में रहते थे, और इसलिए हमें एहसास नहीं होता कि हम मर चुके हैं। आत्मा-लोगों के रूप में, हमारे पास दुनिया में मौजूद हर बाहरी और आंतरिक इंद्रिय है।

हम वैसे ही देखते हैं जैसे पहले देखते थे, हम वैसे ही सुनते और बोलते हैं जैसे पहले सुनते और बोलते थे; हम सूँघते और चखते हैं; जब हमें छुआ जाता है तो हम उसे वैसे ही महसूस करते हैं जैसे पहले करते थे; हम चाहते हैं, कामना करते हैं, लालसा करते हैं, सोचते हैं,  विचार करते हैं, प्रेरित होते हैं, प्यार करते हैं, और उसी तरह से इरादा करते हैं जैसे हम पहले करते थे।

अध्ययनशील लोग अभी भी उसी तरह पढ़ते और लिखते हैं जैसे वे पहले करते थे। एक शब्द में, जब हम एक जीवन से दूसरे में जाते हैं, या एक दुनिया से दूसरी दुनिया में जाते हैं, तो यह एक भौतिक स्थान से दूसरे में जाने जैसा है; और हम अपने साथ वह सब कुछ ले जाते हैं जो हमारे पास मनुष्य के रूप में था, इस हद तक कि यह कहना गलत होगा कि हमने मृत्यु के बाद अपना कुछ भी खो दिया है, जो केवल सांसारिक शरीर की मृत्यु है।

हम अपने साथ अपनी सांसारिक स्मृति भी ले जाते हैं, क्योंकि हम बचपन से लेकर जीवन के अंत तक दुनिया में जो कुछ भी सुना, देखा, पढ़ा, सीखा या सोचा है, उसे बरकरार रखते हैं। लेकिन चूँकि हमारी स्मृति में रहने वाली सांसारिक वस्तुएँ आध्यात्मिक दुनिया में पुनः प्राप्त करने की हमारी शक्ति से परे हैं, वे वहाँ उसी तरह निष्क्रिय हो जाती हैं जैसे वे तब होती हैं जब हम उनके बारे में नहीं सोच रहे होते हैं।

हालाँकि, जब प्रभु को अच्छा लगे तो उन्हें पुनः प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन मुझे सांसारिक स्मृति और मृत्यु के बाद उसकी स्थिति के बारे में जल्द ही और कुछ कहना होगा। जो लोग अपनी इंद्रियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, वे यह मानने में पूरी तरह असमर्थ होते हैं कि मृत्यु के बाद हमारी स्थिति ऐसी होती है, क्योंकि वे ऐसी किसी चीज़ की कल्पना नहीं कर सकते। ऐसे लोग केवल भौतिक स्तर पर ही सोच सकते हैं, यहाँ तक कि आध्यात्मिक मामलों के बारे में भी।

इसका मतलब यह है कि कोई भी चीज़ जिसे वे महसूस नहीं करते हैं - यानी, जो कुछ भी वे अपनी भौतिक आँखों से नहीं देखते हैं और अपने हाथों से नहीं छूते हैं - वे कहते हैं कि वह मौजूद नहीं है। फिर भी, आध्यात्मिक दुनिया में हमारे जीवन और भौतिक दुनिया में हमारे जीवन के बीच का अंतर काफी है, हमारी बाहरी इंद्रियों और जिस तरह से वे हमें प्रभावित करते हैं, और हमारी आंतरिक इंद्रियों और जिस तरह से वे हमें प्रभावित करते हैं, दोनों के संबंध में। जो लोग स्वर्ग में हैं वे मानसिक रूप से कहीं अधिक संवेदनशील हैं।

यानी, वे देखते हैं और  जब वे इस दुनिया में थे, तब की तुलना में अब वे अधिक विवेकपूर्ण ढंग से सुनते और सोचते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे स्वर्ग के प्रकाश में देख रहे हैं, जो दुनिया के प्रकाश से बहुत अधिक है, और वे आध्यात्मिक वातावरण के माध्यम से सुनते हैं जो पृथ्वी के वातावरण से बहुत अधिक है। इससे उनकी बाहरी इंद्रियों में जो अंतर आता है, वह उतना ही बड़ा है जितना हम भौतिक दुनिया में साफ आसमान और बादलों की अस्पष्टता के बीच या दोपहर के प्रकाश और शाम के धुंधलेपन के बीच देखते हैं।

चूँकि स्वर्ग का प्रकाश दिव्य सत्य है, इसलिए यह स्वर्गदूतों को दृष्टि से छोटी से छोटी चीज़ों को भी नोटिस करने और उनमें अंतर करने में सक्षम बनाता है। इसके अलावा, उनकी बाहरी दृष्टि उनकी आंतरिक दृष्टि (उनकी समझ) से मेल खाती है, क्योंकि स्वर्गदूतों के लिए प्रत्येक दृष्टि दूसरे में प्रवाहित होती है और वे एक ही क्षमता के रूप में कार्य करते हैं। यही कारण है कि स्वर्गदूतों की बाहरी दृष्टि और उनकी आंतरिक दृष्टि दोनों ही इतनी तेज़ हैं।

उनकी सुनने की क्षमता उनकी उच्चतर धारणा के समान ही होती है, जो उनकी समझ और इच्छाशक्ति दोनों का कार्य है। इसलिए दूसरों के स्वर और शब्दों में, स्वर्गदूत बोलने वाले की भावना और विचार की थोड़ी सी भी छाया को पकड़ लेते हैं - स्वर में भावना की छाया और शब्दों में विचार की छाया।

हालाँकि, स्वर्गदूतों की अन्य इंद्रियाँ उनकी दृष्टि और श्रवण की तरह उतनी उत्कृष्ट रूप से तीक्ष्ण नहीं होती हैं, क्योंकि दृष्टि और श्रवण उनकी बुद्धि और विवेक की सेवा करते हैं, जबकि अन्य इंद्रियाँ ऐसा नहीं करती हैं। यदि अन्य इंद्रियाँ भी उतनी ही तीक्ष्ण होतीं, तो वे ज्ञान में स्वर्गदूतों को मिलने वाले प्रकाश और आनंद को छीन लेते और उनकी जगह भौतिक इच्छाओं से उत्पन्न होने वाले सुखों में आनंद भर देते जो बुद्धि को और अधिक अस्पष्ट और कमजोर कर देते हैं जैसे-जैसे वे मजबूत होते जाते हैं।

यह दुनिया में लोगों के साथ भी होता है, जो आध्यात्मिक सत्य के संबंध में जितना अधिक तीक्ष्ण होते जाते हैं, उतने ही अधिक मंद और नासमझ होते जाते हैं भोजन की अपनी भूख को संतुष्ट करते हैं और शारीरिक स्पर्श की संतुष्टि के लिए शरीर की लालसा को पूरा करते हैं।

स्वर्ग के स्वर्गदूतों की गहरी इंद्रियाँ, जो उनके विचार और भावना से जुड़ी हैं, दुनिया में मौजूद लोगों की तुलना में अधिक उत्कृष्ट रूप से तीक्ष्ण और पूर्णता के अधिक करीब हैं। जहाँ तक दुनिया छोड़ते समय हमारी पूरी याददाश्त बनाए रखने की बात है, मुझे कई उदाहरणों से यह दिखाया गया है और मैंने उल्लेख करने लायक बहुत कुछ देखा और सुना है।

मैं कुछ उदाहरणों को सूचीबद्ध करना चाहूँगा। ऐसे लोग थे जिन्होंने दुनिया में किए गए अपराधों और अपराधों से इनकार किया। उन्हें निर्दोष के रूप में देखे जाने से रोकने के लिए, उनके जीवन की शुरुआत से अंत तक कालानुक्रमिक क्रम में उनकी अपनी स्मृति से सब कुछ प्रकट और निकाला गया।

इनमें से अधिकांश अपराध व्यभिचार और व्यभिचार के कार्य थे। ऐसे लोग थे जिन्होंने दुर्भावनापूर्ण कौशल से दूसरों को धोखा दिया था और उनसे चोरी की थी। उनके धोखे और चोरियाँ भी एक के बाद एक बताई गईं, जिनमें से कई के बारे में दुनिया में उनके अलावा किसी को भी नहीं पता था।

उन्होंने उन्हें भी स्वीकार किया, क्योंकि वे दिन की तरह स्पष्ट थे, साथ ही वे सभी विचार, इरादे, सुख और भय जो उस समय उनके दिमाग में घूम रहे थे। ऐसे लोग थे जिन्होंने रिश्वत ली थी और न्यायिक निर्णयों से पैसा कमाया था।

उनकी अपनी यादों के आधार पर भी इसी तरह जाँच की गई, और उनके पहले पदभार ग्रहण करने से लेकर अंत तक की हर बात बताई गई।

उन्होंने कितना लिया, किस तरह की चीजें, किस कीमत पर ली, इसके सैकड़ों-हजारों विवरण समय, उनकी मानसिक स्थिति और उनके इरादे, सभी को एक साथ याद दिलाया गया और उन्हें दिखाया गया। कुछ मामलों में, उल्लेखनीय रूप से, जिन बहीखातों में उन्होंने इन कार्यों को दर्ज किया था, उन्हें खोला गया और उन्हें पृष्ठ दर पृष्ठ पढ़ा गया।

ऐसे पुरुष थे जिन्होंने निर्दोष महिलाओं को बहकाया था ताकि उन्हें भ्रष्ट किया जा सके और उनका उल्लंघन किया जा सके। उन्हें एक समान निर्णय के लिए बुलाया गया, और विवरण उनकी स्मृति से निकाला गया और सूचीबद्ध किया गया। युवतियों और अन्य लोगों के वास्तविक चेहरे इस तरह प्रस्तुत किए गए जैसे कि वे व्यक्तिगत रूप से वहां मौजूद हों, साथ ही साथ पुरुष उन्हें कहां ले गए, पुरुषों ने उन्हें क्या बताया, वे क्या सोच रहे थे। यह तुरंत किया गया जैसे कि जब कोई चीज वास्तव में प्रत्यक्ष रूप से देखी जा रही हो।

कभी-कभी ये प्रस्तुतियाँ घंटों तक चलती थीं। एक आदमी था जो दूसरे लोगों के बारे में बुरा बोलने में कोई संकोच नहीं करता था। मैंने उनके द्वारा की गई बदनामी को कालक्रमानुसार सुना, और उनके खिलाफ उनकी झूठी गवाही भी सुनी - वास्तविक शब्द, और वह किस व्यक्ति की निंदा कर रहा था, और कौन मौजूद था।

ये सभी विवरण एक ही झटके में सामने लाए गए और प्रस्तुत किए गए जैसे कि वे वास्तविक जीवन के हों, हालाँकि उन्होंने दुनिया में रहते हुए उन्हें बहुत सावधानी से छिपा कर रखा था। एक आदमी था जिसने किसी कुटिल बहाने से अपने एक रिश्तेदार को धोखा दिया था। उसे उसी तरह दोषी ठहराया गया और सजा सुनाई गई। उल्लेखनीय रूप से, उनके द्वारा आदान-प्रदान किए गए पत्रों और दस्तावेजों को मुझे जोर से पढ़ा गया, और उसने कहा कि एक भी शब्द गायब नहीं था।

इसी आदमी ने अपनी मौत से ठीक पहले एक पड़ोसी को भी जहर देकर मार डाला था, एक तथ्य जो उजागर हुआ था  निम्नलिखित तरीके से। वह अपने पैरों के नीचे एक खाई खोदता हुआ दिखाई दिया, और जब यह खोदा गया, तो एक आदमी कब्र से बाहर आया और उस पर चिल्लाया, “तुमने मेरे साथ क्या किया है?”

तब सब कुछ सामने आ गया—कैसे ज़हर देने वाले ने उसके साथ दोस्ताना तरीके से बात की और उसे पेय पेश किया, उसने पहले क्या सोचा था, और उसके बाद क्या हुआ। एक बार जब यह उजागर हो गया, तो हत्यारे को नरक की निंदा की गई। एक शब्द में, दुष्ट आत्माओं द्वारा किए गए सभी बुराइयाँ, अपराध, चोरी, धोखाधड़ी और धोखे उन्हें स्पष्ट कर दिए गए और सीधे उनकी अपनी यादों से खींचे गए, और उन्हें दोषी ठहराया गया।

वे संभवतः किसी भी चीज़ से इनकार नहीं कर सकते, क्योंकि सभी परिस्थितियाँ एक साथ प्रस्तुत की गई हैं। मैंने यह भी सुना है कि स्वर्गदूतों ने एक व्यक्ति की स्मृति से वह सब कुछ देखा और प्रदर्शित किया जो उसने सोचा था, एक दिन के बाद एक, एक महीने के दौरान, एक भी गलती नहीं की। ये यादें उसे ऐसे याद आईं मानो वह खुद उन्हीं दिनों में वापस आ गया हो।

इन घटनाओं से हम समझ सकते हैं कि हम अपनी पूरी याददाश्त अपने साथ ले जाते हैं, और इस दुनिया में कुछ भी ऐसा छिपा नहीं है जो मृत्यु के बाद पता न चले, और प्रभु के शब्दों के अनुसार सार्वजनिक रूप से पता न चले: "कुछ भी छिपा नहीं है जो प्रकट न हो, और कुछ भी गुप्त नहीं है जो जाना न जाए।

जो कुछ तुमने अँधेरे में कहा है वह उजाले में सुना जाएगा, और जो तुमने किसी के कान में कहा है वह छतों पर घोषित किया जाएगा" । जब मृत्यु के बाद हमें इस बात का सामना करना पड़ता है कि हमने जीवन में क्या किया है, तो स्वर्गदूत जिन्हें हमें जाँचने का काम दिया गया है, वे हमारे चेहरों को खोजते हुए देखते हैं और अपनी जाँच जारी रखते हैं।

हमारे पूरे शरीर में, पहले एक हाथ की उंगलियों से शुरू होकर फिर दूसरे हाथ की उंगलियों से, और बाकी हर चीज़ में जारी रहती है। जब मैंने सोचा कि ऐसा क्यों है, तो मुझे इसका कारण बताया गया। इसका कारण यह है कि जिस तरह हमारे विचार और इच्छा का विवरण मस्तिष्क पर अंकित होता है, क्योंकि यहीं से उनकी शारीरिक शुरुआत होती है, वे पूरे शरीर पर भी अंकित होते हैं, क्योंकि हमारे विचार और हमारी इच्छा से जो कुछ भी उत्पन्न होता है वह उस बिंदु से शरीर में चला जाता है जहाँ से वह शुरू होता है और वहाँ अपने अंतिम रूप में साकार होता है।

यही कारण है कि हमारी इच्छा से आने वाली चीज़ें और हमारी इच्छा से उत्पन्न होने वाले विचार से जो चीज़ें हमारी स्मृति पर अंकित होती हैं, वे न केवल मस्तिष्क पर बल्कि पूरे व्यक्ति पर भी अंकित होती हैं, जहाँ वे एक पैटर्न में आकार लेती हैं जो शरीर के अंगों के पैटर्न का अनुसरण करती हैं।

इसलिए मैं देख सकता था कि हमारा समग्र चरित्र उन चीज़ों पर निर्भर करता है जो हम करना चाहते हैं, और परिणामस्वरूप हमारे पास जो विचार हैं। वास्तव में, यह कहा जा सकता है कि बुरे लोग अपने बुरे होते हैं और अच्छे लोग अपने अच्छे होते हैं। हम इससे यह भी समझ सकते हैं कि हमारे जीवन की पुस्तक का क्या अर्थ है, जिसका उल्लेख वचन में किया गया है।

विशेष रूप से, इसका अर्थ यह है कि हमारे सभी कार्य और हमारे सभी विचार हमारे पूरे व्यक्तित्व पर लिखे हुए हैं और ऐसा लगता है जैसे कि वे किसी पुस्तक से पढ़े गए हैं जब उन्हें हमारी स्मृति से बाहर बुलाया जाता है। वे एक तरह की छवि के रूप में प्रकट होते हैं जब हमारी आत्मा को स्वर्ग के प्रकाश में देखा जाता है।

मैं इस बारे में कुछ उल्लेखनीय जोड़ना चाहूँगा कि मृत्यु के बाद हम जो स्मृति रखते हैं, वह कुछ ऐसा है जिसने मुझे आश्वस्त किया कि न केवल सामान्य सामग्री बल्कि सबसे छोटी जानकारी भी जो हमारी स्मृति में दर्ज हो जाती है, वह हमेशा बनी रहती है और कभी मिटती नहीं है।

मैंने कुछ पुस्तकों में सांसारिक लेखन की तरह लिखा हुआ देखा, और मैंने देखा कि वे एक तरह की छवि की तरह हैं।  मुझे बताया गया कि ये उन लोगों की यादों से आए हैं जिन्होंने मूल रूप से इन्हें लिखा था - कि भौतिक दुनिया में उन लोगों द्वारा लिखी गई पुस्तकों में से एक भी शब्द गायब नहीं था। मुझे यह भी बताया गया कि उसी तरह, हर चीज़ के बारे में सबसे छोटी जानकारी किसी दूसरे व्यक्ति की यादों से प्राप्त की जा सकती है, यहाँ तक कि वे चीज़ें भी जो व्यक्ति धरती पर रहते हुए भूल गया था।

इसका कारण भी समझाया गया: अर्थात्, हमारे पास एक बाहरी और एक आंतरिक स्मृति होती है। बाहरी हमारे भौतिक व्यक्ति की होती है और आंतरिक हमारे आध्यात्मिक व्यक्ति की होती है। हमने जो सोचा, इच्छा की, कहा और किया, यहाँ तक कि हमने जो सुना और देखा, उसका विवरण हमारी आंतरिक या आध्यात्मिक स्मृति पर अंकित है। वहाँ कुछ भी मिटाने का कोई तरीका नहीं है, क्योंकि सब कुछ एक साथ हमारी आत्मा पर और हमारे शरीर के अंगों पर लिखा हुआ है, जैसा कि उल्लेख किया गया है।

इसका मतलब यह है कि हमारी आत्मा हमारे विचारों और हमारी इच्छा के अनुसार बनती है। मुझे पता है कि ये बातें तर्क के विपरीत लगती हैं, और इसलिए इन पर विश्वास करना कठिन है, लेकिन फिर भी ये सच हैं। इसलिए

कभी भी यह न मानें कि हमने कुछ ऐसा सोचा है या गुप्त रूप से किया है जो मृत्यु के बाद छिपा रहेगा। इसके बजाय यह मानें कि निश्चित रूप से सब कुछ दिन के उजाले में सामने आएगा।

हालाँकि हमारी बाहरी या भौतिक स्मृति मृत्यु के बाद भी हमारा हिस्सा है, लेकिन जब हम दूसरे जीवन में पहुँचते हैं तो हम ऐसी कोई भी चीज़ याद नहीं रख पाते जो केवल भौतिक हो। हम अपनी स्मृति से केवल आध्यात्मिक चीज़ों को ही पुनः प्राप्त कर सकते हैं जो पत्राचार द्वारा भौतिक चीज़ों से जुड़ी हैं। फिर भी, जब उन पत्राचारों को दृष्टिगत रूप से प्रस्तुत किया जाता है, तो वे वैसे ही दिखते हैं जैसे वे भौतिक दुनिया में थे।

ऐसा इसलिए है क्योंकि हम स्वर्ग में जो कुछ भी देखते हैं वह वैसा ही दिखता है जैसा कि वह दुनिया में था, भले ही सार रूप में वह भौतिक न होकर आध्यात्मिक हो हालाँकि, जहाँ तक हमारी बाहरी या भौतिक स्मृति का सवाल है, चूँकि इसकी सामग्री पदार्थ, समय, स्थान और भौतिक दुनिया की विशेषता वाली हर चीज़ से ली गई है, यह आत्मा के लिए वही कार्य नहीं करती जो इसने दुनिया में किया था।

ऐसा इसलिए है क्योंकि दुनिया में, जब हम अपनी सोच को अपनी बाहरी इंद्रियों पर आधारित करते हैं और साथ ही अपनी आंतरिक इंद्रियों पर नहीं - जो हमारी उच्च समझ से संबंधित हैं - हम भौतिक स्तर पर सोच रहे थे न कि आध्यात्मिक स्तर पर।

हालाँकि, दूसरे जीवन में, जब हमारी आत्मा आध्यात्मिक दुनिया में होती है, तो हम भौतिक स्तर पर नहीं बल्कि आध्यात्मिक स्तर पर सोचते हैं। आध्यात्मिक स्तर पर सोचना हमारी उच्च समझ, हमारी तर्क शक्ति के साथ सोचना है। यही कारण है कि जहाँ तक भौतिक चीज़ों का सवाल है, हमारी बाहरी या भौतिक स्मृति निष्क्रिय हो जाती है। हमारी स्मृति केवल उन्हीं चीज़ों का उपयोग करती है जो हमने दुनिया में उन भौतिक चीज़ों के माध्यम से प्राप्त की हैं और जिन्हें हमने अपनी तर्क क्षमता का हिस्सा बनाया है।

यही कारण है कि मृत्यु के बाद भी हमारे पास तर्क करने की क्षमता होती है, इस हद तक कि हमने इस दुनिया में भाषाओं और कलाओं और विज्ञानों के उपयोग के माध्यम से उस क्षमता को हासिल किया है, और इस हद तक नहीं कि हमने भाषाओं और कलाओं और विज्ञानों के बारे में अभी-अभी ज्ञान प्राप्त किया है।

मैंने ऐसे कई लोगों से बात की है, जिन्हें हिब्रू और ग्रीक और लैटिन जैसी प्राचीन भाषाओं के ज्ञान के कारण दुनिया में विद्वान माना जाता था, लेकिन जिन्होंने उन भाषाओं में लिखी गई चीज़ों के माध्यम से तर्क करने की अपनी क्षमता विकसित नहीं की थी। उनमें से कुछ ऐसे सरल लगते थे जैसे वे लोग जो उन भाषाओं के बारे में कुछ नहीं जानते थे; उनमें से कुछ मूर्ख लगते थे, लेकिन फिर भी वे दंभ से भरे हुए थे, मानो वे अन्य लोगों की तुलना में अधिक बुद्धिमान हों।

मैंने कुछ ऐसे लोगों से बात की है जिन्होंने दुनिया में रहते हुए बहुत कुछ लिखा था, उनमें से कुछ सभी तरह के शैक्षणिक क्षेत्रों में थे, ऐसे लोग जिन्होंने इसलिए सीखने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की थी। उनमें से कुछ इस बात पर बहस कर सकते थे कि सत्य सत्य है या नहीं। उनमें से कुछ ने समझा कि सत्य क्या है जब वे उन लोगों की ओर मुड़े जो सत्य के प्रकाश में थे; लेकिन चूंकि वे अभी भी यह समझना नहीं चाहते थे कि सत्य क्या है, इसलिए उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया जब वे अपने स्वयं के झूठे विचारों पर केंद्रित थे और इसलिए वास्तव में खुद थे।

उनमें से कुछ अशिक्षित लोगों से ज़्यादा नहीं जानते थे। इसलिए उन्होंने अपने द्वारा लिखे गए या कॉपी किए गए ग्रंथों के माध्यम से अपनी तर्क क्षमता को जिस तरह से विकसित किया था, उसके आधार पर वे भिन्न थे। फिर भी, अगर उन्होंने चर्च की सच्चाइयों का विरोध किया होता, अपनी सोच को अकादमिक विषयों पर आधारित किया होता, और उन्हें झूठे सिद्धांतों के बारे में खुद को समझाने के लिए इस्तेमाल किया होता, तो उन्होंने अपनी तर्क क्षमता विकसित नहीं की होती, बल्कि तर्क-वितर्क में केवल अपना कौशल विकसित किया होता - एक ऐसी क्षमता जो दुनिया में तर्क के साथ भ्रमित होती है, लेकिन वास्तव में एक अलग क्षमता है।

यह किसी भी चीज़ को साबित करने की क्षमता है, जो सत्य के बजाय झूठ को देखना है, यह सब पूर्व धारणाओं और भ्रमों के आधार पर। इस तरह के लोगों को कभी भी सत्य को पहचानने के लिए नहीं लाया जा सकता है, क्योंकि झूठे सिद्धांतों के आधार पर सत्य को देखना असंभव है - हालाँकि सच्चे सिद्धांतों के आधार पर यह देखना संभव है कि क्या झूठ है। हमारी तर्क क्षमता एक बगीचे या फूलों की क्यारी की तरह है, जैसे नई जोती हुई ज़मीन।

हमारी स्मृति मिट्टी है, अनुभव से प्राप्त जानकारी और ज्ञान बीज हैं, और स्वर्ग का प्रकाश और गर्मी उन्हें उत्पादक बनाती है। अंतिम दो के बिना कोई अंकुरण नहीं होता है। इसलिए हममें कोई अंकुरण नहीं है जब तक कि स्वर्ग का प्रकाश,

जो दिव्य सत्य है, और स्वर्ग की गर्मी, जो दिव्य प्रेम है, को अंदर आने दिया जाता है। वे हमारी तर्क करने की क्षमता का एकमात्र स्रोत हैं।

स्वर्गदूतों को इस बात का गहरा दुख है कि विद्वानों ने, अधिकांश भाग के लिए, प्रकृति को सभी चीजों के कारण के रूप में पहचानना जारी रखा है, और इसलिए उन्होंने अपने दिमाग के गहरे स्तरों को बंद कर दिया है जब तक कि वे सत्य के प्रकाश से सत्य का कोई निशान नहीं देख सकते हैं, जो स्वर्ग का प्रकाश है।

परिणामस्वरूप, दूसरे जीवन में विद्वानों को वास्तव में तर्क करने की उनकी क्षमता से वंचित किया जाता है, ताकि वे सरल और अच्छे लोगों के बीच गलत धारणाओं को फैलाने और उन्हें गुमराह करने के लिए तर्क का उपयोग न करें। उन्हें निर्जन क्षेत्रों में निर्वासित कर दिया जाता है। एक विशेष आत्मा इस तथ्य से नाराज थी कि वह अपने भौतिक जीवन के दौरान जो कुछ भी जानती थी, उसे याद नहीं कर सकती थी।

वह उस आनंद के लिए दुखी था जो उसने खो दिया था, क्योंकि उसने जो याद किया था वह उसके आनंद का मुख्य स्रोत था। हालाँकि, उसे बताया गया कि उसने कुछ भी नहीं खोया है और वह वह सब कुछ जानता है जो वह पहले जानता था। बस इतना था कि जिस दुनिया में वह अब रह रहा था, उसे अपनी याददाश्त से उस तरह की चीज़ों को वापस पाने की अनुमति नहीं थी।

उसे यह संतोष होना चाहिए कि उसके विचार और वाणी कहीं बेहतर थी, लगभग पूर्ण, और अब वह भौतिक तुच्छता के घने अंधकार में तर्क करने की अपनी शक्ति को नहीं दबाता था, जैसा कि वह पहले करता था, उन मामलों में जो उस राज्य में बेकार थे जहाँ वह अब पहुँच गया था। अब उसके पास वह सब कुछ था जो उसे अनंत काल तक जीने के लिए चाहिए था, और केवल उसी का उपयोग करके वह धन्य और खुश हो सकता था।

इसलिए यह मानना पूरी तरह से अज्ञानता थी कि उसकी बुद्धि मर गई थी क्योंकि इस राज्य में भौतिक दुनिया के तथ्य एक तरफ रख दिए गए थे और उसकी स्मृति में निष्क्रिय हो गए थे। उन्हें बताया गया कि इस मामले की सच्चाई यह है कि जितना अधिक मन को बाहरी आत्म और शरीर की इंद्रियों से बाहर निकाला जा सकता है, उतना ही वह आध्यात्मिक और स्वर्गीय चीजों की ओर बढ़ता है।

कभी-कभी दूसरे जीवन में यह दिखाने के लिए एक प्रदर्शन किया जाता है कि दो तरह की यादें कैसी होती हैं, और उन्हें दृश्यमान आकार दिया जाता है, हालांकि

आकार केवल दिखावा होते हैं। (उस दुनिया में कई चीजें दृश्य रूप में प्रस्तुत की जाती हैं जो हमारे लिए यहाँ विशुद्ध रूप से विचारों के दायरे में रहती हैं।) इन प्रदर्शनों में, बाहरी स्मृति को एक कठोर परत के रूप में दिखाया गया है, जबकि आंतरिक स्मृति मानव मस्तिष्क में पाए जाने वाले मज्जा पदार्थ की तरह दिखती है।

यह दिखावा हमें यह समझने में भी मदद करता है कि ये दो तरह की स्मृतियाँ कैसी होती हैं। जिन लोगों ने अपने भौतिक जीवन के दौरान केवल ज्ञान को याद रखने पर ध्यान केंद्रित किया है, बिना अपनी तर्क शक्ति विकसित किए, उनकी स्मृति में एक कठोर गुणवत्ता होती है जो अंदर से कठोर और टेंडन से धारीदार दिखती है।

जिन लोगों ने अपनी याददाश्त को गलत धारणाओं से भर दिया है, उनमें यह अव्यवस्थित चीज़ों के बेतरतीब ढेर की वजह से झबरा और रोएँदार दिखता है। जिन लोगों ने ज्ञान को उत्सुकता से याद किया है, खुद को और दुनिया को अपने दिमाग में सबसे ऊपर रखते हुए, यह एक साथ चिपका हुआ और हड्डीदार दिखता है।

जिन लोगों ने अर्जित तथ्यों, विशेष रूप से दर्शन के बारे में तथ्यों का उपयोग करके, ईश्वर के रहस्यों को जानने की कोशिश की है, बिना वास्तव में किसी भी चीज़ पर विश्वास किए जब तक कि वे पहले उन अर्जित तथ्यों से आश्वस्त न हों - ऐसे लोगों में स्मृति अंधकारमय दिखती है, और यह वास्तव में प्रकाश की किरणों को अवशोषित कर सकती है और उन किरणों को अंधकार में बदल सकती है।

जो लोग धोखेबाज और पाखंडी रहे हैं, उनकी स्मृति हाथीदांत की तरह हड्डीदार और कठोर दिखती है, और यह प्रकाश की किरणों को पीछे हटाती है हालाँकि, जिन लोगों ने उस भलाई पर ध्यान केंद्रित किया है जो हम प्रेम से करते हैं और उन सच्चाइयों पर जो हम विश्वास के कारण जानते हैं, उनमें ऐसी कोई कठोरता नहीं दिखती।

ऐसा इसलिए है क्योंकि उनकी आंतरिक स्मृति उनकी बाहरी स्मृति में प्रकाश की किरणें भेज रही है, और वे किरणें बाहरी स्मृति की सामग्री या अवधारणाओं में आकर रुक जाती हैं, और उन्हें वहाँ कुछ ऐसा मिल जाता है जो उन्हें समाहित कर सके (ऐसा लगता है जैसे वे अवधारणाएँ उनकी नींव या उनके नीचे की ज़मीन थीं)। ईश्वरीय डिज़ाइन में बाहरी स्मृति सबसे बाहरी परत है, जहाँ

आध्यात्मिक और स्वर्गीय मामले धीरे-धीरे अपनी रूपरेखा भरते हैं और तब तक दृढ़ रहते हैं, जब तक कि उसमें अच्छी और सच्ची सामग्री हो।

जब तक हम दुनिया में रह रहे हैं, अगर हम प्रभु के प्रति प्रेम में लगे हुए हैं और अपने पड़ोसी के प्रति प्रेमपूर्ण व्यवहार में लगे हुए हैं, तो हमारे पास और यहाँ तक कि हमारे अंदर भी दिव्य बुद्धि और ज्ञान है, लेकिन यह हमारी आंतरिक स्मृति की गहराई में छिपा हुआ है और तब तक दिखाई नहीं दे सकता जब तक हम अपने शरीर को नहीं छोड़ देते।

फिर हमारी भौतिक स्मृति सो जाती है, और हम अपनी आंतरिक स्मृति और अंततः अपनी वास्तविक देवदूत स्मृति के प्रति जागरूकता में जागृत हो जाते हैं। आत्माओं और स्वर्गदूतों के पास हमारी तरह ही स्मृति होती है। वे जो सुनते हैं और देखते हैं और सोचते हैं और इरादा करते हैं और करते हैं वह उनके साथ रहता है; और अपनी स्मृति के माध्यम से वे लगातार तर्क करने की अपनी क्षमता विकसित कर रहे हैं। यह प्रक्रिया हमेशा चलती रहती है।

यही कारण है कि आत्माएँ और स्वर्गदूत सत्य और अच्छे के अनुभवों के माध्यम से बुद्धि और ज्ञान में परिपूर्ण हो रहे हैं, ठीक वैसे ही जैसे हम हैं। यह तथ्य कि आत्माओं और स्वर्गदूतों के पास याद रखने की क्षमता है, एक और बात है जो मुझे बहुत सारे अनुभवों से पता चली है। मैंने वह सब कुछ देखा है जो उन्होंने सोचा और किया था, दोनों सार्वजनिक और निजी तौर पर, जब वे अन्य आत्माओं के साथ थे, तो उनकी याददाश्त से उन्हें याद किया गया।

मैंने ऐसे लोगों को भी देखा है, जो अपने अंदर एक साधारण अच्छाई के कारण, किसी सत्य पर केंद्रित थे; और एक बार जब वे अंतर्दृष्टि से भर गए, और उन अंतर्दृष्टियों से विकसित हुई बुद्धि के साथ, उन्हें स्वर्ग में ले जाया गया। हालांकि, हमारे लिए यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि ये लोग अंतर्दृष्टि से भरे नहीं हैं, और अंतर्दृष्टि से आने वाली समझ के साथ, दुनिया में जो अच्छा और सच्चा है उसके लिए स्नेह के स्तर से परे नहीं हैं।

वास्तव में, प्रत्येक आत्मा और देवदूत दुनिया में उसके पास मौजूद स्नेह की मात्रा और प्रकार को बरकरार रखता है, और बाद में इसे और अधिक भरकर परिपूर्ण किया जाता है। यह भरना हमेशा चलता रहता है, क्योंकि हर चीज अलग-अलग तरीकों से अनंत भिन्नता और समृद्धि के लिए सक्षम है, ताकि इसे गुणा किया जा सके और फल दिया जा सके। अच्छाई के किसी भी उदाहरण का कोई अंत नहीं है, क्योंकि इसका स्रोत अनंत है।

# मृत्यु के बाद हम कैसे होते हैं

कोई भी ईसाई वचन से जानता है कि मृत्यु के बाद भी हमारा जीवन जारी रहता है। यह कई जगहों पर कहता है कि हमें हमारे कार्यों के अनुसार आंका जाएगा और पुरस्कृत किया जाएगा। इसके अलावा, जो लोग अपने विचारों को करने के लिए अच्छाई और वास्तविक सत्य का उपयोग करते हैं, वे यह देखे बिना नहीं रह सकते कि जो लोग अच्छे जीवन जीते हैं वे स्वर्ग में प्रवेश करते हैं और जो बुरे जीवन जीते हैं वे नरक में जाते हैं।

हालाँकि, जो लोग बुराई करने के इरादे से रहते हैं, वे यह नहीं मानना चाहते कि मृत्यु के बाद उनकी स्थिति दुनिया में उनके जीवन पर निर्भर करती है। वे सोचते हैं - और विशेष रूप से जब उनका स्वास्थ्य खराब होने लगता है - कि स्वर्ग सभी लोगों को पूरी तरह से भगवान की दया से दिया जाता है, चाहे उन्होंने कैसे भी जीवन जिया हो। वे सोचते हैं कि स्वर्ग पाने के लिए केवल विश्वास की आवश्यकता होती है, जिसे वे जीवन जीने के तरीके से कोई लेना-देना नहीं मानते हैं।

हालाँकि वचन में कई जगहों पर यह कहा गया है कि हमें हमारे कार्यों के लिए आंका जाएगा और तदनुसार पुरस्कृत किया जाएगा, वचन में "कार्य" केवल उन कार्यों को संदर्भित नहीं करता है जो बाहरी रूप से दिखाई देते हैं। यह इस बात को भी संदर्भित करता है कि वास्तव में हमारे अंदर क्या क्रियाएं हैं। हर कोई जानता है, बेशक, कि हमारे सभी कार्य हमारी इच्छा और हमारे विचार से आते हैं।

अगर वे हमारी इच्छा और सोच से नहीं आते, तो वे मशीनों या रोबोटों द्वारा की जाने वाली हरकतों से बेहतर कुछ नहीं है। इसलिए, अगर आप उनके वास्तविक स्वरूप को देखें तो वे हमारी इच्छा और विचार की अभिव्यक्ति मात्र हैं। उन्हें अपनी आत्मा और जीवन हमारी इच्छा और विचार से मिलता है; वे बाहरी रूप में हमारी इच्छा और विचार हैं।

इसलिए हम जानते हैं कि हमारे कार्यों की गुणवत्ता उनकी इच्छा और विचार से निर्धारित होती है। अगर हमारी इच्छा और विचार अच्छे हैं, तो हमारे कार्य अच्छे हैं; लेकिन अगर हमारी इच्छा और विचार बुरे हैं, तो हमारे कार्य बुरे हैं, भले ही वे बाहर से एक जैसे दिखें। एक हज़ार लोग एक ही काम कर सकते हैं - यानी, वे हर कोई ऐसा कुछ कर सकता है जो दूसरों के काम से इतना मिलता-जुलता हो कि बाहरी रूप से आप शायद ही अंतर बता पाएँ - लेकिन हर कार्य, अगर आप देखें

कि वह वास्तव में क्या है, तो दूसरों से अलग होता है, क्योंकि यह एक अलग इरादे से होता है।

उदाहरण के लिए, किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति ईमानदारी और निष्पक्ष व्यवहार करना जिसे आप जानते हैं। एक व्यक्ति किसी दूसरे के प्रति ईमानदारी और निष्पक्षता से व्यवहार कर सकता है ताकि वह खुद के लिए ईमानदार और निष्पक्ष लगे और सम्मान प्राप्त करे; दूसरा व्यक्ति सांसारिक लाभ के लिए ऐसा कर सकता है; तीसरा व्यक्ति पुरस्कृत होने और अच्छे होने का श्रेय पाने के लिए ऐसा कर सकता है; चौथा मित्र बनाने के लिए ऐसा कर सकता है; पाँचवाँ व्यक्ति कानून की मुसीबत में पड़ने या अच्छी प्रतिष्ठा या नौकरी खोने के डर से ऐसा कर सकता है; छठा व्यक्ति किसी कारण से, यहाँ तक कि किसी बुरे कारण से भी लोगों को शामिल करने के लिए ऐसा कर सकता है; सातवाँ व्यक्ति लोगों को गुमराह करने के लिए ऐसा कर सकता है; और अन्य लोग अन्य कारणों से ऐसा कर सकते हैं।

लेकिन भले ही वे जो करते हैं वह अच्छा लगता हो (और किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति ईमानदारी और निष्पक्षता से व्यवहार करना जिसे आप जानते हैं निश्चित रूप से अच्छा है), फिर भी उनके कार्य बुरे हैं क्योंकि वे ऐसा इसलिए नहीं करते क्योंकि उन्हें ईमानदारी और निष्पक्षता पसंद है ईमानदारी और निष्पक्षता।

वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वे खुद से और भौतिक चीजों से प्यार करते हैं, खुद के और भौतिक चीजों के लिए। ईमानदारी और निष्पक्षता केवल वही काम करती है जिससे वे वास्तव में प्यार करते हैं, जैसे कि किराए के नौकर। जब वे नौकर अपने नियोक्ता के किसी काम के नहीं होते, तो उन्हें बेकार समझा जाता है और उन्हें निकाल दिया जाता है।

जब लोग किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति ईमानदारी और निष्पक्ष व्यवहार करते हैं जिसे वे जानते हैं, और वे वास्तव में ईमानदारी और निष्पक्षता के लिए प्यार से काम कर रहे होते हैं, तो वे जो करते हैं उसका बाहरी रूप वैसा ही दिखता है जैसा कि दूसरे करते हैं, [लेकिन फिर से, यह कई कारणों से किया जा सकता है]। इनमें से कुछ लोग अपने विश्वास की सच्चाई के कारण या आज्ञाकारिता के कारण ऐसा करते हैं, क्योंकि वचन ईमानदार और निष्पक्ष होने को एक मुख्य सिद्धांत बनाता है।

उनमें से कुछ लोग अपने विश्वास की अच्छाई के कारण या विवेक के कारण ऐसा करते हैं, क्योंकि वे धार्मिक भावना से प्रेरित होते हैं। उनमें से कुछ लोग

ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि अपने पड़ोसी के प्रति दयालु होना अच्छा है और पड़ोसी के कल्याण के बारे में सोचना महत्वपूर्ण है।

उनमें से कुछ लोग भगवान के प्रति अपने प्रेम की भलाई के कारण ऐसा करते हैं, क्योंकि जो अच्छा है उसे अपने लिए किया जाना चाहिए; इसी तरह जो ईमानदार और उचित है उसे ईमानदारी और निष्पक्षता के लिए किया जाना चाहिए। ये लोग इन अच्छी चीजों से प्यार करते हैं क्योंकि वे भगवान से आती हैं, और क्योंकि ईमानदारी और निष्पक्षता के अंदर कुछ दिव्य है जो भगवान से आता है।

इसलिए ईमानदारी और निष्पक्षता दिव्य हैं, अगर हम उन्हें उनके वास्तविक सार में देखें। इस तरह के लोगों के कार्य आंतरिक रूप से अच्छे होते हैं, इसलिए उनके कार्य बाहरी रूप से भी अच्छे होते हैं। जैसा कि पहले ही बताया गया है, चाहे कार्य बुरे हों या अच्छे, यह पूरी तरह से उनके विचार और इरादे से निर्धारित होता है, और विचार और इरादे के बिना वे बिल्कुल भी कार्य नहीं हैं, केवल बेजान हरकतें हैं।

हम क्रियाओं की इस चर्चा से समझ सकते हैं कि शब्द में कर्म शब्द का क्या अर्थ है। यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि यह हमारी इच्छा है जो हमें वह बनाती है जो हम हैं। विचार केवल इस सीमा तक योगदान देता है कि हमारे विचार हमारी इच्छा से आते हैं। तो, क्रियाएँ हमारे विचार और हमारी इच्छा दोनों से आती हैं। या दूसरे शब्दों में: प्रेम वह है जो हमें वह बनाता है जो हम हैं; विश्वास हमें वह बनाता है जो हम हैं केवल इस सीमा तक कि यह प्रेम से आता है; और क्रियाएँ प्रेम और विश्वास दोनों से आती हैं।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि हमारी इच्छा या प्रेम ही वह है जो हम वास्तव में हैं, क्योंकि जो चीजें किसी व्यक्ति से आती हैं वे उस व्यक्ति की होती हैं। ("आना" का अर्थ है एक ऐसे रूप में उत्पादित और प्रस्तुत किया जाना जिसे देखा और समझा जा सके।) इससे हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि प्रेम के बिना विश्वास वास्तव में क्या है - यह बिल्कुल भी विश्वास नहीं है, केवल जानकारी है जिसमें कोई आध्यात्मिक जीवन नहीं है।

प्रेम के बिना क्रियाओं के लिए भी यही सच है। वे बिल्कुल भी जीवित कार्य नहीं हैं, केवल मृत कार्य हैं जिनमें जीवन का आभास होता है, जो बुराई के प्रति प्रेम और झूठ में विश्वास से आता है। जीवन का यह आभास ही वह है जिसे हम आध्यात्मिक मृत्यु कहते हैं। हमें यह भी महसूस करना चाहिए कि हम अपने कार्यों में अपने पूरे अस्तित्व को दृश्यमान बनाते हैं।

हमारी इच्छा और विचार, या प्रेम और विश्वास जो हमारे आंतरिक अस्तित्व को बनाते हैं, तब तक पूर्ण नहीं होते जब तक वे हमारे बाहरी अस्तित्व को बनाने वाले कार्यों में प्रवेश नहीं करते। हमारे कार्य वास्तव में अंतिम रूप हैं जिनमें हमारा प्रेम और विश्वास समाप्त होता है। यदि हमारी इच्छा और विचार हमारे कार्यों में अपने अंतिम रूप में नहीं आते हैं, तो वे ऐसी चीज़ों की तरह हैं जिन्हें अंतिम रूप नहीं दिया गया है और जिनका अभी तक कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं है, और इसलिए वे ऐसी चीज़ों की तरह हैं जो अभी तक हमारे अंदर नहीं हैं।

जब हम कर सकते हैं तब भी कुछ करने के बारे में सोचना और उसे करने की इच्छा करना, एक जार में बंद करके उसे दबा देने वाली लौ की तरह है, या यह रेत में बोए गए बीज की तरह है जो बढ़ता नहीं है बल्कि प्रजनन करने की अपनी शक्ति के साथ ही मर जाता है।

हालाँकि, सोचना, इच्छा करना और करना, एक ऐसी लौ की तरह है जो अपने प्रकाश और गर्मी को चारों ओर फैलाती है, या मिट्टी में बोए गए बीज की तरह है जो एक पेड़ या फूल के रूप में बढ़ता है और कुछ बन जाता है। कोई भी देख सकता है कि जब हम कर सकते हैं तब भी इच्छा करना और काम न करना वास्तव में इच्छा नहीं है, और जब हम कर सकते हैं तब भी प्यार करना और अच्छा न करना वास्तव में प्यार नहीं है।

इसके बजाय यह सोचने से ज़्यादा कुछ नहीं है कि हम कुछ करना चाहते हैं, यह सोचना कि हम प्यार करते हैं; इसलिए यह सिर्फ़ एक अलग विचार है जो पिघल कर गायब हो जाता है। प्रेम और इच्छा ही कर्मों की आत्मा है। वह आत्मा हमारे द्वारा किए जाने वाले ईमानदार और निष्पक्ष कार्यों में अपने लिए एक शरीर बनाती है।

यह हमारे आध्यात्मिक शरीर, मानव आत्मा के शरीर का एकमात्र स्रोत है; अर्थात्, हमारा आध्यात्मिक शरीर पूरी तरह से हमारे द्वारा प्रेम या इरादे से किए गए कार्यों से बनता है। सरल शब्दों में कहें तो हमारा पूरा चरित्र और आत्मा हमारे कार्यों में सन्निहित है। हम इससे देख सकते हैं कि मृत्यु के बाद हमारे साथ रहने वाले जीवन का क्या मतलब है। यह वास्तव में हमारा प्रेम और हमारे प्रेम से उत्पन्न होने वाला विश्वास है।

यह सिर्फ़ इतना ही नहीं है कि हमारा प्रेम और विश्वास क्या हो सकता है, बल्कि यह भी है कि वे वास्तव में क्या करते हैं। तो यह हमारे कार्य हैं, क्योंकि इनमें हमारा पूरा प्रेम और विश्वास समाहित है। एक ऐसा शासन करने वाला प्रेम है जो

मृत्यु के बाद भी हममें से हर एक के साथ रहता है और अनंत काल तक कभी नहीं बदलता।

हममें से हर एक के पास कई "प्रेम" होते हैं, लेकिन वे सभी हमारे शासन करने वाले प्रेम पर निर्भर होते हैं और उसके साथ मिलकर एक पूरे का निर्माण करते हैं, या जब उन्हें एक साथ लिया जाता है तो वे उसमें जुड़ जाते हैं। हमारी इच्छा के सभी भाग जो हमारे शासन करने वाले प्रेम से सहमत होते हैं उन्हें "प्रेम" कहा जाता है, क्योंकि हम उनसे प्रेम करते हैं।

कुछ प्रेम गहरे होते हैं और कुछ गहरे अधिक सतही हैं; कुछ प्रेम सीधे एक दूसरे से जुड़े होते हैं और अन्य प्रेम अप्रत्यक्ष रूप से एक दूसरे से जुड़े होते हैं; कुछ हमारे निकट होते हैं और अन्य अधिक दूर होते हैं; और ऐसे प्रेम होते हैं जो विभिन्न तरीकों से अन्य प्रेमों की सेवा करते हैं। सभी को एक साथ लिया जाए तो वे एक तरह का साम्राज्य बनाते हैं। वे वास्तव में हमारे भीतर इस तरह से व्यवस्थित होते हैं, भले ही हम उनकी व्यवस्था से पूरी तरह अनजान हों।

हालाँकि, व्यवस्था कुछ हद तक दूसरे जीवन में दिखाई देती है, क्योंकि हमारे विचार और भावनाएँ वहाँ तक कैसे फैलती हैं, यह इस पर निर्भर करता है। यदि हमारा प्रमुख प्रेम स्वर्ग के प्रेमों से बना है, तो वे स्वर्गीय समुदायों में फैलते हैं, लेकिन यदि हमारा प्रमुख प्रेम नरक के प्रेमों से बना है, तो वे नारकीय समुदायों में फैलते हैं। अब तक मैंने जो तर्क प्रस्तुत किए हैं, उनमें मैंने केवल अमूर्त तर्क की हमारी शक्तियों का ही आह्वान किया है।

यह दिखाने के लिए कि विषय कुछ ऐसा है जिसे हम अपनी इंद्रियों से समझ सकते हैं, मैं कुछ अनुभव जोड़ना चाहूँगा जो इन दावों को स्पष्ट करने और समर्थन करने में सहायक हो सकते हैं कि (1) हम मृत्यु के बाद अपने प्रेम या इच्छा हैं; (2) हम अपनी इच्छा या शासक प्रेम के संबंध में हमेशा एक जैसे ही रहते हैं; (3) अगर हम स्वर्गीय और आध्यात्मिक चीज़ों से प्रेम करते हैं तो हम स्वर्ग जाते हैं, लेकिन अगर हमारा प्रेम भौतिकवादी और सांसारिक है और उसका कोई स्वर्गीय और आध्यात्मिक आयाम नहीं है तो हम नरक जाते हैं; (4) हमारा विश्वास हमारे साथ नहीं रहता जब तक कि वह स्वर्गीय प्रेम से न आए; और (5) जब हम अगली दुनिया में जाते हैं तो केवल वही हमारे साथ रहता है जो हमारे प्रेम ने वास्तव में किया है - यानी, हमने कैसे जीवन जिया है।

मेरे अनुभव ने इस तथ्य का बहुत बड़ा प्रमाण दिया है कि (1) हम मृत्यु के बाद अपने प्रेम या इच्छा हैं। पूरा स्वर्ग अलग-अलग चीज़ों से प्रेम करने वाले समुदायों में विभाजित है, और हर आत्मा जो स्वर्ग में उठाई जाती है और एक

देवदूत बन जाती है उसे स्वर्ग में ले जाया जाता है। समुदाय जो उसी चीज़ से प्यार करता है जो वह करता है। जब हम वहाँ पहुँचते हैं तो हमें ऐसा लगता है जैसे हम अपने ही तत्व में हैं - घर पर, अपने जन्मस्थान पर, ऐसा कहें तो।

स्वर्गदूत इसे महसूस करते हैं और वहाँ उन आत्माओं के साथ जुड़ते हैं जो उनके जैसे हैं। जब वे वहाँ से निकलकर कहीं और जाते हैं, तो उन्हें लगातार खिंचाव महसूस होता है, अपनी आत्मीय आत्माओं के पास वापस जाने की लालसा और इसलिए उनके प्रमुख प्रेम के पास। इस तरह से लोग स्वर्ग में एक साथ इकट्ठा होते हैं। यही बात नरक में भी लागू होती है। वहाँ लोग दूसरों के साथ ऐसे प्रेम के अनुसार जुड़ते हैं जो स्वर्गीय प्रेम के विपरीत होते हैं।

हम यह भी देख सकते हैं कि मृत्यु के बाद हम अपने प्रेम हैं, इस तथ्य से कि जो कुछ भी हमारे प्रमुख प्रेम से सहमत नहीं होता है उसे एक तरफ़ रख दिया जाता है और, सभी दिखावे के लिए, हमसे दूर कर दिया जाता है। अच्छे लोगों के लिए, जो कुछ भी अलग रखा जाता है और जाहिर तौर पर दूर कर दिया जाता है वह सब कुछ है जो उनके प्रेम से असहमत है और संघर्ष करता है, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें उनके प्रेम में पूरी तरह से प्रवेश कराया जाता है। यह बुरे लोगों के लिए भी लगभग वैसा ही है, सिवाय इसके कि उनसे सब कुछ छीन लिया जाता है।

किसी भी तरह से, इसका परिणाम यह होता है कि अंततः हर कोई उस प्रेम में बदल जाता है जो उसका सबसे ज़्यादा अपना होता है। ऐसा तब होता है जब हमें हमारी तीसरी अवस्था में लाया जाता है, जिसके बारे में नीचे चर्चा की जाएगी। एक बार ऐसा हो जाने के बाद, हम लगातार अपने चेहरे को अपने प्रेम की ओर रखते हैं और चाहे हम किसी भी तरफ मुड़ें, यह हमेशा हमारी आँखों के सामने रहता है।

सभी आत्माओं को जहाँ चाहें ले जाया जा सकता है, जब तक कि उन्हें उनके शासक प्रेम पर केंद्रित रखा जाए। वे विरोध नहीं कर सकतीं, भले ही उन्हें पता हो कि क्या हो रहा है और उन्हें लगता है कि वे मना कर देंगी। आत्माओं ने अक्सर इसके विरोध में कार्य करने की कोशिश की है, लेकिन बिना सफलता के। उनका प्रेम उनके चारों ओर बंधी एक गाँठ या रस्सी की तरह है, जिससे उन्हें खींचा जा सकता है और जिससे वे बच नहीं सकते।

यह  इस दुनिया में लोगों के लिए भी यही बात है। हमारा प्यार भी हमें आगे बढ़ाता है, और यह हमारे प्यार के ज़रिए ही है कि हम दूसरों के द्वारा आगे बढ़ाए जाते हैं। हालाँकि, यह और भी ज़्यादा तब होता है जब हम आत्मा बन जाते हैं,

क्योंकि तब हमें यह नहीं लगता कि हमारा कोई अलग प्यार है या यह दावा नहीं करना चाहिए कि हमारा प्यार हमारा है, जबकि ऐसा नहीं है।

दूसरे जीवन में हर सभा में यह स्पष्ट है कि हमारी आत्मा ही हमारा शासक प्रेम है। जिस हद तक हम किसी व्यक्ति के प्यार से सहमत तरीके से काम करते हैं और बात करते हैं, वह व्यक्ति पूरा दिखता है, और हम उसका पूरा चेहरा देख सकते हैं, जो खुशमिजाज़ और जीवंत है। जिस हद तक हम किसी व्यक्ति के शासक प्रेम से असहमत तरीके से काम करते हैं और बात करते हैं, उस व्यक्ति का चेहरा बदलना शुरू हो जाता है, धुंधला हो जाता है, और उसे देखना मुश्किल हो जाता है।

अंततः यह गायब हो जाता है, जैसे कि यह वहाँ था ही नहीं। मैं अक्सर इस पर हैरान होता हूँ क्योंकि इस तरह की चीज़ दुनिया में नहीं हो सकती। हालाँकि, मुझे बताया गया है कि हमारे अंदर की आत्मा के साथ भी यही होता है: जब हम अपना ध्यान दूसरे लोगों से हटा लेते हैं, तो हमारी आत्मा उनके द्वारा देखी नहीं जाती। एक और तथ्य जिसने मुझे दिखाया है कि हमारी आत्मा ही हमारा शासक प्रेम है, वह यह है कि हम जो कुछ भी हमारे प्रेम के लिए उपयुक्त है, उसे उत्सुकता से अपना लेते हैं और जो कुछ भी उसके लिए उपयुक्त नहीं है, उसे अस्वीकार कर देते हैं और दूर कर देते हैं।

हमारा प्रेम एक स्पंजी, छिद्रपूर्ण लकड़ी की तरह है जो अपने विकास में सहायक सभी तरल पदार्थों को सोख लेती है, लेकिन दूसरों को दूर भगा देती है। यह विभिन्न प्रकार के जानवरों की तरह है: वे अपने उचित भोजन को पहचानते हैं, अपने स्वभाव के अनुकूल भोजन की तलाश करते हैं और उनसे बचते हैं जो उनके लिए उपयुक्त नहीं हैं।

हर प्रेम वास्तव में उसी से पोषित होना चाहता है जो उसके लिए उपयुक्त है - झूठ से बुरा प्रेम और सत्य से अच्छा प्रेम। मुझे कभी-कभी कुछ सरल और अच्छे लोगों को देखने की अनुमति मिली है जो बुरे लोगों को चीजों के बारे में सिखाना चाहते थे  जो सत्य और अच्छे थे। हालाँकि, इस शिक्षा का सामना करने पर, बुरे लोग दूर भाग गए; और जब वे अपने जैसे लोगों के पास पहुँचे, तो उन्होंने बड़े मजे से झूठ बोलना शुरू कर दिया जो उनके प्यार के अनुकूल था।

मुझे अच्छी आत्माओं को एक-दूसरे के साथ सत्य के बारे में बात करते हुए भी देखने की अनुमति दी गई है, जिसे उपस्थित अन्य अच्छी आत्माएँ उत्सुकता से सुनती हैं, जबकि कुछ बुरी आत्माएँ जो वहाँ थीं, उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया, जैसे कि उन्होंने कुछ भी नहीं सुना। आत्माओं की दुनिया में रास्ते दिखाई देते हैं,

कुछ स्वर्ग की ओर ले जाते हैं और कुछ नरक की ओर ले जाते हैं, प्रत्येक एक विशिष्ट समुदाय में जाता है।

अच्छी आत्माएँ केवल उन रास्तों पर यात्रा करती हैं जो स्वर्ग की ओर ले जाते हैं और उस समुदाय की ओर ले जाते हैं जो उनके अपने विशेष प्रेम से उत्पन्न होने वाली भलाई करने में लगे हुए हैं। वे उन रास्तों को नहीं देखते हैं जो कहीं और ले जाते हैं। दूसरी ओर, बुरी आत्माएँ केवल उन रास्तों पर यात्रा करती हैं जो नरक की ओर ले जाते हैं और वहाँ के समुदाय की ओर ले जाते हैं जो उनके अपने विशेष प्रेम से उत्पन्न होने वाली बुराई में लगे हुए हैं।

वे ऐसे रास्ते नहीं देखते जो कहीं और ले जाते हों; या अगर वे उन्हें देखते भी हैं, तो किसी भी हालत में वे उनका अनुसरण नहीं करना चाहते। आध्यात्मिक दुनिया में इस तरह के रास्ते [आध्यात्मिक] वास्तविकताएँ हैं जिन्हें दृश्यमान बनाया गया है। वे सत्य या असत्य जैसी विभिन्न चीज़ों से मेल खाते हैं; इसलिए वचन में रास्ते इसी का प्रतीक हैं। अनुभव से प्राप्त ये प्रमाण ऊपर कही गई बातों का समर्थन करते हैं जो तर्क की अपील के रूप में कही गई थी: मृत्यु के बाद हम अपने स्वयं के प्रेम और अपनी स्वयं की इच्छा हैं।

मैं "इच्छा" कहता हूँ क्योंकि हममें से प्रत्येक के लिए, हमारी इच्छा ही हमारा प्रेम है। बहुत से अनुभवों ने मुझे यह भी आश्वस्त किया है कि (2) मृत्यु के बाद हम अपनी इच्छा या सत्तारूढ़ प्रेम के संबंध में हमेशा एक जैसे ही रहते हैं। मुझे कुछ ऐसे लोगों से बात करने की अनुमति दी गई है जो दो हज़ार साल से भी पहले रहते थे, ऐसे लोग जिनके जीवन का वर्णन उनकी कहानियों की पुस्तकों में किया गया है और इसलिए वे परिचित हैं। मैंने पाया कि वे थे  अभी भी वही हैं, जैसा कि वर्णित है, और इसका मतलब है कि वे उस प्रेम के संबंध में एक जैसे थे जिसने उनके जीने के तरीके को जन्म दिया और निर्धारित किया।

ऐसे अन्य लोग भी थे जो सत्रह शताब्दियों पहले रह चुके थे, जिन्हें इतिहास की पुस्तकों से भी जाना जाता है, और कुछ जो चार शताब्दियों पहले रह चुके थे, कुछ तीन, और इसी तरह, जिनके साथ मुझे बात करने और यह जानने की अनुमति थी कि वही प्रेम अभी भी उन पर शासन करता है। एकमात्र अंतर यह था कि जिन चीज़ों में उनके शासक प्रेम को खुशी मिलती थी, उन्हें उनके अनुरूप [आध्यात्मिक] सुखों के लिए बदल दिया गया था।

स्वर्गदूतों ने मुझे बताया है कि हमारे शासक प्रेम का जीवन कभी भी किसी के लिए अनंत काल तक नहीं बदलता है क्योंकि हम अपने प्रेम हैं, इसलिए किसी भी आत्मा में इसे बदलना उसके जीवन को छीन लेना और बुझा देना होगा।

उन्होंने मुझे यह भी बताया कि ऐसा इसलिए है क्योंकि मृत्यु के बाद हमें इस दुनिया में जिस तरह से सिखाया जा सकता है, उससे सुधारा नहीं जा सकता, क्योंकि बाहरी आत्मा, जो भौतिक दुनिया से उत्पन्न होने वाली अंतर्दृष्टि और भावनाओं से बनी है, फिर निष्क्रिय हो जाती है।

इसे फिर से सक्रिय नहीं किया जा सकता क्योंकि यह आध्यात्मिक नहीं है। हमारा गहरा मन या चरित्र इस बाहरी स्तर पर आधारित है जिस तरह से एक घर अपनी नींव पर टिका होता है, यही कारण है कि हम हमेशा उसी तरह के जीवन में बने रहते हैं जैसा कि हम अपने प्यार के परिणामस्वरूप जीते थे जब हम दुनिया में थे। स्वर्गदूत इस बात से पूरी तरह हैरान हैं कि लोग यह नहीं समझते कि हमारा सत्तारूढ़ प्रेम यह निर्धारित करता है कि हम कौन हैं।

यह उन्हें भी हैरान करता है कि बहुत से लोग वास्तव में मानते हैं कि वे सीधे दया से, केवल अपने विश्वास के आधार पर, चाहे उन्होंने जिस तरह का जीवन जिया हो, बचाए जा सकते हैं, क्योंकि ये लोग उस दिव्य दया को नहीं समझते हैं अप्रत्यक्ष रूप से संचालित होता है। इसमें प्रभु द्वारा संसार में और उसके बाद स्वर्ग में भी नेतृत्व किया जाना शामिल है, और जो लोग दया द्वारा नेतृत्व किए जाते हैं वे वे लोग हैं जो बुराई में नहीं जीते हैं।

लोग यह भी नहीं जानते कि विश्वास सत्य के प्रति स्नेह है, एक स्नेह जो स्वर्गीय प्रेम से आता है, जो बदले में प्रभु से आता है। (3) यदि हमारा प्रेम स्वर्गीय और आध्यात्मिक है तो हम स्वर्ग जाते हैं, और यदि हमारा प्रेम भौतिकवादी और सांसारिक है और उसका कोई स्वर्गीय और आध्यात्मिक आयाम नहीं है तो हम नरक जाते हैं।

इस निष्कर्ष के लिए मेरा प्रमाण वे सभी लोग हैं जिन्हें मैंने स्वर्ग में उठाया और नरक में डाला हुआ देखा है। जो लोग स्वर्ग में उठाए गए थे उनका जीवन स्वर्गीय और आध्यात्मिक प्रेम का था, जबकि जो लोग नरक में डाले गए थे उनका जीवन भौतिकवादी और सांसारिक प्रेम का था। स्वर्गीय प्रेम वह है जो अच्छा, ईमानदार और निष्पक्ष है उससे प्रेम करना क्योंकि वह अच्छा, ईमानदार और निष्पक्ष है, और उस प्रेम के कारण ऐसा करना। यही कारण है कि स्वर्गदूतों का जीवन अच्छाई, ईमानदारी और निष्पक्षता से भरा होता है, जो एक स्वर्गीय जीवन है।

अगर हम इन चीज़ों को उनके अपने लिए प्यार करते हैं और उन्हें करते हैं या जीते हैं, तो हम सबसे बढ़कर प्रभु से प्यार कर रहे हैं, क्योंकि ये चीज़ें उनसे आती हैं। हम अपने पड़ोसी से भी प्यार कर रहे हैं, क्योंकि ये चीज़ें हमारे पड़ोसी हैं

जिनसे प्यार किया जाना चाहिए। इसके विपरीत, भौतिकवादी प्रेम, अपने लिए नहीं बल्कि अपने उद्देश्यों के लिए अच्छे और ईमानदार और निष्पक्ष से प्यार करना है, क्योंकि हम उनका इस्तेमाल प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा और लाभ प्राप्त करने के लिए कर सकते हैं।

इस मामले में हम अच्छे और ईमानदार और निष्पक्ष के भीतर प्रभु और अपने पड़ोसी पर ध्यान केंद्रित नहीं कर रहे हैं, बल्कि खुद पर और दुनिया पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, और हमें लोगों को धोखा देने में मज़ा आता है। जब हमारा उद्देश्य धोखा है, तो जो कुछ भी अच्छा और ईमानदार और निष्पक्ष है वह वास्तव में बुरा और बेईमान और अनुचित है।

यह वही है जिसे हम वास्तव में अच्छे और ईमानदार और निष्पक्ष के दिखावे के भीतर प्यार करते हैं चूँकि ये प्रेम हमारे जीवन को परिभाषित करते हैं, मृत्यु के तुरंत बाद आत्माओं की दुनिया में पहुँचने के बाद हम सभी की जाँच की जाती है ताकि यह पता लगाया जा सके कि हम किस तरह के लोग हैं। फिर हम ऐसे लोगों से जुड़ जाते हैं जिनका प्रेम हमारे जैसा ही होता है। अगर हम स्वर्गीय प्रेम पर केंद्रित हैं, तो हम स्वर्ग में लोगों से जुड़ जाते हैं; और अगर हम भौतिकवादी प्रेम पर केंद्रित हैं, तो हम नरक में लोगों से जुड़ जाते हैं।

इसके अलावा, एक बार जब पहली और दूसरी अवस्थाएँ पूरी हो जाती हैं, तो ये दो तरह के लोग अलग हो जाते हैं ताकि वे एक-दूसरे को न देख सकें और न पहचान सकें। हम वास्तव में न केवल अपने मन के गहरे स्तरों के संबंध में बल्कि बाहरी रूप से भी, चेहरे, शरीर और वाणी में अपने स्वयं के प्रेम बन जाते हैं, क्योंकि हम बाहरी रूप से भी अपने प्रेम की छवि बन जाते हैं।

भौतिकवादी प्रेम वाले लोग मोटे, मंद, काले और विकृत दिखते हैं; स्वर्गीय प्रेम वाले लोग जीवंत, स्पष्ट, उज्ज्वल और आकर्षक दिखते हैं। ये दोनों तरह के लोग आत्मा और विचार में भी पूरी तरह से अलग हैं। जो लोग स्वर्गीय प्रेम करते हैं वे बुद्धिमान और समझदार होते हैं, जबकि जो लोग भौतिकवादी प्रेम करते हैं वे मूर्ख और मूर्ख होते हैं।

जब किसी को स्वर्गीय प्रेम में लगे लोगों के विचारों और भावनाओं के आंतरिक और बाहरी पहलुओं की जांच करने की अनुमति दी जाती है, तो आंतरिक पहलू ऐसे दिखते हैं जैसे वे प्रकाश से बने हों, कुछ मामलों में लौ की रोशनी की तरह; और उनके बाहरी पहलू इंद्रधनुष की तरह विभिन्न सुंदर रंगों के होते हैं। इसके विपरीत, जो लोग भौतिकवादी प्रेम में लगे हैं उनके आंतरिक पहलू उदास दिखते

हैं क्योंकि वे बंद हैं, और उन लोगों में से कुछ के मामले में धुएँ की आग की तरह दिखते हैं जिनके आंतरिक स्व दुर्भावनापूर्ण धोखे में लिप्त हैं।

उनके बाहरी पहलुओं का रंग बदसूरत है, निराशाजनक है देखने के लिए। (मन और आत्मा के आंतरिक और बाहरी दोनों पहलू आध्यात्मिक दुनिया में दृश्य रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं जब भी यह भगवान को पसंद होता है।) जो लोग भौतिकवादी प्रेम में लगे हुए हैं, वे स्वर्ग के प्रकाश में कुछ भी नहीं देखते हैं। स्वर्ग का प्रकाश उनके लिए अंधकार है, जबकि नरक का प्रकाश, जो चमकते अंगारों के प्रकाश की तरह है, उनके लिए दिन के उजाले की तरह है। वास्तव में, स्वर्ग के प्रकाश में उनकी आंतरिक दृष्टि प्रकाश से इतनी वंचित है कि वे पागल हो जाते हैं।

परिणामस्वरूप, वे उस प्रकाश से दूर भागते हैं और गुफाओं और गुफाओं में छिप जाते हैं; और जितने अधिक झूठे विश्वास उनके बुरे इरादों से उत्पन्न होते हैं, वे उतने ही गहरे जाते हैं। हालांकि, जो लोग स्वर्गीय प्रेम में लगे हुए हैं, उनके लिए बिल्कुल विपरीत सच है। वे जितने गहरे (या ऊँचे) स्वर्गीय प्रकाश में जाते हैं, उतना ही स्पष्ट रूप से वे सब कुछ देखते हैं और सब कुछ उतना ही सुंदर दिखता है, और उतनी ही अधिक बुद्धिमानी और समझदारी से वे सत्य को समझते हैं। भौतिकवादी प्रेम में लिप्त लोग स्वर्ग की गर्मी में नहीं रह सकते, क्योंकि स्वर्ग की गर्मी स्वर्गीय प्रेम है।

हालाँकि, वे नरक की गर्मी में रह सकते हैं, जो उन लोगों के प्रति क्रूरता का प्रेम है जो उनका समर्थन नहीं करते। यह प्रेम दूसरों के प्रति अवमानना, शत्रुता, घृणा और प्रतिशोध में आनंद लेता है। जब ऐसे लोग इन सुखों में लीन होते हैं, तो वे वास्तव में जीवित महसूस करते हैं, और उन्हें इस बात का कोई अंदाजा नहीं होता कि दूसरों के लिए केवल भलाई के लिए, भलाई के लिए अच्छा करने का क्या मतलब है।

वे केवल तभी अच्छा करना जानते हैं जब यह बुरे कारणों और बुराई के लिए किया जाता है। न ही भौतिकवादी प्रेम में लिप्त लोग स्वर्ग में होने पर सांस ले सकते हैं। जब बुरी आत्माएँ वहाँ ले जाई जाती हैं, तो वे पीड़ा में हांफते हुए लोगों की तरह सांस लें। दूसरी ओर, जो लोग स्वर्गीय प्रेम में लगे हुए हैं वे स्वर्ग में जितने गहरे जाते हैं, उतनी ही स्वतंत्रता से सांस लेते हैं और अधिक जीवंत महसूस करते हैं।

हम इससे यह समझ सकते हैं कि स्वर्गीय और आध्यात्मिक प्रेम हमारे लिए स्वर्ग है क्योंकि उस प्रेम में स्वर्गीय होने के सभी लक्षण हैं; और हम यह भी देख

सकते हैं कि भौतिकवादी और सांसारिक प्रेम जो किसी भी स्वर्गीय और आध्यात्मिक प्रेम के बिना है, हमारे लिए नरक है क्योंकि उस प्रेम में नारकीय होने के सभी लक्षण हैं। तो यह स्पष्ट है कि वे लोग स्वर्ग में आते हैं जिनके पास स्वर्गीय और आध्यात्मिक प्रेम है, और वे लोग नरक में आते हैं जिनके पास स्वर्गीय और आध्यात्मिक प्रेम के बिना भौतिकवादी और सांसारिक प्रेम है।

यह तथ्य कि हमारा विश्वास हमारे साथ तब तक नहीं रहता जब तक कि यह स्वर्गीय प्रेम से न आए, मुझे इतने अनुभव से यह बात समझ में आई है कि अगर मैं इसके बारे में जो कुछ भी देखा और सुना है, उसे बताऊँ तो यह अपने आप में एक किताब भर जाएगी। मैं इस बात की पुष्टि कर सकता हूँ: जो लोग भौतिक और सांसारिक चीज़ों के प्रेम में डूबे रहते हैं और जिनमें स्वर्गीय और आध्यात्मिक प्रेम बिलकुल नहीं होता, उनमें कोई आस्था नहीं होती और हो भी नहीं सकती।

उनका विश्वास सिर्फ़ उन तथ्यों पर आधारित होता है जिन्हें उन्होंने याद कर लिया होता है। यह एक दूसरे के द्वारा किया गया विश्वास है कि कुछ सच है, जिस पर वे सिर्फ़ इसलिए विश्वास करते हैं क्योंकि ऐसा करना उनके अपने प्रेम के उद्देश्य को पूरा करता है। मैं यह भी जोड़ना चाहूँगा: बहुत से लोग जो सिर्फ़ यह सोचते थे कि उन्हें आस्था है, उन्हें ऐसे लोगों से मिलवाया गया जो वाकई आस्था रखते थे।

एक बार जब वे एक-दूसरे से बात करने लगे, तो उन्हें एहसास हुआ कि वास्तव में उनमें आस्था ही नहीं है। उन्होंने बाद में यह भी स्वीकार किया कि सिर्फ़ सत्य या वचन पर विश्वास करना आस्था नहीं है; आस्था स्वर्गीय प्रेम से सत्य को प्रेम करना और उसे करने का इरादा रखना है।

इसके प्रति गहरे लगाव से। मुझे यह भी दिखाया गया कि दूसरे हाथ का विश्वास जिसे वे लोग आस्था कहते हैं, वह सबसे अच्छा सर्दियों की रोशनी की तरह था: क्योंकि उस रोशनी में कोई गर्मी नहीं है, पृथ्वी पर सब कुछ बर्फ के नीचे स्थिर पड़ा है, बर्फ में बंद है। क्योंकि उनका प्यार इस तरह का है, जिस क्षण इसे स्वर्ग की रोशनी की किरणों से छुआ जाता है, उनके दूसरे हाथ के विश्वास का प्रकाश न केवल बुझ जाता है बल्कि वास्तव में एक घना अंधेरा बन जाता है जिसमें लोग खुद को भी नहीं देख सकते हैं।

उसी समय, उनके गहरे आत्म इतने अंधकारमय हो जाते हैं कि वे कुछ भी नहीं समझ सकते हैं। अंततः उनके झूठे विश्वास उन्हें पागल कर देते हैं। यही कारण है कि ऐसे लोगों ने वचन से और चर्च की शिक्षा से जो भी सत्य सीखा है, वह

उनसे छीन लिया जाता है - वे सभी चीजें जो उन्होंने दावा किया था कि उनके विश्वास का हिस्सा थीं।

इसके बजाय वे उन झूठी अवधारणाओं से भर जाते हैं जो उनके बुरे जीवन जीने के तरीके से मेल खाती हैं। उनमें से हर एक को पूरी तरह से उस चीज़ में प्रवेश करने के लिए बनाया जाता है जिसे वह प्यार करता है और उन झूठे विचारों में जो इसका समर्थन करते हैं।

फिर, चूँकि सत्य उन झूठे और बुरे विचारों का खंडन करते हैं जिनमें वे लीन हैं, वे सत्य से घृणा करते हैं, वे उससे दूर हो जाते हैं, वे उसे अस्वीकार करते हैं। स्वर्ग और नरक में जो कुछ होता है, उसके अपने अनेक अनुभवों से मैं यह प्रमाणित कर सकता हूँ कि जिन लोगों ने केवल धर्म के आधार पर विश्वास को स्वीकार किया है और बुरे जीवन जीए हैं, वे सभी नरक में हैं। मैंने उनमें से हज़ारों को वहाँ भेजा हुआ देखा है।

यह तथ्य कि केवल वही हमारे साथ रहता है जो हमारे प्रेम ने वास्तव में किया है - अर्थात, हमने कैसे जिया है - जब हम अगली दुनिया में जाते हैं, तो यह मेरे अनुभव से प्रस्तुत की गई बातों और मेरे द्वारा अभी-अभी किए गए कार्यों के बारे में कही गई बातों से तार्किक रूप से पता चलता है।

हमारे कार्य वास्तव में हमारे प्रेम का वास्तविक रूप हैं यह महत्वपूर्ण है कि हम महसूस करें कि हमारे सभी कार्य हमारे नैतिक और नागरिक जीवन का हिस्सा हैं और इस कारण से वे इस बात से संबंधित हैं कि क्या ईमानदार और सही है और क्या निष्पक्ष और निष्पक्ष है। जो ईमानदार और सही है वह नैतिक जीवन का मामला है, और जो निष्पक्ष और निष्पक्ष है वह नागरिक जीवन का मामला है।

ये जिस प्रेम से आते हैं वह या तो स्वर्गीय है या नारकीय। हमारे नैतिक और नागरिक जीवन के कार्य स्वर्गीय हैं यदि हम उन्हें स्वर्गीय प्रेम से करते हैं, क्योंकि हम जो कुछ भी स्वर्गीय प्रेम से करते हैं वह हम इसलिए करते हैं क्योंकि हम प्रभु द्वारा प्रेरित हैं, और हम जो कुछ भी करते हैं क्योंकि हम प्रभु द्वारा प्रेरित हैं वह अच्छा है।

दूसरी ओर, हमारे नैतिक और नागरिक जीवन के कार्य नारकीय हैं यदि हम उन्हें ऐसे प्रेम से करते हैं जो नारकीय है, क्योंकि हम जो कुछ भी इस प्रेम से करते हैं, जो कि स्वयं और दुनिया के लिए प्रेम है, हम अपने आप से प्रेरित होते हैं, और हम जो कुछ भी उस आधार पर करते हैं वह आंतरिक रूप से बुरा है। वास्तव में,

अगर हम वास्तव में जो हैं, या जो हम स्वयं हैं, उसके संदर्भ में देखे जाते हैं, तो हम बुरे के अलावा कुछ नहीं हैं।

## मृत्यु के बाद हमारी पहली अवस्था

मृत्यु के बाद और स्वर्ग या नरक में पहुँचने से पहले हम तीन अवस्थाओं से गुजरते हैं। पहली अवस्था में हम अपने बाहरी स्व पर ध्यान केंद्रित करते हैं, दूसरी में हम अपने आंतरिक स्व पर ध्यान केंद्रित करते हैं, और तीसरी में हम अपनी तैयारी पर ध्यान केंद्रित करते हैं। आत्माओं की दुनिया वह जगह है जहाँ हम इन अवस्थाओं से गुजरते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि कुछ लोग इन अवस्थाओं से बिल्कुल भी नहीं गुजरते हैं, लेकिन उनकी मृत्यु के तुरंत बाद या तो उन्हें स्वर्ग में उठा लिया जाता है या नरक में डाल दिया जाता है। स्वर्ग में तुरंत उठाए गए लोग वे हैं जिनका पुनर्जन्म हुआ था - जिनके पुनर्जन्म ने उन्हें स्वर्ग के लिए तैयार किया - जब वे इस दुनिया में थे।

जिन लोगों को इस तरह से तैयार किया गया है, उन्हें अपने शरीर को त्यागते समय केवल अपने भौतिक अस्तित्व के दाग को हटाना होता है, और स्वर्गदूत उन्हें तुरंत स्वर्ग में ले जाते हैं। मैंने लोगों को उनकी मृत्यु के एक घंटे बाद स्वर्ग में उठाया हुआ देखा है। दूसरी ओर, वे लोग जिनका आंतरिक चरित्र द्वेषपूर्ण है, लेकिन जिनका बाहरी रूप सद्गुणी है - वे लोग जो अपने द्वेष को धोखे से भर देते हैं, और जो अच्छाई को दूसरों को धोखा देने के लिए एक उपकरण के अलावा कुछ नहीं समझते - उन्हें सीधे पाप में डाल दिया जाता है।नरक।

मैंने लोगों के साथ ऐसा होते देखा है। सबसे धोखेबाजों में से एक ने सिर के बल पर दम तोड़ दिया। दूसरों के लिए गिरने के दूसरे तरीके थे। ऐसे लोग भी हैं जिन्हें उनकी मृत्यु के तुरंत बाद गुफाओं में भेज दिया जाता है और इस तरह उन्हें आत्माओं की दुनिया के लोगों से अलग कर दिया जाता है। उन्हें बारी-बारी से बाहर लाया जाता है और वापस अंदर भेजा जाता है।

ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने पड़ोसियों के साथ दुर्भावनापूर्ण व्यवहार किया है जबकि उनके साथ सभ्य व्यवहार करने का दिखावा किया है। बहुत अच्छे और बहुत बुरे लोग बहुत कम हैं, हालांकि, उन लोगों की संख्या की तुलना में जिन्हें आत्माओं की दुनिया में रखा जाता है और ईश्वरीय योजना के अनुसार स्वर्ग या नरक के लिए तैयार किया जाता है।

हम अपनी पहली अवस्था में पहुँचते हैं - वह अवस्था जिसमें हम अपनी बाहरी आत्मा पर ध्यान केंद्रित करते हैं - हमारी मृत्यु के तुरंत बाद। हर किसी के पास एक बाहरी आध्यात्मिक आत्मा और एक आंतरिक आध्यात्मिक आत्मा होती है। हम अपनी आत्मा के बाहरी पहलुओं का उपयोग दुनिया में अपने भौतिक व्यक्तित्व को समायोजित करने के लिए करते हैं - विशेष रूप से हमारे चेहरे, भाषण और व्यवहार - ताकि अन्य लोगों के साथ बातचीत की जा सके। हमारी आत्मा के आंतरिक पहलू, इसके विपरीत, चीजों को करने की हमारी इच्छा और परिणामस्वरूप हमारे द्वारा सोचे गए विचारों से संबंधित हैं।

वे शायद ही कभी हमारे चेहरे, भाषण या व्यवहार में दिखाई देते हैं। हमें बचपन से ही खुद को मिलनसार, परोपकारी और ईमानदार के रूप में पेश करने और अपने निजी इरादों को जन्म देने वाले विचारों को छिपाने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। इसलिए हम इस तरह से जीने के आदी हो जाते हैं जो बाहरी रूप से नैतिक और सभ्य हो, चाहे हम अंदर से कैसे भी हों। इस आदतन व्यवहार के परिणामस्वरूप, हम शायद ही अपने भीतर के स्व को जानते हों, और किसी भी मामले में उन पर ध्यान नहीं देते हैं।

मृत्यु के बाद हमारी पहली स्थिति इस दुनिया में हमारी स्थिति के समान होती है, क्योंकि तब हम अपने बाहरी स्व पर समान रूप से केंद्रित होते हैं। हमारे चेहरे, आवाज़ और चरित्र समान होते हैं; हम समान नैतिक जीवन जीते हैं और नागरिक जीवन। यही कारण है कि हमें अभी भी ऐसा लगता है जैसे हम इस दुनिया में हैं जब तक कि हम उन चीजों पर ध्यान न दें जो सामान्य से अलग हैं और याद रखें कि स्वर्गदूतों ने हमें बताया था कि जब हम जागे थे तो हम आत्मा थे।

इसलिए एक जीवन दूसरे में चला जाता है, और मृत्यु केवल एक मार्ग है। चूँकि हम दुनिया में अपने जीवन के तुरंत बाद आत्माओं के रूप में ऐसे ही होते हैं, हमारे दोस्त और लोग जिन्हें हम दुनिया में जानते हैं, तब हमें पहचानते हैं। आत्माएँ हमें कौन हैं, यह न केवल हमारे चेहरों और आवाज़ों से बल्कि हमारे जीवन की आभा से भी समझती हैं जब वे हमारे पास आती हैं।

दूसरे जीवन में, जब भी हम किसी के बारे में सोचते हैं, तो हम अपने विचारों में उस व्यक्ति के चेहरे को उसके जीवन के कई विवरणों के साथ याद करते हैं; और जब हम ऐसा करते हैं, तो दूसरा व्यक्ति मौजूद होता है जैसे कि हमें बुलाया गया हो। आध्यात्मिक दुनिया में ऐसी चीजें होती हैं क्योंकि वहाँ विचार साझा किए जाते हैं और क्योंकि भौतिक दुनिया में जगह नहीं होती है।

यही कारण है कि जैसे ही हम दूसरे जीवन में पहुँचते हैं, हम सभी अपने दोस्तों और रिश्तेदारों और उन लोगों द्वारा पहचाने जाते हैं जिन्हें हम किसी न किसी तरह से जानते हैं, और इसलिए हम दूसरों से बात करते हैं और उनसे मिलते हैं जैसे हम दुनिया में उनके साथ अपनी दोस्ती के दौरान करते थे। मैंने कई बार सुना है कि कैसे दुनिया से नए आए लोग अपने दोस्तों को फिर से देखकर खुश होते हैं, और कैसे उनके दोस्त भी इस बात से खुश होते हैं कि दूसरे उनके पास आए हैं।

अक्सर ऐसा होता है कि विवाहित साथी मिलते हैं और खुशी-खुशी अभिवादन करते हैं। वे साथ भी रहते हैं, लेकिन लंबे या छोटे समय के लिए, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे दुनिया में कितनी खुशी से साथ रहते थे। अंततः, जब तक वे सच्चे वैवाहिक प्रेम से एकजुट नहीं होते (जो तब होता है जब स्वर्गीय प्रेम दो मनों को जोड़ता है), वे कुछ समय साथ रहने के बाद अलग हो जाते हैं।

हालाँकि, अगर भागीदारों के मन असहमत होते हैं, और अगर उनके आंतरिक स्व एक दूसरे के प्रति प्रतिकारक होते हैं, तो वे खुले तौर पर दुश्मनी करते हैं और कभी-कभी वास्तव में एक दूसरे से लड़ते हैं। फिर भी, वे तब तक अलग नहीं होते जब तक वे दूसरे अवस्था में प्रवेश नहीं करते, जिसका वर्णन शीघ्र ही किया जाएगा।

चूँकि नई आने वाली आत्माओं का जीवन दुनिया में उनके जीवन से अलग नहीं है, और चूँकि वे मृत्यु के बाद के जीवन या स्वर्ग या नरक के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं, सिवाय इसके कि उन्होंने वचन के शाब्दिक अर्थ और उस पर आधारित कुछ उपदेशों से क्या सीखा है, एक बार जब वे शरीर में होने और दुनिया में अपनी सभी इंद्रियों का आनंद लेने और अपने आस-पास परिचित चीजों को देखने के अपने आश्चर्य से उबर जाते हैं, तो वे खुद को यह जानने के लिए उत्सुक पाते हैं कि स्वर्ग और नरक कैसे हैं और वे कहाँ हैं।

इसलिए उनके दोस्त उन्हें बताते हैं कि अनंत जीवन कैसा है और उन्हें विभिन्न स्थानों और विभिन्न लोगों की संगति में ले जाते हैं। वे अलग-अलग शहरों में जाते हैं, बगीचों और पार्कों में जाते हैं, अक्सर शानदार जगहों पर जाते हैं क्योंकि ऐसी चीजें बाहरी आत्म को आकर्षित करती हैं।

फिर समय-समय पर उन्हें अपने भौतिक जीवन के दौरान मृत्यु के बाद आत्मा की स्थिति और स्वर्ग और नरक के बारे में उनके विचारों में निर्देशित किया जाता है। इससे उन्हें दुख होता है कि वे ऐसे मामलों के बारे में पूरी तरह से

अनभिज्ञ थे - और चर्च भी। उनमें से लगभग सभी जानना चाहते हैं कि क्या वे स्वर्ग में जा पाएंगे। उनमें से कई सोचते हैं कि वे जा पाएंगे क्योंकि उन्होंने दुनिया में नैतिक और नागरिक जीवन जिया है।

वे इस तथ्य पर विचार नहीं करते कि बुरे और अच्छे लोग सतही तौर पर एक जैसे जीवन जीते हैं। यानी, दोनों तरह के लोग दूसरों की मदद करते हैं; दोनों चर्च जाते हैं, धर्मोपदेश सुनते हैं और प्रार्थना करते हैं, हर समय पूरी तरह से अनजान कि बाहरी व्यवहार और बाहरी पूजा का कोई मतलब नहीं है - कि जो वास्तव में मायने रखता है वह आंतरिक आत्मा है जो इन बाहरी कार्यों को जन्म देती है।

हज़ारों में से मुश्किल से एक व्यक्ति यह भी जानता है कि आंतरिक आत्मा क्या है या यह वह जगह है जहाँ हमें स्वर्ग और चर्च को खोजने के लिए देखना चाहिए। और भी कम लोग यह समझते हैं कि हमारे इरादे और विचार हमारे बाहरी कार्यों को निर्धारित करते हैं, जैसे कि उन इरादों और विचारों के पीछे मौजूद प्यार और विश्वास उन्हें जन्म देते हैं। जब लोगों को यह बताया जाता है, तब भी वे इस तथ्य को नहीं समझते हैं कि सोच और इच्छा ही अंतर पैदा करती है; इसके बजाय वे मानते हैं कि जो कुछ भी मायने रखता है वह उनके द्वारा कहे गए शब्द और उनके द्वारा किए गए कार्य हैं।

आजकल ईसाई दुनिया से दूसरे जीवन में आने वाले बहुत से लोग ऐसे ही हैं। आखिरकार, अच्छी आत्माएँ यह निर्धारित करने के लिए उनकी जाँच करती हैं कि वे कैसे हैं। यह विभिन्न तरीकों से किया जाता है क्योंकि इस पहली अवस्था में बुरे लोग भी सच बोल सकते हैं और अच्छे काम कर सकते हैं ठीक वैसे ही जैसे अच्छे लोग करते हैं।

जैसा कि मैंने पहले ही समझाया है, ऐसा इसलिए है क्योंकि सतही तौर पर उनका जीवन उतना ही नैतिक प्रतीत होता था, क्योंकि वे सरकारों और कानूनों के अधीन रह रहे थे; और इसके अलावा, इस तरह से जीने से उन्हें निष्पक्षता और ईमानदारी के लिए प्रतिष्ठा मिली, और लोगों को अपने पक्ष में किया, और उन्हें प्रतिष्ठा और धन मिला।

लेकिन आप बुरी आत्माओं को अच्छी आत्माओं से बहुत आसानी से पहचान सकते हैं, इस तथ्य से कि जब बातचीत सतही चीजों के बारे में होती है तो बुरी आत्माएँ बहुत ध्यान देती हैं, और जब यह गहरे विषयों, चर्च और स्वर्ग के सच्चे और अच्छे सिद्धांतों के बारे में होती है तो बहुत कम ध्यान देती हैं। वे ऐसी बातें सुनते हैं, लेकिन बिना किसी वास्तविक ध्यान या खुशी के।

आप उन्हें इस तथ्य से भी पहचान सकते हैं कि वे लगातार आध्यात्मिक दुनिया के कुछ क्षेत्रों की ओर मुड़ते हैं, और जब उन्हें खुद पर छोड़ दिया जाता है तो वे उन रास्तों का अनुसरण करते हैं जो उन्हें आध्यात्मिक दुनिया की ओर ले जाते हैं।वे क्षेत्र। आप यह बता सकते हैं कि किस तरह का प्रेम उन्हें आगे ले जा रहा है, यह देखकर कि वे किन क्षेत्रों का सामना करते हैं और वे किन रास्तों पर चलते हैं।

दुनिया से आने वाली प्रत्येक आत्मा स्वर्ग में एक विशेष समुदाय या नरक में एक विशेष समुदाय से जुड़ी हुई है। हालाँकि, यह केवल इन नए लोगों के आंतरिक स्व पर लागू होता है, और जब तक वे अपने बाहरी स्व पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तब तक उनका आंतरिक स्व उन्हें स्पष्ट नहीं होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनका बाहरी स्व उनके आंतरिक स्व को ढँक देता है और छिपा देता है, खासकर बुराई में शामिल लोगों के मामले में।

हालाँकि, उनका आंतरिक स्व पूरी तरह से तब दिखाई देता है जब वे दूसरे राज्य में पहुँचते हैं, क्योंकि यहीं पर उनका आंतरिक स्व खुल जाता है और उनका बाहरी स्व निष्क्रिय हो जाता है। मृत्यु के बाद यह पहली अवस्था कुछ लोगों के लिए कुछ दिनों तक, दूसरों के लिए महीनों तक और फिर भी कुछ लोगों के लिए एक साल तक रहती है, लेकिन शायद ही कभी किसी के लिए एक साल से ज़्यादा होती है।

ये अंतर इस बात पर निर्भर करते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति का आंतरिक और बाह्य स्व कितना असहमत है या सामंजस्य में है। हर किसी के आंतरिक और बाह्य स्व को एक साथ काम करना चाहिए और एक दूसरे के अनुरूप होना चाहिए। आध्यात्मिक दुनिया में, किसी को भी एक तरह से सोचने और इच्छा करने की अनुमति नहीं है और साथ ही साथ दूसरे तरीके से बोलने और कार्य करने की भी।

हर किसी को अपने स्नेह या प्रेम की छवि होना चाहिए, जिसका अर्थ है कि हम बाहर भी वैसे ही होने चाहिए जैसे हम अंदर से हैं। यही कारण है कि पहली बात यह होती है कि आत्मा का बाहरी स्व [आध्यात्मिक परीक्षा द्वारा] उजागर होता है और पुनर्गठित होता है - ताकि वह आंतरिक स्व के अनुरूप हो सके।

# मृत्यु के बाद हमारी दूसरी अवस्था

मृत्यु के बाद हमारी दूसरी अवस्था को हमारे आंतरिक स्व की अवस्था कहा जाता है क्योंकि तब हम अपने मन की गहराई में पूरी तरह से प्रवेश कर जाते हैं, या अपनी इच्छा और विचारों में, जबकि पहले अवस्था में हमें व्यस्त रखने वाली बाहरी रुचियाँ निष्क्रिय हो जाती हैं।

कोई भी व्यक्ति जो हमारे जीवन और हमारे शब्दों और कार्यों का अवलोकन करता है, वह पहचान सकता है कि हम सभी में एक बाहरी स्व और एक आंतरिक स्व होता है, या (दूसरे शब्दों में कहें तो) सतही विचार और इरादे और गहरे विचार भी होते हैं। हम इसे इस तथ्य से जान सकते हैं कि यदि हम नागरिक जीवन में शामिल हैं, तो हम अन्य लोगों के बारे में उनकी प्रतिष्ठा के संदर्भ में सोचते हैं, या जब वे बातचीत के विषय थे, तो हमने उनके बारे में क्या सीखा है।

हालाँकि, उनसे बात करने का हमारा तरीका उनके बारे में हमारी राय से काफी अलग हो सकता है। और भले ही वे बुरे लोग हों, फिर भी हम उनके प्रति विनम्र व्यवहार करते हैं। यह विशेष रूप से नकली और चापलूसों में ध्यान देने योग्य है जिनके शब्द और कार्य उनके विचारों और इरादों से पूरी तरह से अलग हैं, और पाखंडियों में जो भगवान, स्वर्ग, आत्माओं के उद्धार, चर्च की सच्चाई, अपने देश और अपने पड़ोसी के कल्याण के बारे में ऐसे सोचते हैं मानो वे आस्था और प्रेम से प्रेरित हों, जबकि दिल से वे किसी और चीज़ में विश्वास करते हैं और किसी और से नहीं बल्कि खुद से प्यार करते हैं।

हम इससे यह समझ सकते हैं कि हमारे पास दो विचार प्रक्रियाएँ हैं, एक जो सतही है और एक जो हमारे अंदर गहराई में है, और जो शब्द हम कहते हैं वे हमारी सतही सोच से आते हैं; लेकिन हमारी भावनाएँ, जो पूरी तरह से कुछ और हैं, हमारे गहरे विचारों से आती हैं। इसके अलावा, इन दो विचार प्रक्रियाओं को अलग कर दिया गया है, क्योंकि आंतरिक को बाहरी में बहने और किसी तरह से दिखाई देने से रोकने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए।

यह जानना महत्वपूर्ण है कि हम वास्तव में कैसे हैं, यह पूरी तरह से हमारे आंतरिक स्व से निर्धारित होता है, न कि हम उस आंतरिक स्व से अलग सतही रूप से कैसे हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारा आंतरिक स्व हमारी आत्मा है, और चूंकि यह आत्मा से ही शरीर जीवित रहता है, इसलिए हमारा जीवन हमारी आत्मा का जीवन है। इसलिए हम अपने आंतरिक स्व में जो भी हैं, हम अनंत

काल तक वैसे ही हैं। चूँकि हमारा बाह्य स्व शरीर का हिस्सा है, इसलिए मृत्यु के बाद यह अलग हो जाता है।

इसका कोई भी तत्व जो आत्मा से जुड़ा रहता है, निष्क्रिय हो जाता है, और केवल [आत्मा के] बाहरी स्तर के रूप में गहरे स्व की सेवा करता है। हम इससे देख सकते हैं कि वास्तव में क्या हमारा है और क्या नहीं। तथ्य यह है कि बुरे लोगों में, बाहरी विचार की सामग्री जो उनके शब्दों को जन्म देती है, और बाहरी इच्छा जो उनके कार्यों को जन्म देती है, वास्तव में उनका बिल्कुल भी नहीं है।

उनका जो है वह उनके गहरे विचार और इच्छा की सामग्री है। एक बार पहली अवस्था पूरी हो जाने के बाद - वह अवस्था जिसमें हम बाहरी स्व पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जैसा कि पिछले अध्याय में वर्णित है - हम आत्माओं के रूप में पूरी तरह से उस अवस्था में प्रवेश करने के लिए लाए जाते हैं जिसमें हम अपने आंतरिक स्व पर ध्यान केन्द्रित करें।

यह दूसरी अवस्था वह है जो हमारे पास दुनिया में हमारी आंतरिक इच्छा और हमारे अंदर उत्पन्न विचारों के संबंध में थी, उस समय जब हम अपने दम पर थे और हमारी सोच स्वतंत्र और बिना नियंत्रण के चलती थी। हम इस दूसरी अवस्था में बिना एहसास किए फिसल जाते हैं, जैसा कि हम दुनिया में करते थे, जब हम अपने विचारों को, जो हमारे भाषण का प्रत्यक्ष स्रोत हैं, अपने आंतरिक स्व की ओर वापस खींचते हैं, और उन्हें कुछ समय के लिए वहीं रहने देते हैं। इसलिए जब हम आत्मा के रूप में इस अवस्था में होते हैं, तो हम खुद होते हैं और अपना वास्तविक जीवन जीते हैं, क्योंकि जिस चीज के लिए हम स्नेह करते हैं, उसके आधार पर स्वतंत्र रूप से सोचना वास्तव में हमारा सच्चा जीवन और हमारा सच्चा स्व है।

इस अवस्था में आत्माओं की सोच उनकी अपनी इच्छा से आती है, और इसलिए यह उनके अपने वास्तविक स्नेह या उनके अपने वास्तविक प्रेम से आती है; और जब ऐसा होता है, तो उनकी सोच उनकी इच्छाशक्ति से इतनी निकटता से जुड़ जाती है कि वे शायद ही कभी सोचते हैं कि वे क्या कर रहे हैं, बल्कि इसके बजाय वे केवल अपनी इच्छाशक्ति का उपयोग करते प्रतीत होते हैं।

जब ऐसी आत्माएँ बात करती हैं तो यह लगभग वैसा ही होता है, सिवाय इसके कि वे चिंतित होती हैं कि उनकी इच्छा से सीधे आने वाले विचार बिना किसी आवरण के प्रकट हो सकते हैं, क्योंकि दुनिया में उनके नागरिक जीवन ने उनकी इच्छाशक्ति में यह डर पैदा कर दिया था। हम सभी, बिना किसी अपवाद के,

मृत्यु के बाद इस अवस्था में लाए जाते हैं क्योंकि यह हमारी अपनी सच्ची आध्यात्मिक अवस्था है।

पहले की अवस्था, जब हम बाहरी स्व पर ध्यान केंद्रित करते हैं, वह हमारी आत्मा की विशेषता थी जब हम दूसरों की संगति में थे। यह हमारी आत्मा की अपनी सच्ची अवस्था नहीं है, जैसा कि हम कई कारणों से देख सकते हैं। उदाहरण के लिए, न केवल आत्माओं के विचार सीधे उस चीज़ से निकलते हैं जिससे वे प्यार करते हैं, बल्कि वे जो कुछ भी कहते हैं, वह भी ऐसा ही होता है, क्योंकि आत्माओं के मामले में, उनका प्यार ही उनकी बातचीत का वास्तविक स्रोत होता है।

यह तब भी ऐसा ही था जब हम दुनिया में अपने निजी विचारों में लगे रहते हैं, क्योंकि तब हम शारीरिक रूप से बोले गए शब्दों के बारे में नहीं सोचते थे, बल्कि केवल कल्पना करते थे - और साथ ही हम एक मिनट में इतनी सारी बातें सोचते थे जितनी हम आधे घंटे में नहीं कह सकते थे। एक और तरीका जिससे हम देख सकते हैं कि यह पहली अवस्था जो बाहरी आत्म पर केंद्रित है, वह हमारी अपनी सच्ची आध्यात्मिक अवस्था नहीं है, यह विचार करके कि जब हम दुनिया में दूसरों के साथ होते हैं, तो हम जो कहते हैं उसे नैतिक और नागरिक जीवन के नियमों के अनुरूप रखते हैं।

तब हमारी गहरी सोच हमारी बाहरी सोच को उसी तरह से नियंत्रित करती है जिस तरह से एक व्यक्ति दूसरे को नियंत्रित करता है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि दूसरा व्यक्ति शालीनता और शिष्टाचार की सीमाओं को पार न करे। इस तथ्य का एक और संकेत यह है कि जब हम निजी तौर पर सोचते हैं, तो हम सोचते हैं कि लोगों को खुश करने और दोस्त, सद्भावना और कृतज्ञता प्राप्त करने के लिए हम क्या कहेंगे और क्या करेंगे, और यह सब कैसे करें जो वास्तव में हमारे लिए विदेशी हैं - यानी, इसे अलग तरीके से कैसे करें, अगर हम केवल उस आधार पर कार्य कर रहे होते जो हम वास्तव में करना चाहते हैं।

हम इन सब से देख सकते हैं कि आत्माओं को जिस अवस्था में ले जाया जाता है, जो आंतरिक स्व पर केंद्रित होती है, वह उनकी अपनी सच्ची अवस्था है, जिसका अर्थ है कि यह उन व्यक्तियों की सच्ची व्यक्तिगत अवस्था भी थी जब वे दुनिया में रह रहे थे। जब आत्माएं उस अवस्था में होती हैं जो उनके आंतरिक स्व पर केंद्रित होती है, तो यह स्पष्ट होता है कि वे वास्तव में दुनिया में किस तरह के लोग थे।

वे वास्तव में अपने व्यवहार को इस बात पर आधारित करते हैं कि वे वास्तव में क्या हैं। जिन लोगों का आंतरिक स्व संसार में भलाई के लिए समर्पित था, वे तब विवेकपूर्ण और बुद्धिमानी से व्यवहार करते हैं - वास्तव में, जब वे संसार में रहते थे, उससे कहीं अधिक बुद्धिमानी से, क्योंकि वे मुक्त हो चुके हैं शरीर के साथ किसी भी तरह के संबंध से और इसलिए सांसारिक चीजों से जो हमें भ्रमित करती हैं और हमारे और वास्तविकता के बीच एक तरह का बादल डालती हैं।

इसके विपरीत, जो लोग दुनिया में बुराई पर ध्यान केंद्रित करते हैं वे तब मूर्खतापूर्ण और पागलपन से व्यवहार करते हैं - वास्तव में जब वे दुनिया में थे, तब से भी अधिक पागलपन से, क्योंकि वे स्वतंत्र हैं और अब संयमित नहीं हैं। जब तक वे दुनिया में रह रहे थे, वे सतही रूप से समझदार थे, क्योंकि इस तरह वे तर्कसंगत लोगों की नकल करते थे। इसलिए जब बाहरी परतों को हटा दिया जाता है, तो उनका आंतरिक पागलपन सामने आ जाता है।

एक दुष्ट व्यक्ति जो अच्छा होने का दिखावा करता है उसकी तुलना एक चमकदार पॉलिश वाले जार से की जा सकती है, जिसके ढक्कन पर हर तरह की गंदगी छिपी होती है। जैसा कि प्रभु ने कहा: "तुम उन कब्रों की तरह हो जिन्हें सफेद रंग से रंगा गया है। वे बाहर से सुन्दर दिखते हैं, परन्तु भीतर वे मरे हुओं की हड्डियों और हर प्रकार की गंदगी से भरे हैं" ।

वे सभी लोग जिन्होंने संसार में अच्छा जीवन जिया है और अपने विवेक के अनुसार कार्य किया है - अर्थात्, वे लोग जिन्होंने ईश्वरीय सत्ता को स्वीकार किया है और ईश्वरीय सत्यों से प्रेम किया है, और विशेष रूप से वे लोग जिन्होंने उन्हें अपने जीवन में लागू किया है - ऐसा लगता है कि वे नींद से जाग गए हैं जब उन्हें उस अवस्था में लाया जाता है जो आंतरिक स्व पर केंद्रित होती है। वे ऐसे लोगों की तरह महसूस करते हैं जो अंधकार से प्रकाश में आ गए हैं।

उनके विचार वास्तव में स्वर्ग के प्रकाश और उसके कारण गहन ज्ञान द्वारा गतिमान होते हैं, और उनके कार्य अच्छे और इसलिए आंतरिक स्नेह द्वारा। स्वर्ग उनके विचारों और भावनाओं में एक आंतरिक आशीर्वाद और आनंद के साथ बह रहा है जिसे उन्होंने पहले कभी नहीं जाना। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे अंधकार में हैं।

स्वर्ग के स्वर्गदूतों के साथ स्पर्श करें। फिर भी, वे प्रभु को स्वीकार करते हैं और अपने जीवन के साथ उनकी आराधना करते हैं, क्योंकि वे अपने सच्चे जीवन में होते हैं जब वे उस स्थिति में होते हैं जिसमें वे अपने आंतरिक स्व पर ध्यान

केंद्रित करते हैं। वे स्वतंत्रता की स्थिति में भी उन्हें स्वीकार करते हैं और उनकी पूजा करते हैं, क्योंकि यही वह है जो हमारा आंतरिक स्नेह हमें देता है।

इस तरह वे बाहरी पवित्रता से दूर चले जाते हैं और आंतरिक पवित्रता में चले जाते हैं जो वास्तविक पूजा का सार है। यह उन लोगों की स्थिति है जिन्होंने वचन द्वारा प्रदान किए गए सिद्धांतों के अनुसार एक ईसाई जीवन जिया है। हालांकि, इसके बिल्कुल विपरीत, उन लोगों की स्थिति है जिन्होंने दुनिया में बुराई पर केंद्रित जीवन जिया, जिनके पास कोई विवेक नहीं था और इसलिए उन्होंने दिव्य सत्ता को नकार दिया, क्योंकि वे सभी जो बुराई में रहते हैं वे आंतरिक रूप से दिव्य सत्ता को नकारते हैं, चाहे वे बाहरी रूप से कितने भी आश्वस्त हों कि वे इनकार नहीं कर रहे हैं बल्कि उसे स्वीकार कर रहे हैं।

ऐसा इसलिए है क्योंकि ईश्वरीय सत्ता को स्वीकार करना और बुराई में जीना विपरीत हैं। जब दूसरे जीवन में ऐसे लोग ऐसी अवस्था में आते हैं जो आंतरिक स्व पर केंद्रित होती है, तो वे दूसरों को मूर्ख लगते हैं जो उन्हें बात करते या कार्य करते देखते हैं, क्योंकि उनके बुरे आवेग उन्हें दुष्ट कर्मों में जाने के लिए मजबूर करते हैं - दूसरों के प्रति तिरस्कार, उपहास और ईशनिंदा, घृणा और प्रतिशोध की भावना में।

वे षड्यंत्र रचते हैं, उनमें से कुछ इतनी चतुराई और द्वेष के साथ होते हैं कि आप शायद ही विश्वास करेंगे कि ऐसा कुछ किसी भी इंसान में मौजूद हो सकता है। वे तब अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिए स्वतंत्र होते हैं क्योंकि वे बाहरी स्व से अलग हो जाते हैं जो उन्हें दुनिया में रोकता है। संक्षेप में, वे तर्क करने की अपनी क्षमता खो देते हैं, क्योंकि दुनिया में वह क्षमता उनके आंतरिक में नहीं बल्कि उनके बाहरी स्व में स्थित थी। फिर भी, वे खुद को किसी और से ज़्यादा समझदार लगते हैं।

एक बार जब ऐसे लोग दूसरी अवस्था में होते हैं, तो उन्हें बार-बार अपनी बाहरी अवस्था और अपनी आंतरिक अवस्था में उनके व्यवहार के बीच भेजा जाता है। उनमें से कुछ शर्मिंदा महसूस करते हैं और स्वीकार करते हैं कि वे पागल थे। उनमें से कुछ को बिल्कुल भी शर्म नहीं आती। उनमें से कुछ इस तथ्य से नाराज़ हैं कि उन्हें हर समय अपनी बाहरी अवस्था में रहने की अनुमति नहीं है, लेकिन उन्हें दिखाया जाता है कि अगर वे लगातार इस अवस्था में होते तो वे कैसे होते।

वे लगातार वही काम करने की कोशिश करते रहते, सरल हृदय और आस्था वाले लोगों को अच्छाई, ईमानदारी और निष्पक्षता का दिखावा करके गुमराह करते। वे खुद को पूरी तरह से नष्ट कर देते, क्योंकि अंततः उनका बाहरी स्वरूप भी

उनके आंतरिक स्वरूप की तरह ही आग से जल उठता; और यह उनके पूरे जीवन को खा जाता।

जब आत्माएं इस दूसरी अवस्था में होती हैं, तो वे वास्तव में ठीक उसी तरह दिखती हैं जैसे कि दुनिया में उनके आंतरिक स्व थे। जो चीजें उन्होंने गुप्त रूप से की थीं और कही थीं, वे भी सार्वजनिक हो जाती हैं, क्योंकि अब वे वही बातें खुले तौर पर कहती हैं, क्योंकि बाहरी दुनिया के लिए कोई विचार उन्हें रोक नहीं रहा है, और वे वही करने की कोशिश भी करती रहती हैं जो वे पहले करती थीं, लेकिन अब दुनिया में अपनी प्रतिष्ठा के बारे में उन्हें जो चिंता थी, वह नहीं रहती।

इसके अलावा, उन्हें तब कई ऐसी अवस्थाओं में लाया जाता है जो उनकी विशेष बुराइयों से संबंधित होती हैं, ताकि स्वर्गदूत और अच्छी आत्माएं उन्हें वैसे ही देखें जैसे वे वास्तव में हैं। इस तरह से छिपी हुई चीजें प्रकाश में लाई जाती हैं और रहस्यों को उजागर किया जाता है। जैसा कि प्रभु ने कहा: "कुछ भी छिपा नहीं है जो प्रकट नहीं होगा, और कुछ भी छिपा नहीं है जो ज्ञात नहीं होगा।

जो कुछ भी आपने अंधेरे में कहा है वह प्रकाश में सुना जाएगा, और जो आपने किसी के कान में कहा है वह आपके कानों में सुना जाएगा।छतों पर कमरे घोषित किए जाएँगे" । और एक अन्य अंश में: “मैं तुम से कहता हूँ कि लोगों ने जो भी बेकार की बातें कही हैं, वे न्याय के दिन उसका लेखा देंगे” ।

हर व्यक्ति उस समुदाय में जाता है जहाँ उसकी आत्मा दुनिया में थी। जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, हममें से प्रत्येक वास्तव में आत्मा में किसी समुदाय से जुड़ा हुआ है, या तो स्वर्गीय या नारकीय - बुरे लोग नारकीय समुदायों में और अच्छे लोग स्वर्गीय समुदायों में। आत्माओं को चरणों में उनके समुदायों की ओर ले जाया जाता है और अंत में उनमें प्रवेश किया जाता है।

जब बुरी आत्माएँ उस अवस्था में होती हैं जो आंतरिक स्व पर केंद्रित होती है, तो वे धीरे-धीरे अपने समुदायों की ओर मुड़ती हैं, और इस अवस्था के समाप्त होने से पहले वे सीधे उनका सामना करती हैं।

जब दूसरी अवस्था समाप्त हो जाती है, तो बुरी आत्माएँ खुद को ऐसे नरक में फेंक देती हैं जहाँ समान विचारधारा वाले लोग होते हैं। एक पर्यवेक्षक के लिए, यह डुबकी किसी के सिर के बल पीछे गिरने जैसी लगती है। ऐसा इसलिए लगता है क्योंकि ऐसे लोगों में आंतरिक स्व की व्यवस्था उलटी होती है, क्योंकि उन्होंने नारकीय चीजों को पसंद किया है और स्वर्गीय चीजों को ठुकरा दिया है।

इस दूसरी अवस्था के दौरान, कुछ बुरे लोग विभिन्न नरकों में आते-जाते रहते हैं, और ऐसा करते समय वे उस तरह से सिर के बल नहीं गिरते जैसे लोग तब गिरते हैं जब उनकी आध्यात्मिक तबाही की प्रक्रिया पूरी हो जाती है। दुनिया में उनकी आत्माएँ जिस वास्तविक समुदाय में थीं, वह भी उन्हें दिखाया जाता है, जबकि वे उस अवस्था में होते हैं जो बाहरी स्व पर केंद्रित होती है, ताकि उन्हें एहसास हो कि वे अपने भौतिक जीवन के दौरान नरक में थे।

लेकिन वे उसी अवस्था में नहीं थे जैसे कि वे थे।जो लोग नरक में हैं, बल्कि, वे आत्माओं की दुनिया में लोगों की तरह की स्थिति में थे। बुरी आत्माओं का अच्छी आत्माओं से अलगाव इस दूसरी अवस्था में होता है, क्योंकि पहली अवस्था में वे सभी एक साथ थे। इसका कारण यह है कि जब तक आत्माएं अपने बाहरी स्वरूप पर केंद्रित होती हैं, तब तक यह दुनिया की स्थिति की तरह होती है - बुरे लोग अच्छे लोगों के साथ होते हैं, और अच्छे लोग बुरे लोगों के साथ।

यह तब अलग होता है जब लोगों को उनके आंतरिक स्वरूप में लाया जाता है और उन्हें उनके अपने सच्चे चरित्र या इच्छा का पालन करने के लिए छोड़ दिया जाता है। बुरे लोगों का अच्छे लोगों से यह अलगाव विभिन्न तरीकों से होता है। अक्सर बुरे लोगों को उन समुदायों में ले जाया जाता है, जिनके साथ वे पहली अवस्था के दौरान अपने अच्छे विचारों और स्नेह के माध्यम से संपर्क में थे।

यह उन्हें उन समुदायों में ले जाता है, जिन्हें उन्होंने अच्छाई का बाहरी दिखावा करके यह विश्वास दिलाकर गुमराह किया था कि वे बुरे नहीं हैं। अक्सर उन्हें एक बड़े सर्किट में ले जाया जाता है, और हर जगह अच्छी आत्माओं को दिखाया जाता है कि वे वास्तव में कैसी हैं। अच्छी आत्माएँ उन्हें देखते ही दूर चली जाती हैं; और जिस तरह से अच्छी आत्माएँ दूर चली जाती हैं, उसी तरह से बुरी आत्माएँ भी दूर चली जाती हैं, और उन्हें जिस नारकीय समुदाय में ले जाया जा रहा होता है, उसका सामना करना पड़ता है। मैं उन अन्य तरीकों पर नहीं जाऊँगा जिनसे अच्छे लोगों को बुरे लोगों से अलग किया जाता है। ऐसे कई तरीके हैं।मृत्यु के बाद हमारी तीसरी अवस्था मृत्यु के बाद हमारी तीसरी अवस्था, या हमारी आत्माओं की तीसरी अवस्था, निर्देश की अवस्था है।

यह अवस्था उन लोगों के लिए है जो स्वर्ग में प्रवेश कर रहे हैं और देवदूत बन रहे हैं, लेकिन उन लोगों के लिए नहीं जो नरक में प्रवेश कर रहे हैं, क्योंकि इन्हें सिखाया नहीं जा सकता। परिणामस्वरूप, उनकी दूसरी अवस्था भी उनकी

तीसरी अवस्था है, और उनका अपने प्रेम की ओर और इसलिए उस नारकीय समुदाय की ओर मुड़ना है जो उनके अपने जैसे प्रेम में लिप्त है।

एक बार ऐसा हो जाने के बाद, वह प्रेम उनकी इच्छा और सोच का स्रोत बन जाता है; और चूंकि यह एक नारकीय प्रेम है, इसलिए वे केवल वही करना चाहते हैं जो बुरा है और वे केवल वही सोचते हैं जो झूठ है। वे इस तरह से इच्छा और सोच में आनंद लेते हैं क्योंकि ऐसा करना उनके प्रेम का एक हिस्सा है। इस तरह से आनंद पाने का नतीजा यह होता है कि वे हर उस अच्छाई और सत्य को अस्वीकार कर देते हैं जिसे उन्होंने पहले अपनाया था क्योंकि उन्हें लगता था कि यह उनके प्रेम को एक लक्ष्य तक पहुँचाने का साधन बन सकता है।

हालाँकि, अच्छे लोगों को दूसरी अवस्था से तीसरी अवस्था में लाया जाता है, जो निर्देश के माध्यम से स्वर्ग के लिए तैयारी की अवस्था है। वास्तव में, कोई भी व्यक्ति स्वर्ग के लिए तैयार नहीं हो सकता है जब तक कि वह प्रत्यक्ष रूप से यह न जान ले कि क्या अच्छा और सच्चा है, और इसके लिए आवश्यकता होती है सिखाया जा रहा है।

बिना सिखाए कोई नहीं जान सकता कि आध्यात्मिक अच्छाई और सच्चाई क्या है, या बुराई और झूठ को नहीं जान सकता जो उनके विपरीत हैं। जब हम दुनिया में होते हैं, तो हमारे लिए यह जानना संभव है कि नागरिक और नैतिक अच्छाई और सच्चाई क्या है, और किसे निष्पक्ष और ईमानदार कहा जाता है, क्योंकि वहाँ नागरिक कानून हैं जो सिखाते हैं कि निष्पक्ष क्या है, और ऐसी सामाजिक परिस्थितियाँ भी हैं जहाँ हम नैतिक कानूनों के अनुसार जीना सीखते हैं, जो सभी ईमानदारी और सही पर आधारित हैं।

आध्यात्मिक अच्छाई और सच्चाई, हालांकि, दुनिया से नहीं बल्कि स्वर्ग से सीखी जाती है। हम वास्तव में उन्हें वचन से और वचन पर आधारित चर्च सिद्धांत से जान सकते हैं, लेकिन आध्यात्मिक अच्छाई और सच्चाई तब तक हमारे जीवन में प्रवाहित नहीं हो सकती जब तक कि हम अपने मन के गहरे स्तरों के संबंध में स्वर्ग में न हों। हम स्वर्ग में तब होते हैं जब हम दिव्य सत्ता को स्वीकार करते हैं और साथ ही निष्पक्ष और ईमानदारी से कार्य करते हैं, यह पहचानते हुए कि हमें ऐसा करना चाहिए क्योंकि वचन हमें आज्ञा देता है। इस तरह हम ईश्वर के लिए निष्पक्ष और ईमानदारी से जीते हैं और खुद को और दुनिया को अपना प्राथमिक लक्ष्य नहीं बनाते।

हालाँकि, कोई भी व्यक्ति इस तरह से व्यवहार नहीं कर सकता है जब तक कि उसे पहले यह न सिखाया जाए कि ईश्वर मौजूद है, स्वर्ग और नरक वास्तविक

हैं, मृत्यु के बाद भी जीवन है, हमें ईश्वर से सबसे ज़्यादा प्यार करना चाहिए और अपने पड़ोसी से वैसा ही प्यार करना चाहिए जैसा हम खुद से करते हैं, और हमें वचन में जो कहा गया है उस पर विश्वास करना चाहिए क्योंकि वचन ईश्वरीय है।

इन सिद्धांतों को पहचाने और स्वीकार किए बिना हम आध्यात्मिक रूप से नहीं सोच सकते। और ऐसे मामलों के बारे में सोचे बिना हम उन्हें करने की इच्छा नहीं कर सकते, क्योंकि हम किसी चीज़ के बारे में सोच नहीं सकते अगर हमें उसके बारे में पता ही न हो, और हम किसी ऐसी चीज़ को करने की इच्छा नहीं कर सकते जिसके बारे में हम सोच भी न रहे हों।

लेकिन जब हम ऐसी इच्छाएँ करते हैं, स्वर्ग बहता है - अर्थात, प्रभु स्वर्ग के माध्यम से हमारे जीवन में बहता है, क्योंकि वह हमारी इच्छा में बहता है, और उसके माध्यम से हमारे विचारों में, और इन दोनों के माध्यम से हमारे जीने के तरीके में, क्योंकि इच्छा और विचार ही वह जगह है जहाँ से हमारा पूरा जीवन आता है।

हम इससे देख सकते हैं कि आध्यात्मिक अच्छाई और सत्य दुनिया से नहीं बल्कि स्वर्ग से सीखे जाते हैं, और कोई भी निर्देश के बिना स्वर्ग के लिए तैयार नहीं हो सकता है। फिर भी, जिस हद तक प्रभु पृथ्वी पर हमारे जीवन में बहता है, वह हमें यहाँ भी सिखाता है, क्योंकि उसी हद तक वह हमारी इच्छा को सत्य को सीखने के प्रेम के साथ प्रज्वलित करता है, और हमारे विचारों को प्रकाशित करता है ताकि हम जान सकें कि सत्य क्या है।

जिस हद तक ऐसा होता है, हमारा आंतरिक स्व खुल जाता है और उसमें स्वर्ग बोया जाता है। इससे भी आगे, उसी सीमा तक जो दिव्य और स्वर्गीय है वह हमारे नैतिक जीवन के ईमानदार कार्यों में और हमारे नागरिक जीवन के निष्पक्ष कार्यों में प्रवाहित होता है, और उन्हें आध्यात्मिक बनाता है, क्योंकि हमारे कार्यों का स्रोत दिव्य है - क्योंकि हम उन्हें दिव्य के लिए कर रहे हैं। हमारे नैतिक और नागरिक जीवन के ईमानदार और निष्पक्ष कार्य जो इस स्रोत से आते हैं, वास्तव में हमारे आध्यात्मिक जीवन के परिणाम हैं; और एक परिणाम को वह सब कुछ मिलता है जो उसे उत्पन्न करने वाली चीज़ से मिलता है, क्योंकि कारण कैसा है यह निर्धारित करता है कि परिणाम कैसा होगा।

शिक्षण कई समुदायों के स्वर्गदूतों द्वारा किया जाता है, मुख्य रूप से उत्तरी और दक्षिणी क्षेत्रों में। ये स्वर्गदूत बुद्धिमत्ता और ज्ञान पर केंद्रित हैं जो अच्छे और सत्य के प्रत्यक्ष ज्ञान पर आधारित हैं। शिक्षण स्थल उत्तर में हैं। विभिन्न प्रकार

हैं, प्रकारों और उपप्रकारों के अनुसार विभेदित और व्यवस्थित हैं स्वर्गीय अच्छाई का, ताकि हर किसी को उसके चरित्र और सीखने की क्षमता के अनुकूल तरीके से वहाँ सिखाया जा सके।

ये स्थल उस क्षेत्र में एक बड़े क्षेत्र में फैले हुए हैं। जिन अच्छी आत्माओं को सिखाया जाना चाहिए, उन्हें आत्माओं की दुनिया में उनकी दूसरी अवस्था समाप्त होने के बाद भगवान द्वारा वहाँ ले जाया जाता है। हालाँकि, यह सभी पर लागू नहीं होता है, क्योंकि जिन लोगों को दुनिया में सिखाया गया है, उन्हें पहले से ही भगवान द्वारा स्वर्ग के लिए तैयार किया गया है और उन्हें एक अलग मार्ग से स्वर्ग में ले जाया जाता है।

कुछ लोगों के लिए, यह मृत्यु के तुरंत बाद होता है। दूसरों के लिए, यह अच्छी आत्माओं के साथ थोड़े समय के प्रवास के बाद होता है, जिसके दौरान वे अपने विचारों और स्नेह के मोटे तत्वों को हटाकर शुद्ध हो जाते हैं, वे तत्व जो उन्होंने दुनिया में रहते हुए पद और धन में रुचि से उठाए थे। कुछ लोग पहले आध्यात्मिक रूप से टूटने की प्रक्रिया से गुजरते हैं, जो "निचली पृथ्वी" नामक स्थलों पर होता है।

उस स्थान पर कुछ लोग कठिनाइयों से गुज़रते हैं - ये वे लोग होंगे जिन्होंने खुद को झूठे सिद्धांतों के लिए मना लिया है लेकिन फिर भी अच्छा जीवन जीया है। सच तो यह है कि झूठे विश्वास हमारे दिमाग से मजबूती से चिपके रहते हैं, और जब तक वे दूर नहीं हो जाते, हम सत्य को नहीं देख सकते, और इसलिए उन्हें स्वीकार नहीं कर सकते।

इन शिक्षण स्थलों पर रहने वाले लोग एक दूसरे से अलग रहते हैं। उनका आंतरिक स्व व्यक्तिगत रूप से स्वर्ग के समुदायों से जुड़ा हुआ है, जहाँ वे जा रहे हैं; और चूँकि स्वर्ग के समुदाय स्वर्ग के अनुरूप पैटर्न में व्यवस्थित हैं, इसलिए वे स्थान भी हैं जहाँ शिक्षण होता है। परिणामस्वरूप, जब आप स्वर्ग से इन स्थलों को देखते हैं, तो वे छोटे रूप में स्वर्ग की तरह दिखते हैं। लंबाई में वे पूर्व से पश्चिम तक और चौड़ाई में दक्षिण से उत्तर तक फैले हुए हैं।

# हमारा तीसरा राज्य

## सामान्य व्यवस्था इस प्रकार है

सामने की ओर वे लोग हैं जो बचपन में मर गए और किशोरावस्था तक स्वर्ग में शिक्षा प्राप्त की। महिलाएँ उन्हें बचपन में शिक्षा देती हैं और फिर उन्हें भगवान द्वारा इस स्थान पर लाया जाता है और यहाँ शिक्षा दी जाती है।

इनके पीछे और उत्तर की ओर, विभिन्न गैर-ईसाई लोगों की शिक्षा के लिए स्थान हैं। दुनिया में वे अपने धर्म के अनुसार अच्छा जीवन जीते थे, कुछ हद तक विवेक प्राप्त करते थे और निष्पक्ष और ईमानदारी से व्यवहार करते थे।

उन्होंने ऐसा अपने राष्ट्र के कानूनों के कारण नहीं, बल्कि अपने धर्म के कानूनों के कारण किया, क्योंकि उनका मानना था कि इन कानूनों का श्रद्धापूर्वक पालन किया जाना चाहिए और उनके द्वारा किया गया कोई भी काम उनका उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

इन सभी लोगों को भगवान को पहचानने के लिए आसानी से लाया जाता है जब उन्हें ऐसा करने के लिए सिखाया जाता है, क्योंकि दिल से उनका मानना था कि भगवान अदृश्य नहीं बल्कि मानव रूप में दिखाई देते हैं।

निर्देशात्मक साइटों में गैर-ईसाईयों की संख्या अन्य सभी से अधिक है। अफ्रीका के लोग विशेष रूप से अच्छे लोग हैं।सभी को एक ही तरीके से या स्वर्ग के एक ही समुदायों द्वारा नहीं पढ़ाया जाता है। जो लोग बचपन से स्वर्ग में पले-बढ़े हैं, उन्हें आंतरिक स्वर्ग के स्वर्गदूतों द्वारा पढ़ाया जाता है क्योंकि उन्होंने विकृत धर्मों से झूठे विचारों को आत्मसात नहीं किया है या दुनिया में पद और धन के अवशेषों से अपने आध्यात्मिक जीवन को प्रदूषित नहीं किया है।
अधिकांश लोग जो वयस्क के रूप में मर चुके हैं, उन्हें सबसे बाहरी स्वर्ग के स्वर्गदूतों द्वारा पढ़ाया जाता है क्योंकि ये स्वर्गदूत उनके लिए दूर के स्वर्ग के स्वर्गदूतों की तुलना में बेहतर अनुकूल हैं। उत्तरार्द्ध - यानी, अधिक आंतरिक स्वर्गदूत - एक गहन ज्ञान पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिसे मृतक अभी तक स्वीकार नहीं कर सकता है।

स्वर्ग में शिक्षा देना पृथ्वी पर शिक्षा देने से अलग है क्योंकि वहाँ की जानकारी किसी की स्मृति में नहीं बल्कि किसी की जीवन शैली में समाहित होती है, क्योंकि आत्माओं की स्मृति उनके जीवन में होती है। वे जो कुछ भी उनके जीवन शैली से मेल खाता है उसे ग्रहण करते हैं और बनाए रखते हैं और जो कुछ भी उनके जीवन शैली से मेल नहीं खाता उसे ग्रहण नहीं करते, और न ही बनाए रखते हैं।

ऐसा इसलिए है क्योंकि आत्माएँ वास्तव में स्नेह हैं, और इसलिए वे एक मानवीय रूप में हैं जो उनके स्नेह से मिलता जुलता है। चूँकि वे ऐसे ही हैं, इसलिए वे लगातार यह जानने की इच्छा से प्रेरित होते हैं कि क्या सच है ताकि वे इसे अपने जीवन में उपयोग में ला सकें। वास्तव में प्रभु यह सुनिश्चित करते हैं कि वे उन उपयोगी चीजों को करना पसंद करें जो उनके व्यक्तिगत उपहारों के अनुकूल हों। स्वर्गदूत बनने की उनकी आशा से यह प्रेम और भी तीव्र हो जाता है।

इसके अलावा, स्वर्ग में किया जाने वाला हर काम प्रत्येक व्यक्ति के एक साझा लक्ष्य के लिए उपयोगी होने पर केंद्रित होता है, जो कि प्रभु के राज्य (जो अब उनका देश है) की भलाई है। चूँकि सभी स्वर्गदूत अपने-अपने विशिष्ट तरीकों से उपयोगी हैं, इस हद तक कि वे जो काम करते हैं, वे सीधे और व्यक्तिगत रूप से उस सामान्य उपयोगिता पर केंद्रित होते हैं, उनके द्वारा किए जाने वाले अनगिनत विशिष्ट और व्यक्तिगत उपयोगों में से प्रत्येक अच्छा और स्वर्गीय है।

इसका मतलब यह है कि इन आत्माओं में से प्रत्येक के लिए जो सत्य है उसके प्रति उनका स्नेह उपयोगिता के प्रति उनके स्नेह से इतना निकटता से जुड़ा हुआ है कि दोनों स्नेह एक साथ कार्य करते हैं। इस तरह से उनमें उपयोगिता की सच्ची समझ बोई जाती है, ताकि वे जो सत्य सीखते हैं, वे उपयोगी चीज़ों के बारे में सत्य हों।

इस तरह से स्वर्गदूतों की आत्माओं को सिखाया जाता है और स्वर्ग के लिए तैयार किया जाता है। विभिन्न शिक्षण विधियाँ हैं (उनमें से कई दुनिया में अज्ञात हैं) जिनके द्वारा प्रत्येक के लिए उपयुक्त सत्य के प्रति स्नेह पैदा किया जाता है।

व्यक्ति की अपनी विशेष उपयोगिता को इन व्यक्तियों में डाला जाता है। इनमें से अधिकांश विधियों में उपयोगी गतिविधियों का निरूपण शामिल होता है। इस तरह के निरूपण आध्यात्मिक दुनिया में हजारों तरीकों से दिखाए जा सकते हैं,

और वे इतने आनंददायक और आकर्षक होते हैं कि वे इन आत्माओं में गहराई से समा जाते हैं, उनके मन के गहरे स्तरों से लेकर उनके शरीर के बाहरी स्तरों तक। इस तरह से निरूपण पूरे व्यक्ति पर प्रभाव डालते हैं।

इसका परिणाम यह होता है कि आत्माएँ वस्तुतः उन उपयोगी गतिविधियों में बदल जाती हैं जो वे व्यक्तिगत रूप से करते हैं। इसलिए जब वे उन समुदायों में पहुँचते हैं जिनके लिए उनके निर्देश ने उन्हें तैयार किया है और उन उपयोगी गतिविधियों में संलग्न होना शुरू करते हैं, तो वे पूरी तरह से अपना जीवन जी रहे होते हैं।

हम इससे यह समझ सकते हैं कि ज्ञान अपने आप में, जो सत्य का एक बाहरी रूप है, किसी को स्वर्ग में नहीं ले जाता। बल्कि, जो हमें वहाँ ले जाता है वह ज्ञान के माध्यम से दिया गया उपयोगी जीवन है। इन शिक्षण स्थलों पर आत्माओं को स्वर्ग के लिए तैयार करने के बाद (जिसमें अधिक समय नहीं लगता, क्योंकि वे आध्यात्मिक विचारों में डूबे रहते हैं, जो एक ही बार में कई अलग-अलग अवधारणाओं को कुशलतापूर्वक कवर करते हैं), उन्हें स्वर्गदूतों के कपड़े पहनाए जाते हैं, जो आमतौर पर इतने सफ़ेद होते हैं जैसे कि वे महीन लिनन से बने हों।

फिर उन्हें स्वर्ग की ओर जाने वाले रास्ते पर ले जाया जाता है और वहाँ स्वर्गदूतों की रखवाली के लिए सौंप दिया जाता है। इसके बाद उन्हें दूसरे स्वर्गदूतों द्वारा प्राप्त किया जाता है और [विभिन्न] समुदायों और उनमें मौजूद ढेरों आशीर्वादों से परिचित कराया जाता है। फिर प्रभु प्रत्येक व्यक्ति को उसके अपने समुदाय में ले जाता है। यह कई रास्तों से होता है, कभी-कभी  चक्करदार रास्तों से।

कोई भी देवदूत उन रास्तों को नहीं जानता जिस पर उन्हें ले जाया जाता है, केवल भगवान ही जानते हैं। जब वे अपने समुदायों में पहुँचते हैं, तो उनका आंतरिक स्व खुल जाता है, और चूँकि वे उस समुदाय के सदस्य देवदूतों के आंतरिक स्व के साथ सामंजस्य में होते हैं, इसलिए उन्हें तुरंत पहचान लिया जाता है और उनका खुशी से स्वागत किया जाता है।

मैं यहाँ उन रास्तों के बारे में कुछ उल्लेखनीय जोड़ना चाहूँगा जो इन स्थलों से स्वर्ग की ओर जाते हैं, वे रास्ते जिनसे नए आए हुए स्वर्गदूतों को प्रवेश दिया जाता है। आठ रास्ते हैं, प्रत्येक शिक्षण स्थल से दो। एक पूर्व की ओर जाता है और दूसरा पश्चिम की ओर। जो लोग भगवान के स्वर्गीय राज्य में प्रवेश कर रहे हैं उन्हें पूर्वी मार्ग से प्रवेश दिया जाता है, जबकि जो लोग भगवान के आध्यात्मिक राज्य में प्रवेश कर रहे हैं उन्हें पश्चिमी मार्ग से प्रवेश दिया जाता है।

प्रभु के स्वर्गीय राज्य की ओर ले जाने वाले चार मार्ग जैतून के पेड़ों और विभिन्न फलों के पेड़ों से सुशोभित हैं, जबकि प्रभु के आध्यात्मिक राज्य की ओर ले जाने वाले मार्ग अंगूर की लताओं और लॉरेल से सुशोभित हैं। ये संगति हैं: लताएँ और लॉरेल सत्य के प्रति लगाव और उसके उपयोग के तरीके के अनुरूप हैं, जबकि जैतून और फलों के पेड़ अच्छे के प्रति लगाव और उसके उपयोग के तरीके के अनुरूप हैं।

## यह उतना कठिन नहीं है जितना लोग सोचते हैं स्वर्ग की ओर ले जाने वाला जीवन जीना

कुछ लोगों का मानना है कि स्वर्ग की ओर ले जाने वाला जीवन जीना कठिन है, जिस तरह का जीवन "आध्यात्मिक" कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने सुना है कि उन्हें दुनिया का त्याग करना होगा, शरीर और शरीर से जुड़ी इच्छाओं को छोड़ना होगा, और "आध्यात्मिक रूप से जीना होगा।" विशेष रूप से, वे सोचते हैं, इसका मतलब है कि उन्हें सांसारिक चीजों, विशेष रूप से धन और प्रतिष्ठा को अस्वीकार करना होगा, और ईश्वर, मोक्ष और शाश्वत जीवन के बारे में निरंतर, पवित्र ध्यान में जाना होगा,अपना जीवन प्रार्थना में लगाना होगा, और वचन और धार्मिक साहित्य पढ़ना होगा।

इसे ही वे दुनिया का त्याग करना और शरीर के लिए नहीं बल्कि आत्मा के लिए जीना कहते हैं।हालाँकि, वास्तविक मामला काफी अलग है, जैसा कि मैंने स्वर्गदूतों के साथ बहुत सारे अनुभव और बातचीत से सीखा है।

वास्तव में, जो लोग संसार का त्याग करते हैं और आत्मा के लिए जीते हैं, वे केवल एक निराशाजनक जीवन प्राप्त करते हैं, एक ऐसा जीवन जो स्वर्ग में आनंद का अनुभव नहीं कर सकता, क्योंकि हमारा जीवन मृत्यु के बाद भी हमारे साथ रहता है। नहीं, अगर हमें स्वर्ग में जीवन प्राप्त करना है, तो हमें हमें संसार में रहना चाहिए और इसके कर्तव्यों और इसके कामों में भाग लेना चाहिए।

इस तरह हम आध्यात्मिक जीवन प्राप्त करते हैं - अपने नैतिक और नागरिक जीवन के माध्यम से। हमारे भीतर आध्यात्मिक जीवन का निर्माण करने का कोई और तरीका नहीं है, हमारी आत्माओं को स्वर्ग के लिए तैयार करने का कोई और तरीका नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक ही समय में बाहरी जीवन के

बजाय आंतरिक जीवन जीना एक ऐसे घर में रहने जैसा है जिसकी कोई नींव नहीं है: यह धीरे-धीरे जम जाता है, इसमें बड़ी-बड़ी दरारें पड़ जाती हैं, और तब तक डगमगाता रहता है जब तक कि यह ढह न जाए।

अगर हम मानव जीवन को देखें और अपनी तर्क शक्ति द्वारा दी गई अंतर्दृष्टि से इसकी जांच करें, तो यह तीन गुना हो जाता है। यह आध्यात्मिक जीवन, नैतिक जीवन और नागरिक जीवन से बना है। इन जीवन को अलग-अलग देखा जा सकता है: कुछ लोग नागरिक जीवन जीते हैं लेकिन नैतिक या आध्यात्मिक नहीं, कुछ लोग नैतिक जीवन जीते हैं लेकिन आध्यात्मिक नहीं, और कुछ लोग नागरिक और नैतिक जीवन और आध्यात्मिक जीवन दोनों जीते हैं।

ये अंतिम वे लोग हैं जो स्वर्ग का जीवन जी रहे हैं, जबकि अन्य लोग दुनिया का जीवन जी रहे हैं, जो स्वर्ग के जीवन से अलग है। इस चर्चा से जो प्राथमिक बात उभर कर आती है वह यह है कि आध्यात्मिक जीवन भौतिक जीवन से जुड़ा हुआ नहीं है - दुनिया में जीवन - बल्कि यह उससे उसी तरह जुड़ा हुआ है जिस तरह आत्मा अपने शरीर से जुड़ी हुई है। यदि आध्यात्मिक जीवन उस संबंध के बिना होता, तो यह बिना नींव वाले घर जैसा होता जिसका अभी वर्णन किया गया है।

वास्तव में, हमारा नैतिक और नागरिक जीवन हमारे आध्यात्मिक जीवन के पीछे प्रेरक शक्ति है, क्योंकि अच्छा करने की इच्छा आध्यात्मिक जीवन का सार है, और अच्छे कार्य करना नैतिक और नागरिक जीवन का सार है। यदि इच्छा को क्रिया से अलग कर दिया जाता है, तो आध्यात्मिक जीवन केवल सोचना, केवल बात करना बन जाता है, और इच्छा शक्ति कम हो जाती है। दूर रहें-क्योंकि इसके पास आराम करने के लिए कुछ नहीं है।

हमारी इच्छा ही हमारा वास्तविक आध्यात्मिक अस्तित्व है। आगे जो कुछ भी होगा, वह किसी के लिए भी यह देखना संभव बना देगा कि स्वर्ग की ओर ले जाने वाला जीवन जीना उतना कठिन नहीं है जितना लोग सोचते हैं। क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जो नैतिक और सभ्य तरीके से नहीं जी सकता? आखिरकार, हम बचपन से ही ऐसा करना शुरू कर देते हैं, और दुनिया में रहना हमें यह सिखाता है।

हम इस तरह से जीते हैं चाहे हम बुरे हों या अच्छे, क्योंकि कोई भी बेईमान या अनुचित नहीं कहलाना चाहता। लगभग सभी लोग बाहरी तौर पर ईमानदारी और निष्पक्षता से व्यवहार करते हैं, यहाँ तक कि वास्तव में ईमानदार और निष्पक्ष दिखने के लिए- यानी, अपने कार्यों को वास्तविक ईमानदारी और निष्पक्षता पर आधारित करते हैं। आध्यात्मिक लोगों को भी इसी तरह जीने के

लिए कहा जाता है और वे सांसारिक लोगों की तरह ही आसानी से ऐसा कर सकते हैं।

लेकिन अंतर यह है कि आध्यात्मिक लोग ईश्वरीय सत्ता में विश्वास करते हैं और ईमानदारी और निष्पक्षता से कार्य करते हैं, न केवल इसलिए कि ऐसा करके वे नागरिक और नैतिक कानूनों का पालन कर रहे हैं, बल्कि इसलिए भी कि वे ईश्वरीय कानूनों का पालन कर रहे हैं। वास्तव में, चूँकि वे कार्य करते समय ईश्वरीय कानूनों के बारे में सोच रहे होते हैं, इसलिए वे स्वर्ग के स्वर्गदूतों के संपर्क में होते हैं; और जिस हद तक वे उन स्वर्गदूतों के संपर्क में होते हैं, वे उनसे जुड़ जाते हैं, और उनका आंतरिक स्व- जो अनिवार्य रूप से एक आध्यात्मिक व्यक्ति है- सक्रिय हो जाता है।

जब हम ऐसे होते हैं, तो प्रभु हमें अपना लेते हैं और हमारी समझ के बिना ही हमारा मार्गदर्शन करते हैं, और हम जो ईमानदारी और निष्पक्षता से काम करते हैं- हमारे नैतिक और नागरिक जीवन के कार्य- आध्यात्मिक स्रोत से आते हैं। जब कोई ईमानदार और निष्पक्ष कार्य आध्यात्मिक स्रोत से आता है, तो वह वास्तविक ईमानदारी और निष्पक्षता से आता है। यह दिल से आता है। बाहर से, ऐसी ईमानदारी और निष्पक्षता सांसारिक लोगों या यहाँ तक कि दुष्ट और नारकीय लोगों की ईमानदारी और निष्पक्षता जैसी ही दिखती है।

लोग, लेकिन उन गुणों का आंतरिक रूप पूरी तरह से अलग है। बुरे लोग जो उचित और ईमानदार है, वह केवल अपने स्वार्थ के लिए और सांसारिक कारणों से करते हैं। यदि वे कानून और उसके दंडों से, और अपनी प्रतिष्ठा, अपने धन और अपने जीवन को खोने से नहीं डरते, तो वे पूरी तरह से बेईमानी और अन्याय के साथ काम करेंगे।

चूँकि उन्हें ईश्वर या किसी दिव्य कानून का कोई डर नहीं है, इसलिए उनके पास कोई आंतरिक संयम नहीं है जो उन्हें नियंत्रित रखता है; इसलिए वे दूसरों को धोखा देते हैं और लूटते हैं और जितना हो सके उतना लूटते हैं, बस इसके आनंद के लिए। यह विशेष रूप से स्पष्ट है कि उनका आंतरिक स्व इस तरह का है यदि हम उनकी तुलना उन लोगों से करते हैं जो दूसरे जीवन में उनके जैसे हैं। वहाँ सभी के बाहरी स्व को हटा दिया जाता है और आंतरिक स्व को सक्रिय किया जाता है - वह स्व जिसके साथ ऐसे लोग अनंत काल तक जीते रहेंगे।

चूँकि बुरे लोग बाहरी प्रतिबंधों के बिना काम कर रहे हैं, जो (जैसा कि अभी बताया गया) कानून का डर और प्रतिष्ठा, प्रतिष्ठा, लाभ और जीवन खोने का डर है, उनके कार्य विक्षिप्त हैं, और वे ईमानदारी और निष्पक्षता का उपहास करते

हैं। इसके विपरीत, जो लोग ईमानदारी और निष्पक्षता से जीते हैं क्योंकि वे ईश्वरीय नियमों का पालन कर रहे हैं, वे बुद्धिमानी से काम करेंगे जब उनका बाहरी स्व छीन लिया जाता है और उनके पास केवल उनका आंतरिक स्व रह जाता है।

वे तब स्वर्ग के स्वर्गदूतों से जुड़ जाते हैं, जो उनके साथ अपनी बुद्धि साझा करते हैं। एक बात जो अब इस सब से स्पष्ट होनी चाहिए वह यह है कि आध्यात्मिक लोग अपने नागरिक और नैतिक जीवन में सांसारिक लोगों की तरह ही व्यवहार करते दिख सकते हैं, लेकिन वे अपने आंतरिक स्व में, अपनी इच्छा और विचार में ईश्वर से जुड़े हुए हैं। आध्यात्मिक जीवन के नियम, नागरिक जीवन के नियम और नैतिक जीवन के नियम हमें दस आज्ञाओं में सौंपे गए हैं।

पहली तीन आज्ञाओं में आध्यात्मिक जीवन के नियम हैं, अगली चार आज्ञाओं में नागरिक जीवन के नियम हैं, और अंतिम तीन आज्ञाओं में नैतिक जीवन के नियम हैं। बाह्य रूप से, जो लोग केवल सांसारिक हैं, वे इन आज्ञाओं के अनुसार वैसे ही जीते हैं जैसे आध्यात्मिक लोग जीते हैं। वे उसी तरह से ईश्वर की पूजा करते हैं: वे चर्च जाते हैं, धर्मोपदेश सुनते हैं, और अपनी भक्ति के लिए खुद को तैयार करते हैं।

वे हत्या नहीं करते, व्यभिचार नहीं करते, चोरी नहीं करते, झूठी गवाही नहीं देते, अपने साथियों से उनकी संपत्ति नहीं छीनते। हालाँकि, वे इस तरह से केवल अपने हित में व्यवहार करते हैं, ताकि दुनिया में अच्छे दिखें। आंतरिक रूप से, ये वही लोग हैं जो बाहरी रूप से बिल्कुल विपरीत हैं। क्योंकि वे दिल से ईश्वर को नकारते हैं, वे अपनी पूजा में पाखंडी की भूमिका निभाते हैं।

अपने निजी विचार में वे चर्च के पवित्र संस्कारों का उपहास करते हैं, यह मानते हुए कि वे केवल अपरिष्कृत लोगों को नियंत्रित करने के लिए काम करते हैं। यही कारण है कि वे स्वर्ग से पूरी तरह कटे हुए हैं। चूँकि वे आध्यात्मिक नहीं हैं, इसलिए वे नैतिक या नागरिक लोग भी नहीं हैं: भले ही वे हत्या न करें, लेकिन वे अपने रास्ते में आने वाले हर व्यक्ति से नफरत करते हैं और उनकी नफरत उन्हें बदला लेने के लिए जलाती है।

यदि वे नागरिक कानूनों और उनके भय के कारण बाहरी प्रतिबंधों से बंधे नहीं होते, तो वे हत्या कर देते। लेकिन हत्या करने की लालसा से वे लगातार हत्या कर रहे हैं। भले ही वे व्यभिचार न करें, फिर भी वे लगातार व्यभिचारी हैं, क्योंकि उनका मानना है कि इसमें कुछ भी गलत नहीं है।

वे वास्तव में जितना हो सके उतना करते हैं और जितनी बार उन्हें अवसर मिलता है। भले ही वे वास्तव में चोरी न करें, फिर भी वे लगातार चोरी करने का इरादा रखते हैं, क्योंकि वे दूसरों की संपत्ति का लालच करते हैं।

संपत्ति और धोखाधड़ी और दुर्भावनापूर्ण धोखाधड़ी को कानूनी रूप से न्यायोचित मानते हैं। यही बात नैतिक जीवन की अन्य आज्ञाओं पर भी लागू होती है - झूठी गवाही न देना या दूसरों की संपत्ति का लालच न करना।

जो लोग ईश्वर को नकारते हैं वे सभी ऐसे ही हैं, जिनके पास धर्म पर आधारित विवेक नहीं है। यह स्पष्ट है कि उनका आंतरिक स्व ऐसा ही है यदि हम उनकी तुलना उन लोगों से करें जो दूसरे जीवन में उनके जैसे हैं, जब उन आत्माओं के बाहरी स्व को हटा दिया जाता है और उन्हें पूरी तरह से उनके आंतरिक स्व में लाया जाता है।

चूँकि वे उस समय स्वर्ग से कटे हुए होते हैं, इसलिए वे नरक के साथ गठबंधन करते हैं और वहाँ के लोगों के साथ संगति करते हैं। यह उन लोगों के लिए अलग है जिन्होंने अपने दिलों में ईश्वरीय सत्ता को स्वीकार किया और दुनिया में जो कुछ भी किया उसमें ईश्वरीय नियमों पर ध्यान दिया, न केवल दस आज्ञाओं में से पहले तीन को बल्कि अन्य को भी मानते हुए।

जब वे पूरी तरह से अपने भीतरी स्वरूप में आ जाते हैं, उनके बाहरी स्वरूप को हटा दिए जाने के बाद, वे दुनिया में जितने समझदार थे, उससे कहीं ज़्यादा समझदार होते हैं। अपने भीतरी स्वरूप में आना अंधकार से प्रकाश में, अज्ञानता से ज्ञान में, दुःखद जीवन से आनंदमय जीवन में आने जैसा है, क्योंकि वे ईश्वर में हैं और इसलिए स्वर्ग में हैं।

मैंने यह सब इसलिए बताया है ताकि यह देखा जा सके कि इन दोनों प्रकार के लोगों में से प्रत्येक किस तरह का है, हालाँकि दोनों एक ही तरह का बाहरी जीवन जी सकते हैं। कोई भी देख सकता है कि विचार जहाँ इरादे ले जाते हैं, वहाँ जाते हैं या जहाँ हम उन्हें निर्देशित करते हैं, वहाँ जाते हैं।

विचार वास्तव में हमारी आंतरिक दृष्टि है, और यह हमारी बाहरी दृष्टि की तरह ही व्यवहार करता है। यह जिस ओर मुड़ा हुआ है और जिस पर लक्षित है, उस ओर मुड़ता है और उस पर टिका हुआ है। अगर हमारी आंतरिक दृष्टि या विचार दुनिया की ओर मुड़ा हुआ है और उस पर टिका हुआ है, तो विचार हमारे भीतरी स्वरूप को दर्शाता है।

परिणाम यह होता है कि हमारा विचार सांसारिक हो जाता है। यदि यह हमारी स्वयं की ओर और हमारी प्रतिष्ठा की ओर मुड़ता है, तो यह भौतिकवादी हो जाता है। हालाँकि, यदि यह स्वर्ग की ओर मुड़ता है, तो यह स्वर्गीय हो जाता है।

इसलिए यदि यह स्वर्ग की ओर मुड़ता है, तो यह ऊपर उठ जाता है; यदि यह हमारी स्वयं की ओर मुड़ता है, तो यह स्वर्ग से दूर हो जाता है और भौतिक में डूब जाता है; यदि यह संसार की ओर मुड़ता है, तो यह स्वर्ग से भी दूर हो जाता है और हमारी आँखों के सामने आने वाली वस्तुओं में बिखर जाता है।

यह हमारा प्रेम ही है जो हमारे इरादों को बनाता है और हमारी आंतरिक दृष्टि, या हमारे विचार को उसकी वस्तुओं पर केंद्रित करता है। यही कारण है कि अपने स्वयं के प्रति प्रेम हमारे विचार को स्वयं की ओर और जो कुछ भी हम अपना कहते हैं, उसकी ओर निर्देशित करता है, जबकि संसार का प्रेम इसे सांसारिक मामलों की ओर निर्देशित करता है, और स्वर्ग का प्रेम इसे स्वर्गीय मामलों की ओर निर्देशित करता है।

इस तथ्य से हम बता सकते हैं कि हमारा आंतरिक मन किस स्थिति में है - हमें बस यह पहचानने की ज़रूरत है कि हम किससे प्रेम करते हैं। अर्थात्, यदि हम स्वर्ग से प्रेम करते हैं, तो हमारे मन की आंतरिक पहुंच स्वर्ग की ओर उठती है और ऊपर की ओर खुलती है। यदि हम संसार और स्वयं से प्रेम करते हैं, तो हमारे मन की आंतरिक पहुंच ऊपर की ओर बंद हो जाती है और इसके बजाय बाहरी चीजों की ओर खुलती है।

इसलिए यह स्पष्ट है कि यदि हमारे मन की उच्च पहुंच उनके ऊपर की चीजों के लिए बंद है, तो हम स्वर्ग और चर्च से संबंधित जो कुछ भी है उसे नहीं देख सकते। जहाँ तक हमारा संबंध है, वे चीजें अंधकार में हैं; और जो कुछ भी अंधकार में है, हम या तो उसे नकारते हैं या कम से कम उसे समझ नहीं पाते। यही कारण है कि जो लोग खुद से और दुनिया से सबसे अधिक प्रेम करते हैं, चूँकि उनके मन के उच्च स्तर बंद हैं, उनके दिल में ईश्वरीय सत्यों को नकारते हैं; और भले ही वे उनके बारे में रटे-रटाए तरीके से बोलते हों, फिर भी वे समझ नहीं पाते कि वे क्या कह रहे हैं।

ईश्वरीय सत्यों के प्रति उनका वही रवैया है जो वे सांसारिक और भौतिक चीजों के प्रति रखते हैं। क्योंकि वे ऐसे ही हैं, वे अपनी भौतिक इंद्रियों के माध्यम से आने वाली चीज़ों के अलावा किसी और चीज़ के बारे में नहीं सोच सकते, जो

उनके लिए आनंद का एकमात्र स्रोत है। उनके संवेदी अनुभव में बहुत कुछ ऐसा भी शामिल है जो गंदा, अश्लील, अधार्मिक और आपराधिक है।

वे इन जुनूनों से विचलित नहीं हो सकते क्योंकि स्वर्ग से उनके दिमाग में कोई प्रवाह नहीं है, क्योंकि जैसा कि अभी बताया गया है कि उनके दिमाग उनके ऊपर की चीज़ों के लिए बंद हैं। हमारा इरादा हमारी इच्छा है। यह हमारी आंतरिक दृष्टि या विचार को केंद्रित करता है, क्योंकि हम जो चाहते हैं, उसे पाने का इरादा बनाते हैं; और जो हम पाने का इरादा रखते हैं, उसके बारे में सोचते हैं।

इसलिए अगर हम स्वर्ग जाने का इरादा बनाते हैं, तो हम अपनी सोच को उस पर केंद्रित करते हैं, और अपनी सोच के साथ हम अपना पूरा दिमाग केंद्रित करते हैं, जो परिणामस्वरूप स्वर्ग में होता है। इसका मतलब है कि हमारा दिमाग दुनिया की चिंताओं को अपने से नीचे देखता है, जैसे कोई घर की छत से नीचे देख रहा हो। यही कारण है कि जिन लोगों के मन के गहरे स्तर खुले होते हैं, वे अपने अंदर बुराई और झूठे तत्वों को देख सकते हैं, क्योंकि ये उनके आध्यात्मिक मन से नीचे होते हैं।

इसके विपरीत, यदि लोगों का आंतरिक स्व खुला नहीं है, तो वे उन बुराई और झूठे तत्वों को नहीं देख सकते हैं क्योंकि वे उनके बीच में ही हैं, उनसे ऊपर नहीं। यह हमें दिखाता है कि मानवीय बुद्धि कहाँ से आती है, और मानवीय पागलपन भी, और मृत्यु के बाद हम कैसे होंगे जब हमें इच्छा करने और सोचने और फिर अपने आंतरिक स्व के अनुसार कार्य करने और बोलने के लिए छोड़ दिया जाएगा। फिर से, यह चर्चा यह इंगित करने के लिए शामिल की गई है कि एक व्यक्ति अंदर से कैसा है, और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह बाहरी रूप से किसी और के समान दिखता है।

अब हम देख सकते हैं कि स्वर्ग का जीवन जीना उतना कठिन नहीं है जितना लोग सोचते हैं। यह केवल यह पहचानने की बात है कि जब हम किसी ऐसी चीज़ का सामना करते हैं जिसके बारे में हम जानते हैं कि वह बेईमानी या अनुचित है, चाहे वह कितनी भी आकर्षक क्यों न हो, हमें उसे नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह ईश्वरीय आज्ञाओं के विरुद्ध है।

अगर हम इस तरह से सोचने के आदी हो जाते हैं, और इस परिचितता से एक आदत बन जाती है, तो हम धीरे-धीरे स्वर्ग से जुड़ जाते हैं। जितना अधिक हम स्वर्ग से जुड़ते हैं, उतना ही हमारे मन के उच्च स्तर खुलते हैं, और जितना अधिक वे खुलते हैं, उतना ही हम अपने अंदर बेईमानी या अनुचित चीज़ों को

समझते हैं; और जितना अधिक हम इन गुणों को पहचान पाते हैं, उतना ही हम उन्हें दूर कर पाते हैं।

सच तो यह है कि जब तक हम उसे देख नहीं लेते, तब तक कोई भी बुराई दूर नहीं की जा सकती। यह हमारी स्वतंत्रता ही है जो हमें सबसे पहले स्वर्ग में होने की इस स्थिति में प्रवेश करने की अनुमति देती है, क्योंकि हर कोई इस तरह से सोचने के लिए स्वतंत्र है। हालाँकि, एक बार प्रक्रिया शुरू हो जाने के बाद, प्रभु हमारे भीतर अपने चमत्कार करते हैं और हमें न केवल बुराइयों को देखने देते हैं, बल्कि उन्हें न चाहने और अंततः उनसे दूर होने का कारण भी बनते हैं।

प्रभु के इन शब्दों का यही अर्थ है, "मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है" । हालांकि, यह समझना महत्वपूर्ण है कि इस तरह से सोचना और बुराइयों का विरोध करना उतना ही कठिन होता जाता है जितना अधिक हम जानबूझकर बुरे काम करते हैं - वास्तव में, जितना अधिक हम उन्हें करने के आदी हो जाते हैं और अंततः उन्हें देखना बंद कर देते हैं।

फिर हम उन्हें प्यार करने लगते हैं और अपने प्यार को संतुष्ट करने के लिए उन्हें बहाना बनाते हैं, और सभी प्रकार के आत्म-धोखे से उन्हें तर्कसंगत बनाते हैं और कहते हैं कि हमें उन्हें करने की अनुमति है, कि वे अच्छे हैं। ऐसा उन लोगों के साथ होता है जो कम उम्र में ही बिना रोक-टोक के सभी प्रकार की बुराइयों में डूब जाते हैं और साथ ही अपने पूरे दिल से हर दिव्य चीज़ को अस्वीकार कर देते हैं।

मुझे एक बार स्वर्ग और नरक का रास्ता दिखाया गया था। बाईं ओर या उत्तर की ओर जाने वाला एक चौड़ा रास्ता था। कई आत्माओं को इसके साथ यात्रा करते देखा जा सकता था। हालांकि, दूरी में, मैं एक काफी बड़ा पत्थर देख सकता था जहां चौड़ा रास्ता समाप्त हो गया था। दो रास्ते पत्थर से दूर जाते थे; एक बाईं ओर जाता था, और दूसरा, जो पत्थर के दूसरी तरफ था, दाईं ओर जाता था।

बाईं ओर का रास्ता संकरा और सीमित था, जो पश्चिम से दक्षिण की ओर जाता था, और इसलिए स्वर्ग के प्रकाश में जाता था। दाईं ओर का रास्ता चौड़ा और खुला था, जो नरक की ओर नीचे की ओर तिरछा था। सबसे पहले - दोराहे पर बड़े पत्थर तक - हर किसी को एक ही रास्ते पर चलते देखा जा सकता था; लेकिन उस बिंदु पर वे अलग हो गए। अच्छे लोग बाईं ओर मुड़ गए और स्वर्ग की ओर जाने वाले सीमित रास्ते पर चल पड़े।

बुरे लोगों ने दोराहे पर पत्थर को देखा भी नहीं, बल्कि उस पर गिर गए और खुद को चोट पहुँचाई। जब वे उठे, तो वे दाईं ओर चौड़े रास्ते पर तेज़ी से चल पड़े जो नरक की ओर जाता था। बाद में मुझे इन सबका मतलब समझाया गया। पहला रास्ता, वह चौड़ा रास्ता जिस पर कई अच्छे लोग और कई बुरे लोग साथ-साथ चल रहे थे - सभी एक-दूसरे से दोस्तों की तरह बातें कर रहे थे, क्योंकि वे अपने बीच का अंतर नहीं देख पा रहे थे - वह रास्ता उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता था जो बाहरी तौर पर समान रूप से ईमानदार और निष्पक्ष जीवन जीते हैं, और जिन्हें उनके दिखने के तरीके से अलग नहीं बताया जा सकता।

जिस मोड़ या दोराहे पर पत्थर था जहाँ बुरे लोग ठोकर खाकर गिरे थे, जहाँ से वे नरक के रास्ते पर तेज़ी से चल पड़े, वह ईश्वरीय सत्य का प्रतिनिधित्व करता था, जिसे नरक पर ध्यान केंद्रित करने वाले लोग नकारते हैं। उच्चतम अर्थ में, इस पत्थर का अर्थ भगवान के दिव्य मानव स्वभाव से था। हालाँकि, जिन लोगों ने ईश्वरीय सत्य और भगवान के दिव्य स्वभाव को स्वीकार किया, उन्हें स्वर्ग की ओर ले जाने वाले रास्ते पर ले जाया गया।

इससे मुझे फिर से पता चला कि बुरे और अच्छे लोग बाहरी तौर पर एक जैसा जीवन जीते हैं या एक ही रास्ते पर चलते हैं, एक दूसरे की तरह ही। फिर भी जो लोग अपने दिल में ईश्वर को स्वीकार करते हैं, खासकर चर्च के भीतर जो लोग भगवान की दिव्य प्रकृति को स्वीकार करते हैं, उन्हें स्वर्ग ले जाया जाता है। जो लोग इसे स्वीकार नहीं करते हैं उन्हें नरक ले जाया जाता है। दूसरे जीवन में रास्ते उन विचारों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो हमारी इच्छा या इरादे से बहते हैं।

वहाँ जो रास्ते दिखाई देते हैं वे हमारे इरादों से उत्पन्न विचारों का ठीक-ठीक जवाब देते हैं। और हम जहाँ भी चलते हैं वे विचार जो हमारे इरादों से उत्पन्न होते हैं। यही कारण है कि आप आत्माओं के रास्तों से बता सकते हैं कि वे और उनके विचार कैसे हैं। चौड़े और संकरे रास्तों को देखकर मुझे प्रभु के शब्दों का अर्थ पता चला, "संकीर्ण द्वार से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह द्वार और वह मार्ग खुला है जो विनाश की ओर ले जाता है, और बहुत से लोग हैं जो उस पर चलते हैं; मार्ग सीमित है और वह द्वार कठिन है जो जीवन को पहुँचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं" ।

जीवन की ओर ले जाने वाला मार्ग संकीर्ण इसलिए नहीं है क्योंकि यह कठिन है। इसके बजाय यह संकीर्ण इसलिए है क्योंकि बहुत कम लोग इसे पाते हैं, जैसा कि उल्लेख किया गया है। जिस कोने पर मैंने चौड़ा, आम रास्ता समाप्त होते देखा और जहाँ से दो रास्ते विपरीत दिशाओं में जाते प्रतीत होते थे, उसने मुझे प्रभु के शब्दों का अर्थ दिखाया, “क्या तुमने यह नहीं पढ़ा कि लिखा है, ‘जिस पत्थर को

राजमिस्त्रियों ने अस्वीकार कर दिया, वही मुख्य कोने का पत्थर बन गया है'? जो कोई इस पत्थर पर गिरेगा, वह चकनाचूर हो जाएगा" । पत्थर का अर्थ है ईश्वरीय सत्य, और इस्राएल की चट्टान का अर्थ है ईश्वरीय मानव स्वभाव के संबंध में प्रभु। राजमिस्त्री ही वह पत्थर हैं जो ईश्वर को समर्पित हैं।चर्च के लोग।

मुख्य आधारशिला वह है जहाँ काँटा है, और गिरना और टूट जाना इनकार करना और नाश होना है। मुझे दूसरे जीवन में कुछ लोगों से बात करने की अनुमति दी गई है जिन्होंने पवित्र और पवित्र जीवन जीने के लिए दुनिया के मामलों से खुद को दूर कर लिया था, और कुछ ऐसे लोगों से भी जिन्होंने खुद को विभिन्न तरीकों से अपमानित किया था क्योंकि उन्हें लगा कि यह दुनिया को त्यागना और शरीर की इच्छाओं को वश में करना है।

हालाँकि, उनमें से अधिकांश को इससे जो मिला वह एक निराशाजनक अस्तित्व था। उन्होंने खुद को सक्रिय दयालुता के जीवन से दूर कर लिया था, जो हमें दुनिया में भाग लेने से ही मिल सकता है। परिणामस्वरूप, वे स्वर्गदूतों के साथ संगति नहीं कर सके, क्योंकि स्वर्गदूतों का जीवन - जो हर्षित और धन्य है - दूसरों के लिए दयालुता से किए गए कार्यों से बना है।

इससे भी बदतर बात यह है कि दुनिया से अलग जीवन जीने वाले लोग आत्म-धार्मिकता की भावना से जलते हैं और लगातार स्वर्ग की लालसा करते हैं। वे स्वर्गीय आनंद को अपना पुरस्कार मानते हैं, लेकिन उन्हें इस बात का कोई ज्ञान नहीं है कि वास्तव में स्वर्गीय आनंद क्या है। वास्तव में, स्वर्गदूतों के आनंद में आत्म-धार्मिकता की कोई भावना नहीं होती।

इसमें काम और सार्वजनिक कर्तव्य और इन चीज़ों के ज़रिए किए जाने वाले अच्छे कामों पर आनंद शामिल होता है। जब अलग जीवन जीने वाले लोगों को स्वर्गदूतों के साथ लाया जाता है और उनके आनंद में हिस्सा लेने दिया जाता है, तो वे इस तरह से भ्रमित हो जाते हैं जैसे कि वे अपने विश्वास से बिल्कुल अलग कुछ देख रहे हों।

चूँकि वे उस आनंद का जवाब नहीं दे सकते, इसलिए वे दूर चले जाते हैं और उन लोगों के साथ जुड़ जाते हैं जिन्होंने दुनिया में उनके जैसा ही जीवन जिया है। मैंने यह सब यह दिखाने के लिए चर्चा की है कि स्वर्ग की ओर ले जाने वाला जीवन दुनिया से अलग होना नहीं है, बल्कि दुनिया में रहना है और बिना किसी प्रेमपूर्ण दया (और हम संसार में भाग लेकर ही प्रेमपूर्ण दयालुता से कार्य कर सकते हैं)
स्वर्ग की ओर बिल्कुल नहीं ले जाता।

नहीं, स्वर्ग की ओर ले जाने वाला जीवन प्रेमपूर्ण दयालुता का जीवन है। यह हर कर्तव्य, हर व्यापारिक लेन-देन, हर कार्य में ईमानदारी और निष्पक्षता से व्यवहार करने का जीवन है, अपने गहरे आत्म से और इसलिए एक स्वर्गीय स्रोत से कार्य करना। यह स्रोत हमारे जीवन जीने के तरीके में काम कर रहा है जब भी हम ईमानदारी और निष्पक्षता से कार्य करते हैं, विशेष रूप से इसलिए क्योंकि ऐसा करना ईश्वरीय नियमों के अनुसार है।

स्वर्ग की ओर ले जाने वाला जीवन कठिन नहीं है। प्रेमपूर्ण दयालुता के जीवन से अलग धर्मपरायण जीवन कठिन है। और जैसा कि लोग मानते हैं कि यह स्वर्ग की ओर ले जाता है, ऐसा नहीं है। यह वहाँ से दूर ले जाता है।

## स्वर्ग में बच्चे

कुछ लोगों का मानना है कि चर्च में जन्म लेने वाले बच्चे ही स्वर्ग जाते हैं, चर्च के बाहर जन्म लेने वाले बच्चे नहीं। वे कहते हैं कि ऐसा इसलिए है क्योंकि चर्च में जन्म लेने वाले बच्चों का बपतिस्मा होता है और बपतिस्मा के ज़रिए उन्हें चर्च के विश्वास में लाया जाता है।

उन्हें यह एहसास नहीं है कि बपतिस्मा लेने से लोगों को विश्वास नहीं मिलता या वे स्वर्ग नहीं जाते। बपतिस्मा सिर्फ़ एक संकेत और याद दिलाने का काम करता है कि हमें पुनर्जन्म की ज़रूरत है और चर्च में जन्म लेने वाले लोग पुनर्जन्म ले सकते हैं क्योंकि वचन वहाँ है, वचन जिसमें दिव्य सत्य हैं जो पुनर्जन्म को संभव बनाते हैं। चर्च वह जगह है जहाँ प्रभु को जाना जाता है, जो पुनर्जन्म का स्रोत है।

इसलिए इन लोगों को यह समझना चाहिए कि हर बच्चा जो मरता है, चाहे वह कहीं भी पैदा हुआ हो, चर्च के भीतर या बाहर, भक्त या अभक्त माता-पिता से, मृत्यु के बाद प्रभु द्वारा स्वीकार किया जाता है, स्वर्ग में पाला जाता है, ईश्वरीय योजना के अनुसार सिखाया जाता है, और जो अच्छा है उसके लिए स्नेह से भरा होता है।

सत्य के प्रत्यक्ष ज्ञान के साथ; और फिर, बुद्धि और ज्ञान में निरंतर परिपूर्ण होते हुए, ऐसे सभी व्यक्ति स्वर्ग में जाते हैं और देवदूत बनते हैं। जो कोई भी तर्कसंगत रूप से सोचता है, वह महसूस कर सकता है कि कोई भी नरक में जाने के लिए पैदा नहीं होता है - हर कोई स्वर्ग जाने के लिए पैदा होता है।

अगर हम नरक में पहुँचते हैं तो हम खुद दोषी हैं, लेकिन बच्चे अभी तक किसी भी दोष के लिए उत्तरदायी नहीं हैं। जो बच्चे मर जाते हैं, वे दूसरे जीवन में भी बच्चे ही होते हैं। उनके पास उसी तरह का बालसुलभ मन होता है, वही अनजान मासूमियत, सभी के प्रति वही कोमलता।

लेकिन वे अभी-अभी देवदूत बनने में सक्षम होने लगे हैं; वे देवदूत नहीं हैं, बल्कि केवल भावी देवदूत हैं। वास्तव में, जो कोई भी इस दुनिया को छोड़ता है, वह [पहले] जीवन की एक ही अवस्था में होता है - एक शिशु शिशु की अवस्था में होता है, एक बच्चा बच्चे की अवस्था में होता है, एक किशोर या वयस्क या बुजुर्ग किशोर, वयस्क या बुजुर्ग की अवस्था में होता है। यह अवस्था, बेशक, वास्तव में बदलती भी है।

हालाँकि, एक बच्चे की अवस्था दूसरों की तुलना में बेहतर होती है, क्योंकि बच्चा मासूम होता है, और क्योंकि बच्चों ने अभी तक बुराइयों को अपने अंदर जड़ नहीं जमाने दिया है, वास्तव में उन्हें जीकर। मासूमियत की प्रकृति के कारण, हर स्वर्गीय चीज़ उसमें बोई जा सकती है; यह उन सत्यों को समाहित करने में सक्षम है जो हमारे विश्वास को बनाते हैं और वह अच्छाई जो प्रेम से आती है। दूसरे जीवन में बच्चों की स्थिति हमारी दुनिया के बच्चों की तुलना में बहुत बेहतर है क्योंकि वे सांसारिक शरीर से सुसज्जित नहीं हैं।

इसके बजाय, उनके पास एक स्वर्गदूतीय शरीर है। सांसारिक शरीर स्वाभाविक रूप से भारी होता है। यह अपनी प्राथमिक संवेदनाओं और प्राथमिक आवेगों को आंतरिक या आध्यात्मिक दुनिया से नहीं बल्कि बाहरी या भौतिक दुनिया से प्राप्त करता है; इसलिए इस जीवन में बच्चे दुनिया को चलना, काम करना और बात करना अभ्यास के ज़रिए सीखना पड़ता है - यहाँ तक कि उनकी इंद्रियाँ, जैसे कि देखना और सुनना, भी उपयोग से विकसित होती हैं। दूसरे जीवन में बच्चों के लिए यह अलग है।

चूँकि वे आत्माएँ हैं, इसलिए उनके कार्य सीधे उनके आंतरिक स्व से उत्पन्न होते हैं। वे अभ्यास के बिना चलते हैं और बात भी करते हैं, हालाँकि पहले वे केवल विविध भावनाओं के आधार पर बोलते हैं जो अभी तक मानसिक अवधारणाओं में विभेदित नहीं हुई हैं। हालाँकि, चूँकि उनका बाहरी स्व अनिवार्य रूप से उनके आंतरिक स्व के समान ही है, इसलिए वे बहुत जल्द [अपनी बातचीत में] मानसिक अवधारणाओं का उपयोग करना शुरू कर देते हैं।

तथ्य यह है कि स्वर्गदूतों की वाणी उनकी भावनाओं से उत्पन्न विचारों के साथ पूरी तरह से सहमत है, न केवल इसलिए कि उनका भाषण उन भावनाओं से बहता है, बल्कि इसलिए भी कि उनकी भावनाएँ उनकी मानसिक अवधारणाओं से अलग-अलग रंग लेती हैं। जैसे ही बच्चे पुनः जागृत होते हैं (जो उनकी मृत्यु के तुरंत बाद होता है), उन्हें स्वर्ग ले जाया जाता है और उन महिला स्वर्गदूतों को सौंप दिया जाता है जो अपने भौतिक जीवन के दौरान बच्चों से कोमलता से प्यार करती थीं और भगवान से भी प्यार करती थीं।

चूँकि इस दुनिया में वे सभी बच्चों से उतनी ही कोमलता से प्यार करती थीं जैसे कि वे उनकी माँ हों, वे इन नए बच्चों को अपना मानते हैं, और बच्चे सहज रूप से उन्हें अपनी माँ की तरह प्यार करते हैं। प्रत्येक ऐसी परी के उतने ही बच्चे होते हैं जितने उसकी आध्यात्मिक मातृ प्रकृति चाहती है।

मुझे संक्षेप में यह समझाने की ज़रूरत है कि बच्चों को स्वर्ग में कैसे पाला जाता है। वे अपने शिक्षकों से बोलना सीखते हैं। उनका पहला भाषण केवल भावना से उत्पन्न ध्वनि है। यह धीरे-धीरे अधिक स्पष्ट हो जाता है क्योंकि वे जो अवधारणाएँ सोच रहे हैं वे इसमें प्रवेश करती हैं, क्योंकि इस तरह की अवधारणाएँ जो भावनाओं से उत्पन्न होती हैं वे पूरी स्वर्गदूतीय भाषा बनाती हैं।

बच्चे अपनी आँखों से जो चीज़ें देखते हैं, जो उन्हें विशेष रूप से प्रसन्न करती हैं, वे इन भावनाओं से जुड़ी पहली वस्तुएँ हैं, जो मूल रूप से पूरी तरह से मासूम होती हैं। चूँकि वे जो कुछ भी देखते हैं, वह आध्यात्मिक स्रोत से होता है, इसलिए स्वर्ग के पहलू उनमें प्रवाहित होते हैं, जो उनके गहरे आत्म को खोलते हैं। इस तरह वे हर दिन पूर्णता के करीब पहुँचते हैं। एक बार जब यह पहला चरण पूरा हो जाता है, तो उन्हें दूसरे स्वर्ग में ले जाया जाता है जहाँ उन्हें प्रशिक्षकों द्वारा पढ़ाया जाता है, और इसी तरह।

उन्हें विशेष रूप से उनके चरित्र के अनुकूल छवियों द्वारा पढ़ाया जाता है, ऐसी छवियाँ जो अविश्वसनीय रूप से सुंदर होती हैं और भीतर से आने वाली बुद्धि से भरी होती हैं। इस तरह धीरे-धीरे उनमें एक बुद्धि पैदा होती है जिसकी आत्मा ही अच्छाई से आती है। मैं इस बिंदु पर दो उदाहरण उद्धृत कर सकता हूँ जिन्हें देखने की मुझे अनुमति दी गई है जो इन छवियों के बाकी हिस्सों की प्रकृति का सुझाव देने के लिए काम करेंगे।

भगवान को कब्र से उठते हुए दिखाया गया था, और इस अवधारणा के साथ-साथ उनके मानवीय स्वभाव को उनके दिव्य स्वभाव के साथ एकाकार करते हुए दिखाया गया था। यह इतनी बुद्धिमत्ता से किया गया था कि यह सभी मानवीय

बुद्धिमता को पार कर गया, लेकिन साथ ही एक बच्चे की तरह और मासूमियत से भी।

उदाहरण के लिए, हालांकि कब्र का विचार इंगित किया गया था, भगवान का विचार उसी समय नहीं दिखाया गया था, सिवाय इसके कि इतनी सूक्ष्मता से कि कोई यह नहीं बता सकता था कि यह भगवान थे, जैसे कि वे बहुत दूर थे। उन्होंने इस उपकरण का उपयोग कब्रों से जुड़े मृत्यु के विचार को दूर करने के लिए किया।

फिर उन्होंने बहुत ही विवेकपूर्ण तरीके से कुछ धुंधली चीज़, कुछ जो एक पतली भाप की तरह दिखती थी, को कब्र में बहने दिया। ऐसा करके वे फिर से उचित सूक्ष्मता के साथ, बपतिस्मा द्वारा दर्शाए गए आध्यात्मिक जीवन का प्रतीक। फिर मैंने इन स्वर्गदूतों को प्रभु का प्रतिनिधित्व करते हुए देखा जो उन लोगों के पास उतर रहे थे जो बंधे हुए थे और उनके साथ स्वर्ग में चढ़ रहे थे ।

यह उन्होंने अतुलनीय विवेक और श्रद्धा के साथ दिखाया। बच्चों को चीजों को समझने के तरीके के अनुसार, उन्होंने प्रभु को उनके ऊपर चढ़ने में छोटी-छोटी रस्सियों से सहारा दिया, जो इतनी पतली और सीधी थीं कि लगभग अदृश्य थीं। इस सब के दौरान, उन्हें इस बात का पवित्र डर था कि चित्रण का कोई भी हिस्सा आध्यात्मिक और स्वर्गीय चीज़ों से अलग किसी चीज़ को न छूए।

ऐसे अन्य चित्रण भी थे जो बच्चों को आकर्षित करते थे - उदाहरण के लिए, बच्चों के दिमाग के अनुकूल नाटक - जिसके माध्यम से बच्चों को सत्य के बारे में जागरूकता और अच्छे के लिए स्नेह की ओर ले जाया जाता था। मुझे यह भी दिखाया गया कि उनकी कोमल समझ कैसी है।

जब मैं प्रभु की प्रार्थना कर रहा था और वे अपनी समझ के आधार पर मेरी अवधारणाओं में बह रहे थे, मैंने देखा कि उनका प्रवाह इतना कोमल और सौम्य था कि यह लगभग शुद्ध भावना के अलावा कुछ भी नहीं था। उसी समय, मैंने देखा कि उनकी समझ प्रभु के लिए खुल गई थी, क्योंकि ऐसा लग रहा था कि जो कुछ उनसे आ रहा था वह उनके माध्यम से बह रहा था।

वास्तव में, प्रभु बच्चों के विचारों में बहते हैं, मुख्य रूप से सबसे गहरे आत्म से। बच्चों में कुछ भी इसे बंद नहीं कर सकता है, जैसा कि वयस्कों में होता है - कोई भी गलत सिद्धांत उन्हें सच्ची समझ से नहीं रोकता है, कोई भी बुरा जीवन उन्हें अच्छाई को स्वीकार करने और इस तरह बुद्धिमान बनने से नहीं रोकता है।

हम इन सब बातों से देख सकते हैं कि मृत्यु के तुरंत बाद बच्चे उस अवस्था में नहीं पहुँचते जिसमें देवदूत होते हैं, बल्कि धीरे-धीरे उन्हें इस अवस्था में लाया जाता है कि उन्हें अच्छाई और सच्चाई के बारे में बढ़ती हुई जानकारी हो। यह स्वर्ग की रचना के अनुसार है। उनके चरित्र के छोटे-छोटे विवरण प्रभु को ज्ञात हैं, इसलिए उन्हें उनके प्रत्येक झुकाव के अनुसार, अच्छे से उत्पन्न होने वाले सत्य और सत्य के कारण किए जाने वाले अच्छे कार्यों को स्वीकार करने की ओर ले जाया जाता है।

मुझे यह भी दिखाया गया है कि उनमें जो कुछ भी डाला जाता है, उसे उन तरीकों से सिखाया जाता है जो बच्चों को बहुत रुचिकर और प्रसन्न करते हैं और उनके व्यक्तित्व के अनुकूल होते हैं। मुझे इन तरीकों में से एक के उदाहरण के रूप में देखने की अनुमति दी गई है, बच्चे सुंदर ढंग से कपड़े पहने हुए हैं, उनके गले और पतली भुजाओं में फूलों की मालाएँ हैं, और उनके फूल आकर्षक और स्वर्गीय रंगों से चमक रहे हैं। एक बार मुझे कुछ बच्चों को उनके शिक्षकों के साथ स्वर्ग जैसे बगीचे में, कुछ युवतियों की संगति में देखने की अनुमति मिली।

यह पेड़ों का बगीचा नहीं था, बल्कि लॉरेल जैसे कुछ का था, जो मेहराबदार मेहराबों के आकार का था; ये आंतरिक खांचे की ओर जाने वाले रास्तों पर भारी रूप से सजाए गए द्वार बनाते थे। बच्चे खुद भी तुलनात्मक सुंदरता के कपड़े पहने हुए थे। जब वे दरवाजे से अंदर गए, तो प्रवेश द्वार पर लगे फूलों ने कल्पना से परे सबसे आनंददायक प्रकाश बिखेरा।

इससे कोई यह देख सकता है कि किस तरह की चीजें उन्हें खुशी देती हैं। इससे भी कोई यह देख सकता है कि कैसे वे उन चीजों के द्वारा मासूमियत और प्रेमपूर्ण दया के आशीर्वाद की ओर निर्देशित होते हैं जो उन्हें रुचिकर लगती हैं और उन्हें प्रसन्न करती हैं, जिन्हें भगवान लगातार उन आशीर्वादों से भरते हैं। दूसरे जीवन में आम तौर पर होने वाले संचार के माध्यम से, मुझे दिखाया गया है कि बच्चों की अवधारणाएँ कैसी होती हैं जब वे विभिन्न वस्तुओं को देख रहे हैं।

ऐसा लगता है जैसे सब कुछ जीवित है; इसलिए उनके विचारों की सबसे छोटी अवधारणाओं में एक अंतर्निहित जीवन है। मैंने पाया कि पृथ्वी पर बच्चों की अवधारणाएँ बहुत हद तक एक जैसी होती हैं जब वे अपने खेल में शामिल होते हैं, क्योंकि वे अभी तक वयस्कों की तरह यह सोचने में सक्षम नहीं हैं कि क्या निर्जीव है। मैंने पहले उल्लेख किया था कि बच्चों में या तो स्वर्गीय या आध्यात्मिक प्रकृति होती है।

आप बहुत आसानी से उन लोगों को पहचान सकते हैं जो स्वर्गीय हैं और जो आध्यात्मिक हैं। स्वर्गीय बच्चे अधिक कोमलता से सोचते हैं, बात करते हैं और कार्य करते हैं, इसलिए जो [प्रतिनिधित्व] दिखाई देता है वह शायद ही कुछ ऐसा हो जो अच्छे के प्रति प्रेम से बहता हो, प्रभु और अन्य बच्चों के प्रति प्रेम। आध्यात्मिक बच्चे इतनी कोमलता से नहीं सोचते, बात नहीं करते और कार्य नहीं करते। इसके बजाय, [उनका प्रतिनिधित्व] कुछ ऐसा है जो उनके बारे में छोटी-छोटी चीजों में फड़फड़ाते पंखों जैसा है।

फिर भी, स्वर्गीय बच्चों से उनका अंतर उनकी मनोदशा में, साथ ही अन्य मामलों में भी देखा जा सकता है। बहुत से लोग अनुमान लगाते हैं कि बच्चे स्वर्ग में भी बच्चे ही रहते हैं और जब वे स्वर्गदूतों के बीच होते हैं, तब भी वे बच्चों जैसे ही होते हैं। स्वर्गदूत क्या होता है, इस बारे में अनभिज्ञ लोगों ने शायद इस राय की पुष्टि यहाँ-वहाँ चर्चों में मौजूद छवियों से की है, जहाँ स्वर्गदूतों को बच्चों के रूप में दर्शाया गया है। हालाँकि, इस मामले की सच्चाई वास्तव में बहुत अलग है।

बुद्धि और विवेक से ही स्वर्गदूत बनते हैं, ये गुण बच्चों में तब तक नहीं होते जब तक वे बच्चे बने रहते हैं। बच्चे स्वर्गदूतों के साथ होते हैं, लेकिन वे खुद अभी तक स्वर्गदूत नहीं हैं। एक बार जब वे बुद्धिमान और समझदार हो जाते हैं, तो वे पहली बार स्वर्गदूत होते हैं। वास्तव में - और यह कुछ ऐसी बात है जिसने मुझे आश्चर्यचकित किया - तब वे बच्चों की तरह नहीं दिखते  लेकिन वयस्कों की तरह, क्योंकि अब उनके पास बच्चों जैसा स्वभाव नहीं है, बल्कि एक अधिक वयस्क देवदूत जैसा स्वभाव है।

यह बुद्धि और ज्ञान के साथ-साथ चलता है। बच्चे अधिक वयस्क दिखते हैं - यानी, किशोर और युवा वयस्कों की तरह - जैसे-जैसे वे बुद्धि और ज्ञान में पूर्णता के करीब बढ़ते हैं, इसका कारण यह है कि बुद्धि और ज्ञान आवश्यक आध्यात्मिक भोजन हैं। इसलिए जो चीजें उनके दिमाग को पोषण देती हैं, वे उनके शरीर को भी पोषण देती हैं। यह पत्राचार का परिणाम है, क्योंकि शरीर का रूप उनके आंतरिक स्व का एक बाहरी रूप है।

यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि स्वर्ग में बच्चे युवावस्था से आगे नहीं बढ़ते हैं, बल्कि हमेशा उसी उम्र में रहते हैं। मुझे इस बात का भरोसा दिलाने के लिए, मुझे कुछ ऐसे लोगों से बात करने की अनुमति दी गई है, जो स्वर्ग में बच्चों की तरह पले-बढ़े थे और वहीं बड़े हुए थे।

दूसरों से मैंने तब बात की जब वे अभी भी बच्चे थे, और फिर उसी समूह के साथ बाद में जब वे युवा हो गए; और मैंने उनसे उनके जीवन के एक आयु स्तर से दूसरे आयु स्तर तक के बारे में सुना। मासूमियत में सब कुछ स्वर्गीय है। यही कारण है कि बच्चों की मासूमियत अच्छे और सच्चे के लिए सभी स्नेह का आधार है। मासूमियत का अर्थ है प्रभु द्वारा निर्देशित होना और स्वयं द्वारा नहीं, इसलिए हम जितने मासूम होंगे, हम अपनी आत्म-छवि के साथ उतने ही कम व्यस्त होंगे। और हम अपनी आत्म-छवि के साथ अपने व्यस्तता से जितने मुक्त होंगे, हम प्रभु द्वारा दी गई पहचान उतनी ही अधिक प्राप्त करेंगे।

प्रभु की पहचान को प्रभु की धार्मिकता और योग्यता कहा जाता है। बच्चों की मासूमियत, हालांकि, वास्तविक मासूमियत नहीं है, क्योंकि इसमें अभी भी बुद्धि का अभाव है। वास्तविक मासूमियत बुद्धि है क्योंकि जिस हद तक हम समझदार हैं, हम प्रभु द्वारा निर्देशित होना चाहते हैं; या जो हम चाहते हैं, वह भगवान द्वारा निर्देशित होना चाहिए।

इसका मतलब यह है कि जितना हम प्रभु के नेतृत्व में चलना पसंद करते हैं, हम उतने ही बुद्धिमान होते हैं। इसलिए बच्चों को बाहरी मासूमियत से जो उन्हें पहले से ही दर्शाती है, जिसे बचपन की मासूमियत कहा जाता है, आंतरिक मासूमियत की ओर लाया जाता है जो ज्ञान की मासूमियत है। यह दूसरी मासूमियत उनकी शिक्षा की पूरी प्रक्रिया का लक्ष्य है।

इसलिए जब वे ज्ञान की मासूमियत पर पहुँचते हैं, तो बचपन की मासूमियत जो इस प्रक्रिया के दौरान उनके लिए आधार का काम करती थी, उनके साथ जुड़ जाती है। बच्चों की मासूमियत की प्रकृति मुझे कुछ लकड़ी जैसी और लगभग बेजान सी दिखाई दी। फिर इसे जीवंत किया गया क्योंकि बच्चों को सत्य को पहचानने और जो अच्छा है उसे प्यार करने के द्वारा पूर्णता के करीब लाया गया।

इस प्रदर्शन के बाद, सच्ची मासूमियत की प्रकृति मुझे एक बेहद खूबसूरत बच्चे के रूप में दिखाई दी, नग्न और बहुत ज़्यादा जीवित; और वास्तव में अन्य स्वर्गदूतों की नज़र में, सबसे गहरे स्वर्ग में सच्चे मासूम लोग बिल्कुल छोटे बच्चों की तरह दिखाई देते हैं। उनमें से कुछ तो नग्न भी हैं, क्योंकि मासूमियत को बिना शर्मिंदगी के नग्नता के रूप में चित्रित किया गया है, जैसा कि हम बगीचे में पहले मानव और उसकी पत्नी के बारे में पढ़ते हैं ।

इसी तरह, जब उन्होंने अपनी मासूमियत खो दी तो वे अपनी नग्नता पर शर्मिंदा हुए और खुद को छिपा लिया । संक्षेप में, जितने समझदार स्वर्गदूत होते हैं, वे

उतने ही मासूम होते हैं; और जितने मासूम होते हैं, उतने ही वे खुद को बच्चों की तरह देखते हैं। यही कारण है कि वचन में बचपन का अर्थ मासूमियत है। मैंने स्वर्गदूतों से बच्चों के बारे में बात की है, और मैंने पूछा कि क्या वे शुद्ध और बुराई रहित थे, यह तर्क देते हुए कि उनमें कोई बुराई नहीं थी जो वयस्कों की तरह काम में लाई गई हो।

मैं हालाँकि, उन्हें बताया गया कि उनके भीतर भी उतनी ही बुराई है - कि वास्तव में वे भी बुराई के अलावा कुछ नहीं हैं। हालाँकि, वे, सभी स्वर्गदूतों की तरह, प्रभु द्वारा उनकी बुराई से दूर रखे जाते हैं और उन्हें अच्छाई पर ध्यान केंद्रित करने के लिए रखा जाता है, जब तक कि उन्हें ऐसा न लगे कि वे अपनी मर्जी से अच्छाई पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

इसलिए बच्चों को स्वर्ग में बड़े होने के बाद अपने बारे में गलत धारणा रखने से रोकने के लिए - यह विश्वास कि उनके आस-पास जो अच्छाई है वह उनसे है न कि प्रभु से - उन्हें समय-समय पर उनकी वंशानुगत बुराइयों में वापस रखा जाता है और तब तक उनके साथ रहने दिया जाता है जब तक कि वे जानते, पहचानते और विश्वास नहीं करते कि चीजें वास्तव में कैसी हैं।

एक व्यक्ति था जो बचपन में मर गया था और स्वर्ग में बड़ा हुआ था, जिसकी इस तरह की राय थी। वह एक विशेष राजा का पुत्र था; इसलिए उसे बुराई के अपने जन्मजात जीवन में वापस रखा गया। मैं उसके जीवन की आभा से यह बता सकता था कि वह दूसरों पर प्रभुता करने के लिए प्रेरित था और व्यभिचार को कोई महत्व नहीं देता था - बुराइयाँ जो उसके माता-पिता से उसकी आनुवंशिकता का हिस्सा थीं।

एक बार जब उसने पहचान लिया कि वह ऐसा था, तो उसका उन स्वर्गदूतों के बीच स्वागत किया गया जिनके साथ वह पहले था। दूसरे जीवन में, हममें से कोई भी कभी भी विरासत में मिली बुराई के लिए कोई सजा नहीं भुगतता, क्योंकि यह हमारी नहीं है। हम अपने वंशानुगत स्वभाव के लिए दोषी नहीं हैं। हम किसी भी व्यक्तिगत बुराई के लिए सजा भुगतते हैं जिसे हमने अपने जीवन में किया है - यानी, जो भी वंशानुगत बुराई हमने अपने जीवन में की है, उसके लिए।

बड़े बच्चों को उनकी वंशानुगत बुराई की स्थिति में वापस रखने का कारण उन्हें दंडित करना नहीं है। यह सुनिश्चित करना है कि वे यह जानें कि वे अपने आप में बुरे हैं और वे नरक से स्वर्ग में प्रभु की दया से लाए गए हैं, कि वे स्वर्ग में इसलिए नहीं हैं क्योंकि वे इसके लायक हैं, लेकिन प्रभु के कारण। यह उन्हें यह

दावा करने से रोकता है कि वे दूसरों से बेहतर हैं क्योंकि उनके पास जो अच्छाई है।

यह एक दूसरे से प्यार करने की अच्छाई के खिलाफ होगा, ठीक वैसे ही जैसे यह विश्वास की शिक्षाओं के खिलाफ है। कई बार कई बच्चे मेरे साथ गायन मंडली में रहे हैं, इससे पहले कि वे बोलना सीखें। वे एक फीकी, अव्यवस्थित आवाज़ निकालते थे, जैसे कि वे अभी भी उस तरह से एक साथ प्रदर्शन करने में सक्षम नहीं हैं जैसे वे बड़े होने पर करते थे।

लेकिन जिस बात ने मुझे वास्तव में आश्चर्यचकित किया वह यह था कि मेरे साथ मौजूद आत्माएँ उन्हें बात करने के लिए मजबूर करने की कोशिश करने से खुद को रोक नहीं पाईं - इस तरह का आवेग आत्माओं में जन्मजात होता है। हालाँकि, हर बार मैंने देखा कि बच्चे विरोध करते थे, इस तरह से बोलने के लिए मजबूर नहीं होना चाहते थे।

मैंने अक्सर उनमें अनिच्छा, एक अरुचि देखी जिसमें एक तरह का आक्रोश था। जब उन्हें बोलने की थोड़ी शक्ति दी गई, तो उन्होंने बस इतना ही कहा "ऐसा नहीं है।" मुझे बताया गया कि यह बच्चों की एक तरह की परीक्षा है, न केवल उन्हें झूठ और बुराई का विरोध करने के लिए अभ्यस्त बनाने और परिचय कराने के लिए, बल्कि उन्हें किसी और के कहने पर सोचने, बोलने या कार्य करने से रोकने के लिए भी, ताकि वे खुद को भगवान के अलावा किसी और के द्वारा निर्देशित न होने दें।

हम इससे यह समझ सकते हैं कि स्वर्ग में बच्चों का पालन-पोषण कैसा होता है - सत्य की समझ और अच्छाई के बारे में ज्ञान के माध्यम से, उन्हें एक स्वर्गदूतीय जीवन की ओर ले जाया जाता है, जिसमें भगवान के लिए प्रेम और एक पारस्परिक प्रेम होता है जिसमें मासूमियत होती है। एक उदाहरण यह स्पष्ट करने के लिए काम कर सकता है कि पृथ्वी पर बच्चों का पालन-पोषण कई मामलों में कितना अलग है। मैं एक बड़े शहर की सड़क पर था और मैंने कुछ लड़कों को एक-दूसरे से लड़ते हुए देखा।

भीड़ इकट्ठी हुई और इसे काफी खुशी से देखा, और मुझे बताया गया कि माता-पिता खुद अपने बच्चों को इस तरह के झगड़ों में धकेलते हैं। अच्छी आत्माएँ और देवदूत जो मेरी आँखों से यह सब देख रहे थे, वे इतने घिनौने थे कि मैं उन्हें काँपता हुआ महसूस कर सकता था, खासकर इस तथ्य पर कि माता-पिता इस तरह के व्यवहार को प्रोत्साहित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि ऐसा करके वे बहुत कम उम्र में ही सभी आपसी प्यार और सभी मासूमियत को दबा देंगे जो छोटे बच्चों को भगवान से मिलती है, और वे उन्हें नफरत और प्रतिशोध की ओर ले जाएँगे। इसलिए अपने जानबूझकर किए गए व्यवहारों से वे अपने बच्चों को स्वर्ग से दूर कर देंगे, जहाँ आपसी प्यार के अलावा कुछ भी नहीं है। जो भी माता-पिता अपने बच्चों के लिए अच्छा चाहते हैं, उन्हें इस तरह की चीजों से सावधान रहना चाहिए। मुझे उन लोगों के बीच अंतर का वर्णन करने की भी आवश्यकता है जो बच्चों के रूप में मरते हैं और जो वयस्क के रूप में मरते हैं।

जो लोग वयस्क अवस्था में मरते हैं, उनकी आत्मा में सांसारिक, भौतिक दुनिया से प्राप्त एक स्तर होता है, और वे इसे अपने साथ ले जाते हैं। यह स्तर उनकी स्मृति और उसकी भौतिक और शारीरिक भावना है। मृत्यु के बाद, इसमें अब कोई विषय-वस्तु नहीं जोड़ी जाती है, और यह तब निष्क्रिय हो जाती है; लेकिन यह मृत्यु के बाद भी उनके विचारों को बाहरी स्तर के रूप में सेवा प्रदान करती है क्योंकि उनकी सोच इसमें प्रवाहित होती है।

इस प्रकार यह स्तर - और जिस तरह से किसी व्यक्ति की तर्क शक्तियाँ उस स्तर के अनुरूप होती हैं - यह निर्धारित करती हैं कि मृत्यु के बाद व्यक्ति कैसा होगा। जो लोग बचपन में मर गए हैं और स्वर्ग में पले-बढ़े हैं, उनके पास इस तरह का स्तर नहीं है। उनका एक स्तर है जो सांसारिक से आध्यात्मिक में स्थानांतरित हो गया है, क्योंकि वे अपने साथ भौतिक दुनिया या अपने सांसारिक शरीर से कुछ भी नहीं लाते हैं।

इसका मतलब है कि वे मोटे तौर पर फंस नहीं सकते हैं  दुनिया की भावनाओं या उन भावनाओं से आने वाले विचारों में। वे वास्तव में अपने हर रूप के लिए स्वर्ग से प्रेरणा लेते हैं। इतना ही नहीं, बल्कि छोटे बच्चे इस बात से अनजान होते हैं कि उनका जन्म धरती पर हुआ है, इसलिए उन्हें लगता है कि उनका जन्म स्वर्ग में हुआ है।

इसका मतलब यह है कि वे नहीं जानते कि आध्यात्मिक जन्म के अलावा कोई और जन्म क्या होता है, जो अच्छे और सच्चे से परिचित होने और लोगों को सही मायने में इंसान बनाने वाली बुद्धि और ज्ञान के माध्यम से प्राप्त होता है। चूँकि ये भगवान से आते हैं, इसलिए वे मानते हैं कि वे स्वयं भगवान के हैं, और ऐसा होना पसंद करते हैं।

हालाँकि, अगर धरती पर पले-बढ़े लोग भौतिक और सांसारिक चीज़ों के प्यार से, खुद के लिए और दुनिया के लिए प्यार से खुद को दूर कर लें, और इसके बजाय

आध्यात्मिक चीज़ों के लिए प्यार अपनाएँ, तो वे स्वर्ग में पले-बढ़े बच्चों की तरह ही पूर्णता के करीब पहुँच सकते हैं।

## स्वर्ग में प्रतिनिधित्व और उपस्थिति

'मनुष्य जो केवल प्राकृतिक प्रकाश से सोचता है वह यह समझने में असमर्थ है कि स्वर्ग में कुछ भी है जो दुनिया में है; और इस कारण से कि प्राकृतिक प्रकाश से उसने पहले ही सोच लिया है, और खुद को इस विचार में स्थापित कर लिया है, कि देवदूत और कुछ नहीं बल्कि मन हैं, और मन ईथर सांसों की तरह हैं, जिनमें मनुष्यों की तरह कोई इंद्रियां नहीं हैं। इसलिए आँखें नहीं हैं, और यदि आँखें नहीं हैं तो कोई दृश्य वस्तुएँ भी नहीं हैं; और फिर भी एक देवदूत के पास मनुष्य की तरह सभी इंद्रियाँ होती हैं, और उससे कहीं अधिक उत्कृष्ट इंद्रियाँ होती हैं; और जिस प्रकाश से देवदूत देखते हैं वह उस प्रकाश से कहीं अधिक चमकीला है जिससे मनुष्य देखते हैं।

स्वर्ग में स्वर्गदूतों को दिखाई देने वाली वस्तुओं की प्रकृति को कुछ शब्दों में वर्णित नहीं किया जा सकता है। अधिकांश भाग में वे पृथ्वी पर मौजूद वस्तुओं के समान हैं, लेकिन रूप में कहीं अधिक परिपूर्ण और संख्या में अधिक प्रचुर हैं।

जब मुझे स्वर्गदूतों के साथ रहने की इजाजत दी गई, तो मेरे आस-पास की चीजें बिल्कुल दुनिया की चीजों की तरह दिखाई दीं; और इतनी स्पष्टता से कि मुझे पता ही नहीं चलता कि मैं दुनिया में नहीं हूं और किसी राजा के महल में हूं। पत्राचार के अनुसार देवदूत क्या देखते हैं, यह दिखाने के लिए मैंने मनुष्य की तरह स्वर्गदूतों से भी बात की, मैं यहां एक उदाहरण के रूप में उल्लेख करूंगा। जो बुद्धिमान हैं वे सभी प्रकार के पेड़ों और फूलों से भरे बगीचों और पार्कों को देखते हैं।

पेड़ बहुत सुंदर व्यवस्था में लगाए गए हैं, जो धनुषाकार पहुंच और घेरने वाले रास्तों के साथ मिलकर कुंज बनाते हैं, जो सभी शब्दों से भी अधिक सुंदर हैं। बुद्धिमान लोग वहाँ चलते हैं और फूल इकट्ठा करते हैं और मालाएँ बुनते हैं, जिनसे वे छोटे बच्चों को सजाते हैं। इसके अलावा, ऐसे पेड़ और फूल भी हैं जो कभी देखे नहीं जाते और पृथ्वी पर मौजूद नहीं हो सकते। ईसाई जगत के कई विद्वान तब आश्चर्यचकित हो जाते हैं जब मृत्यु के बाद वे स्वयं को दुनिया की तरह ही शरीर, कपड़े और घरों में पाते हैं।

और जब उन्हें याद आता है कि उन्होंने मृत्यु के बाद जीवन, आत्मा, आत्माओं और स्वर्ग और नरक के बारे में क्या सोचा था, तो वे शर्मिंदा होते हैं और स्वीकार करते हैं कि उन्होंने मूर्खतापूर्ण सोचा था, और विश्वास में सरल लोगों ने उन्हें बताया था कि उन्होंने बहुत अधिक समझदारी से सोचा था।

## वो कपड़े जो फरिश्ते पहने नजर आते हैं

चूँकि देवदूत मनुष्य हैं और मनुष्यों की तरह ही पृथ्वी पर एक साथ रहते हैं, उनके पास कपड़े और आश्रय और ऐसी अन्य चीजें हैं, हालांकि, अंतर यह है कि क्योंकि वे अधिक परिपूर्ण स्थिति में हैं, उनके साथ सभी चीजें अधिक परिपूर्ण हैं।

जिस प्रकार स्वर्गदूतों की बुद्धि मनुष्य की बुद्धि से इस हद तक आगे निकल जाती है कि उसे अवर्णनीय कहा जा सकता है, उसी प्रकार यह उन सभी चीज़ों के साथ भी है जो स्वर्गदूतों द्वारा देखी और देखी जाती हैं, क्योंकि जो कुछ भी वे देखते और देखते हैं, चीजें उनके अनुसार होती हैं बुद्धिमत्ता।

स्वर्गदूतों को जो वस्त्र पहनाए जाते हैं वे अन्य सभी चीज़ों के साथ मेल खाते हैं; और उनका वास्तविक अस्तित्व है क्योंकि वे मेल खाते हैं। उनके वस्त्र उनकी बुद्धि के अनुसार होते हैं, और इसलिए स्वर्ग में प्रत्येक व्यक्ति को उसकी बुद्धि के अनुसार वस्त्र पहने हुए देखा जाता है; और जैसे एक दूसरे से अधिक बुद्धिमान होता है, वैसे ही एक के कपड़े दूसरे के कपड़ों से बेहतर होते हैं।

कुछ सबसे बुद्धिमान लोगों के कपड़े ऐसे होते हैं मानो वे आग से जलते हों, दूसरों के कपड़े ऐसे होते हैं मानो वे रोशनी से चमकते हों; कम बुद्धिमानों के पास ऐसे कपड़े होते हैं जो चमकते हुए सफेद या बिना चमक के सफेद होते हैं; और कम बुद्धिमान लोगों के कपड़े भी अलग-अलग रंग के होते हैं (178)। जैसे स्वर्ग में स्वर्गदूत कपड़े पहने हुए हैं, वैसे ही वे दुनिया में कपड़े पहने हुए दिखाई देते हैं, जैसा कि भविष्यवक्ताओं ने और प्रभु की कब्र पर देखा था, जिनकी शक्ल बिजली की तरह थी, और जिनके कपड़े चमकते और सफेद थे और जो दिखाई देते थे स्वर्ग। मैंने जॉन को देखा, जिसके पास बढ़िया मलमल और सफेद कपड़े थे।

देवदूतों के वस्त्र केवल वस्त्र के रूप में नहीं दिखते, बल्कि वास्तविक वस्त्र हैं, यह इस बात से स्पष्ट है कि देवदूत उन्हें देखते और महसूस करते हैं, कि उनके पास कई वस्त्र हैं, और वे उन्हें पहनते और उतारते हैं, उनकी देखभाल करते हैं ऐसे कपड़े जो अब उपयोग में नहीं हैं, और ज़रूरत पड़ने पर उन्हें दोबारा पहनें।

मैंने कई बार देखा है कि वह अलग-अलग तरह के कपड़े पहनते हैं।' जब मैंने उससे पूछा कि उसे ये कपड़े कहाँ से मिले, तो उसने कहा कि उसे ये भगवान से मिले हैं, और उसने कहा कि उसे ये कपड़े कहाँ से मिले। उन्हें उपहार के रूप में प्राप्त किया जाता है, और कभी-कभी उन्हें अनजाने में भी दिया जाता है।

उन्होंने यह भी कहा कि उनके कपड़े उनकी अवस्था के अनुसार बदलते हैं, पहले और दूसरे चरण में उनके कपड़े चमकीले और चमकदार सफेद होते हैं, और तीसरे और चौथे चरण में वे थोड़े कम चमकीले होते हैं।

## स्वर्गदूतों का निवास

स्वर्ग में समाज हैं, और देवदूत मनुष्यों की तरह रहते हैं, इसलिए उनके निवास स्थान भी हैं, और ये प्रत्येक व्यक्ति की जीवन स्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न होते हैं। वे उच्च स्थिति वाले लोगों के लिए विलासितापूर्ण हैं, और निम्न स्थिति वाले लोगों के लिए कम विलासितापूर्ण हैं।

मैंने अक्सर स्वर्गदूतों से स्वर्ग में निवास स्थानों के बारे में बात की है, और कहा है कि शायद ही कोई विश्वास करेगा कि उनके पास निवास स्थान और आवास हैं; आंशिक रूप से इसलिए कि वे उन्हें नहीं देखते हैं, आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि वे नहीं जानते कि स्वर्गदूत मनुष्य हैं, और आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि उनका मानना है कि स्वर्गदूतों का स्वर्ग वह स्वर्ग है जिसे वे अपने चारों ओर अपनी आँखों से देखते हैं, और क्योंकि यह खाली दिखता है और वे विश्वास करते हैं देवदूत ईथर रूप हैं, इसलिए वे निष्कर्ष निकालते हैं कि वे ईथर में रहते हैं।

इसके अलावा, वे यह नहीं समझते कि आध्यात्मिक दुनिया में वे चीज़ें कैसे हो सकती हैं जो प्राकृतिक दुनिया में हैं, क्योंकि वे आध्यात्मिक के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं। देवदूतों ने उत्तर दिया कि वे जानते हैं कि इस समय संसार में ऐसी अज्ञानता व्याप्त है। , , उन्होंने यह भी कहा कि वचन से यह मालूम हो सकता है कि स्वर्गदूत मनुष्य हैं, क्योंकि जो देखे गए हैं वे मनुष्य हैं।

एक इंसान के रूप में देखा जाता है; और प्रभु, जो अपने सभी मनुष्यों को अपने साथ ले गए, उसी तरह प्रकट हुए। यह भी ज्ञात हो सकता है कि मनुष्य होने के नाते स्वर्गदूतों का भी निवास और ठिकाना होता है और वे हवा में नहीं उड़ते।

क्योंकि सभी का एक समान विचार है कि देवदूत मानव रूप में हैं, और उनके पास स्वर्ग में महल कहलाने वाले घर हैं, जो पृथ्वी पर मौजूद आवासों से भी भव्यता में श्रेष्ठ हैं। लेकिन अनुभव का प्रमाण प्रस्तुत करना बेहतर है। जब भी मैंने स्वर्गदूतों से आमने-सामने बात की है, मैं उनके निवासों में उनके साथ रहा हूँ।

ये आवास पृथ्वी पर मौजूद आवासों की तरह ही हैं जिन्हें हम घर कहते हैं, लेकिन अधिक सुंदर हैं। इनमें बड़ी संख्या में कक्ष, ड्राइंग रूम और शयनकक्ष हैं; चारों ओर आँगन, बगीचे, फूलों की क्यारियाँ और लॉन भी हैं। जहां वे एक साथ रहते हैं, उनके घर एक-दूसरे के करीब होते हैं, एक शहर की तरह एक-दूसरे के बगल में व्यवस्थित होते हैं, रास्ते, सड़कें और सार्वजनिक चौराहे होते हैं, ठीक पृथ्वी पर शहरों की तरह। मुझे उनके बीच से गुजरने, हर जगह देखने और कभी-कभी घर में प्रवेश करने की अनुमति दी गई है।

मैंने स्वर्ग में ऐसे-ऐसे भव्य महल देखे हैं जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। ऊपर वे ऐसे चमकते थे जैसे शुद्ध सोने से बने हों, और नीचे ऐसे चमकते थे मानो कीमती पत्थरों से बने हों, कुछ दूसरों की तुलना में अधिक चमकदार थे। अंदर भी वैसा ही था. कमरे को सजाने वाली सजावट का वर्णन करने के लिए शब्द और ज्ञान दोनों अपर्याप्त हैं। दक्षिण की ओर पार्क थे, जहाँ हर चीज़ चमकती थी, कुछ स्थानों पर पत्तियाँ ऐसी चमकती थीं जैसे कि वे चाँदी के बने हों, और फल ऐसे चमकते थे जैसे कि वे सोने के बने हों; वहीं उनकी क्यारियों में फूल अपने रंगों से इंद्रधनुष बना रहे थे। सीमाओं से परे, जहां दृश्य समाप्त होता था, अन्य महल दिखाई देते थे।

जिन घरों में स्वर्गदूत रहते हैं, वे दुनिया के घरों की तरह नहीं बनाए जाते हैं, बल्कि भगवान द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को उसकी अच्छाई और सच्चाई की धारणा के अनुसार मुफ्त में दिए जाते हैं। देवदूतों के पास जो कुछ भी है, वे उसे ईश्वर की ओर से प्राप्त मानते हैं; और जो कुछ वे चाहते हैं वह उन्हें दिया जाता है।

# स्वर्गदूतों की वाणी

देवदूत एक-दूसरे से वैसे ही बात करते हैं जैसे दुनिया में मनुष्य करते हैं, और विभिन्न विषयों पर, जैसे घरेलू मामले, और नागरिक, नैतिक और आध्यात्मिक जीवन के मामले। और इसमें कोई अंतर नहीं है सिवाय इसके कि उनकी बातचीत इंसानों की तुलना में अधिक बुद्धिमान है, क्योंकि यह अधिक आंतरिक विचार से आती है।

मुझे अक्सर उनके साथ जुड़ने और उनसे इस तरह बात करने की अनुमति दी गई है जैसे एक दोस्त अपने दोस्त के साथ और कभी-कभी एक अजनबी के साथ एक अजनबी की तरह; और जब मैं उस समय उनके जैसी ही स्थिति में था, तो मुझे नहीं पता था कि मैं पृथ्वी पर मनुष्यों से बात कर रहा था।

स्वर्गदूतों की वाणी, मनुष्य की वाणी की तरह, अलग-अलग शब्दों से बनी होती है; इसे श्रव्य रूप से उच्चारित और सुना भी जा सकता है; क्योंकि स्वर्गदूतों के पास मनुष्यों की तरह मुँह, जीभ और कान होते हैं, और एक ऐसा वातावरण होता है जिसमें उनकी वाणी की ध्वनि स्पष्ट होती है, हालाँकि यह एक आध्यात्मिक वातावरण है जो स्वर्गदूतों के लिए अनुकूलित है, जो आध्यात्मिक हैं।

इस वातावरण में देवदूत सांस लेते हैं और अपनी सांस के माध्यम से शब्द बोलते हैं, जैसे मनुष्य अपने वातावरण में करते हैं। पूरे स्वर्ग में सभी की भाषा एक ही है, और वे सभी एक-दूसरे को समझते हैं, चाहे वे किसी भी समाज या दूरी के हों।

वहां की भाषा सीखी नहीं जाती, बल्कि सभी में जन्मजात होती है, क्योंकि वह उनके स्नेह और विचार से प्रवाहित होती है, उनकी वाणी के स्वर उनके स्नेह से मेल खाते हैं, और शब्दों के बाद आने वाले स्वर स्नेह से उत्पन्न विचार के अनुरूप होते हैं। हैं; और इस पत्राचार के कारण वाणी ही आध्यात्मिक है, क्योंकि यह स्नेह ध्वनि है और विचार बोल रहा है।

# स्वर्ग में दिव्य पूजा

स्वर्ग में दिव्य पूजा बाहरी रूप से पृथ्वी पर दिव्य पूजा से भिन्न नहीं है, लेकिन आंतरिक रूप से यह भिन्न है। स्वर्ग में, पृथ्वी की तरह, सिद्धांत, शिक्षाएँ और चर्च की इमारतें हैं। मूलतः वहां के सिद्धांत हर जगह समान हैं; लेकिन ऊंचे स्वर्ग में उन्हें निचले स्वर्ग की तुलना में अधिक आंतरिक ज्ञान होता है। शिक्षाएँ सिद्धांतों के अनुरूप हैं; और जैसे उनके पास घर और महल हैं, वैसे ही उनके पास उपदेश देने के लिए चर्च की इमारतें भी हैं।

ऐसी चीज़ें स्वर्ग में मौजूद हैं क्योंकि स्वर्गदूत लगातार ज्ञान और प्रेम में परिपूर्ण होते जा रहे हैं। क्योंकि उनके पास इंसानों की तरह समझ और इच्छाशक्ति है; और उसकी समझ और उसकी इच्छा दोनों ही लगातार पूर्ण होने में सक्षम हैं, समझ बुद्धि की सच्चाई के माध्यम से और इच्छा प्रेम के गुणों के माध्यम से।

लेकिन स्वर्ग में आवश्यक दिव्य पूजा में चर्च जाना और उपदेश सुनना शामिल नहीं है, बल्कि सिद्धांतों के अनुसार प्रेम, दान और विश्वास का जीवन शामिल है; चर्चों में उपदेश केवल जीवन के मामलों में निर्देश के साधन के रूप में कार्य करते हैं। मैंने इस विषय पर स्वर्गदूतों से बात की है और उन्हें बताया है कि दुनिया में यह माना जाता है कि दिव्य पूजा में केवल चर्च जाना, धर्मोपदेश सुनना, साल में तीन या चार बार कम्युनियन का संस्कार करना और पूजा के अन्य कार्य निर्धारित हैं। चर्च द्वारा. करने में संलग्न है; इसके अलावा, प्रार्थना के लिए विशेष समय समर्पित करें और ऐसे समय में भक्तिपूर्वक व्यवहार करें।

स्वर्गदूतों ने कहा कि ये बाहरी कार्य हैं जिन्हें अवश्य किया जाना चाहिए, लेकिन वे तब तक बेकार हैं जब तक कि कोई आंतरिक कार्य न हो, जो सिद्धांतों द्वारा सिखाए गए उपदेशों के अनुरूप जीवन हो।

# स्वर्ग में देवदूतों की नियुक्ति

स्वर्ग में रोजगारों की गणना करना असंभव है, और उनका विस्तार से वर्णन करना और भी कठिन है, लेकिन सामान्य शब्दों में उनके बारे में कुछ कहा जा सकता है; क्योंकि वे अनगिनत हैं. , , , वहां हर किसी का उपयोग है, क्योंकि भगवान का राज्य उपयोग का राज्य है।

स्वर्ग में सेवा के कई रूप हैं, जैसे पृथ्वी पर हैं, क्योंकि धार्मिक मामले, नागरिक मामले और घरेलू मामले हैं। ऊपर जो कहा और दिखाया गया है उसमें चर्च संबंधी मामलों का उल्लेख किया गया है, जहां दिव्य पूजा का व्यवहार किया जाता है; नागरिक मामलों में स्वर्ग की सरकारों का इलाज किया जाता है, और घरेलू मामलों में स्वर्गदूतों के आवासों और घरों का इलाज किया जाता है: ये सब दर्शाते हैं कि प्रत्येक स्वर्गीय समाज में कई रोजगार और सेवाएँ हैं। स्वर्ग में जो लोग चर्च संबंधी मामलों से संबंधित हैं, वे वे हैं जो दुनिया में वचन से प्यार करते थे और इसमें सच्चाई की तलाश करते थे, सम्मान या लाभ के लिए नहीं, बल्कि अपने और दूसरों के लिए जीवन के उपयोग के लिए।

जो लोग स्वर्ग में हैं वे अपने प्रेम और उपयोग की इच्छा के अनुसार ज्ञान और बुद्धि के प्रकाश में हैं; और यह ज्ञान उन्हें स्वर्ग के शब्द से प्राप्त होता है, जो दुनिया की तरह प्राकृतिक शब्द नहीं है, बल्कि एक आध्यात्मिक शब्द है (ऊपर देखें, एन. 259)। ये लोग उपदेश देने के पद पर कार्य करते हैं; और दैवीय आदेश के अनुसार, वे उच्च पदों पर हैं, जो ज्ञान प्राप्त करने के बाद बुद्धि में दूसरों से श्रेष्ठ हैं।

जो लोग नागरिक मामलों से चिंतित हैं, जो दुनिया में अपने देश से प्यार करते थे, और अपने देश से अधिक इसके सामान्य कल्याण को पसंद करते थे, और जो उचित और सही था उसके प्रति प्रेम के कारण उन्होंने वही किया जो उचित और सही था। जहाँ तक इन लोगों ने प्रेम की उत्सुकता से न्याय के नियमों की जाँच की है और इस प्रकार बुद्धिमान बन गए हैं, उनमें स्वर्ग में ऐसे काम करने की क्षमता है।

इसके अलावा, स्वर्ग में कार्यों, सेवाओं और व्यवसायों की संख्या की गणना नहीं की जा सकती; जबकि दुनिया में इनकी संख्या बहुत कम है. लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कितने लोग ऐसे काम में लगे हुए हैं, यह सब उनके काम और श्रम के आनंद में उपयोग के प्यार से है, और स्वार्थ या लाभ के प्यार से नहीं; और चूँकि जीवन की सभी आवश्यकताएँ उन्हें निःशुल्क प्रदान की जाती हैं, इसलिए उन्हें अपनी आजीविका के लिए लाभ की कोई इच्छा नहीं है।

उन्हें मुफ़्त आवास, मुफ़्त कपड़े और मुफ़्त भोजन दिया जाता है। तो यह स्पष्ट है कि जो लोग खुद से और दुनिया से खुद से ज्यादा प्यार करते हैं उन्हें स्वर्ग में कोई विरासत नहीं मिलती; क्योंकि इस संसार में जीवन जीने के बाद भी हर व्यक्ति के साथ उसका प्यार या स्नेह बना रहता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने व्यवसाय में संगति के अनुसार स्वर्ग में आता है, और संगति व्यवसाय के साथ

नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यवसाय के उपयोग के साथ होती है; क्योंकि हर चीज़ में एकरूपता होती है.

जो कोई स्वर्ग में अपने उपयोग के अनुसार रोजगार या व्यवसाय में आता है, वह जीवन की उसी स्थिति में होता है जैसा वह दुनिया में था; क्योंकि आध्यात्मिक और प्राकृतिक एक दूसरे से मेल खाते हैं; फिर भी इसमें यह अंतर है कि वह तब आंतरिक आनंद में आता है, क्योंकि आध्यात्मिक जीवन में आता है, जो एक आंतरिक जीवन है, और इसलिए स्वर्गीय आशीर्वाद के लिए अधिक ग्रहणशील होता है।

## स्वर्ग में अमीर और गरीब

स्वर्ग में प्रवेश के संबंध में विभिन्न मत हैं। कुछ लोगों का मानना है कि गरीबों को प्रवेश मिलता है और अमीरों को नहीं; कुछ लोगों का मानना है कि अमीर और गरीब दोनों को समान पहुंच मिलती है; कुछ लोगों का मानना है कि अमीर केवल अपनी संपत्ति छोड़कर और गरीबों की तरह बनकर ही प्रवेश पा सकते हैं; और इन सभी मतों का प्रमाण वचन में मिलता है।

परन्तु जो स्वर्ग के विषय में धनी और निर्धन में भेद करते हैं, वे वचन को नहीं समझते। यह शब्द अपने आप में आध्यात्मिक है, लेकिन वस्तुतः प्राकृतिक है; परिणामस्वरूप जो लोग केवल शब्द के शाब्दिक अर्थ को देखते हैं, आध्यात्मिक अर्थ को नहीं, वे कई मामलों में गलत हैं, खासकर अमीर और गरीब के संबंध में।

उदाहरण के लिए, अमीरों के लिए स्वर्ग में प्रवेश करना उतना ही कठिन है जितना ऊँट के लिए सुई के छेद से गुजरना; और गरीबों के लिए यह आसान है क्योंकि वे गरीब हैं, क्योंकि कहा जाता है, "धन्य हैं गरीब, ... क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।"

लेकिन जो लोग शब्द का आध्यात्मिक अर्थ जानते हैं वे अन्यथा सोचते हैं; वे जानते हैं कि स्वर्ग उन सभी के लिए है जो विश्वास और प्रेम का जीवन जीते हैं, चाहे वे अमीर हों या गरीब। लेकिन श्लोक में "अमीर" से कौन अभिप्राय है और "गरीब" से कौन अभिप्राय है, यह आगे बताया जाएगा।

मैंने स्वर्गदूतों के साथ कई वार्तालापों और बातचीत से निश्चित रूप से सीखा है कि अमीर लोग गरीब लोगों की तरह ही आसानी से स्वर्ग में प्रवेश कर सकते हैं, और किसी को भी उसकी संपत्ति के कारण स्वर्ग से बाहर नहीं किया जाता है। रह सकता है, या अपनी गरीबी के कारण स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता। अमीर और गरीब दोनों स्वर्ग में हैं। सबसे पहले तो यह कहना चाहिए कि कोई भी व्यक्ति जब तक अवसर मिले तब तक धन अर्जित कर सकता है और धन संचय कर सकता है, यदि यह काम चालाकी या धोखाधड़ी से न किया जाए; यदि वह इसमें अपना जीवन निवेश नहीं करता है, तो वह खाने-पीने के व्यंजनों का आनंद ले सकता है;

ताकि वह अपनी स्थिति के अनुसार एक शानदार घर बना सके, अपनी स्थिति के अनुसार दूसरों के साथ घुल-मिल सके, मनोरंजन के लिए बार-बार जगह बना सके, दुनिया के मामलों पर बात कर सके और एक शब्द में, वह बाहरी तौर पर दुनिया के एक आदमी जैसा दिख सके। ऐसे जी सकते हैं; और यह सब उसके स्वर्ग में प्रवेश करने में कोई बाधा नहीं होगी, बशर्ते कि वह अपने भीतर ईश्वर के बारे में उसी तरह सोचे जैसा उसे सोचना चाहिए, और अपने पड़ोसी के प्रति ईमानदारी और न्यायपूर्वक कार्य करना चाहिए।

यह सब दर्शाता है कि मनुष्य का बाह्य कुछ नहीं करता, बल्कि उसका आंतरिक कार्य करता है, जो बाह्य का स्रोत है। उदाहरण के लिए: यदि कोई व्यक्ति ईमानदारी से कार्य करता है और धोखाधड़ी से केवल इसलिए दूर रहता है क्योंकि उसे कानून और प्रतिष्ठा की हानि और इसके कारण सम्मान या लाभ की हानि का डर है, और यदि वह डर उसे नहीं रोकता है तो क्या वह दूसरों को धोखा दे सकता है; यद्यपि ऐसे व्यक्ति के कार्य बाहर से ईमानदार दिखाई देते हैं, उसके विचार और इच्छाएँ कपटपूर्ण होती हैं; और क्योंकि वह आंतरिक रूप से बेईमान है और धोखेबाज का अपना नरक होता है।

परन्तु जो ईमानदारी से काम करता है और छल से दूर रहता है क्योंकि यह परमेश्वर और उसके पड़ोसी के विरुद्ध है, वह यदि हो सके तो किसी को धोखा देना नहीं चाहेगा; उसके विचार और इच्छा ही विवेक हैं, और उसके पास स्वर्ग ही है। इन दोनों की हरकतें बाहर से तो एक जैसी दिखती हैं, लेकिन अंदर से बिल्कुल अलग-अलग हैं।

चूँकि एक आदमी दूसरों की तरह बाहरी रूप से रह सकता है, अमीर हो सकता है, भरपूर भोजन कर सकता है, एक सुंदर घर में रह सकता है और अपनी स्थिति और काम के अनुसार अच्छे कपड़े पहन सकता है, इसलिए वह खुशी और संतुष्टि का आनंद ले सकता है। अपने व्यवसाय और जीवन के लिए मन और

शरीर दोनों के लिए सांसारिक मामलों में संलग्न हो सकते हैं, बशर्ते कि वह आंतरिक रूप से ईश्वर को स्वीकार करे और अपने पड़ोसी के लिए अच्छा चाहता हो, यह स्पष्ट है कि स्वर्ग के रास्ते में प्रवेश करना उतना कठिन नहीं है जितना कि कई लोगों के लिए। लोग विश्वास करते हैं.

एकमात्र कठिनाई स्वयं और दुनिया के प्यार का विरोध करने और उन्हें हावी होने से रोकने में है; क्योंकि यही सारी बुराई का स्रोत है। यह उतना मुश्किल नहीं है जितना लगता है, क्योंकि इसका मतलब भगवान के शब्दों से है, "मुझ से सीखो, क्योंकि मैं दिल में नम्र और दीन हूं, और तुम अपनी आत्माओं के लिए आराम पाओगे; क्योंकि मेरा जूआ आसान है और मेरा बोझ हल्का है।" . भगवान का जूआ आसान है और उनका बोझ हल्का है क्योंकि मनुष्य का नेतृत्व भगवान द्वारा किया जाता है, स्वयं द्वारा नहीं, बस इस हद तक कि वह स्वयं और दुनिया के प्रेम से उत्पन्न होने वाली बुराइयों का विरोध करता है; और क्योंकि तब प्रभु मनुष्य में इन बुराइयों का विरोध करते हैं और उन्हें दूर करते हैं।

गरीब अपनी गरीबी के कारण नहीं बल्कि अपने जीवन के कारण स्वर्ग में आते हैं। हर किसी का जीवन उनका अनुसरण करता है, चाहे वह अमीर हो या गरीब।

एक के बजाय दूसरे के लिए विशेष दया; जो अच्छा जीवन जीता है उसे स्वीकार किया जाता है, जबकि जो अच्छा जीवन नहीं जीता उसे अस्वीकार कर दिया जाता है। इसके अलावा, गरीबी मनुष्य को स्वर्ग से उतनी ही दूर ले जाती है जितनी धन। गरीबों में बहुत से ऐसे हैं जो अपनी स्थिति से संतुष्ट नहीं हैं, जो कई चीज़ों के लिए प्रयास करते हैं, और धन को एक आशीर्वाद मानते हैं; और जब उन्हें यह नहीं मिलता, तो वे बहुत क्रोधित होते हैं और ईश्वरीय प्रावधान के बारे में बुरे विचार करते हैं; वे दूसरों के पास मौजूद अच्छी चीज़ों से ईर्ष्या करते हैं, और जब भी मौका मिलता है वे दूसरों को धोखा देने और गंदे सुखों में लिप्त होने के लिए तैयार रहते हैं।

लेकिन यह उन गरीबों के लिए सच नहीं है जो अपने हिस्से से संतुष्ट हैं, और अपने काम में सावधान और मेहनती हैं, जो आलस्य के बजाय श्रम को प्राथमिकता देते हैं, और ईमानदारी और ईमानदारी से काम करते हैं, और साथ ही ईसाई जीवन जीते हैं। रहना। ,

यह सब यह स्पष्ट करता है कि अमीर और गरीब दोनों स्वर्ग आते हैं, एक जितनी आसानी से दूसरा। यह विश्वास कि गरीब आसानी से स्वर्ग में प्रवेश करते हैं और अमीर कठिनाई से प्रवेश करते हैं, शब्द की गलतफहमी से आता है, जहां अमीर और गरीब का उल्लेख किया गया है। वचन में वे लोग जिनके पास

अच्छाई और सच्चाई का प्रचुर ज्ञान है, इस प्रकार चर्च के भीतर जहां वचन है, आध्यात्मिक अर्थ में "समृद्ध" होने के लिए हैं; जबकि जिनके पास यह ज्ञान नहीं है, और फिर भी वे इसकी इच्छा रखते हैं, इस प्रकार वे जो चर्च से बाहर हैं और जहां कोई शब्द नहीं है, उनका अर्थ "गरीब"  है।

## स्वर्ग में बुद्धिमान और सरल लोग

ऐसा माना जाता है कि स्वर्ग में बुद्धिमानों को सामान्य लोगों की तुलना में अधिक महिमा और श्रेष्ठता प्राप्त होगी, जैसा कि डैनियल में कहा गया है, "जो बुद्धिमान हैं वे आकाश की चमक की तरह चमकेंगे, और जो बहुतों को धार्मिकता की ओर मोड़ेंगे वे चमकेंगे।" सितारे हमेशा के लिए"। लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि "बुद्धिमान" का क्या मतलब है और "जो बहुतों को धार्मिकता की ओर ले जाता है" का क्या मतलब है।

आम धारणा यह है कि वे वे हैं जिन्हें निपुण और विद्वान कहा जाता है, विशेषकर वे जिन्होंने चर्च में पढ़ाया है और शिक्षण और उपदेश देने में दूसरों से आगे निकल गए हैं, और उनमें से और भी अधिक वे हैं जिन्होंने कई लोगों को सिखाया है और विश्वास में परिवर्तित हो गए हैं। संसार में ऐसे सभी लोग बुद्धिमान माने जाते हैं; फिर भी ऐसे स्वर्गीय बुद्धिमान नहीं हैं जिनके बारे में ये शब्द बोलते हैं, जब तक कि उनकी बुद्धि स्वर्गीय ज्ञान न हो।

यह क्या है यह अब बताया जाएगा। स्वर्गीय ज्ञान आंतरिक ज्ञान है जो सत्य के प्रति प्रेम से उत्पन्न होता है, न कि दुनिया में किसी महिमा के साथ और न ही स्वर्ग में किसी महिमा के साथ, बल्कि सत्य के अंत के साथ जिससे वे सबसे अधिक प्रभावित होते हैं और जिससे वे सबसे अधिक खुश होते हैं। वे सभी जिन्होंने दुनिया में बुद्धि और ज्ञान प्राप्त किया है, स्वर्ग में प्राप्त होते हैं और स्वर्गदूत बन जाते हैं, प्रत्येक को उसकी बुद्धि और ज्ञान की गुणवत्ता और डिग्री के अनुसार। क्योंकि मनुष्य इस संसार में जो कुछ प्राप्त करता है वह बना रहता है, और मरने के बाद वह उसे अपने साथ ले जाता है।

वे सभी स्वर्ग में प्रवेश करते हैं जिन्होंने सत्य और भलाई के लिए सत्य और अच्छाई से प्रेम किया है; इसलिए जिन्होंने बहुत प्रेम किया है वे बुद्धिमान कहलाते हैं और जिन्होंने कम प्रेम किया है वे सरल कहलाते हैं। स्वर्ग में बुद्धिमान अधिक प्रकाश में होते हैं, सरल लोग कम प्रकाश में होते हैं, प्रत्येक व्यक्ति अच्छाई और सच्चाई के प्रति अपने प्रेम की मात्रा के अनुसार होता है।

दुनिया में यह माना जाता है कि जिनके पास बहुत सारा ज्ञान है, चाहे वह चर्च और शब्द की शिक्षाओं का ज्ञान हो या विज्ञान का, उनके पास दूसरों की तुलना में सत्य की अधिक आंतरिक और गहरी दृष्टि होती है, अर्थात वे अधिक बुद्धिमान और बुद्धिमान हैं; और ऐसे लोग अपने बारे में भी यही राय रखते हैं.

परन्तु सच्ची बुद्धि और ज्ञान क्या हैं, और मिथ्या और मिथ्या बुद्धि और ज्ञान क्या हैं, इसका वर्णन अब आगे किया जाएगा। सच्ची बुद्धि और ज्ञान यह देखना और समझना है कि क्या सत्य और अच्छा है।

## स्वर्ग की विशालता

प्रभु के स्वर्ग की विशालता इस तथ्य से भी प्रदर्शित होती है कि सभी बच्चे, चाहे वे चर्च में पैदा हुए हों या चर्च के बाहर, प्रभु द्वारा अपनाए जाते हैं और देवदूत बन जाते हैं; और इनकी संख्या पृथ्वी पर संपूर्ण मानव जाति की एक चौथाई या पाँचवीं है।

प्रत्येक बच्चा, चाहे वह कहीं भी पैदा हुआ हो, चाहे चर्च के अंदर या बाहर, चाहे पवित्र या अधर्मी माता-पिता से पैदा हुआ हो, मरने पर प्रभु उसे स्वीकार करते हैं, और स्वर्ग में उठाया जाता है। और उसे भलाई के प्रति स्नेह सिखाया जाता है और उसके माध्यम से ईश्वरीय आदेश के अनुसार सत्य का ज्ञान दिया जाता है, और जैसे ही वह ज्ञान और बुद्धिमत्ता में परिपूर्ण हो जाता है, उसे स्वर्ग में लाया जाता है और वह एक देवदूत बन जाता है। बन जाता है, जैसा कि ऊपर देखा जा सकता है।

इस सब से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि स्वर्ग में स्वर्गदूतों की भीड़, जो पहली रचना से लेकर वर्तमान समय तक, केवल इसी स्रोत से प्राप्त हुई है। फिर, भगवान का स्वर्ग कितना विशाल है, इसे इस तथ्य से देखा जा सकता है कि हमारे सौर मंडल में आंखों से दिखाई देने वाले सभी ग्रह पृथ्वी हैं, और ये, इसके अलावा, पूरे ब्रह्मांड में असंख्य हैं, और सभी निवासियों से भरे हुए हैं। हैं. पृथ्वी पर मौजूद लोगों पर एक संक्षिप्त कार्य में इन पर विशेष रूप से चर्चा की गई है।

# स्वर्गीय आनंद और खुशी

इस समय शायद ही कोई जानता हो कि स्वर्ग क्या है या स्वर्गीय आनंद क्या है। जिन लोगों ने इस विषय पर विचार किया है, उन्हें इसका अंदाज़ा इतना सामान्य और इतना स्थूल है कि इसका कोई मतलब नहीं है (395)। सभी सुख प्रेम से ही उत्पन्न होते हैं, क्योंकि मनुष्य जिससे प्रेम करता है, वही उसे सुखदायक लगता है। किसी को भी किसी अन्य स्रोत से खुशी नहीं मिलती। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि जैसे प्रेम है, वैसे ही सुख भी है।

शरीर या शरीर की सभी ज्योतियाँ स्वयं के प्रेम और संसार के प्रेम से उत्पन्न होती हैं; परिणामस्वरूप वे इच्छाएँ और उनके सुख हैं; जबकि आत्मा या आत्मा की सभी खुशियाँ ईश्वर के प्रेम और पड़ोसी के प्रेम से उत्पन्न होती हैं, परिणामस्वरूप वे अच्छाई और सच्चाई के प्रति स्नेह और आंतरिक संतुष्टि (396) हैं। स्वर्ग स्वयं इतना आनंद से भरा हुआ है कि देखने पर वह आनंद और खुशी के अलावा कुछ भी नहीं है; क्योंकि ईश्वर के दिव्य प्रेम से बहने वाली दिव्य अच्छाई ही सामान्य रूप से और विशेष रूप से वहां रहने वाले सभी लोगों के लिए स्वर्ग बनाती है, और दिव्य प्रेम सभी के उद्धार और सभी की खुशी की कामना करता है।

स्वर्ग के सुख अवर्णनीय और असंख्य हैं; लेकिन जो केवल शरीर या शरीर के सुखों में है वह इन असंख्य सुखों में से एक को भी नहीं जान सकता या उस पर विश्वास नहीं कर सकता (398)। स्वर्ग की खुशियाँ कितनी महान होंगी, यह इस तथ्य से देखा जा सकता है कि स्वर्ग में प्रत्येक व्यक्ति अपनी खुशियाँ और आशीर्वाद दूसरों के साथ साझा करने का आनंद लेता है;

और जैसा कि स्वर्ग में हर किसी का चरित्र है, यह स्पष्ट है कि स्वर्ग का आनंद कितना अनंत है। ऊपर दिखाया गया है कि स्वर्ग में सभी को एक दूसरे के साथ और सभी को एक दूसरे के साथ साझा करना है। इस तरह की साझेदारी स्वर्ग के दो प्रेमों से आगे बढ़ती है, जो हैं, जैसा कि कहा गया है, ईश्वर का प्रेम और पड़ोसी का प्रेम; और अपनी ख़ुशी साझा करना इन प्यारों का स्वभाव है।

ईश्वर के प्रति प्रेम ऐसा है क्योंकि यह अपने पास मौजूद हर चीज को सबके साथ साझा करने का प्रेम है, क्योंकि यह हर किसी की खुशी चाहता है। जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, उन में से प्रत्येक में एक ही प्रेम रहता है, क्योंकि परमेश्वर उन में है; और इससे स्वर्गदूतों की खुशी एक-दूसरे के साथ साझा होती

है। पड़ोसी से प्यार वैसा ही है, जैसा बाद में देखा जाएगा. यह सब दर्शाता है कि अपनी खुशी साझा करना इन प्यारों का स्वभाव है।

यह स्वयं और संसार के प्रेम से भिन्न है। स्वयं का प्रेम दूसरों से दूर ले जाता है और दूसरों से सारी खुशियाँ छीन लेता है, और अपने पास ले आता है, क्योंकि वह केवल वही चाहता है जो उसके लिए अच्छा हो; जबकि दुनिया का प्यार पड़ोसी की चीजों को अपना बनाना चाहता है।

इसलिए ये प्रेम दूसरों की ख़ुशी को नष्ट कर देते हैं; अथवा यदि साझा करने की कोई प्रवृत्ति है तो वह दूसरों के लिए नहीं बल्कि स्वयं के लिए है (399)। कुछ आत्माएँ ऐसी भी थीं जो संसार में अपनाई गई राय से यह मानती थीं कि स्वर्गीय सुख निष्क्रिय जीवन में है जिसमें दूसरों के द्वारा उनकी सेवा की जायेगी; लेकिन उन्हें बताया गया कि खुशी कभी भी काम से दूर रहने और उससे संतुष्टि पाने में नहीं है।

कुछ आत्माएँ ऐसी थीं जो स्वयं को दूसरों से बेहतर मानती थीं, और जिन्होंने कहा कि उन्हें दुनिया में विश्वास था कि स्वर्गीय खुशी केवल भगवान की स्तुति और महिमा करने का उनका सक्रिय जीवन होगा। उन्हें बताया गया कि ईश्वर की स्तुति करना और उसकी महिमा करना उचित सक्रिय जीवन नहीं है, बल्कि यह भी कि ईश्वर की इच्छा थी कि उन्हें इसके बजाय अच्छे कार्यों का उपयोग करना चाहिए और इस प्रकार प्रदर्शन करना चाहिए, जिन्हें दान के कार्य कहा जाता है। लेकिन वे स्वर्गीय आनंद के किसी भी विचार को दान के कार्यों से जोड़ने में असमर्थ थे, केवल दासता के कार्यों के साथ, हालांकि स्वर्गदूतों ने गवाही दी कि यह आनंद सबसे मुक्त है क्योंकि यह आंतरिक स्नेह से आता है और अवर्णनीय आनंद से भरा है। से जुड़ा हुआ है.

दूसरे जीवन में प्रवेश करने वाला शायद ही कोई व्यक्ति जानता हो कि स्वर्गीय आशीर्वाद और खुशी क्या है, क्योंकि वे नहीं जानते कि आंतरिक खुशी क्या है, वे इसे केवल शारीरिक और सांसारिक खुशी और खुशी से प्राप्त करते हैं; और परिणामस्वरूप वे जिसे नहीं जानते उसे कुछ भी नहीं समझते, जबकि वास्तव में भौतिक और सांसारिक सुख उनकी तुलना में कोई महत्व नहीं रखते।

लेकिन मैं स्वर्ग और स्वर्गीय आनंद की प्रकृति को जान सकता हूं, इसलिए मुझे अक्सर और लंबे समय से भगवान ने स्वर्गीय आनंद का आनंद महसूस करने की अनुमति दी है; लेकिन जबकि मैं जीवित अनुभव से यह जानने में सक्षम हूं कि वे क्या हैं, मैं उनका वर्णन करने में बिल्कुल भी सक्षम नहीं हूं।

मुझे यह भी एहसास हुआ कि खुशी और संतुष्टि दिल से आती है। ...मैंने देखा है कि जब मैं अपनी सारी खुशियाँ किसी और को हस्तांतरित करना चाहता था, तो उसके स्थान पर एक अधिक आंतरिक और पूर्ण खुशी लगातार बहती रहती थी, और जितना अधिक मैं इसकी कामना करता था, वह उतनी ही अधिक बहती थी; और मुझे लगा, यह ईश्वर की ओर से था।

जो लोग स्वर्ग में हैं वे लगातार जीवन के वसंत की ओर बढ़ रहे हैं, और अधिक आनंददायक और प्रसन्न वसंत की ओर बढ़ते हुए वे हजारों वर्षों तक जीवित रहते हैं; और यह अनंत काल तक होता रहता है, उनके प्रेम, दान और विश्वास में वृद्धि और डिग्री के अनुसार वृद्धि होती रहती है।

जो महिलाएं बूढ़ी हो गई हैं और उम्र के साथ कमजोर हो गई हैं, अगर उन्होंने भगवान में विश्वास, पड़ोसियों के प्रति दान और अपने पतियों के साथ खुशहाल वैवाहिक प्रेम का जीवन जीया है, तो वर्षों के उत्तराधिकार के साथ युवावस्था और प्रारंभिक स्त्रीत्व के फूल की ओर बढ़ेंगी। और ऐसी सुंदरता प्राप्त करें जो पृथ्वी पर देखी गई सुंदरता की हर अवधारणा से परे हो।

...एक शब्द में, स्वर्ग में बूढ़ा होना युवा होना है। ऐसे रूप या ऐसी सुंदरता दूसरे जीवन में उन लोगों द्वारा बनाई जाती है जो ईश्वर के प्रति प्रेम और पड़ोसी के प्रति परोपकार में रहते हैं।

## स्वर्ग में विवाह

चूँकि स्वर्ग मानव जाति से है, और इस प्रकार देवदूत दोनों लिंगों के हैं, और सृष्टि से स्त्री पुरुष के लिए है और पुरुष स्त्री के लिए है, इस प्रकार एक दूसरे का है, और यह प्रेम दोनों में जन्मजात है, यह इस प्रकार है कि विवाह स्वर्ग के साथ-साथ पृथ्वी पर भी घटित होते हैं। इसलिए स्वर्ग में विवाह क्या हैं, और वे पृथ्वी पर विवाहों से कैसे भिन्न हैं, और किस प्रकार वे उनके समान हैं, अब समझाया जाएगा। स्वर्ग में विवाह दो मनों का मिलन है।

सबसे पहले यह स्पष्ट करना होगा कि यह संयोजन क्या है। मन के दो भाग हैं एक समझ और दूसरा इच्छा। जब ये दोनों भाग एक होकर कार्य करते हैं तो उन्हें

एक मन कहा जाता है। इसमें समझ नामक भाग पति के रूप में कार्य करता है, और इच्छा नामक भाग पत्नी के रूप में कार्य करता है।

जब यह मिलन, जो मनुष्य के आंतरिक अंगों से संबंधित है, शरीर से संबंधित निचले हिस्सों तक पहुंचता है, तो इसे प्यार के रूप में देखा और महसूस किया जाता है, और यह प्यार विवाह प्रेम है। इससे पता चलता है कि वैवाहिक प्रेम एक मन में दो लोगों के मिलन से उत्पन्न होता है।

इसे स्वर्ग में सहवास कहा जाता है; और दो को दो नहीं बल्कि एक कहा जाता है. इसलिए स्वर्ग में एक विवाहित जोड़े को दो के रूप में नहीं, बल्कि एक देवदूत के रूप में कहा जाता है। इसके अलावा, पति और पत्नी का उनके मन के अंतरतम भाग में ऐसा मिलन उनकी रचना से ही आता है; क्योंकि पुरुष का जन्म बौद्धिक होने के लिए, यानी अपनी समझ से सोचने के लिए हुआ है, जबकि स्त्री का जन्म स्नेही होने के लिए, यानी अपनी इच्छा से सोचने के लिए हुआ है; और यह प्रत्येक के झुकाव या प्राकृतिक विकार के साथ-साथ उनकी उपस्थिति से भी स्पष्ट है; विकार से, जिसमें पुरुष तर्क से और स्त्री स्नेह से कार्य करती है; ऐसा रूप जिसमें पुरुष का चेहरा खुरदुरा और कम सुंदर हो, आवाज गहरी हो और शरीर कठोर हो; जबकि महिला का चेहरा अधिक कोमल और सुंदर है, आवाज अधिक कोमल है और शरीर अधिक नाजुक है।

समझ और इच्छा के बीच या विचार और स्नेह के बीच समान अंतर है (368)। हर किसी में, चाहे पुरुष हो या महिला, समझ और इच्छा होती है; परन्तु पुरुष में समझ प्रबल होती है, और स्त्री में इच्छा प्रबल होती है, और जो प्रबल होता है उसी से चरित्र निर्धारित होता है। फिर भी स्वर्गीय विवाह में कोई शक्ति नहीं है; क्योंकि पत्नी की इच्छा भी पति की इच्छा है, और पति की समझ भी पत्नी की समझ है, क्योंकि प्रत्येक का प्यार दूसरे की तरह इच्छा करना और सोचना है, यानी परस्पर और पारस्परिक रूप से।

इस प्रकार वे एक हो जाते हैं। यह संयोजन एक वास्तविक संयोजन है, क्योंकि पत्नी की इच्छा पति की समझ में प्रवेश करती है - पत्नी की इच्छा के बारे में पति की समझ, और यह विशेष रूप से तब जब वे एक-दूसरे के चेहरे को देखते हैं; जैसा कि ऊपर बार-बार कहा गया है, स्वर्ग में विचारों और स्नेह का आदान-प्रदान होता है, खासकर पति और पत्नी के बीच, क्योंकि वे एक-दूसरे से प्यार करते हैं।

इससे स्पष्ट होता है कि मनों का मिलन क्या है जो विवाह बनाता है और स्वर्ग में विवाह प्रेम पैदा करता है, अर्थात्, एक व्यक्ति चाहता है कि जो उसका अपना है

वह दूसरों का हो, और यह पारस्परिक (369) है। मुझे स्वर्गदूतों ने बताया है कि जब तक विवाहित जोड़े इस तरह से जुड़े रहते हैं, वे वैवाहिक प्रेम (370) में हैं। एक के ऊपर दूसरे के आधिपत्य का प्रेम पूरी तरह से विवाह प्रेम और उसके स्वर्गीय आनंद को छीन लेता है, क्योंकि जैसा कि ऊपर कहा गया है, विवाह प्रेम और उसका आनंद परस्पर और पारस्परिक रूप से एक की इच्छा में दूसरे की इच्छा होने में निहित है। रूप से.

यह विवाह में प्रभुत्व के प्रेम से नष्ट हो जाता है, क्योंकि जो प्रभुत्व रखता है वह चाहता है कि केवल उसकी इच्छा दूसरे में हो, और दूसरे की इच्छा का कोई भी हिस्सा उसमें न हो। जब कोई दूसरे की इच्छा करता है या उससे प्रेम करता है, तो प्रत्येक को स्वतंत्रता होती है, क्योंकि सारी स्वतंत्रता प्रेम से आती है; परन्तु जहाँ प्रभुत्व है, वहाँ किसी को स्वतंत्रता नहीं है; एक सेवक है, और दूसरा जो शासन करता है वह भी सेवक है, क्योंकि वह शासन करने की इच्छा से सेवक की तरह प्रेरित होता है।

अंतरतम स्वर्ग में सच्चा विवाह प्रेम है क्योंकि वहां देवदूत अच्छाई और सच्चाई के विवाह में होते हैं, और मासूमियत में भी। ऐसा कहा जाता है कि स्वर्ग में स्वर्गदूतों की सारी सुंदरता वैवाहिक प्रेम (382) से है। स्वर्ग में होने वाली शादियाँ धरती पर होने वाली शादियों से इस मायने में भिन्न होती हैं कि बच्चे का जन्म एक होता है।

धरती पर शादियाँ ख़त्म हो जाती हैं, लेकिन स्वर्ग में शादियाँ नहीं, क्योंकि स्वर्ग में बच्चों के जन्म के बजाय अच्छाई और सच्चाई का जन्म होता है। यह सब स्पष्ट करता है कि स्वर्ग में विवाह पृथ्वी पर विवाह के समान नहीं हैं। स्वर्ग में विवाह आध्यात्मिक होते हैं, और इन्हें उचित रूप से विवाह नहीं कहा जा सकता है, बल्कि यह मन का मिलन है, अच्छाई और सच्चाई का मिलन है।

लेकिन पृथ्वी पर विवाह होते हैं, क्योंकि वे न केवल आत्मा के होते हैं, बल्कि शरीर के भी होते हैं। और चूँकि स्वर्ग में विवाह नहीं होते, इसलिए वहाँ पत्नियों को पति-पत्नी नहीं कहा जाता; लेकिन दो दिमागों के एक होने के देवदूत विचार से, प्रत्येक पत्नी दूसरे को एक नाम से नामित करती है, पारस्परिक रूप से और पारस्परिक रूप से अपने स्वयं के नाम को दर्शाती है। इससे पता चलता है कि शादी करने और शादी में देने के संबंध में प्रभु के शब्दों को कैसे समझा जाना चाहिए।

# स्वर्ग में प्रकाश

स्वर्ग में प्रकाश है, यह बात वे लोग नहीं समझ सकते जो केवल स्वभाव से सोचते हैं; और फिर भी स्वर्ग में ऐसी रोशनी है जो दुनिया की दोपहर की रोशनी से कई गुना अधिक है। मैंने वह रोशनी कई बार देखी है, यहाँ तक कि शाम और रात के समय भी।

जब मैंने स्वर्गदूतों को यह कहते सुना कि इस संसार की रोशनी स्वर्ग की रोशनी की तुलना में एक छाया से थोड़ी अधिक है, तो पहले तो मैं आश्चर्यचकित रह गया; लेकिन इसे देखने के बाद, मैं प्रमाणित कर सकता हूं कि यह है।

स्वर्ग के प्रकाश की चमक और महिमा ऐसी है कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। मैंने स्वर्ग में जो कुछ भी देखा है, वह सब एक ही प्रकाश में देखा है, इस प्रकार इस दुनिया की चीज़ों की तुलना में अधिक स्पष्ट और विशिष्ट है। स्वर्ग का प्रकाश संसार के प्रकाश की तरह प्राकृतिक प्रकाश नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक प्रकाश है, क्योंकि यह सूर्य के रूप में भगवान से आता है, और वह सूर्य दिव्य प्रेम है।

# स्वर्ग में स्थान

स्वर्ग में सभी चीजें दुनिया की तरह ही स्थान और अंतरिक्ष में दिखाई देती हैं और फिर भी स्वर्गदूतों को स्थान और स्थान की कोई धारणा या विचार नहीं है। चूँकि यह विरोधाभास जैसा लग सकता है, मैं मामले को स्पष्ट करने का प्रयास करूँगा, क्योंकि यह बहुत महत्वपूर्ण है।

आध्यात्मिक जगत में स्थान के सभी परिवर्तन आंतरिक स्थितियों के परिवर्तन से प्रभावित होते हैं, जिसका अर्थ है कि स्थान का परिवर्तन और कुछ नहीं बल्कि स्थिति का परिवर्तन है। इसी कारण से स्वर्ग एक दूसरे से भिन्न हैं, जैसे प्रत्येक स्वर्ग के समाज और प्रत्येक समाज में व्यक्ति भिन्न हैं; और इसके अलावा, नरक स्वर्ग से बिल्कुल अलग हैं क्योंकि वे विपरीत स्थिति में हैं।

इसी कारण से, फिर से, आध्यात्मिक दुनिया में कोई भी व्यक्ति जो उत्साहपूर्वक दूसरे की उपस्थिति की इच्छा करता है वह उसकी उपस्थिति में आता है, क्योंकि वह उसे विचार में देखता है, और खुद को उसकी स्थिति में रखता है; और इसके विपरीत, एक दूसरे से तब तक भिन्न होता है जब तक वह उससे अलग हो जाता है।

और चूँकि सभी द्वेष स्नेह के विरोध और विचारों की असहमति से आते हैं, जब भी उस दुनिया में कई लोग एक ही स्थान पर एक साथ होते हैं, तब तक वे [एक दूसरे को] दिखाई देते हैं जब तक वे सहमत होते हैं, लेकिन जैसे ही वे असहमत होते हैं, वे गायब हो जाते हैं। फिर, जब कोई एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता है, चाहे अपने शहर में, या अदालतों या बगीचों में, या अपने समाज के बाहर दूसरों के पास, वह अधिक तेज़ी से उस चीज़ तक पहुँच जाता है जो वह उत्सुकता से चाहता है। , और कम तेजी से जब वह नहीं चाहता, तो रास्ता खुद इच्छा के अनुसार लंबा और छोटा होता रहता है, हालाँकि वह वही रहता है।

यह बात मैंने अक्सर आश्चर्य से देखी है। यह सब फिर से स्पष्ट करता है कि कैसे दूरियाँ, और परिणामस्वरूप स्थान, स्वर्गदूतों के अंदरूनी हिस्सों की स्थितियों से पूरी तरह मेल खाते हैं; और ऐसा होने पर, स्थान की कोई धारणा या विचार उनके विचार में प्रवेश नहीं कर सकता है, हालांकि दुनिया में उनके समान स्थान हैं, जैसा कि स्वर्ग, आत्माओं की दुनिया और नरक के बारे में इस रचना में कहा गया है। , यह उन लोगों के लिए अस्पष्ट होगा जिन्हें आध्यात्मिक सत्य के बारे में जानने में कोई रुचि नहीं है।

लेकिन यह उन लोगों के लिए स्पष्ट होगा जिनकी ऐसी रुचि है, और विशेष रूप से उनके लिए जो सत्य के लिए सत्य से लगाव रखते हैं, अर्थात, जो सत्य से प्रेम करते हैं क्योंकि वह सत्य है; क्योंकि जो कुछ प्रिय होता है वह प्रकाश के साथ मन के विचार में प्रवेश करता है, विशेषकर सत्य जो प्रिय होता है, क्योंकि सारा सत्य प्रकाश में है।

---------------------

# स्वर्ग क्या है? और नरक क्या है?



**Allan Kardec : 3 October 1804 – 31 March 1869**



**Burial place : Père Lachaise Cemetery**

## Allan Kardec:

**Born : 3 October 1804 at Lyon , France.**
**Died : 31 March 1869 at Paris , France .**

भौतिक जीवन से आध्यात्मिक जीवन तक के मार्ग से संबंधित सिद्धांतों की तुलनात्मक जांच।

आइए हम भविष्य की सज़ा और इनाम के बारे में, स्वर्गदूतों और राक्षसों के बारे में, पीड़ा आदि के बारे में, मृत्यु के दौरान और उसके बाद आत्मा की वास्तविक स्थिति के बारे में, कई उदाहरणों के साथ श्री एलन कार्डेक के विचारों को जानें;

# स्वर्ग और नरक

अध्यात्मवाद के अनुसार दैवीय न्याय।

भौतिक जीवन से आध्यात्मिक जीवन तक के मार्ग से संबंधित सिद्धांतों की तुलनात्मक जांच। भविष्य की सजा और इनाम के बारे में, स्वर्गदूतों और राक्षसों के बारे में, पीड़ा आदि के बारे में, मृत्यु के दौरान और उसके बाद आत्मा की वास्तविक स्थिति के बारे में कई उदाहरणों से समझाया गया है।

हम जीते हैं, हम सोचते हैं, हम काम करते हैं - यह निश्चित है। और हम मरेंगे - यह भी उतना ही निश्चित है। लेकिन जब हम इस धरती को पीछे छोड़ देते हैं तो हम कहाँ जाते हैं? मृत्यु के बाद हमारे लिए क्या होगा? क्या हम बेहतर होंगे या बदतर? क्या हमारा अस्तित्व बना रहेगा या नहीं? होना या न होना - यही विकल्प है: हमेशा या कभी नहीं; सबकुछ या कुछ भी नहीं। क्या हम हमेशा के लिए जीवित रहेंगे, या सब कुछ हमेशा के लिए ख़त्म हो जाएगा? क्या यह सब सोचने लायक भी है? सभी मनुष्य जीवित रहने, जीवन का आनंद लेने, प्रेम करने और खुश रहने की आवश्यकता महसूस करते हैं।

यदि मरते हुए व्यक्ति को बताया जाए कि वे कुछ और समय तक जीवित रहेंगे, कि उनका समय आगे बढ़ गया है, या, विशेष रूप से, कि वे पहले से कहीं अधिक खुश होंगे, तो उनका दिल खुश हो जाता है। लेकिन खुशी की ऐसी आकांक्षाओं का क्या फायदा अगर हवा का एक झोंका ही उन्हें धराशायी कर दे? क्या पूर्ण और पूर्ण विनाश के विचार से अधिक निराशाजनक कभी कुछ हुआ है? हमारे सबसे प्रिय स्नेह, हमारी बुद्धिमत्ता और प्रगति, वह ज्ञान जो हमने इतनी मेहनत से अर्जित किया है - सब कुछ अराजकता में विलीन हो गया; सब कुछ खो गया! तो इससे हमें क्या फायदा होगा कि हम खुद को एक बेहतर इंसान बनाने, अपने जुनून पर काबू पाने या अपने दिमाग को प्रबुद्ध करने की कोशिश में थक जाएं, अगर हमें इससे कोई फायदा नहीं मिल सकता है, या खासकर, अगर हम आगे की ओर झुकते हैं।

यह सोचना कि शायद यह सब अंततः किसी काम का नहीं रहेगा? यदि ऐसा होता, तो मनुष्यों का भाग्य जंगली जानवरों से सौ गुना बदतर होता, क्योंकि जानवर अपनी भौतिक भूख को संतुष्ट करने के लिए केवल वर्तमान में जीते हैं।

उन्हें भविष्य की चिंता नहीं है. हालाँकि, एक गुप्त अंतर्ज्ञान हमें बताता है कि ऐसा नहीं हो सकता।

## मृत्यु के भय के कारण

जब से वे जंगलों में रहते थे और अब भी, उनकी सामाजिक स्थिति की परवाह किए बिना, मनुष्यों को भविष्य की सहज समझ है। अंतर्ज्ञान उन्हें बताता है कि मृत्यु अस्तित्व का अंतिम चरण नहीं है, और जिनके खोने का हम शोक मनाते हैं वे पूरी तरह से खोए हुए नहीं हैं। भावी जीवन में विश्वास स्वाभाविक है और शून्यता में विश्वास की तुलना में अधिक व्यापक है। फिर भी, कोई यह कैसे समझा सकता है कि जो लोग आत्मा की अमरता में विश्वास करते हैं उन्हें अभी भी सांसारिक चीजों से बहुत लगाव है और मृत्यु का बहुत डर है?

मृत्यु के भय से मुक्त होने के लिए व्यक्ति को मृत्यु को सही दृष्टिकोण से देखना चाहिए; अर्थात्, व्यक्ति को विचार के माध्यम से आध्यात्मिक दुनिया में प्रवेश करना चाहिए, और जितना संभव हो उतना सटीक विचार प्राप्त करना चाहिए। यह अवतरित आत्मा की ओर से एक निश्चित मात्रा में विकास और स्वयं को पदार्थ से अलग करने की क्षमता को दर्शाता है। जो लोग पर्याप्त रूप से उन्नत नहीं हैं, उनके लिए भौतिक जीवन आध्यात्मिक जीवन पर हावी हो जाता है।

जब तक लोग दिखावे से जुड़े रहेंगे, तब तक वे शरीर से परे जीवन को नहीं समझ सकते, भले ही वास्तविक जीवन आत्मा के भीतर ही रहता हो। और यदि शरीर मर जाता है, तो वे सब कुछ खो देते हैं और निराशा में पड़ जाते हैं। यदि वे अपने विचारों को बाहरी वस्त्र पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, अपने जीवन के स्रोत - आत्मा, वास्तविक अस्तित्व की ओर मोड़ते हैं जो बाकी सब चीजों से जीवित रहता है - तो वे शरीर के नुकसान पर कम दुखी होंगे - जो पीड़ा से भरा है और दर्द। स्रोत है. हालाँकि, ऐसा करने के लिए आत्मा को शक्ति की आवश्यकता होती है जो उसे परिपक्वता के साथ ही प्राप्त होती है।

इसलिए मृत्यु के बारे में चिंता भावी जीवन के अपर्याप्त विचार से उत्पन्न होती है, लेकिन यह जीवित रहने की आवश्यकता और इस विश्वास को भी दर्शाती है कि शरीर का विनाश सब कुछ का अंत नहीं है। इसके अतिरिक्त, इसकी शुरुआत आत्मा की जीवित रहने की गुप्त लालसा से होती है, जो अभी भी अनिश्चितता में छिपी हुई है। ऐसा डर उस हद तक कम हो जाता है जिस हद तक निश्चितता

बढ़ती है, और जब निश्चितता पूरी हो जाती है तो गायब हो जाता है। यह मुद्दे का दैवीय पक्ष है.

जो लोग पर्याप्त रूप से प्रबुद्ध नहीं हैं, जिनका तर्क शायद ही बेहतर भविष्य के अत्यधिक सकारात्मक और आकर्षक परिप्रेक्ष्य का समर्थन कर सके, बुद्धिमानी होगी कि वे ऐसे किसी विचार से चकित न हों क्योंकि यह उन्हें वर्तमान की उपेक्षा करने के लिए प्रेरित कर सकता है। है। हालाँकि, वर्तमान उनके शारीरिक और बौद्धिक विकास के लिए आवश्यक है।

## अध्यात्मवादी मृत्यु से क्यों नहीं डरते?

अध्यात्मवादी सिद्धांत हमारे भविष्य की कल्पना करने के तरीके को पूरी तरह से बदल देता है। भावी जीवन एक परिकल्पना न रहकर वास्तविकता बन जाता है। मृत्यु के बाद आत्माओं की स्थिति अब एक सिद्धांत नहीं बल्कि अवलोकन का परिणाम है। पर्दा हटा दिया गया है और आध्यात्मिक दुनिया अपनी व्यावहारिक वास्तविकता की संपूर्णता में हमारे सामने प्रकट हो गई है। मानव मस्तिष्क ने इसकी खोज किसी सरल अवधारणा से नहीं की; इसके बजाय, यह उस दुनिया के निवासी हैं जो अपनी स्थिति का वर्णन करने के लिए हमारे पास आए हैं। हमने उसे आध्यात्मिक पैमाने के हर स्तर पर, खुशी और दुःख के हर चरण में और अंततः कब्र से परे जीवन की सभी स्थितियों में देखा है।

यही कारण है कि अध्यात्मवादी मृत्यु को इतनी शांति से देखते हैं और क्यों वे पृथ्वी पर अपने अंतिम क्षणों में इतने शांत रहते हैं। जो चीज उन्हें कायम रखती है वह सिर्फ आशा नहीं बल्कि निश्चितता है। वे जानते हैं कि भावी जीवन सांसारिक जीवन का ही विस्तार है, केवल बेहतर परिस्थितियों में, और वे उसी आत्मविश्वास के साथ इसका इंतजार करते हैं जिसके साथ वे एक तूफानी रात के बाद सूर्योदय का इंतजार करते थे।

इस विश्वास का कारण उन घटनाओं से उत्पन्न होता है जो उन्होंने देखी हैं और ऐसी घटनाओं का तर्क, न्याय और भगवान की अच्छाई और मानव जाति की अंतरतम आकांक्षाओं के साथ सामंजस्य है। अध्यात्मवादियों के लिए आत्मा कोई अमूर्त वस्तु नहीं है। इसका एक अलौकिक शरीर है, जो इसे एक परिभाषित प्राणी बनाता है। इसे विचार के माध्यम से समझा और समझा जा सकता है, जो हमारे लिए इसके व्यक्तित्व, क्षमताओं और अवधारणाओं को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त है।

जिन लोगों से हम प्यार करते हैं उनकी स्मृति किसी वास्तविक चीज़ पर आधारित होती है। उन्हें अब क्षणभंगुर लपटों के रूप में चित्रित नहीं किया जाता है जो हमारे विचारों से कुछ नहीं कहते हैं, बल्कि ठोस रूपों के रूप में चित्रित किए जाते हैं जो किसी भी चीज़ से अधिक खुद को जीवित प्राणी के रूप में दिखाते हैं। इसके अलावा, अंतरिक्ष की गहराई में खो जाने के बजाय, वे हमारे चारों ओर हैं। भौतिक संसार और आध्यात्मिक संसार निरंतर संबंध में हैं और वे एक दूसरे को पारस्परिक सहायता प्रदान करते हैं।

चूँकि भविष्य के बारे में संदेह अब संभव नहीं है, मृत्यु का भय गायब हो जाता है। हम शांति से इसे जीवन के द्वार से मुक्ति के रूप में देखते हैं, न कि शून्यता के द्वार से विनाश के रूप में।

## स्वर्ग

आमतौर पर पृथ्वी को घेरने वाले अपरिभाषित स्थान को दर्शाता है; विशेषकर, वह भाग जो हमारे क्षितिज के ऊपर है। यह लैटिन कोइलम से आया है, ग्रीक कोइलोस से, अवतल, क्योंकि आकाश एक विशाल अवतलता जैसा प्रतीत होता है। प्राचीन लोग ठोस और पारदर्शी दोनों पदार्थों से बने कई सुपरइम्पोज़्ड स्वर्गों के अस्तित्व में विश्वास करते थे, जो संकेंद्रित गोले बनाते थे। पृथ्वी केन्द्र में थी। जैसे-जैसे वे पृथ्वी के चारों ओर घूमते गए, ये गोले आकाशीय पिंडों के साथ-साथ अपनी कक्षाओं में बहते गए।

यह विचार सीमित खगोलीय ज्ञान से आया था और सभी धर्मशास्त्रों द्वारा नियोजित किया गया था, जिसने स्वर्ग का क्रम और आनंद की विभिन्न डिग्री तैयार की, सबसे दूर आनंद का निवास था। सबसे आम राय के अनुसार, सात स्वर्ग थे; इसलिए पूर्ण प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए सातवें आसमान पर होने की अभिव्यक्ति का प्रयोग किया जाता था। मुसलमान नौ स्वर्गों के अस्तित्व में विश्वास करते हैं, और प्रत्येक के साथ विश्वासियों की खुशी बढ़ती है। खगोलशास्त्री टॉलेमी ने ग्यारह की गिनती की और अंतिम को एम्पायरियन कहा, क्योंकि उसमें चमकती तेज रोशनी थी।

आज तक, यह कविता द्वारा अनन्त महिमा के क्षेत्र को दिया गया नाम है। ईसाई धर्मशास्त्र तीन स्वर्गों को मान्यता देता है: पहला हवा और बादलों का क्षेत्र है; दूसरा वह स्थान है जिसमें आकाशीय पिंड घूमते हैं; तीसरा दूसरे से परे है, और परमप्रधान का निवास है, चुने हुए लोगों का निवास है, अर्थात, जो आमने-सामने ईश्वर का चिंतन करते हैं। इस मान्यता के अनुसार कहा जाता है कि सेंट पॉल को तीसरे स्वर्ग में ले जाया गया था।

धन्य व्यक्ति के निवास से संबंधित विभिन्न सिद्धांत पृथ्वी को ब्रह्मांड का केंद्र मानने और आकाशीय पिंडों के क्षेत्र को सीमित करने की दोहरी त्रुटि पर आधारित हैं। यह इस काल्पनिक सीमा से परे है कि सभी सिद्धांत धन्य क्षेत्र और सर्वशक्तिमान के निवास को स्थित करते हैं। यह एक अजीब विसंगति है कि सभी चीजों का निर्माता, जो सभी चीजों को नियंत्रित करता है, उसे सृष्टि के केंद्र में नहीं, बल्कि उसके किनारे पर रखा गया है, जहां भगवान का चमकता हुआ विचार हर चीज को कवर कर सकता है!

अवलोकन और तथ्यों का उपयोग करके अपने अकाट्य तर्क के साथ, विज्ञान ने अपनी खोजों की रोशनी अंतरिक्ष की गहराइयों में बिखेर दी है और दिखाया है कि वे सभी सिद्धांत कितने अविश्वसनीय हैं। पृथ्वी अब ब्रह्मांड का केंद्र नहीं है, बल्कि अंतरिक्ष की विशालता में यात्रा करने वाले सबसे छोटे खगोलीय पिंडों में से एक है। सूर्य स्वयं एक ग्रहीय भंवर के केंद्र से अधिक कुछ नहीं है, जबकि तारे असंख्य अन्य सूर्य हैं, जिनके चारों ओर अनंत संसार घूमते हैं।

ये सूर्य दूरियों से अलग हैं जो केवल विचार के माध्यम से ही पहुंच योग्य हैं, भले ही वे एक दूसरे को छूते हुए प्रतीत होते हों। इस सभा में, जो शाश्वत कानूनों द्वारा शासित होती है, और जहां निर्माता की बुद्धि और सर्वशक्तिमानता प्रकट होती है, पृथ्वी एक अदृश्य जगह से ज्यादा कुछ नहीं है और रहने योग्य के मामले में सबसे कम पसंदीदा ग्रहों में से एक है। ऐसे विचारों के प्रकाश में, यह पूछना उचित है कि भगवान ने पृथ्वी को जीवन का एकमात्र स्थान क्यों बनाया और उस पर अपने सबसे पसंदीदा प्राणियों को क्यों नियुक्त किया?

इसके विपरीत, हर चीज़ का दावा है कि जीवन हर जगह मौजूद है और मानव जाति ब्रह्मांड की तरह अनंत है। चूँकि विज्ञान ने हमें ऐसी दुनियाएँ दिखाई हैं जो हमारे जैसी ही हैं, भगवान ने उन्हें बिना किसी उद्देश्य के नहीं बनाया होगा - भगवान ने उन्हें ऐसे प्राणियों से आबाद किया होगा जो उन्हें नियंत्रित करने में सक्षम हैं। मनुष्य के विचार हमेशा उसके ज्ञान का परिणाम होते हैं और सभी महत्वपूर्ण खोजों की तरह, दुनिया के संविधान ने ऐसे विचारों को एक अलग दिशा में स्थापित किया है।

इस नए ज्ञान के प्रभाव में, मान्यताओं को संशोधित किया गया है: स्वर्ग विस्थापित हो गया है और असीमित तारकीय क्षेत्र अब इसकी सेवा नहीं कर सकता है। फिर वह कहां है? इस प्रश्न का सामना करते हुए सभी धर्म चुप रहते हैं। अध्यात्मवाद मानव जाति की सच्ची नियति को प्रदर्शित करके इस प्रश्न का उत्तर देने आया है। इस प्रारब्ध के स्वरूप और दैवी गुणों को प्रस्थान बिन्दु मानकर व्यक्ति निष्कर्ष पर पहुँचता है; यानी, ज्ञात से शुरू करके, कोई तार्किक निष्कर्षों के माध्यम से अज्ञात तक पहुंचता है - अध्यात्मवाद द्वारा प्रदान किए जाने वाले प्रत्यक्ष अवलोकनों का तो जिक्र ही नहीं।

मनुष्य शरीर और आत्मा से बना है। आत्मा प्रमुख, तर्कसंगत और बुद्धिमान प्राणी है, जबकि शरीर वह भौतिक आवरण है जो आत्मा को अस्थायी रूप से कपड़े पहनाता है ताकि वह पृथ्वी पर अपने मिशन को पूरा कर सके और अपने विकास के लिए आवश्यक कार्य कर सके। इसके प्रयोग के बाद शरीर नष्ट हो जाता है लेकिन आत्मा जीवित रहती है। आत्मा से वंचित, शरीर महज़ जड़ पदार्थ है - एक उपकरण की तरह जो इसे कार्य करने वाले हिस्सों से वंचित कर देता है। शरीर के बिना, आत्मा सब कुछ बरकरार रखती है: जीवन और बुद्धि।

शरीर को पीछे छोड़कर, वह आत्मा की दुनिया में लौट जाता है जहां से वह अवतार लेने के लिए आया था। इसलिए, दो दुनियाएँ हैं: भौतिक दुनिया, जो अवतारी आत्माओं से बनी है, और आध्यात्मिक दुनिया, जो निर्जीव आत्माओं से बनी है। अपने आवरण की भौतिकता के कारण भौतिक जगत के प्राणी पृथ्वी या किसी अन्य भूमंडल से जुड़े हुए हैं।

हालाँकि, आत्मा की दुनिया हर जगह फैली हुई है; यह हमें चारों ओर से घेरता है और बिना किसी परिभाषित सीमा के उस स्थान को भर देता है। इसके आवरण की तरल प्रकृति के कारण, इसमें शामिल जीव ज़मीन पर तेज़ गति से चलने के बजाय विचार की गति से बड़ी दूरी तय कर सकते हैं। शरीर की मृत्यु उन बंधनों के टूटने के अलावा और कुछ नहीं है जिन्होंने उसे बंधक बनाकर रखा था।

आत्माएं सरल और अज्ञानी बनाई जाती हैं, लेकिन वे क्षमताओं से संपन्न होती हैं ताकि वे अंततः सब कुछ जान सकें और अपनी स्वतंत्र इच्छा के परिणामस्वरूप विकसित हो सकें। विकसित होते हुए, वे नया ज्ञान, नई योग्यताएँ, नई धारणाएँ प्राप्त करते हैं और परिणामस्वरूप, कम विकसित आत्माओं के लिए अज्ञात नए सुख प्राप्त करते हैं। वे वह देखते हैं, सुनते हैं, महसूस करते हैं और समझते हैं जो कम विकसित आत्माएं नहीं देख, सुन, महसूस और समझ नहीं सकती हैं।

ख़ुशी उस प्रगति का प्रत्यक्ष परिणाम है जो की गई है; इस प्रकार, दो आत्माओं में से एक दूसरे की तरह खुश नहीं हो सकती, केवल इसलिए क्योंकि वह बौद्धिक और नैतिक उन्नति में समान स्तर पर नहीं है; हालाँकि, प्रत्येक को अलग-अलग स्थान पर होना आवश्यक नहीं है। हालाँकि, वे साथ-साथ रह सकते हैं, एक अंधेरे में, जबकि दूसरा सब कुछ प्रकाश के रूप में देखता है - जैसे एक अंधा आदमी और एक दृष्टि वाला आदमी हाथ मिलाते हुए; एक को रोशनी दिखती है और दूसरे को इसकी जरा भी भनक नहीं लगती.

चूँकि आत्माओं की ख़ुशी उनके अपने व्यक्तिगत गुणों में निहित है, वे इसका आनंद कहीं भी ले सकते हैं, चाहे पृथ्वी पर या अंतरिक्ष में अवतारों के बीच। एक अपरिष्कृत तुलना हमें इस स्थिति को बेहतर ढंग से समझने में सक्षम बनाएगी। यदि दो लोग एक संगीत कार्यक्रम में हैं और उनमें से एक प्रशिक्षित कान वाला एक अच्छा संगीतकार है, जबकि दूसरा संगीत से अपरिचित है और उसके "टिन कान" हैं, तो पहले को आनंद की अनुभूति होगी, जबकि दूसरा गतिहीन रहेगा, क्योंकि एक समझता है और महसूस करता है कि इसका दूसरों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। यही बात आत्माओं द्वारा अनुभव की गई सभी संवेदनाओं पर भी लागू होती है, और जो उन्हें महसूस करने की उनकी क्षमता का प्रत्यक्ष परिणाम है।

आत्मा का संसार हर जगह वैभव प्रदर्शित करता है; सामंजस्य और संवेदनाएँ जो पदार्थ के प्रभाव में कम विकसित आत्माएँ भी अनुभव नहीं कर सकतीं क्योंकि वे केवल शुद्ध आत्माओं के लिए ही सुलभ हैं। आत्माओं की प्रगति उनके स्वयं के श्रम के फल में निहित है, लेकिन चूंकि वे स्वतंत्र हैं, वे अपनी इच्छा के अनुसार कम या ज्यादा गतिविधि या लापरवाही के साथ अपनी उन्नति के लिए श्रम करते हैं, जिससे उनकी प्रगति में तेजी आती है या देरी होती है। और परिणामस्वरूप, उनकी अपनी ख़ुशी भी होती है। जबकि कुछ तेजी से आगे बढ़ते हैं, अन्य सदियों तक निचले इलाकों में स्थिर रहते हैं।

इसलिए आत्माएं अपनी भाग्यशाली या दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति की स्वयं रचयिता हैं, "प्रत्येक को उसके कर्मों के अनुसार।" प्रत्येक आत्मा जो पीछे रह जाती है वह किसी और को नहीं बल्कि स्वयं को दोष दे सकती है, क्योंकि जो तेजी से विकास करता है उसके पास अपने स्वयं के प्रयासों की विशेष योग्यता होती है; इस प्रकार, वह अपने लिए जीती ख़ुशी को अधिक महत्व देती है। सर्वोच्च आनंद केवल पूर्ण आत्माओं द्वारा, या बल्कि शुद्ध आत्माओं द्वारा साझा किया जाता है, जिन्होंने बुद्धि और नैतिकता में विकसित होने के बाद ही इसे प्राप्त किया है।

बौद्धिक प्रगति और नैतिक प्रगति शायद ही साथ-साथ चलती हैं, लेकिन जो कुछ भी आत्मा एक समय में सफल नहीं होती वह दूसरे समय में सफल हो जाती है, जिससे प्रगति के दोनों क्षेत्र एक ही स्तर पर आ जाते हैं। यही कारण है कि हम अक्सर बुद्धिमान और शिक्षित व्यक्तियों को देखते हैं जो नैतिक रूप से थोड़े उन्नत होते हैं, और इसके विपरीत। आत्मा की दोहरी नैतिक और बौद्धिक प्रगति के लिए अवतार आवश्यक है: श्रम की आवश्यक गतिविधि के माध्यम से बौद्धिक प्रगति; पुरुषों और महिलाओं की एक-दूसरे के प्रति पारस्परिक आवश्यकता के माध्यम से नैतिक प्रगति। सामाजिक जीवन अच्छे और बुरे गुणों की कसौटी है।

अच्छाई, द्वेष, मिठास, हिंसा, दान, दान, स्वार्थ, लालच, घमंड, नम्रता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, वफादारी, असंवेदनशीलता और पाखंड - दूसरे शब्दों में, वह सब कुछ जो एक नैतिक या विकृत व्यक्ति बनाता है - पुरुषों और महिलाओं दोनों के बीच। दूसरों के साथ संबंधों में इसका अपना उद्देश्य, प्रयोजन और उत्साह होता है। जो लोग एकांत में रहते हैं उनमें न तो कोई बुराई होती है और न ही अच्छाई। एकांत में रहकर वे खुद को बुराई से तो दूर रखते हैं, लेकिन साथ ही अपने अंदर मौजूद अच्छाई को भी खत्म कर देते हैं।

आत्मा की सभी अच्छाइयों को प्राप्त करने और उसकी सभी बुराइयों को खत्म करने के लिए एक एकल भौतिक अस्तित्व स्पष्ट रूप से अपर्याप्त है। उदाहरण के लिए, आदिम लोग केवल एक अवतार में सबसे उन्नत यूरोपीय लोगों के नैतिक और बौद्धिक स्तर तक कैसे पहुँच सकते थे? यह शारीरिक रूप से असंभव होगा. इसलिए क्या उन्हें हमेशा अज्ञानता और बर्बरता में रहना चाहिए, उन संवेदनाओं से वंचित रहना चाहिए जो केवल क्षमताओं के विकास से ही उनमें आ सकती हैं?

सरल सामान्य ज्ञान ऐसी धारणा को अस्वीकार करता है, जो न केवल दैवीय न्याय और अच्छाई, बल्कि प्रकृति के बहुत ही विकासवादी और प्रगतिशील नियमों का भी खंडन करेगी। इस प्रकार, ईश्वर, जो सर्वोच्च न्यायकारी और अच्छा है, आत्मा को उसके उद्देश्य: पूर्णता तक पहुँचने के लिए जितने आवश्यक हो उतने अवतार प्रदान करता है।

प्रत्येक नए अस्तित्व के साथ, आत्मा अपने साथ वह सब लाती है जो उसने पिछले लोगों से क्षमताओं, अंतर्ज्ञान, बुद्धि और नैतिकता के संदर्भ में हासिल किया है। इस प्रकार प्रत्येक अस्तित्व प्रगति के पथ पर अगला कदम है।6 अवतार केवल कम विकसित आत्माओं की स्थिति में निहित है, अंततः उन लोगों के लिए अनावश्यक हो जाता है जो ऐसी स्थिति से परे चले गए हैं, और जो

या तो आत्मा की स्थिति में प्रगति कर चुके हैं या उच्च लोकों में भौतिक अस्तित्व, जिसकी कोई सांसारिक भौतिकता नहीं है।

ऐसी आत्माओं के लिए, अवतार तब स्वैच्छिक हो जाता है, जिसका उद्देश्य उस मिशन की पूर्ति के लिए अन्य अवतारों पर अधिक प्रत्यक्ष कार्रवाई करना होता है जिसके लिए उन पर आरोप लगाया गया है। ऐसा करने में, वे आत्म-बलिदान के माध्यम से अवतार के उतार-चढ़ाव और कष्टों को स्वीकार करते हैं। भौतिक जीवन के बीच के अंतराल में, आत्मा एक समय अवधि के लिए आध्यात्मिक दुनिया में फिर से प्रवेश करती है जो लंबी या छोटी हो सकती है, जहां वह अपने अच्छे या बुरे कर्मों के अनुसार खुश या दुखी हो जाती है।

चूँकि आत्मिक अवस्था आत्मा की सामान्य, निश्चित अवस्था है और चूँकि आत्मा का शरीर मरता नहीं है, इसलिए भौतिक अवस्था क्षणभंगुर और क्षणभंगुर होनी चाहिए। ऐसा विशेषकर आत्मा की अवस्था में होता है; अवतार के श्रम से प्राप्त प्रगति का फल आत्मा को मिलता है। आत्मा की स्थिति भी वह है जहां वह खुद को नए संघर्षों के लिए तैयार करती है और संकल्प लेती है कि मानवता में लौटने पर वह अभ्यास में लाने की कोशिश करेगी। आत्मा भी आत्मिक अवस्था में प्रगति करती है; वहां, वह विशेष ज्ञान प्राप्त करती है जिसे वह पृथ्वी पर प्राप्त नहीं कर पाएगी और अपने विचारों को संशोधित करती है।

भौतिक अवस्था और आत्मिक अवस्था एक-दूसरे के साथ एकजुटता में दो प्रकार की प्रगति का स्रोत हैं, और यही कारण है कि आत्मा को बारी-बारी से अस्तित्व के इन दो तरीकों से गुजरना पड़ता है। पुनर्जन्म पृथ्वी पर या अन्य लोकों में हो सकता है। सभी दुनियाओं में से कुछ ऐसी हैं जो अधिक विकसित हैं, जहां अस्तित्व में ऐसी स्थितियां शामिल हैं जो शारीरिक और नैतिक रूप से पृथ्वी की तुलना में कम कठिन हैं, लेकिन जहां केवल ऐसी आत्माएं प्रवेश करती हैं जिन्होंने ऐसी दुनिया के अनुरूप पवित्रता प्राप्त कर ली है। डिग्री तक पहुंच गए हैं.

इन उच्च लोकों में जीवन अपने आप में एक पुरस्कार है, क्योंकि वहां हम उन सभी सांसारिक बुराइयों और उतार-चढ़ावों से मुक्त होते हैं जिनका सामना हम यहां पृथ्वी पर करते हैं। कम भौतिक - लगभग तरल - शरीर बीमारियों और कमजोरियों के अधीन नहीं हैं, न ही पृथ्वी पर समान आवश्यकताओं के अधीन हैं।

बुरी आत्माओं को बाहर रखा जाता है और निवासियों को बौद्धिक प्रयास के माध्यम से विकास करने के अलावा कोई अन्य चिंता नहीं है। वहाँ सच्चा

भाईचारा राज करता है क्योंकि वहाँ कोई स्वार्थ नहीं है; सच्ची समानता क्योंकि वहाँ कोई अभिमान नहीं है; सच्ची स्वतंत्रता इसलिए क्योंकि इसमें कोई अव्यवस्थित कार्य नहीं है, न ही कोई महत्वाकांक्षी व्यक्ति है जो कमजोरों पर अत्याचार करने की कोशिश करता है। पृथ्वी की तुलना में, ये संसार सच्चे स्वर्ग हैं और अंतिम अवस्था की ओर ले जाने वाले प्रगति पथ पर विभिन्न चरणों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

पृथ्वी एक अविकसित दुनिया है जिसका उद्देश्य अपूर्ण आत्माओं की शुद्धि है, और यही कारण है कि जब तक भगवान इसे अधिक उन्नत आत्माओं के निवास में नहीं बदल देते तब तक बुराई हावी रहेगी। इस प्रकार होता यह है कि आत्मा धीरे-धीरे इतनी आगे बढ़ जाती है कि वह अपना विकास कर लेती है और आनंद के शिखर पर पहुंच जाती है। हालाँकि, इससे पहले ही पूर्णता के शिखर पर पहुँचकर वह अपनी प्रगति के सापेक्ष सुख भोगता है।

एक बच्चा बचपन का सुख, बाद में युवावस्था का और अंत में परिपक्वता का ठोस सुख भोगता है। धन्य आत्माओं का आनंद चिंतनशील आलस्य में नहीं है, जैसा कि हमने कई बार कहा है, एक शाश्वत और निंदनीय आलस्य होगा। इसके विपरीत, सभी स्तरों पर आत्मा जीवन में निरंतर गतिविधि शामिल है, लेकिन बिना थकावट के गतिविधि। सबसे अधिक खुशी सृष्टि के सभी वैभवों का आनंद लेने में है, जिसका वर्णन कोई भी मानव भाषा कभी नहीं कर पाई है, और जिसकी सबसे उपजाऊ कल्पना भी कल्पना नहीं कर सकती है।

इसके अलावा, इसमें सभी चीजों का ज्ञान और समझ, किसी भी शारीरिक और मानसिक पीड़ा का अभाव, आंतरिक संतुष्टि, आत्मा की अबाधित शांति, शुद्ध प्रेम शामिल है जो बुरे व्यक्तियों के संपर्क से घर्षण की अनुपस्थिति के कारण सभी प्राणियों को एकजुट करता है, और सबसे ऊपर सब कुछ, ईश्वर का चिंतन और दिव्य रहस्यों की समझ जो सबसे योग्य लोगों के सामने प्रकट होते हैं।

खुशी उन कार्यों में भी मिल सकती है जिनके लिए जिम्मेदार होने पर खुशी मिलती है। शुद्ध आत्माएँ ईश्वर की इच्छा के प्रसारण और निष्पादन के लिए ईश्वर के मसीहा या दूत हैं। वे महान मिशनों को अंजाम देते हैं और दुनिया के निर्माण और ब्रहमांड के सामान्य सामंजस्य की अध्यक्षता करते हैं, एक शानदार कार्य जो केवल उन लोगों को सौंपा गया है जो पूर्णता तक पहुंच चुके हैं। केवल उच्चतम स्तर के लोग ही ईश्वर के रहस्यों को जानते हैं, उस दिव्य विचार से प्रेरणा प्राप्त करते हैं जिसके वे प्रत्यक्ष प्रतिनिधि हैं।

आत्माओं के गुण उनकी प्रगति, उनके ज्ञान की डिग्री, उनकी क्षमताओं, उनके अनुभव और सर्वोच्च भगवान से प्राप्त विश्वास की डिग्री के समानुपाती होते हैं। ऐसा कोई विशेषाधिकार या उपकार नहीं है जो उनकी अपनी योग्यता से न आता हो; सब कुछ कठोर न्याय के तराजू पर मापा और तौला जाता है। सबसे महत्वपूर्ण मिशन केवल उन लोगों को सौंपे जाते हैं जिन्हें भगवान उन्हें पूरा करने में सक्षम और विफलता या समझौता करने में असमर्थ मानते हैं।

जबकि सबसे योग्य आत्माओं को ईश्वर की देखरेख में सर्वोच्च परिषद में शामिल किया जाता है, ग्रह प्रणालियों का मार्गदर्शन उच्च क्रम के लोगों को सौंपा जाता है, और विशेष दुनिया का मार्गदर्शन दूसरों को सौंपा जाता है। इसके बाद, पदानुक्रमित उन्नति और अधीनता के क्रम में वे लोग हैं जो राष्ट्रों की प्रगति, परिवारों और व्यक्तियों की सुरक्षा, प्रगति की प्रत्येक शाखा के पीछे की प्रेरणा और प्रकृति के विविध संचालन जैसी अधिक सीमित जिम्मेदारियों के प्रभारी हैं। सृजन का अंतरंग विवरण. तक.

इस विशाल और सामंजस्यपूर्ण समग्रता में, सभी क्षमताओं, योग्यताओं और शक्तियों के लिए व्यवसाय हैं; जो आत्माएं प्रगति की आकांक्षा रखती हैं, उनके लिए व्यवसाय को सहर्ष स्वीकार किया जाता है और उत्साहपूर्वक अनुरोध किया जाता है क्योंकि वे उन्नति का एक साधन हैं।

उच्च स्तर की आत्माओं को सौंपे गए महान मिशनों के साथ-साथ, सभी स्तरों के महत्व के अन्य मिशन भी हैं। ये मिशन सभी श्रेणियों की आत्माओं को दिए गए हैं, और हम पुष्टि कर सकते हैं कि प्रत्येक अवतारी आत्मा को अपने साथी प्राणियों के लाभ के लिए अपने कर्तव्यों को पूरा करने का अधिकार है: परिवार के मुखिया से लेकर अपने बच्चों के पालन-पोषण के प्रभारी तक। प्रगति का आरोप उस प्रतिभाशाली व्यक्ति से है जो समाज में प्रगति के नए बीज बोता है। ये द्वितीयक मिशन हैं जहां विफलताएं, झूठ और त्रुटियां होती हैं, लेकिन जो संपूर्ण को प्रभावित किए बिना केवल व्यक्ति को नुकसान पहुंचाती हैं।

इसलिए सभी मन समग्र कार्य में सहयोग करते हैं, चाहे उनके विकास का स्तर कुछ भी हो, और प्रत्येक अपनी क्षमताओं के अनुसार: किसी अवतारी अवस्था में; अन्य आत्मा अवस्थाओं में. हम हर जगह गतिविधि देखते हैं, पैमाने के नीचे से ऊपर तक, सभी सहयोग कर रहे हैं, सीख रहे हैं और शीर्ष पर पहुंचने के लिए एक-दूसरे की मदद कर रहे हैं।

इस प्रकार, आत्मा और भौतिक जगत के बीच एकता स्थापित हो जाती है; दूसरे शब्दों में, मनुष्यों और आत्माओं के बीच: बंदी और मुक्त आत्माओं के बीच।

इसलिए, सच्ची सहानुभूति और महान स्नेह परिष्कार और निरंतर रिश्तों के माध्यम से जारी और मजबूत होते हैं।

तो फिर, जीवन हर जगह गति में है। अनंत का कोई कोना खाली नहीं है, न ही ऐसा कोई क्षेत्र है जहां असंख्य उज्ज्वल आत्माओं की सेनाएं लगातार यात्रा नहीं कर रही हैं, जो अवतारों की अपरिष्कृत इंद्रियों के लिए अदृश्य हैं, लेकिन जिनकी दृष्टि से पदार्थ से मुक्त आत्माएं खुशी और आश्चर्य से चकित हो जाती हैं। देता है.

हर जगह, आख़िरकार, प्रगति के सभी स्तरों के सापेक्ष ख़ुशी है, सभी कर्तव्य पूरे हो चुके हैं, प्रत्येक आत्मा अपने विकास के अनुसार ख़ुशी के अपने तत्व ला रही है। ख़ुशी व्यक्तियों के गुणों पर निर्भर करती है, न कि उनके पर्यावरण की भौतिक स्थिति पर; इस प्रकार, खुशी हर जगह है जहां आत्माएं खुश रहने में सक्षम हैं। ख़ुशियों का ब्रहमांड में कोई सीमित या नियुक्त स्थान नहीं है।

वे जहां भी हों, शुद्ध आत्माएं दिव्य महिमा का चिंतन कर सकती हैं, क्योंकि भगवान हर जगह हैं। 16. फिर भी, खुशी सिर्फ व्यक्तिगत नहीं है। यदि हम इसे केवल अपने तक ही सीमित रखें और दूसरों के साथ साझा नहीं कर सकें, तो यह दुखद और स्वार्थी होगा। हम उन विचारों के मिलन में भी खुशी पा सकते हैं जो सहानुभूतिपूर्ण प्राणियों को एकजुट करते हैं।

खुश आत्माएं विचारों, स्वादों और भावनाओं की समानता के माध्यम से एक-दूसरे को आकर्षित करती हैं, इस प्रकार सजातीय परिवारों के विशाल समूह बनते हैं, जिनमें से प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वयं के गुणों को प्रसारित करता है और समग्र के शांत और लाभकारी उत्सर्जन से संतृप्त होता है। है।

भले ही इसके कुछ सदस्य किसी मिशन पर दूर हों, कभी-कभी वे अपने काम का लेखा-जोखा देने के लिए अंतरिक्ष में एक निश्चित बिंदु पर मिलते हैं, और कभी-कभी वे निर्देश और सलाह प्राप्त करने के लिए अधिक विकसित आत्मा के पास लौट आते हैं। और एक साथ इकट्ठा हो जाओ.

हालाँकि आत्माएँ हर जगह हैं, दुनिया उनके पसंदीदा मिलन बिंदु हैं क्योंकि उनमें और जिस दुनिया में वे रहते हैं, उनके बीच समानता है। उच्च क्रम की आत्माएँ उन्नत दुनिया में बहुतायत में हैं, ठीक उसी तरह जैसे निचले क्रम की आत्माएँ कम विकसित दुनिया में बहुतायत में रहती हैं। पृथ्वी इनमें से एक है. इसलिए प्रत्येक ग्लोब में अवतरित और अशरीरी आत्माओं की अपनी आबादी

होती है, जो बड़े पैमाने पर इन्हीं आत्माओं के अवतारों और अवतारों द्वारा कायम रहती हैं।

आत्माओं के पदार्थ के प्रति लगाव के कारण कम विकसित दुनिया में यह आबादी अधिक ठोस है, लेकिन उच्च दुनिया में यह अधिक तरल है। हालाँकि, इन उच्च लोकों से, जो प्रकाश और खुशी के सच्चे केंद्र हैं, आत्माएँ प्रगति के बीज बोने के लिए निचले लोकों में जाती हैं, उन्हें सांत्वना और आशा देती हैं, और अपने निवासियों का साहस बढ़ाती हैं जो मुसीबतों से हार जाते हैं। ज़िंदगी। . वे कभी-कभी अपने मिशन को अधिक प्रभावी ढंग से पूरा करने के लिए उन पर अवतरित होते हैं।

तो इस असीमित विस्तार में स्वर्ग कहाँ है? हर जगह. इसके चारों ओर कोई सीमा नहीं है। उन्नत संसार ही इसका अंतिम पड़ाव है; सद्गुण यात्रा को आसान बनाते हैं, जबकि दुर्गुण यात्रा में बाधा डालते हैं। इस भव्य तस्वीर के सामने जो ब्रह्मांड के सभी कोनों को आबाद करती है, जो सृष्टि में हर चीज के अस्तित्व का एक उद्देश्य और कारण देती है, वह सिद्धांत कितना छोटा और महत्वहीन है जो मानवता को अंतरिक्ष में एक अगोचर बिंदु के भीतर सीमित करता है, और जो इसे शुरुआत के रूप में दिखाता है एक निश्चित क्षण में, बस उस दुनिया के साथ समाप्त होने के लिए जिसमें यह शामिल है - यह सब अनंत काल में एक मिनट से अधिक नहीं!

वह सिद्धांत कितना दुखद, ठंडा और ठंडा है, जिसमें संपूर्ण ब्रह्मांड को सांसारिक मानव जाति के पहले, उसके दौरान और उसके बाद, जीवन के बिना, गति के बिना, गहन मौन में डूबे हुए एक विशाल रेगिस्तान के रूप में दर्शाया गया है! निरंतर चिंतन में लगे कुछ चुनिंदा लोगों का यह वर्णन कितना निराशाजनक है, जबकि अन्य आत्माओं का विशाल बहुमत अंतहीन पीड़ा के लिए अभिशप्त है!

प्रेमपूर्ण हृदयों के लिए जीवित और मृत लोगों के बीच कितनी तीखी बाधा खड़ी की गई है! खुश आत्माएं - वे कहते हैं - केवल अपनी खुशी के बारे में सोचें; खोए हुए लोग केवल अपने दुख के बारे में ही सोचते हैं।

क्या यह कोई आश्चर्य की बात है कि स्वार्थ पृथ्वी पर राज करता है जबकि यह स्वर्ग में भी दिखाई देता है? तो, ईश्वर की महानता, शक्ति और अच्छाई के बारे में ऐसा दृष्टिकोण कितना संकीर्ण है! इसके विपरीत, अध्यात्मवाद का ईश्वर संबंधी विचार कितना उत्कृष्ट है! इसका सिद्धांत कैसे विचारों का विस्तार करता है और सोच को व्यापक बनाता है!

लेकिन कौन कहता है कि यह सच है? पहला कारण, फिर रहस्योद्घाटन और अंत में विज्ञान की प्रगति के साथ उसका सामंजस्य। दो सिद्धांतों के बीच, एक जो ईश्वर के गुणों को तुच्छ बताता है और दूसरा उन्हें ऊंचा उठाता है, एक जो असंगत है और दूसरा प्रगति के अनुरूप है, एक जो पीछे रह जाता है जबकि दूसरा आगे बढ़ता है, सामान्य ज्ञान यह तय करता है कि सत्य कौन सा है?

जब दोनों का सामना होता है, तो प्रत्येक को अपने विवेक से परामर्श लेना चाहिए और एक आंतरिक आवाज उसके माध्यम से बोलेगी। ऐसी आंतरिक आकांक्षाएँ ईश्वर की आवाज़ हैं, जो मानव जाति को धोखा नहीं दे सकतीं। 19. परन्तु कोई यह पूछे, कि परमेश्वर ने आरम्भ ही से सारा सत्य प्रगट क्यों नहीं किया? इसी कारण से कोई भी बच्चों को वह नहीं सिखाता जो केवल वयस्कों को सिखाया जाना चाहिए।

सीमित रहस्योद्घाटन मानव जाति के विकास की एक निश्चित अवधि के लिए पर्याप्त था, और भगवान ने इसे अपनी आत्मा की नैतिक शक्ति के अनुसार प्रदान किया। जिन लोगों को आज अधिक संपूर्ण रहस्योद्घाटन प्राप्त हुआ है, वे वही आत्माएं हैं जिन्हें अन्य समय में इसका केवल एक हिस्सा ही प्राप्त हुआ था, लेकिन तब से उनकी बुद्धि में वृद्धि हुई है।

इससे पहले कि विज्ञान प्रकृति की जीवित शक्तियों, आकाशीय पिंडों की संरचना, पृथ्वी की वास्तविक भूमिका और इसके निर्माण का खुलासा करता, क्या मनुष्य बाहरी अंतरिक्ष की विशालता और दुनिया की बहुलता को समझ सकता था? इससे पहले कि भूविज्ञान पृथ्वी के निर्माण को प्रदर्शित कर सके, क्या वे इसके आंतरिक भाग से नरक को हटा सकते थे और सृष्टि के छह दिनों के प्रतीकात्मक अर्थ को समझ सकते थे?

इससे पहले कि खगोल विज्ञान ने ब्रह्मांड को नियंत्रित करने वाले नियमों की खोज की, क्या वे समझ सकते थे कि अंतरिक्ष में कोई ऊपर या नीचे नहीं है, कि आकाश ऊपर बादलों या सितारों द्वारा सीमित नहीं है? क्या मनोविज्ञान की प्रगति से पहले वे स्वयं को आध्यात्मिक जीवन से जोड़ सकते थे?

क्या वे मृत्यु के बाद एक भाग्यशाली या दुर्भाग्यपूर्ण जीवन की कल्पना कर सकते हैं जो किसी सीमित स्थान या भौतिक रूप के अधीन न हो? नहीं, चूँकि वे विचार के बजाय इंद्रियों के माध्यम से समझते थे, इसलिए ब्रह्मांड उनके समझने के लिए बहुत विशाल था। इसे छोटे-छोटे अनुपात तक सीमित रखना और बाद में इसका विस्तार करना आवश्यक था।

आंशिक रहस्योद्घाटन की अपनी उपयोगिता थी; उस समय यह संतोषजनक था, लेकिन आज ऐसा नहीं है। गलती उनकी है जो विचार की प्रगति को ध्यान में रखे बिना यह सोचते हैं कि बचपन में दी गई शिक्षा से वे परिपक्व लोगों पर शासन कर सकते हैं। (आत्मवाद के अनुसार सुसमाचार, अध्याय III देखें)

# <u>नरक</u>

## भविष्य की सज़ा का अंतर्ज्ञान

भविष्य की सज़ा का अंतर्ज्ञान

इतिहास में, लोगों ने सहज रूप से यह माना है कि पृथ्वी पर अपने जीवन के दौरान उनके द्वारा किए गए अच्छे या बुरे कर्मों के अनुसार मृत्यु के बाद का जीवन सुखी या दुखी होना चाहिए। हालाँकि, भावी जीवन के बारे में उनका दृष्टिकोण उनके नैतिक ज्ञान के विकास और अच्छे और बुरे के बारे में उनकी सही या गलत मान्यताओं से संबंधित है।

सज़ा और इनाम के बारे में उनके विचार उनकी प्रमुख प्रवृत्तियों का प्रतिबिंब हैं; इस प्रकार, युद्ध-प्रेमी लोगों ने हमेशा युद्ध में बहादुरी के लिए दिए जाने वाले सम्मान के साथ सर्वोच्च खुशी को जोड़ा है; शिकारी, शिकार की प्रचुरता के साथ; कामुक, कामुक आनंद के साथ. पदार्थ के प्रभुत्व के तहत, लोग आध्यात्मिक मामलों को केवल अपूर्ण रूप से समझ सकते हैं और भविष्य की सजा और आनंद की तस्वीर की कल्पना कर सकते हैं जो आध्यात्मिक से अधिक भौतिक है - उनका मानना है कि उन्हें इस दुनिया में रहना है। इसी तरह उस दूसरी दुनिया में भी खाना-पीना चाहिए, लेकिन बेहतर तरीके से।

बाद में, भावी जीवन के बारे में लोगों की मान्यताओं के संबंध में, हमें अध्यात्मवाद और भौतिकवाद का मिश्रण मिलता है: एक ओर चिंतनशील

आनंद; दूसरी ओर, शारीरिक यातनाओं वाला नर्क। चूँकि वे केवल वही समझ सकते थे जो वे वास्तव में देख सकते थे, प्रारंभिक लोगों ने स्वाभाविक रूप से वर्तमान के आधार पर अपना भविष्य बनाया। जो चीजें वे अपने सामने देख सकते थे उन्हें समझने के लिए उन्हें बौद्धिक रूप से विकसित होना पड़ा, जो समय के साथ ही हो सकता था।

इसके अलावा, भविष्य की सज़ाओं की उनकी तस्वीर केवल मानव जाति की बुराइयों का प्रतिबिंब थी, लेकिन बड़े पैमाने पर, पृथ्वी पर पाई जाने वाली सभी यातनाओं, दंडों और पीड़ाओं को एक साथ लाती थी। इसलिए, गर्म जलवायु में उन्होंने नरक की आग की कल्पना की; ठंडे प्रदेशों में, बर्फ़ के नर्क से। चूँकि उनमें अभी तक वह समझ विकसित नहीं हुई थी जो बाद में उन्हें आध्यात्मिक दुनिया को समझने में मदद कर सके, वे केवल शारीरिक दंड की कल्पना कर सकते थे; इस प्रकार, रूप में छोटे अंतर के साथ, सभी धर्मों के नरक वास्तव में एक-दूसरे से मिलते जुलते थे।

ईसाई नरक बुतपरस्त नरक की नकल है

कवियों द्वारा वर्णित और नाटकीय रूप से प्रस्तुत बुतपरस्त नरक अपनी तरह का सबसे भव्य मॉडल था। इसका रखरखाव ईसाइयों द्वारा किया जाता था, जिनके अपने कवि थे। दोनों नर्कों की तुलना करने पर, दोनों के बीच कई समानताएं हैं - नाम और विवरण में अंतर को छोड़कर। दोनों में पीड़ा के तत्व के रूप में भौतिक अग्नि है, क्योंकि अग्नि पीड़ा के सबसे क्रूर साधन का प्रतीक है।

लेकिन एक अजीब बात है! बुतपरस्त नरक को कई बिंदुओं पर बढ़ा-चढ़ाकर बताया गया है। हालाँकि बुतपरस्तों के पास डैनाइड्स8 का अथाह बैरल, इक्सियन9 का पहिया और सिसिफ़स का पत्थर था, ये छवियां व्यक्तिगत पीड़ा का प्रतिनिधित्व करती थीं। दूसरी ओर, ईसाइयों ने सभी के लिए अपने उबलने के बर्तन तैयार रखे हैं, जिनके ढक्कन देवदूत उठाते हैं ताकि वे शापितों की विकृतियों को देख सकें।

पगानों ने कभी भी एलीसियन फील्ड्स के देवताओं को टार्टरस में शापितों को देखने में आनंद लेने के रूप में वर्णित नहीं किया। बुतपरस्तों की तरह, ईसाइयों के पास नरक का राजा है - शैतान - हालांकि, अंतर यह है कि प्लूटो केवल अपने हिस्से के रूप में प्राप्त भूतिया साम्राज्य को नियंत्रित करने तक ही सीमित था। हालाँकि वह स्वयं स्वभाव से दुष्ट नहीं था, फिर भी उसने बुराई करने वालों को

अपने राज्य में रखा, क्योंकि यही उसका मिशन था। इसके अलावा, उसने लोगों के कष्टों पर खुशी मनाकर उन्हें पाप की ओर ले जाने की कोशिश नहीं की।

दूसरी ओर, शैतान हर जगह पीड़ितों को भर्ती करता है और उन्हें आग में बदलने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली पिचकारियों से लैस राक्षसों की सेना के साथ पीड़ा देने में रोमांचित होता है। उस आग की प्रकृति, जो अपने पीड़ितों को जलाए बिना लगातार जलती रहती है, गंभीर चर्चा का विषय रही है, और यहां तक कि इस बात पर भी बहस हुई है कि क्या यह कोलतार की आग हो सकती है।

इस प्रकार, बुतपरस्त नरक ईसाई नरक से अलग नहीं है। वही कारण जो प्राचीन लोगों को खुशी के साम्राज्य को भौतिक रूप से स्थानीय बनाने के लिए प्रेरित करते थे, उन्होंने दुख के स्थान को भी सीमित कर दिया। पूर्व को ऊपरी क्षेत्रों में रखने के बाद, बाद वाले के लिए निचले क्षेत्रों, यानी, पृथ्वी के केंद्र को आरक्षित करना स्वाभाविक था, जहां उनका मानना था कि कुछ भयानक अंधेरी गुफाएं प्रवेश द्वार के रूप में काम करती थीं। पृथ्वी का केंद्र वह स्थान भी है जहां ईसाइयों ने हमेशा शापितों का निवास स्थान रखा है।

आइए हम इस मामले के संबंध में एक और सादृश्य बनाएं: बुतपरस्तों के नरक में एक तरफ एलीसियन क्षेत्र थे, और दूसरी तरफ टार्टरस; ओलंपस, देवताओं और दिव्य प्राणियों का घर, ऊपरी क्षेत्रों में बना रहा। सुसमाचार के पत्र के अनुसार, अर्थात् निचले स्थानों पर, धर्मी लोगों की आत्माओं को बाहर निकालने के लिए जो उसके आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। तो नरक सिर्फ यातना का स्थान नहीं था; बुतपरस्त नरक की तरह, यह केवल निचले क्षेत्रों में एक स्थान था।

ओलंपस की तरह, स्वर्गदूतों और संतों का घर ऊंचे क्षेत्रों में था। इसे तारों वाले आकाश से परे रखा गया था, जिसे स्वयं सीमित माना जाता था। ईसाई और बुतपरस्त विचारों का यह मिश्रण आश्चर्य की बात नहीं है। गहरी जड़ें जमा चुकी मान्यताओं को एक झटके से नष्ट नहीं किया जा सकता था, क्योंकि लोगों के पास अंतरिक्ष की अनंतता और दुनिया की अनंत संख्या की कल्पना करने के लिए आवश्यक ज्ञान का अभाव था।

उनके लिए, पृथ्वी ब्रह्मांड का केंद्र थी और वे इसके आकार या आंतरिक संरचना के बारे में कुछ नहीं जानते थे। सब कुछ उनके दृष्टिकोण तक ही सीमित था, और इस प्रकार भविष्य के बारे में धारणाएँ उनकी समझ से आगे नहीं बढ़ सकीं। इसलिए, यीशु ने उन्हें चीजों की वास्तविक स्थिति में आरंभ करने की असंभवता का सामना किया, और स्वीकृत पूर्वाग्रहों को मंजूरी देने के लिए अपने अधिकार

का उपयोग नहीं करना चाहा, इन अवधारणाओं को सही करने से परहेज किया, और समय बीतने के साथ उस मिशन को जारी रखा। बाएं।

उन्होंने खुद को धन्य लोगों के जीवन और दोषियों के लिए आरक्षित सजा के बारे में अस्पष्ट शब्दों में बोलने तक ही सीमित रखा, अपने उपदेशों में शारीरिक दंड और पीड़ा का उल्लेख किए बिना, जो ईसाइयों के लिए विश्वास का एक लेख है। इस तरह नरक के बुतपरस्त विचार हमारे दिन तक जारी रहे हैं। इस विषय पर सही प्रकाश डालने के लिए आधुनिक ज्ञान का प्रसार और मानव बुद्धि का समग्र विकास आवश्यक था। हालाँकि, चूँकि स्थापित विचारों को बदलने के लिए कुछ भी सकारात्मक नहीं हुआ, अंधविश्वास के प्रभुत्व वाले एक लंबे समय के बाद अविश्वास का संक्रमणकालीन दौर आया। इस पर विराम लगाने के लिए नया खुलासा हुआ है।

पुनर्निर्माण के लिए इसे ध्वस्त करना आवश्यक था, क्योंकि उन लोगों में सही विचार डालना आसान है जो किसी भी चीज़ में विश्वास नहीं करते हैं, लेकिन फिर भी महसूस करते हैं कि कुछ कमी है, उन लोगों में सही विचार डालना आसान है जिनके पास एक मजबूत शक्ति है। लेकिन बेतुका विश्वास.

स्वर्ग और नरक का स्थानीयकरण करके, यह माना गया कि आत्माओं के लिए केवल दो चरम अवस्थाएँ हैं: पूर्ण आनंद या पूर्ण पीड़ा। पार्गेटरी केवल एक मध्यवर्ती और अस्थायी अवस्था है, जहाँ से आत्माएँ धर्मी लोगों के निवास में संक्रमण के बिना गुजरती हैं।

मृत्यु के बाद आत्मा के निश्चित भाग्य में विश्वास को देखते हुए, कोई अन्य परिकल्पना नहीं हो सकती है। यदि दो से अधिक निवास स्थान नहीं हैं - चुने हुए लोगों के और शापित लोगों के - तो कोई भी इस विचार को स्वीकार नहीं कर सकता है कि प्रत्येक में कई डिग्री हैं, उनके माध्यम से चढ़ने की संभावना को स्वीकार किए बिना और, परिणामस्वरूप, प्रगति की। इस प्रकार, यदि प्रगति है, तो कोई निश्चित नियति नहीं हो सकती, जबकि यदि कोई निश्चित नियति नहीं है, तो कोई प्रगति नहीं हो सकती।  ईसा ने कहा, "मेरे पिता के घर में बहुत से निवास स्थान हैं।

## <u>लीम्बो</u>

यह सच है कि चर्च कुछ मामलों में एक विशेष स्थिति स्वीकार करता है। जो बच्चे बहुत कम उम्र में बिना कोई बुराई किए मर जाते हैं, उन्हें अनंत आग में नहीं डाला जा सकता, लेकिन चूंकि उन्होंने कोई अच्छा काम नहीं किया है,

इसलिए वे शाश्वत आनंद के हकदार नहीं हैं। इस प्रकार, चर्च का कहना है कि वे लिम्बो में रहते हैं: वह अनिश्चित स्थिति जिसमें, हालांकि वे पीड़ित नहीं होते हैं, न ही वे आनंद का आनंद लेते हैं।

हालाँकि, चूँकि उनका भाग्य अपरिवर्तनीय रूप से निर्धारित होता है, वे अनंत काल के लिए खुशी से वंचित हो जाते हैं। इसलिए इस तरह के अभाव का तात्पर्य शाश्वत और अयोग्य दंड से है, भले ही यह उनके द्वारा किए गए किसी भी कार्य का परिणाम न हो।

यही बात आदिम लोगों पर भी लागू होती है, जिन्हें बपतिस्मा की कृपा और धार्मिकता का प्रकाश नहीं मिला है, और वे प्राकृतिक प्रवृत्ति से प्रेरित होकर अज्ञानतावश पाप करते हैं। बेशक, ऐसे व्यक्ति समान जिम्मेदारियाँ नहीं निभाते हैं या उन लोगों के समान योग्यता प्राप्त नहीं करते हैं जो अपने काम के ज्ञान के साथ कार्य करते हैं।

फिर भी सरल तर्क ईश्वर के न्याय के नाम पर ऐसे सिद्धांत को खारिज कर देता है, जो कि मसीह के इन शब्दों में पूरी तरह से दर्शाया गया है, "प्रत्येक को उसके कर्मों के अनुसार।" अच्छे या बुरे कर्मों को यह समझना जरूरी है कि वे जानबूझकर और स्वतंत्र रूप से किए जाते हैं, क्योंकि केवल इन्हीं की जिम्मेदारी होती है। ऐसा किसी बच्चे, आदिम या किसी अन्य व्यक्ति के साथ नहीं हो सकता जिसे ज्ञान प्राप्त न हुआ हो।

## बुतपरस्त नरक का चित्रण

बुतपरस्त नरकों के बारे में ज्ञान हमें लगभग विशेष रूप से कवियों की कहानियों के माध्यम से मिला है। होमर और वर्जिल सबसे संपूर्ण विवरण प्रदान करते हैं, लेकिन हमें ऐसे विवरणों पर लगाई गई काव्यात्मक आवश्यकताओं को ध्यान में रखना चाहिए।

फेनेलन ने अपने टेलीमेकस में जो वर्णन किया है वह प्राचीन लोगों की मौलिक मान्यताओं के समान स्रोत से उत्पन्न हुआ है, लेकिन इसमें गद्य शैली की अधिक सटीक सादगी है। यह विभिन्न स्थानों के निराशाजनक पहलू का वर्णन करता है और विशेष रूप से इस बात पर जोर देने की कोशिश करता है कि दोषी को किस प्रकार की पीड़ा सहनी पड़ती है।

फेनेलन अपने शाही शिष्य को निर्देश देने के उद्देश्य से दुष्ट राजाओं के भाग्य में ऐसी पीड़ाएँ बढ़ाता है। यह कार्य जितना लोकप्रिय है, बहुत से लोगों को नरक के बारे में इसका वर्णन याद नहीं होगा, या तुलना करने के लिए इस पर पर्याप्त विचार नहीं किया होगा। इस प्रकार, हमारा मानना है कि उन अनुभागों को पुन: प्रस्तुत करना उपयोगी होगा जो सीधे तौर पर हमारे विषय से संबंधित हैं, अर्थात् वे जिनमें विशेष रूप से व्यक्तिगत दंडों का उल्लेख है।

टेलीमेकस प्रवेश करता है और एक असंगत छाया की चीखें सुनता है। "आपका अपमान क्या है?" वह पूछता है। "जब आप पृथ्वी पर थे तब आप कौन थे?" छाया उत्तर देती है, “नबोफ़ारज़्म, अहंकारी बेबीलोन का राजा। मेरा नाम सुनते ही पूर्व के सभी लोग भय से कांपने लगे।

इथियोपिया की सबसे कीमती अगरबत्तियाँ उसके सामने दिन-रात जलती रहती थीं। बिना सजा के कभी किसी ने मेरा विरोध करने की हिम्मत नहीं की। मेरे जीवन को और अधिक आनंदमय बनाने के लिए हर दिन नई खुशियाँ पैदा की गईं। “मैं युवा और मजबूत था।

अफ़सोस! जब मैं सिंहासन पर था तब भी मेरे लिए काफी समृद्धि बाकी थी! हालाँकि, एक निश्चित महिला जिससे मैं प्यार करता था, लेकिन जिसने मुझे वापस प्यार नहीं किया, उसने मुझे स्पष्ट कर दिया कि मैं कोई भगवान नहीं था - उसने मुझे जहर दे दिया, और अब मैं नहीं रहा। कल मेरी अस्थियाँ समारोहपूर्वक स्वर्ण कलश में दफ़न कर दी गईं। लोग रोये और उनके बाल खींचे.

उन्होंने मेरे साथ मरने के लिए खुद को मेरी चिता की आग पर फेंकने का नाटक किया, और वे मेरी राख की शानदार कब्र पर एक साथ रोने के लिए आते रहेंगे - लेकिन कोई भी वास्तव में मेरे लिए शोक नहीं मनाएगा। मेरी याददाश्त मेरे अपने परिवार को आतंकित करती है, जबकि यहाँ मैं अब भयानक दर्द सह रहा हूँ।

इस नाटकीय कहानी से प्रभावित होकर, टेलीमेकस ने उससे पूछा, “क्या आप अपने शासनकाल के दौरान वास्तव में खुश थे? "क्या तुमने कभी उस मधुर शांति का अनुभव किया है जिसके बिना सुख के बीच भी मन उदास और उदास रहता है?" “नहीं,” बेबीलोनियाई ने उत्तर दिया, “मैं यह भी नहीं जानता कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं।

संत इस प्रकार की शांति की प्रशंसा करते हैं, लेकिन मैंने स्वयं इसे कभी महसूस नहीं किया है। मेरा दिल हमेशा नई इच्छाओं, भय और आशाओं से भरा रहता था। मैंने अपने जुनून की उथल-पुथल से खुद को सुन्न करने की कोशिश की, उन्हें स्थायी और निर्बाध बनाने के लिए उनकी उथल-पुथल को बढ़ावा देने के तरीके अपनाए। शांति से तर्क करने के लिए एक संक्षिप्त विराम भी बहुत अधिक होता।

यही वह शांति थी जिसका मैंने आनंद लिया; कोई अन्य शांति एक कहानी, एक स्वप्न जैसी प्रतीत होगी। "ये वो चीजें हैं जिनका मुझे अफसोस है।" यह कहने के बाद, बेबीलोनियन एक कमजोर आदमी की तरह चिल्लाता है, जो बहुत अधिक समृद्धि से कमजोर हो गया है और इसलिए हार और अपमान स्वीकार करने में असमर्थ है। उनके साथ कुछ दास भी हैं जिन्हें उनके अंतिम संस्कार के सम्मान में मौत की सजा दी गई थी।

बुध ने उन्हें राजा सहित चारोन के पास पहुँचा दिया था। पृथ्वी पर रहते हुए उन्होंने जिसकी सेवा की, उस पर उनका पूरा अधिकार है। ये गुलाम छायाएं नबोफ़रज़म की छाया से बिल्कुल भी नहीं डरती हैं, जिसे वे जंजीरों में रखते हैं और उसे क्रूरतम अपमान से पीड़ा देते हैं। एक ने उनसे कहा, "क्या हम आपके जैसे इंसान नहीं थे? आप इतने असंवेदनशील कैसे हो सकते हैं कि सभी मनुष्यों के साथ अपने सामान्य मूल को भूल जाएं?"

दूसरे ने उनका अपमान करते हुए कहा, "आपने खुद को एक सामान्य इंसान न समझकर सही किया - आप मानवता से रहित एक राक्षस थे।" और दूसरा, "तो! अब आपके चापलूस प्रशंसक कहां हैं? अब आपके पास देने के लिए कुछ भी नहीं है, कमीने! अब, आप बुराई भी नहीं कर सकते और आप अपने दासों के गुलाम बनकर रह गए हैं। यह देवताओं का न्याय है आने में धीमा है, लेकिन यह विफल नहीं होता है।"

इन कठोर बयानों पर, नाबोफराजेम गुस्से और हताशा में अपने बाल खींचते हुए खुद को जमीन पर गिरा देता है। परन्तु कैरोन ने दासों से कहा, "उसे उसकी जंजीर से खींच लो; उसे उसकी इच्छा के विरुद्ध स्थापित करो। उसे अपनी शर्म को छुपाकर खुद को सांत्वना नहीं देनी चाहिए। स्टाइक्स नदी की सभी छायाओं को उसे देखना चाहिए ताकि वे देवताओं के न्याय को पहचान सकें, जिन्होंने पृथ्वी पर इस अधर्मी व्यक्ति के शासन को बहुत लंबे समय तक सहन किया।

इसके तुरंत बाद, टेलीमेकस ने पास में डार्क टार्टरस को देखा, जो काला, भारी धुआं छोड़ रहा था; अगर इसकी जहरीली गंध जीवित लोगों के क्षेत्र में फैल जाए

तो मौत का कारण बन सकती है। यह धुआं आग की नदी, ज्वाला के भँवर को घेर लेता है, जिसकी गर्जना पानी की सबसे शक्तिशाली धाराओं की तरह होती है जब वे सबसे ऊंची चट्टानों से सबसे गहरी खाई में गिरती हैं। यह इतना तेज़ है कि उस अंधेरे में किसी को कुछ भी सुनाई नहीं देता। टेलीमेकस, जो मिनर्वा से गुप्त रूप से प्रभावित है, निडर होकर खाई में प्रवेश करता है।

सबसे पहले, वह बड़ी संख्या में ऐसे व्यक्तियों को देखता है जो सबसे दयनीय परिस्थितियों में रहते थे। अब उन्हें धोखाधड़ी, विश्वासघात और क्रूरता के माध्यम से धन प्राप्त करने के लिए दंडित किया जा रहा है। वह कई अधर्मी पाखंडियों को भी देखता है, जो धर्म से प्रेम करने का दिखावा करते हुए, इसे अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने और निर्दोष लोगों को धोखा देने के बहाने के रूप में इस्तेमाल करते हैं।

उन्होंने देवताओं के सबसे बड़े उपहार, सद्गुण का भी दुरुपयोग किया और सभी मनुष्यों में सबसे विकृत होने के कारण उन्हें दंडित किया जा रहा है। बच्चे जिन्होंने अपने माता-पिता की हत्या की, पत्नियाँ जिन्होंने अपने हाथ अपने पतियों के खून से रंगे, गद्दार जिन्होंने सभी शपथों का उल्लंघन किया और अपने देश को बेच दिया - ये सभी उन पाखंडियों की तुलना में कम सजा भुगत रहे हैं।

नरक के तीन न्यायाधीशों ने ऐसा करने का आदेश दिया क्योंकि पाखंडी लोग अन्य अधर्मी व्यक्तियों की तरह बुरा बनकर संतुष्ट नहीं होते, बल्कि अच्छे व्यक्ति के रूप में जाने जाना चाहते हैं।

अपने झूठे गुणों के कारण वे लोगों को सच्चाई पर विश्वास करना बंद कर देते हैं। इन व्यक्तियों द्वारा उपहास और तिरस्कृत होने के बाद, देवता अब ऐसे अपमान का बदला लेने के लिए अपनी शक्ति में सब कुछ करने में प्रसन्न होते हैं। पाखंडियों के बाद, अन्य व्यक्ति प्रकट होते हैं, जो स्वयं को निर्दोष बताते हैं, लेकिन देवता उन्हें बेरहमी से सताते हैं।

ये कृतघ्न, झूठे और चापलूस हैं, जो बुराई की पूजा करते हैं; विकृत आलोचक जो शुद्धतम सद्गुणों को धूमिल करने का प्रयास करते हैं। अंततः, ऐसे लोग भी होते हैं जो पूरी कहानी जाने बिना जल्दबाजी में निर्णय लेते हैं, जिससे निर्दोष लोगों की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचता है। तीन न्यायाधीशों को बैठे और एक निश्चित व्यक्ति को सजा सुनाते हुए देखकर, टेलीमेकस ने अवसर पाकर उनसे पूछा कि उसका अपराध क्या था।

आरोपी व्यक्ति तुरंत चिल्लाता है, "मैंने कभी कुछ बुरा नहीं किया। मुझे हमेशा अच्छा करने में बहुत आनंद आता था। मैं उदार, उदार, न्यायप्रिय और दयालु था। आप मुझ पर क्या आरोप लगा रहे हैं?" तब मिनोस23 ने उस से कहा, मनुष्यों के विषय में तुझ पर कोई दोष नहीं लगाया जा रहा है; फिर भी, क्या तू देवताओं से कम उनके ऋणी नहीं है? यह कैसा न्याय है जिस पर तू घमण्ड करता है? मेरा कोई भी कर्तव्य, जो कुछ भी नहीं है।

आप निश्चित रूप से एक पुण्य आत्मा थे, लेकिन आपने अपने सभी गुणों का श्रेय स्वयं को दिया, न कि उन देवताओं को जिन्होंने उन्हें आपको दिया; इसके बजाय, आप अपने पुण्य का फल भोगना चाहते थे: आप स्वयं अपने भगवान थे। हालाँकि, देवता, जिन्होंने सब कुछ केवल अपने लिए बनाया है, अपने अधिकारों का त्याग नहीं कर सकते। तुम उन्हें भूल गये; इस प्रकार, वे तुम्हें भूल गये। उन्होंने अपने आप को तुम्हारे हाथ में सौंप दिया, क्योंकि तुम ने उन से बढ़कर अपने आप का होना अधिक पसन्द किया। अब, यदि आप कर सकते हैं, तो अपने दिल में सांत्वना तलाशें।

अब और हमेशा के लिए आप उन लोगों से अलग हो जायेंगे जिन्हें आप खुश करना चाहते थे; आप अपने आप से, अपने सच्चे आदर्श से बचे हैं। जान लें कि देवताओं के प्रति सम्मान और प्रेम के बिना कोई सच्चा गुण नहीं है, क्योंकि देवता हर चीज के हकदार हैं। तुम्हारे झूठे गुण, जिन्होंने इतने वर्षों तक निर्दोष लोगों को धोखा दिया है, उजागर हो जायेंगे। मनुष्य पाप और पुण्य का मूल्यांकन केवल इस आधार पर करते हैं कि उन्हें क्या प्रसन्न करेगा या क्या असुविधा करेगा - वे अच्छे और बुरे दोनों के प्रति अंधे हैं।

यहां, एक दिव्य प्रकाश उनके कृत्रिम निर्णयों को नष्ट कर देता है, जो अक्सर उनकी प्रशंसा को ग्रहण कर लेते हैं और उनकी निंदा को उचित ठहरा देते हैं। इन शब्दों पर, दार्शनिक, मानो बिजली की चपेट में आ गया हो, मुश्किल से खुद को रोक सका। पहले उसे अपने संयम, साहस और उदार प्रवृत्तियों पर विचार करने में जो संतुष्टि मिलती थी, वह निराशा में बदल जाती है।

अपने हृदय को देवताओं का शत्रु मानना उसके लिए कष्टकारी हो जाता है। वह स्वयं को वैसे ही देखता है जैसे वह वास्तव में है और इससे बच नहीं सकता। वह उन लोगों के फैसले की निरर्थकता देखता है जिनकी वह अपने सभी कार्यों में चापलूसी करना चाहता था। उसके भीतर एक आमूल-चूल परिवर्तन हो रहा है, मानो उसके सारे भीतर उलट-पलट हो रहे हों। वह अब पहले जैसा नहीं रहा. उसे अब अपने दिल में समर्थन नहीं मिलता।

उसकी अंतरात्मा, जिसका निर्णय पहले उसके बहुत अनुकूल था, अब उसके विरुद्ध हो गई है, और उसके सभी गुणों की मूर्खता और भ्रम के लिए उसकी कटु निंदा कर रही है, जिनका शुरू से ही भगवान की पूजा करने का इरादा नहीं था। वह भ्रमित और निराश है, शर्म, पश्चाताप और हताशा से भरा हुआ है। क्रोध उसे पीड़ा नहीं पहुँचाता, क्योंकि यह उसके हाथों में सौंप देने के लिए पर्याप्त है ताकि उसका अपना हृदय क्रोधित देवताओं से पर्याप्त रूप से बदला ले सके।

वह अंधेरे की तलाश करता है जिसमें वह छिप सके, लेकिन उसे ढूंढ नहीं पाता, क्योंकि एक निरंतर प्रकाश हर जगह उसका पीछा करता है। हर जगह, उसकी सत्य की मर्मज्ञ किरणें उस सत्य का बदला लेती हैं जिसका अनुसरण करने में उसने उपेक्षा की थी। जो कुछ भी वह पहले प्यार करता था वह उसके लिए घृणित हो गया है क्योंकि यह उसकी अंतहीन बुराइयों का स्रोत है।

वह मन ही मन बुदबुदाया, "मूर्ख! तू न तो देवताओं को जानता था, न अपने साथियों को, न स्वयं को! नहीं, तूने कभी सच्चा और केवल अच्छाई से प्रेम नहीं किया। तेरे सारे कदम गुमराह थे; तेरी बुद्धि केवल पागलपन थी; तेरा सद्गुण इससे अधिक कुछ नहीं था अधर्म और अंध अभिमान से बढ़कर - आख़िर आप ही अपने आदर्श थे!" टेलीमेकस ने आगे कुछ राजाओं पर भी नज़र डाली जिन्हें अपनी शक्ति का दुरुपयोग करने के लिए दोषी ठहराया गया था।

एक ओर, क्रोध का बदला लेना उन्हें उनके बुराइयों की राक्षसीता को प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण दिखाता है। वह उनके घोर अहंकार और मूर्खतापूर्ण प्रशंसा के लालच को नोटिस किए बिना नहीं रह सकता; उन लोगों के प्रति उसकी क्रूरता जिन्हें उसे खुश करना चाहिए था; सदाचार के प्रति उनकी असंवेदनशीलता; सच्चाई के प्रति उनका डर; कायरों और चाटुकारों की ओर उसका झुकाव; उनकी जिम्मेदारी की कमी;

उनका आलस्य, प्रमाद और असीम अविश्वास; अपने लोगों की कीमत और बर्बादी पर उनका दिखावा और उनकी अत्यधिक विलासिता; अपनी प्रजा के खून की कीमत पर व्यर्थ गौरव पाने की उनकी महत्वाकांक्षा; अंततः, हर दिन नए सुख की तलाश कर रहे ऐसे अभागे लोगों के आंसुओं और निराशा में उनकी क्रूरता झलकती है।

ये राजायें सदैव अपने को उस दर्पण में देखते रहते हैं। वे देखते हैं कि वे बेलेरोफ़ोन द्वारा पराजित चिमेरा, हरक्यूलिस द्वारा मारे गए लर्न के हाइड्रा या सेर्बेरस द्वारा अपने तीन मुंहों से उगले गए काले और जहरीले खून से भी अधिक राक्षसी और भयावह थे, जिसने पृथ्वी पर रहने वाली सभी नश्वर जातियों को

दूषित कर दिया था। दूसरी ओर और उसी समय, एक अन्य रोष उन सभी प्रशंसाओं को तिरस्कारपूर्वक दोहराता है जो चापलूसों ने उनके जीवनकाल के दौरान राजाओं पर बरसाई थीं, जबकि उन्हें एक और दर्पण दिखाया जिसमें वे देखते हैं कि ऐसे चापलूस वास्तव में उन्हें कैसे देखते हैं।

दोनों चित्रों के बीच का विरोधाभास उनके घमंड को दर्शाता है। उनका मानना है कि इनमें से सबसे बुरे राजा वे हैं जिन्हें अपने जीवनकाल के दौरान सबसे शानदार प्रशंसा मिली, क्योंकि बुरे राजा अच्छे राजाओं की तुलना में अधिक भयभीत होते हैं और बेशर्मी से अपने समय के कवियों और वक्ताओं की झूठी प्रशंसा की तलाश में रहते हैं। अँधेरे की गहराई में, जहाँ उन्हें केवल अपमान और उपहास ही सहना पड़ता है, वे पीड़ित की करुण पुकार सुनते हैं। उनके आस-पास की हर चीज़ उन्हें विकर्षित करती है, उन्हें भ्रमित करती है और उनके साथ संघर्ष करती है:

अपने जीवनकाल के दौरान वह अपने बारे में जो मानता था, उसके बिल्कुल विपरीत, उसने दूसरों को धोखा दिया और यह विश्वास किया कि सब कुछ उसकी सेवा के लिए बनाया गया था। टार्टरस में, उन्हें कुछ दासों की मनमानी इच्छा के अधीन कर दिया गया, जो अब उन्हें सबसे क्रूर दासता के अधीन कर रहे हैं।

वे इन उत्पीड़कों की सेवा करते हैं, बिना किसी आशा के कि एक दिन वे उनकी कैद से मुक्त हो जायेंगे। वे इन दासों के प्रहार के अधीन रहते हैं - जो उनके निर्दयी उत्पीड़क बन गए हैं - साइक्लोप्स के हथौड़ों के नीचे निहाई की तरह, जब वल्कन उन्हें माउंट एटना की ज्वलंत भट्टियों में काम करने के लिए मजबूर करता है। वहाँ, टेलीमेकस को एक पीला, घृणित और निराश भूत दिखाई देता है। एक गहरी उदासी उन अपराधियों को खा जाती है।

वे खुद से डरते हैं, लेकिन अपने स्वभाव के कारण खुद को इस डर से मुक्त नहीं कर पाते हैं। उन्हें अपनी ग़लतियों के लिए उन सज़ाओं के अलावा और कोई सज़ा नहीं चाहिए जो अब वे लगातार अपने सामने भयानक भूतों के रूप में देखते हैं जो उनका पीछा कर रही हैं। खुद को उत्पीड़न से मुक्त करने के प्रयास में, वे उस मौत से भी अधिक शक्तिशाली मौत की तलाश करते हैं जो उन्हें उनके शरीर से अलग कर दे।

अपनी हताशा में, वे ऐसी मृत्यु का आह्वान करते हैं जो उनकी चेतना को पूरी तरह से नष्ट कर सकती है। वे रसातल से उन्हें निगलने के लिए कहते हैं ताकि वे

सत्य की उन तामसिक किरणों से बच सकें जो उन्हें पीड़ा देती हैं; हालाँकि, वे अभी भी प्रतिशोध से अभिशप्त हैं जो बूंद-बूंद करके उन पर गिरता रहता है।

जो सत्य उन्हें देखना पसन्द नहीं था वही उनका दण्ड है; वे देखते हैं कि यह अब उनके खिलाफ खड़ा है, उन्हें घायल कर रहा है, उन्हें नष्ट कर रहा है, उन्हें खुद से अलग कर रहा है, उन्हें बाहरी रूप से नष्ट नहीं कर रहा है बल्कि उनके सबसे गहरे अस्तित्व में प्रवेश कर रहा है।

टेलीमेकस उन प्राणियों में से एक है जो उसके रोंगटे खड़े कर देता है, क्योंकि वह देखता है कि लिडिया के कई प्राचीन राजाओं को सेवा के बजाय निष्क्रिय जीवन के सुख को प्राथमिकता देने के लिए दंडित किया गया था। उन्हें अपने लोगों की राहत के लिए काम करना चाहिए था, जो शाही कर्तव्य से अविभाज्य है। ये राजा अपने अन्धेपन के लिये एक दूसरे को धिक्कार रहे हैं। उसने दूसरे से, जो उसका पुत्र था, कहा, "क्या मैंने तुम्हें बुढ़ापे में और अपनी मृत्यु से पहले बार-बार सलाह नहीं दी थी, कि तुम्हें मेरी लापरवाही के कारण हुई बुराई का प्रायश्चित करना चाहिए?"

"आह! मनहूस पिता!" उसका बेटा कहता है, "वह आप ही थे जिसने मुझे बर्बाद कर दिया! यह आपका उदाहरण था जिसने मुझे आडंबर, घमंड और विलासिता, दूसरों के प्रति क्रूरता की ओर ले गया! आपको इतनी लापरवाही से शासन करते हुए और बेशर्म चापलूसों से घिरा हुआ देखकर, मैं खुद चापलूसी का आदी हो गया और आनंद, मेरा मानना था कि दूसरे लोग राजाओं के लिए वैसे ही हैं जैसे घोड़े और बोझ ढोने वाले जानवर इंसानों के लिए हैं, यानी वे तभी उपयोगी हैं जब तक वे सेवा और सुविधाएं प्रदान कर सकें;

मैंने इस पर विश्वास किया और यह आप ही थे जिसने मुझे यह विश्वास दिलाया। अब मैं आपके पीछे चलने के कारण इन सभी बुराइयों को सहन कर रहा हूं।" इन पारस्परिक आरोपों में वे तीव्रतम निंदा जोड़ते हैं और क्रोध में एक-दूसरे को टुकड़े-टुकड़े करने के लिए तैयार दिखते हैं।

रात के शिकार के पक्षियों की तरह, क्रूर संदेह राजाओं को घेर लेते हैं, निराश हो जाते हैं भय, वह अविश्वास जो अपनी प्रजा पर उनके द्वारा थोपी गई क्रूरता का बदला लेता है, धन की अतृप्त भूख, निरंकुश मिथ्या अभिमान और उनका अभिशप्त आलस्य, उन सभी बुराइयों को दोगुना कर देता है जिन्हें वे संभवतः सहन कर सकते थे और उसे कोई निश्चित सुख प्रदान करने में असमर्थ थे। .

इनमें से कई राजाओं को उनके द्वारा किए गए बुरे काम के लिए नहीं, बल्कि उस अच्छे काम को करने में उनकी लापरवाही के लिए कड़ी सजा दी जा रही है जो वे कर सकते थे और जो उन्हें करना चाहिए था। कानूनों के पालन में लापरवाही के कारण उनके लोगों द्वारा किए गए सभी अपराधों का आरोप राजाओं पर लगाया गया है, जिन्हें केवल यह सुनिश्चित करने के लिए शासन करना चाहिए था कि उनके शासन के तहत इन कानूनों का पालन किया जाता है।

इसके अलावा, उन पर आडंबर, विलासिता और अन्य ज्यादतियों से पैदा होने वाली सारी अव्यवस्थाएं भी थोप दी जाती हैं जो लोगों को हिंसा की ओर ले जाती हैं, चीजें पाने के लिए कानून तोड़ने के लिए उकसाती हैं। जिन लोगों के साथ सबसे अधिक कठोर व्यवहार किया जा रहा है, वे वे हैं, जो अपने लोगों के अच्छे और सतर्क चरवाहे होने के बजाय, केवल अतृप्त भेड़ियों की तरह अपने झुंड को निगलने की परवाह करते हैं।

टेलीमेकस को जो बात दुःखी करती है वह यह है कि अंधेरे और बुराई की उस खाई में बहुत सारे राजा हैं जो बहुत अच्छे शासकों के रूप में पृथ्वी से गुजरे हैं, लेकिन खुद को दुष्ट और पाखंडी व्यक्तियों द्वारा निर्देशित होने की अनुमति देने के लिए उन्हें टार्टरस भेज दिया गया है। सज़ा की निंदा की गई है. यह सज़ा उन बुराइयों के अनुरूप है जिन्हें उन्होंने अपने अधिकार के नाम पर करने की अनुमति दी थी। इसके अलावा, इनमें से अधिकांश राजा न तो अच्छे थे और न ही बुरे - यही उनकी कमजोरी थी।

उन्हें कभी भी सच्चाई न जानने का डर नहीं हुआ, और इस प्रकार उन्होंने कभी भी सद्गुणों का आनंद नहीं लिया और न ही अच्छाई का अभ्यास करने का आनंद महसूस किया। नरक की रूपरेखा नरक के बारे में धर्मशास्त्रियों के दृष्टिकोण को निम्नलिखित उद्धरणों में संक्षेपित किया जा सकता है। यह विवरण पवित्र लेखकों और संतों के जीवन से लिया गया है, और इसे इस मामले पर रूढ़िवादी विश्वास की सबसे अच्छी अभिव्यक्ति माना जा सकता है क्योंकि यह हर समय दोहराया जाता है और प्रचारकों के उपदेशों और देहाती शिक्षाओं में कुछ बदलावों के साथ।

"राक्षस केवल आत्माएं हैं, और जो लोग अब नरक में हैं उन्हें भी केवल आत्मा ही माना जा सकता है, क्योंकि केवल आत्मा ही शरीर के अवशेषों को घास, पौधों, खनिजों और तरल पदार्थों में बदलने के लिए पृथ्वी पर उस स्थान पर उतरती है। वापस दे दी जाती है, जो अनजाने में पदार्थ के निरंतर परिवर्तनों से गुजरते हैं, संतों की तरह, निंदा करने वालों को अंतिम न्याय के दिन उसी शरीर के साथ

जीवन में लौटना चाहिए जिसमें वे जीवन के दौरान जाने जाते थे, उन्हें फिर कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

उनकी विशेषता यह होगी कि चुने हुए लोग शुद्ध और उज्ज्वल शरीर में जीवन में लौट आएंगे, जबकि दोषी पाप से विकृत शरीर धारण करेंगे; इस प्रकार, अब नरक में शुद्ध आत्माएँ नहीं होंगी, बल्कि हमारे जैसे लोग होंगे। नतीजतन, नरक एक भौतिक, भौगोलिक और भौतिक स्थान है, क्योंकि यह स्थलीय प्राणियों से आबाद होगा जिनके पैर, हाथ, मुंह, जीभ, दांत, कान और आंखें हमारी तरह होंगी, इसके अलावा उनकी नसों में खून होगा और नसें जो महसूस होती हैं. . "यह आख़िर कहाँ हो सकता है?

चर्च के कुछ डॉक्टरों ने इसे हमारे ग्लोब के बिल्कुल अंदरूनी हिस्से में पाया है; अन्य किसी अज्ञात ग्रह पर। लेकिन इस समस्या का समाधान कभी भी किसी चर्च परिषद द्वारा नहीं किया गया। इसलिए, हम इस मामले पर शुद्ध अटकलों तक ही सीमित हैं। केवल एक चीज जिसकी हम पुष्टि कर सकते हैं वह यह है कि यह नरक - चाहे वह कहीं भी हो - भौतिक तत्वों से बना एक संसार है, लेकिन इसमें कोई सूर्य, तारे या चंद्रमा नहीं है; इस दुनिया के सबसे उजाड़ क्षेत्रों से भी अधिक निंदनीय और अमानवीय, जीवन के किसी भी अंकुर और अच्छाई की उपस्थिति से रहित, जिस पर हम पाप करते हैं।

"सबसे विवेकशील धर्मशास्त्री उस निवास की भयावहता का वर्णन करने की हिम्मत नहीं करते हैं जिस तरह से मिस्रियों, हिंदुओं और यूनानियों ने किया है, लेकिन वे इसे धर्मग्रंथों में दिए गए कुछ विवरणों के अनुसार चित्रित करने तक ही सीमित हैं, जो इसे इस प्रकार चित्रित करते हैं: सर्वनाश की आग; यशायाह के कीड़े, जो टोफेट के शवों को खाते हैं और मनुष्य रोते हैं और अपने दांत पीसते हैं, जैसा कि इंजीलवादी व्यक्त करते हैं।

"संट ऑगस्टीन इस बात से सहमत नहीं हैं कि ये शारीरिक पीड़ाएँ केवल मानसिक पीड़ाओं का प्रतिबिंब हैं। वह एक वास्तविक गंधक झील को देखता है जिसमें असली कीड़े और असली साँप निंदा करने वाले के शरीर के सभी हिस्सों पर हमला करते हैं और अपने डंक को आग में भेज देते हैं। उद्धृत करते हुए संट मार्क की एक कविता में उनका दावा है कि हालांकि यह अजीब आग हमारी तरह ही भौतिक है और भौतिक शरीरों पर काम करती है, फिर भी यह उन्हें उसी तरह सुरक्षित रखती है जैसे नमक पीड़ितों के शरीर को सुरक्षित रखता है।

दोषी व्यक्ति उस आग की पीड़ा को महसूस करेगा जो नष्ट किए बिना जलती है; यह उनकी त्वचा में प्रवेश करेगा, यह उनके शरीर के सभी अंगों, उनकी हड्डियों

की मज्जा, उनकी आंखों की पुतलियों, उनके अस्तित्व के सबसे सूक्ष्म और संवेदनशील तंतुओं को भेदेगा और भिगो देगा। यदि वे स्वयं को ज्वालामुखी के गड्ढे में डुबा सकें, तो यह एक शांतिपूर्ण और आरामदायक जगह प्रतीत होगी।

"इस प्रकार सबसे डरपोक, विवेकशील और विनम्र धर्मशास्त्री पूरे आत्मविश्वास के साथ बोलते हैं। वे इस बात से इनकार नहीं करते हैं कि नरक में अन्य शारीरिक दंड भी हो सकते हैं, लेकिन वे कहते हैं कि इसकी पुष्टि करने के लिए उनके पास पर्याप्त ज्ञान का अभाव है। कम से कम जहां तक बात है तो ऐसा है आग और कीड़ों की भयानक सजा की चिंता है, हालांकि, अधिक साहसी या अधिक प्रबुद्ध धर्मशास्त्री हैं जो नरक का सबसे विस्तृत, विविध और पूर्ण विवरण प्रदान करते हैं और भले ही वे यह नहीं जानते हों कि यह नरक कहाँ स्थित है ऐसे संत हैं जो इसे देखने का दावा करते हैं।

वे ऑर्फियस की तरह हाथों में वीणा लेकर या यूलिसिस की तरह तलवार लेकर वहां नहीं गए थे, बल्कि वे आत्मा में वहां आए थे। सेंट टेरेसा इसी समूह से संबंधित हैं। "इस संत की रिपोर्ट के अनुसार, नरक में एक शहर है - कम से कम उसने एक लंबी, संकरी सड़क देखी, जो पुराने शहरों में बहुतायत में है - और वह डरी हुई, गंदी, राक्षसी सरीसृपों से ढकी हुई, उस पर कदम रखते हुए नीचे चली गई बदबूदार ज़मीन.

हालाँकि, चलते-चलते उसे सड़क के पार एक दीवार ने रोक दिया। इस दीवार में एक जगह थी जहाँ उसने खुद को आश्रय दिया था, लेकिन उसने यह नहीं बताया कि उसने ऐसा कैसे किया। उन्होंने कहा कि अगर उन्होंने अपने जीवनकाल के दौरान अविला में अपने कक्ष में भगवान द्वारा दी गई कृपा का दुरुपयोग किया तो यह उनके लिए जगह थी। असाधारण आसानी से इस पत्थर की जगह में प्रवेश करने के बावजूद, वह बैठने, लेटने या खड़े होने में असमर्थ थी; और वह बाहर भी नहीं जा पा रही थी.

उसकी भयानक दीवारें उसे घेरने लगीं, उसे घेरने लगीं और उस पर दबाव डालने लगीं, मानो वे अपनी शक्ति से उस पर दबाव डाल रही हों। उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे वे उसका दम घोंट रहे थे और उसका गला घोंट रहे थे, साथ ही उसकी खाल खींच रहे थे और उसे टुकड़ों में काट रहे थे। उसने खुद को जलता हुआ महसूस किया और एक ही समय में हर तरह के दर्द का अनुभव किया।

"बचाव की कोई उम्मीद नहीं होने के कारण, उसके चारों ओर केवल अंधेरा था, और फिर भी, उस अंधेरे से परे, वह उस घिनौनी सड़क को देखकर आश्चर्यचकित थी जिसमें उसने खुद को पाया था, साथ ही उसके गंदे परिवेश को भी - एक ऐसा

दृश्य जो असहनीय था उसे अपनी जेल की सीमा के रूप में। “यह निस्संदेह नरक के एक छोटे से कोने से अधिक कुछ नहीं था।

अन्य आत्मा भटकने वाले अधिक भाग्यशाली रहे हैं, क्योंकि उन्होंने नरक में महान शहरों को विशाल अंगारों की तरह जलते हुए देखा है: बेबीलोन और नीनवे - यहां तक कि रोम - जिनके महल और मंदिर जल रहे थे और उनके निवासी जंजीरों में बंधे थे; व्यापारी अपने काउंटरों पर, पुजारी अपनी वेश्याओं के साथ उत्सव कक्षों में, कुर्सियों से बंधे चिल्ला रहे थे जिससे वे खुद को मुक्त नहीं कर सकते थे, और अपने सूखे होठों पर जलते हुए कप उठा रहे थे; नौकर राजकुमारों की ओर हाथ फैलाए उबलते पानी की धारा में घुटने टेक रहे थे, जिनके हाथों से पिघले हुए सोने की लावा धारा बह रही थी।

दूसरों ने नरक में भूखे किसानों द्वारा जुते हुए अंतहीन खेत देखे हैं। ये खेत उनके पसीने से सुलगते हैं, और क्योंकि जो बीज वे बोते हैं वे बंजर होते हैं, वे कुछ भी नहीं काटते और इस प्रकार एक दूसरे को खाते हैं। बाद में, पहले की तरह बड़ी संख्या में और अभी भी भूत जैसे और भूखे, वे एक खुशहाल भूमि की निरर्थक खोज में क्षितिज की ओर समूहों में निकल पड़े, और उनके परित्यक्त खेतों पर निंदा की गई आत्माओं की अन्य भटकती कॉलोनियों ने तुरंत कब्जा कर लिया। से भरा हुआ है।

फिर भी कुछ लोगों ने नरक को टूटे-फूटे पहाड़ों, कराहते जंगलों, सूखे कुओं, आंसुओं से भरे फव्वारों, खून की धाराओं, बर्फीले रेगिस्तानों में बर्फीले तूफ़ान, या अंतहीन महासागरों में नौकायन करने वाले हताश लोगों द्वारा संचालित नावों के रूप में देखा है। दूसरे शब्दों में, उन्होंने वह सब कुछ देखा जो बुतपरस्तों ने देखा: पृथ्वी का एक अंधेरा प्रतिबिंब, उसके कष्टों का अत्यधिक अतिरंजित प्रक्षेपण, उससे जुड़े प्राकृतिक कष्टों का स्थायीकरण; यहां तक कि कालकोठरियां, मचान और यातना के उपकरण भी अपने ही हाथों से बनाए गए।

“ऐसे राक्षस भी हैं जो अपने शरीर को बेहतर दर्द देने के लिए इंसानों का रूप धारण करते हैं। कुछ के पास चमगादड़ के पंख, सींग, पपड़ीदार त्वचा, पंजे और नुकीले दांतों वाले खुर हैं, जो खुद को तलवारों, फावड़ियों, चिमटे, जलती हुई कैंची, आरी, ग्रिल, डंडों और धौंकनी से लैस दिखाते हैं - सब कुछ बहुत गर्म है - इसके अलावा अनंत काल तक कोई अन्य कार्य नहीं करते हैं कसाई और मानव मांस पकाना।

अन्य राक्षस, शेर या विशाल वाइपर में परिवर्तित होकर, अपने पीड़ितों को एकांत गुफाओं में ले जाते हैं; कुछ दोषी आत्माओं की आंखें निकालने के लिए

कुछ लोग खुद को कौवे में बदल लेते हैं; फिर भी अन्य लोग अपने भयभीत, चीखते और खून से लथपथ पीड़ितों को अपनी पीठ पर अंधेरी जगहों पर ले जाते हैं और उन्हें गंधक की झीलों में फेंक देते हैं। टिड्डियों और विशाल बिच्छुओं के बादल हैं, जिन्हें देखने से मतली और ठंड लगती है और जिनके संपर्क से ऐंठन होती है।

कई सिरों वाले राक्षस ज़ोर से गला फाड़ते हैं और अपने विकृत सिरों को सुशोभित करने वाले सर्पाकार जटाओं को हिलाते हैं, क्योंकि वे निंदा करने वालों को खूनी जबड़ों से कुचलते हैं और फिर उन्हें चबा जाते हैं, लेकिन वे जीवित हैं - क्योंकि वे अमर हैं। "ये अवतरित राक्षस, जो ग्राफिक रूप से एमेंटी और टार्टरस के देवताओं की याद दिलाते हैं, साथ ही फोनीशियन, मोआबाइट्स और यहूदिया के अन्य पड़ोसी लोगों द्वारा पूजी जाने वाली मूर्तियों की भी याद दिलाते हैं, हालांकि, संयोग से कार्य नहीं करते हैं - सभी का अपना काम है और उद्देश्य।

नरक में वे जो बुराई करते हैं, वह उसी बुराई से संबंधित है जिसे उन्होंने पहले प्रेरित किया था और पृथ्वी पर फैलाया था। ईशनिंदा करने वालों को उनके सभी अंगों और इंद्रियों से दंडित किया जाता है क्योंकि उन्होंने अपने सभी अंगों और इंद्रियों से ईश्वर को अस्वीकार कर दिया है। नाराज़। लोलुपता के अपराधियों को लोलुपता के राक्षसों द्वारा दंडित किया जाता है, आलसी को आलस्य के राक्षसों द्वारा, व्यभिचारियों को व्यभिचार के राक्षसों द्वारा, और इसी तरह, पापों के समान विविधता में दंडित किया जाता है।

जलने पर इन्हें ठंड लगती है और जमने पर गर्मी लगती है। वे एक ही समय में आराम और गति चाहते हैं; वे हमेशा प्यासे और भूखे रहेंगे, दिन के अंत में वे गुलामों की तुलना में हजारों गुना अधिक थके होंगे, मरने वालों की तुलना में अधिक बीमार होंगे, शहीदों की तुलना में कमजोर और अधिक अल्सरग्रस्त होंगे - हमेशा के लिए।

"कोई भी दानव अपने भयानक कार्य को करने से इनकार नहीं करता है या कभी भी इनकार नहीं करेगा। इस अर्थ में, वे सभी प्रतिशोध के आदेशों को पूरा करने में अच्छी तरह से अनुशासित और वफादार हैं। इसके बिना, नरक क्या होगा? यदि उनके अपराधी झगड़ा करते समय आराम करेंगे या थक जाओ। हालाँकि, उनके बीच न तो शांति है और न ही झगड़ा, क्योंकि चाहे वे कितने भी दुष्ट और असंख्य क्यों न हों, राक्षस रसातल के एक छोर से दूसरे छोर तक एक-दूसरे का पीछा करते हैं।

सांसारिक क्षेत्र में किसी ने भी अपने राजकुमारों के प्रति अधिक आज्ञाकारी प्रजा का संगठन, अपने कमांडरों के प्रति अधिक आज्ञाकारी सेना, या अपने वरिष्ठों के प्रति अधिक विनम्रतापूर्वक आज्ञाकारी मठवासी समुदाय को नहीं देखा है।27 "राक्षसी भीड़ के बारे में लगभग कुछ भी ज्ञात नहीं है ये घृणित आत्माएँ हैं जो पिशाच, टोड, बिच्छू, कौवे, हाइड्रा, सैलामैंडर और अन्य अनाम जानवरों की सेना बनाती हैं जो उन नारकीय क्षेत्रों के जीव-जंतु बनाते हैं।

हालाँकि, ऐसी सेनाओं की कमान संभालने वाले कई राजकुमारों के नाम ज्ञात हैं, जिनमें धन का दानव बेलफेगोर भी शामिल है; एबडॉन या अपुल्लयोन, हत्या का; बील्ज़ेबब, अशुद्ध इच्छाओं का दानव या मक्खियों का स्वामी, जो भ्रष्टाचार को जन्म देता है; मैमन, लालच का. मोलोच, बेलियल, बाल-गाद, एशटेरोथ और कई अन्य हैं, सर्वोच्च प्रमुख, उदास महादूत का उल्लेख नहीं है, जिसे स्वर्ग में लूसिफ़ेर और नरक में शैतान कहा जाता है।

"इस प्रकार, हमने नरक के बारे में हमें दिए गए विचार को उसके भौतिक स्वरूप और वहां भुगतने वाले शारीरिक दंडों के दृष्टिकोण से संक्षेप में प्रस्तुत किया है। चर्च फादरों और प्राचीन डॉक्टरों के लेखन की जांच करें; पवित्र किंवदंतियों पर सवाल उठाएं; हमारे चर्च निरीक्षण करें मूर्तियाँ और ललाट के टुकड़े; मंच से जो कहा गया है उस पर ध्यान दें, और आप और भी अधिक सीखेंगे।" लेखक निम्नलिखित प्रतिबिंबों को इस चित्र के साथ जोड़ता है।

हर कोई उनके दायरे को समझेगा: "शरीर का पुनरुत्थान अपने आप में एक चमत्कार है, लेकिन भगवान मृत शरीर को पुनर्स्थापित करने के लिए दूसरा चमत्कार करते हैं - जिसका उपयोग पहले ही जीवन के अस्थायी परीक्षणों के लिए किया जा चुका है और पहले ही नष्ट हो चुका है। इसे जीवित रहने की गुणवत्ता देता है जो इसे भट्टी में पिघलने से बचाता है जो धातुओं को वाष्पीकृत भी करता है।

हम इस तथ्य को समझ सकते हैं कि आत्मा स्वयं ही अपना जल्लाद है, ईश्वर उस पर अत्याचार नहीं करता है बल्कि उसे केवल उस दयनीय स्थिति में छोड़ देता है जिसे उसने अपने लिए चुना है, लेकिन एक अपमानित और पीड़ित प्राणी का शाश्वत परित्याग उसकी अच्छाई के साथ असंगत है। निर्माता। की तरह लगता है

हालाँकि, आत्मा और आध्यात्मिक दंड के बारे में जो कहा जा सकता है वह शारीरिक और शारीरिक दंड के बारे में कभी नहीं कहा जा सकता है। शारीरिक दंड को हमेशा के लिए बनाए रखने के लिए, ईश्वर के लिए केवल अपना दिव्य हाथ

हटा लेना ही पर्याप्त नहीं होगा; इसके विपरीत, उसे यह दिखाना होगा, हस्तक्षेप करना होगा और कार्य करना होगा; अन्यथा शरीर नष्ट हो जायेगा।

"इसलिए, धर्मशास्त्रियों का मानना है कि हमारे शरीर के पुनरुत्थान के बाद, भगवान, वास्तव में, दूसरा चमत्कार करता है जिसके बारे में हमने बात की थी। सबसे पहले, वह हमारे पार्थिव शरीरों को उस कब्र से बाहर निकालता है जिसने उन्हें निगल लिया था, वह उन्हें वापस उसी स्थिति में ले आता है जैसा वे थे। उन्हें उम्र, बीमारी और बुराई के कारण हुई उनकी मूल दुर्बलताओं और गिरावट के साथ नीचे गिरा दिया गया था - पुराने, ठंडे, जरूरतमंद। पहला चमत्कार.

इसके बाद, इन दुखी शरीरों में, जो उस मिट्टी में लौटने के लिए तैयार हैं जहां से वे आए थे, भगवान एक संपत्ति डालता है जो उनके पास कभी नहीं थी: अमरता - वही उपहार जो उसने अपने क्रोध में दिया था, या बल्कि, अपनी दया में, छीन लिया था एडम को जब उसने अदन से बाहर निकाला - और यहाँ हमें दूसरा चमत्कार मिलता है।

जब आदम अमर था, वह अजेय था; जब वह अजेय नहीं रहा, तो वह नश्वर बन गया। मृत्यु पीड़ा के माध्यम से निकट आती है। “इसलिए, पुनरुत्थान हमें न तो निर्दोष पुरुषों की शारीरिक स्थिति में लौटाता है और न ही दोषियों की शारीरिक स्थिति में। यह महज़ हमारे पिछले दुखों का पुनरुत्थान है, लेकिन इसमें नए दुखों का अतिरिक्त बोझ भी शामिल है जो असीम रूप से अधिक भयानक हैं।

कुछ मायनों में, यह एक सच्ची रचना है, और सबसे दुर्भावनापूर्ण है जिसकी कल्पना करने का साहस किया गया है। ईश्वर अपना मन बदलता है, और पापियों के आध्यात्मिक कष्टों में हमेशा के लिए रहने वाले शारीरिक कष्टों को जोड़ने के लिए, वह तुरंत, और अपनी शक्ति के प्रभाव से, उन नियमों और गुणों को बदल देता है जो उसने पदार्थ के घटकों से बनाए थे। . इसकी स्थापना शुरुआत में ही कर दी गई थी.

वह कमज़ोर और सड़ते हुए मांस को पुनर्जीवित करता है, उन तत्वों को एक अविनाशी मिलन में विलीन कर देता है, जिन्हें अगर उनके पास छोड़ दिया जाए, तो वे एक-दूसरे से अलग हो जाएंगे, और ऐसा करके, वह प्राकृतिक व्यवस्था के विरुद्ध शरीर के नियम को स्थापित करते हैं। इस सड़ांध को बनाए रखता है और कायम रखता है। वह इस जीवित धूल को आग में डालता है, इसे शुद्ध करने के लिए नहीं बल्कि इसे वैसे ही बनाए रखने के लिए जैसे यह है: संवेदनशील, पीड़ादायक, जलती हुई, भयानक, और जैसा वह चाहता है - अमर।

"इस चमत्कार के माध्यम से, भगवान खुद को नरक के जल्लादों में से एक बनाते हैं, क्योंकि यदि दोषी केवल अपनी आध्यात्मिक बीमारियों को खुद पर थोप सकते हैं, तो वे मुआवजे के रूप में अपनी शारीरिक पीड़ाओं को केवल भगवान पर थोप सकते हैं। जाहिर है, मृत्यु के बाद यह पर्याप्त नहीं है ईश्वर उस आत्मा को दुःख, पछतावे और दर्द में छोड़ दे जो महसूस करती है कि उसने सर्वोच्च अच्छाई खो दी है।

उस रात - धर्मशास्त्रियों के अनुसार - भगवान उन्हें रसातल के नीचे से ढूंढेंगे, क्षण भर के लिए उन्हें जीवन में वापस बुलाएंगे, उन्हें सांत्वना देने के लिए नहीं बल्कि उन्हें एक भयानक, जलते हुए और अविनाशी शरीर के साथ फिर से बनाने के लिए। क्योंकि वह देजानिरा28 के अंगरखे से भी अधिक दागदार है; यह तभी है जब वह उन्हें हमेशा के लिए त्याग दे।

"लेकिन फिर भी वह वास्तव में उन्हें त्यागता नहीं है, क्योंकि नरक, स्वर्ग और पृथ्वी की तरह, उसकी सक्रिय इच्छा के स्थायी कार्य के बिना मौजूद नहीं हो सकता; यदि वह इसे बनाए रखना बंद कर दे तो सब कुछ गायब हो जाएगा। परिणामस्वरूप, भगवान करेंगे आग को बुझने से रोकने और उनके शरीरों को भस्म होने से बचाने के लिए, निंदा करने वालों पर लगातार अपना हाथ रखता रहा, और उन दुर्भाग्यपूर्ण अमरों को चुने हुए लोगों के निर्माण में योगदान देने के लिए उनकी शाश्वत पीड़ा में भेजता रहा।

हमने ठीक ही कहा है कि ईसाई नरक बुतपरस्त नरक से बेहतर है। दरअसल, टार्टरस में हम दोषी लोगों को पश्चाताप से प्रताड़ित होते देखते हैं, और हमेशा अपने पीड़ितों की उपस्थिति में और उनके अपराधों के आलोक में। उनका अपमान उन लोगों द्वारा किया जाता है जिन्हें उन्होंने जीवित रहते हुए नुकसान पहुँचाया था।

हम दोषी व्यक्तियों को उस प्रकाश से भागते हुए देखते हैं जो उन्हें भेदती है और उन आंखों से छिपने की व्यर्थ कोशिश करते हैं जो उनका पीछा करती हैं। उनके गौरव को नीचा दिखाया गया है और अपमानित किया गया है, और सभी अपने अतीत का कलंक ढो रहे हैं; प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वयं के गलत कार्यों के लिए इस हद तक दंडित किया जाता है कि कुछ लोगों के लिए उन्हें उनके हाल पर छोड़ देना ही काफी है, क्योंकि उन्हें आगे दंडित करना बेकार होगा।

हालाँकि, वे परछाइयाँ हैं, यानी तरल शरीर वाली आत्माएँ: उनके सांसारिक जीवन की एक छवि। टार्टरस में, हम न तो उन मनुष्यों को देखते हैं जो शारीरिक रूप से पीड़ित होने के लिए अपने मांस के शरीर के साथ लौटे हैं और न ही उस

आग को देखते हैं जो उनकी त्वचा में प्रवेश करती है, उन्हें उनकी हड्डियों के मज्जा तक भिगोती है; न ही हम ईसाई धर्म के नरक की गहराई में मौजूद यातनाओं की भव्यता और परिष्कार को देखते हैं।

बुतपरस्त नरक में, हमें दृढ़ लेकिन निष्पक्ष न्यायाधीश मिलते हैं जो गलत के लिए सज़ा की डिग्री को समायोजित करते हैं, जबकि शैतान के राज्य में सभी दोषियों को समान यातनाओं में डुबो दिया जाता है। वहां सब कुछ भौतिकवाद पर आधारित है; किसी भी तरह की निष्पक्षता पूरी तरह ख़त्म हो गई है. आजकल, उसी चर्च के बीच, निश्चित रूप से कई समझदार व्यक्ति हैं जो अब ऐसी चीजों को शाब्दिक रूप से नहीं लेते हैं, बल्कि उन्हें सरल रूपकों के रूप में देखते हैं जिनके अर्थों की व्याख्या की आवश्यकता होती है।

फिर भी, ऐसी राय व्यक्तिगत हैं और कोई नियम नहीं हैं; भौतिक नरक और उसके परिणामों में विश्वास अभी भी आस्था का विषय बना हुआ है। हम पूछ सकते हैं कि लोग ऐसी चीज़ें कैसे देख सकते हैं जबकि वे वास्तव में अस्तित्व में ही नहीं हैं। यहां हमारा काम उन आश्चर्यजनक छवियों के स्रोत की व्याख्या करना नहीं है जो कभी-कभी वास्तविकता के सामने आती हैं।

हम केवल यह कहेंगे कि सिद्धांत रूप में हमें यह याद रखना चाहिए कि परमानंद सभी रहस्योद्घाटन के साधनों में सबसे अनिश्चित है, क्योंकि इस तरह की अत्यधिक उत्तेजना की स्थिति हमेशा आत्मा के पूर्ण अलगाव का परिणाम नहीं होती है जैसा कि कोई विश्वास कर सकता है, और हम अक्सर एक होते हैं हमारी जाग्रत अवस्था की व्यस्तताओं का प्रतिबिंब।

वे विचार जो आत्मा को पोषण देते हैं, और जिनका मस्तिष्क - या, बल्कि, मस्तिष्क का संगत परिधीय आवरण - रूप या प्रभाव को बरकरार रखता है, उन्हें वाष्पशील रूपों की मृगतृष्णा में पुन: उत्पन्न और प्रवर्धित किया जाता है जो बढ़ते हैं और अजीब संयोजन बनाने के लिए मिश्रित होते हैं। वहाँ हैं।

सभी संप्रदायों के परमानंदवादियों ने हमेशा ऐसी चीज़ों की तलाश की है जो उनके विश्वास के अनुरूप हों; नतीजतन, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि संट टेरेसा जैसे परमानंदवादी मौखिक और लिखित विवरणों से प्राप्त नारकीय विचारों से भरे हुए थे, और उनके पास ऐसे सपने थे जो वास्तव में ऐसे विचारों के पुनरुत्पादन से ज्यादा कुछ नहीं थे, जो एक दुःस्वप्न का प्रभाव देते थे। . पैदा हुआ था। एक धर्मनिष्ठ बुतपरस्त ने टार्टरस और फ्यूरीज़ को देखा होगा, जैसे उसने हाथ में बिजली के बोल्ट के साथ ओलंपस पर बृहस्पति को देखा होगा।

# शुद्धिकरण

सुसमाचारों में शुद्धिकरण का कोई उल्लेख नहीं है, एक सिद्धांत जिसे चर्च ने 1500 में ही स्वीकार कर लिया था। यह निस्संदेह अधिक तर्कसंगत सिद्धांत है और नरक की तुलना में ईश्वर के न्याय के अधिक अनुरूप है, क्योंकि यह कम गंभीर दंड निर्धारित करता है और प्रायश्चित की अनुमति देता है। कम गंभीर ग़लतियाँ. इस प्रकार शुद्धिकरण का सिद्धांत समानता पर आधारित है, क्योंकि यदि इसकी तुलना मानवीय न्याय से की जाए तो यह आजीवन कारावास की बजाय अस्थायी हिरासत की तरह है।

आख़िरकार, हम उस देश के बारे में क्या सोचेंगे जिसने सभी अपराधों, यहां तक कि साधारण दुष्कर्मों के लिए भी मौत की सज़ा तय की है? शुद्धि के बिना, आत्माओं के लिए केवल दो चरम सीमाएँ हैं: सर्वोच्च आनंद या शाश्वत पीड़ा। हालाँकि, ऐसे सिद्धांत के अनुसार, उन आत्माओं का क्या होता है जो केवल छोटे अपराधों के लिए दोषी हैं? या तो उन्हें पूर्ण किए बिना चुने हुए लोगों की खुशी में हिस्सा लेना होगा, या कोई बुराई किए बिना सबसे बुरे अपराधियों की सजा भुगतनी होगी।

यह न तो उचित होगा और न ही उचित। हालाँकि, यातना-गृह का विचार अनिवार्य रूप से अधूरा था, क्योंकि, केवल अग्नि द्वारा दंड को जानते हुए, यातना-गृह को नरक का एक क्षीण संस्करण माना जाता था। इसलिए, आत्माएं भी यातनागृह में जलती हैं, लेकिन कम तीव्र आग में। और चूंकि प्रगति शाश्वत दंड के सिद्धांत के साथ असंगत है, इसलिए यातनागृह में आत्माओं को खुद को सुधारकर मुक्त नहीं किया जा सकता है, लेकिन केवल उन प्रार्थनाओं से मुक्त किया जा सकता है जो उनके लिए कही जाती हैं या उनके लिए भुगतान की जाती हैं। से कहना चाहिए.

और यदि विचार पहले अच्छा था, तो यह उसके परिणामों पर लागू नहीं होता है; यानी इससे होने वाले दुर्व्यवहार. प्रार्थनाओं के लिए भुगतान ने यातना-गृह को नरक से भी अधिक लाभदायक सोने की खान में बदल दिया।30 3. यातना-गृह का स्थान और वहां दी जाने वाली सजा की प्रकृति कभी निर्धारित नहीं की गई थी। यह जीवन के सांसारिक कष्टों के कारणों को समझाकर इस अंतर को भरने के लिए नए रहस्योद्घाटन के लिए आरक्षित था, जिसके लिए केवल अस्तित्व की बहुलता ही हमें न्याय दिखा सकती है।

इस तरह की पीड़ा आवश्यक रूप से आत्मा की अपूर्णताओं के कारण होती है, क्योंकि, यदि वह पहले से ही परिपूर्ण होती, तो वह न तो कोई गलत काम करती और न ही उसके परिणाम भुगतती। उदाहरण के लिए, जो लोग पृथ्वी पर पूरी तरह से शांत और संयमित हैं, वे अति से उत्पन्न होने वाली दुर्बलताओं से पीड़ित नहीं होंगे।

अधिकांश समय, लोग अपनी ही गलती के कारण दुर्भाग्यशाली होते हैं; हालाँकि, यदि वे अपूर्ण हैं, तो इसका कारण यह होगा कि पृथ्वी पर आने से पहले वे ऐसे ही थे। यहां वे न केवल अपनी वर्तमान गलतियों का प्रायश्चित करते हैं बल्कि उन पिछली गलतियों का भी प्रायश्चित करते हैं जिनका प्रायश्चित वे उस समय नहीं कर पाए थे। एक जीवन में वे उन कठिनाइयों का प्रायश्चित करते हैं जो उन्होंने पिछले जन्मों में दूसरों को झेली थीं।

वे जो उतार-चढ़ाव अनुभव करते हैं वह एक अस्थायी सुधार है और उन कमियों के बारे में एक चेतावनी है जिन्हें बुराई से बचने और अच्छाई की ओर बढ़ने के लिए अभी भी दूर करना होगा। वे आत्मा के लिए अनुभव के पाठ हैं। वे कभी-कभी क्रूर लगते हैं, लेकिन जितनी गहरी छाप छोड़ते हैं, भविष्य के लिए उतने ही लाभकारी होते हैं।

ये उतार-चढ़ाव निरंतर संघर्षों को जन्म देते हैं जिससे बौद्धिक और मानसिक शक्तियों और क्षमताओं का विकास होता है। इन संघर्षों के माध्यम से आत्मा नैतिक रूप से खुद को मजबूत करती है और अंत तक उन्हें साहसपूर्वक सहन करने के बाद हमेशा जीत हासिल करती है। विजय का पुरस्कार आध्यात्मिक जीवन में पाया जाता है, जिसमें आत्मा एक उज्ज्वल और विजयी भावना के साथ प्रवेश करती है, जैसे एक सैनिक युद्ध में खड़ा है और अब माला प्राप्त कर रहा है।

प्रत्येक जीवन में आत्मा को एक कदम आगे बढ़ने का अवसर दिया जाता है। इस चरण की लंबाई उसकी इच्छाशक्ति पर निर्भर करती है, जो उसे कई डिग्री ऊपर उठने या एक ही स्थान पर बने रहने में सक्षम बनाती है। बाद के मामले में, उसने अवसर बर्बाद कर दिया होगा, और चूँकि उसे देर-सबेर अपने ऋणों का भुगतान करना होगा, उसे और भी अधिक दुखद परिस्थितियों में एक नया अस्तित्व फिर से शुरू करना होगा, चाहे उसने जो भी गलतियाँ की हों। जिसे दूर नहीं किया गया है उसमें वह एक और दोष जोड़ देता है।

इसलिए, क्रमिक अवतारों के माध्यम से आत्मा अपनी अपूर्णताओं से मुक्त होती है। यह उन्हें शुद्ध करता है - एक शब्द में - जब तक कि यह इतना शुद्ध न हो जाए कि तपस्या की दुनिया से खुशहाल दुनिया में जा सके, और इन दुनियाओं को पीछे छोड़कर परम आनंद का हिस्सा बन सके।

परिणामस्वरूप, परिशोधन कोई अस्पष्ट और अनिश्चित धारणा नहीं है; यह एक भौतिक वास्तविकता है जिसे हम देख, छू और महसूस कर सकते हैं। यह प्रायश्चित की दुनिया में पाया जाता है, और पृथ्वी उनमें से एक है। पृथ्वी पर, लोग अपने भविष्य की भलाई के लिए अपने अतीत और वर्तमान का प्रायश्चित करते हैं।

हालाँकि, इस मामले पर सामान्य दृष्टिकोण के विपरीत, यह प्रत्येक पुरुष या महिला पर निर्भर करता है कि वह स्व-प्रयास के माध्यम से प्राप्त विकास और पवित्रता की डिग्री के अनुसार इस दुनिया में अपने प्रवास को छोटा या लंबा करे। हम इसे किसी निश्चित समय की पूर्ति के कारण या अन्य लोगों के गुणों के कारण नहीं, बल्कि अपने गुणों के अनुसार, मसीह के शब्दों के अनुसार, "प्रत्येक को उसके कर्मों के अनुसार" कहते हैं, जो पूरी तरह से निर्णय का सार प्रस्तुत करते हैं। ईश्वर। आइए संक्षेप करें.

इसलिए, जो लोग इस जीवन में पीड़ित हैं वे खुद से कह सकते हैं कि ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने अपने पिछले अस्तित्व में खुद को पर्याप्त रूप से शुद्ध नहीं किया है, और यदि वे इस जीवन में ऐसा नहीं करते हैं, तो वे और अधिक पीड़ित होंगे। यह एक ही समय में उचित और तार्किक दोनों है। चूँकि दुःख अपूर्णता में निहित है, जब तक कोई अपूर्ण है, तब तक वह दुःख भोगता रहता है, ठीक उसी प्रकार जैसे एक बीमार व्यक्ति तब तक दुःख भोगता है जब तक वह बीमारी के कारण को समाप्त नहीं कर देता।

इस प्रकार यह है कि जब तक लोग अहंकारी बने रहेंगे, वे अहंकार के परिणाम भुगतेंगे; जब तक वे स्वार्थी, स्वार्थी लोग हैं। 6. अपनी अपूर्णताओं के कारण दोषी आत्मा सबसे पहले आध्यात्मिक जीवन में कष्ट उठाता है। उसके बाद मुआवजे के तौर पर उसे भौतिक जीवन दिया जाता है। इसीलिए वह खुद को या तो उन लोगों के साथ पाती है जिन्हें उसने पहले नाराज किया था, उन लोगों के समान परिवेश में जहां वह बुराई करती थी, या उन परिस्थितियों के विपरीत परिस्थितियों में जिन्हें उसने अनुभव किया था।

उदाहरण के लिए, यदि उसने अपने धन का दुरुपयोग किया है तो गरीबी, या यदि उसके पास अभिमान है तो अपमान। आत्मा की दुनिया और पृथ्वी पर

प्रायश्चित में दोहरी सज़ा शामिल नहीं है। पृथ्वी पर सज़ा आत्मा की दुनिया में शुरू की गई सज़ा की पूर्ति करती है, और प्रभावी श्रम के माध्यम से प्रगति को सुविधाजनक बनाने का काम करती है; अवसर का लाभ उठाना आत्मा पर निर्भर करता है।

क्या यह बेहतर नहीं है कि वह स्वर्ग प्राप्त करने की संभावना के साथ पृथ्वी पर लौट आए, बजाय इसके कि वह पृथ्वी छोड़ दे और बिना क्षमा के दोषी ठहराया जाए? स्वतंत्रता प्रदान करना ईश्वर की बुद्धिमत्ता, अच्छाई और न्याय का प्रमाण है, जो चाहता है कि सभी मनुष्य अपने भविष्य के निर्माता बनने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें; यदि वे थोड़े या लंबे समय के लिए नाखुश हैं, तो उनके पास खुद के अलावा शिकायत करने के लिए कोई नहीं है।

क्योंकि उनके लिए तरक्की का रास्ता हमेशा खुला रहता है। यदि हम इस बात पर विचार करें कि अदृश्य जगत में कुछ दोषी आत्माओं की पीड़ा कितनी बड़ी है, उनमें से कुछ के लिए स्थिति कितनी भयावह है, वे किस पीड़ा के शिकार हुए हैं, और अंत तक पहुंचते-पहुंचते यह स्थिति उनके लिए कितनी दर्दनाक है उनकी पीड़ा. तब हम कह सकते हैं कि वे वास्तव में नरक में हैं, यदि ऐसा शब्द शाश्वत और शारीरिक दंड के विचार को इंगित नहीं करता है।

हालाँकि, आत्माओं के रहस्योद्घाटन और उनके द्वारा हमें दिए गए उदाहरणों के लिए धन्यवाद, हम जानते हैं कि प्रायश्चित की अवधि गलत करने वाले की भलाई पर निर्भर करती है। इसलिए, प्रेतात्मवाद भविष्य में मिलने वाली सज़ा से इनकार नहीं करता, बल्कि इसकी पुष्टि करता है। यह भट्टियों और कभी न ख़त्म होने वाली यातनाओं वाला एक स्थानीय नरक बन जाता है।

यह परिष्कार से इनकार नहीं करता है - यह सिर्फ दिखाता है कि हम इस क्षण में हैं। यह सांसारिक कष्टों के कारणों की व्याख्या करके इस परिशोधन को और अधिक परिभाषित और रेखांकित करता है, जिससे उन लोगों को ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जो इसमें विश्वास नहीं करते हैं। क्या इससे मृतकों के लिए प्रार्थना करने की अनुमति नहीं मिलती?

इसके विपरीत, क्योंकि पीड़ित आत्माएं उनसे प्रार्थना करती हैं। यह प्रार्थना को दान के कर्तव्य के रूप में ऊपर उठाता है और ऐसी आत्माओं को अच्छाई की ओर ले जाने में इसकी प्रभावशीलता को प्रदर्शित करता है, जिससे उनकी पीड़ा कम हो जाती है।32 और चूंकि प्रेतात्मवाद किसी की बुद्धि को संबोधित करता है, इसने कई लोगों की मदद की है, अविश्वासियों को विश्वास के लिए प्रेरित किया है, उन लोगों के दिलों में प्रार्थना को प्रेरित किया है इस पर व्यंग्य किया.

अध्यात्मवाद इस बात की पुष्टि करता है कि प्रार्थना की प्रभावशीलता विचारों में निहित है, शब्दों में नहीं; कि सबसे अच्छी प्रार्थनाएँ दिल की होती हैं, होठों की नहीं, जो हम स्वयं कहते हैं, पैसों के लिए नहीं की जातीं। इसलिए, प्रार्थना की आलोचना करने का साहस कौन करेगा? सज़ा चाहे आध्यात्मिक जीवन में हो या पृथ्वी पर, और चाहे कितनी भी लंबी हो, इसका अंत हमेशा निकट या दूर भविष्य में होता है।

वास्तव में, आत्मा के लिए केवल दो ही विकल्प हैं: उसे उसके गलत कार्यों के अनुसार अस्थायी रूप से दंडित किया जाना, या उसके गुणों के अनुसार पुरस्कृत किया जाना। अध्यात्मवाद शाश्वत दण्ड के तीसरे विकल्प को अस्वीकार करता है। नरक को महान पीड़ाओं के प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व में बदल दिया गया है, जिसका अंत पहले से नहीं देखा जा सकता है। पुर्गेट्री हमारी वर्तमान वास्तविकता है।

शब्द "पुर्गेट्री" एक बंद स्थान के विचार का सुझाव देता है; इस प्रकार, यह पृथ्वी पर अधिक स्वाभाविक रूप से लागू होता है - जिसे प्रायश्चित का स्थान माना जाता है - न कि उस अनंत स्थान पर जहां पीड़ित आत्माएं भटकती हैं, और इसलिए भी कि सांसारिक प्रायश्चित की प्रकृति सच्ची शुद्धिकरण है। जैसे-जैसे मनुष्य स्वयं में सुधार करते हैं, वे अंततः अदृश्य दुनिया को केवल अच्छी आत्माओं से भर देंगे, और जब इनका पुनर्जन्म होगा, तो वे बदले में भौतिक मानव जाति को ऐसे सदस्य प्रदान करेंगे जो अधिक शुद्ध होंगे।

तब पृथ्वी अब एक अपश्चातापी संसार नहीं रहेगी, और लोग अपनी अपूर्णताओं के कारण होने वाली पीड़ा नहीं झेलेंगे। यह वह परिवर्तन है जो अब हो रहा है, और जो पृथ्वी को विश्व पदानुक्रम में ऊपर उठा देगा। लेकिन ईसा मसीह ने शुद्धिकरण की बात क्यों नहीं की? ऐसा इसलिए था क्योंकि उस समय यह विचार अस्तित्व में नहीं था, और इसलिए इसका प्रतिनिधित्व करने के लिए कोई विशिष्ट शब्द नहीं था।

नरक शब्द का उपयोग - उस समय इस्तेमाल किया जाने वाला एकमात्र शब्द - भविष्य की सज़ाओं को अंधाधुंध रूप से दर्शाने के लिए एक सामान्य शब्द के रूप में। यदि "नरक" शब्द के आगे उन्होंने "पार्गेटरी" के बराबर एक शब्द रखा होता, तो वे भविष्य के लिए आरक्षित मुद्दे को खोले बिना इसका सही अर्थ परिभाषित नहीं कर पाते। उन्हें दो विशेष दंड स्थानों के अस्तित्व की भी पुष्टि करनी होगी।

नरक, अपने सामान्य अर्थ में, सज़ा के विचार को व्यक्त करता है, जिसका तात्पर्य शुद्धिकरण से है, जो सज़ा के एक तरीके से अधिक कुछ नहीं है। भविष्य में मानव जाति को दंड की प्रकृति का ज्ञान प्राप्त होगा, और परिणामस्वरूप नरक अपने उचित मूल्य पर कम हो जाएगा। यदि चर्च ने छः सदियों बाद इस मामले पर यीशु की चुप्पी को पूरा करने के लिए शुद्धिकरण के अस्तित्व का आदेश दिया, तो ऐसा इसलिए था क्योंकि उसने सोचा था कि उसने वह सब नहीं कहा है जो उसे कहना था - लेकिन यह अन्य दृष्टिकोणों के कारण था। ये भी सच क्यों नहीं हो सकता?

## भविष्य की सज़ा अध्यात्मवाद के अनुसार

प्रेतात्मावाद के अनुसार भविष्य की सजा ; भविष्य की सजा के संबंध में प्रेतात्मवादी सिद्धांत के स्रोत •

## भावी जीवन की दण्ड संहिता

भविष्य की सजा से संबंधित अध्यात्मवादी सिद्धांत के स्रोत • भविष्य के जीवन की दंड संहिता , कुछ विकृत प्रवृत्तियाँ हैं जो स्पष्ट रूप से आत्मा में निहित हैं क्योंकि वे भौतिक से अधिक नैतिक से संबंधित हैं, जबकि अन्य भौतिक जीवों के परिणाम अधिक प्रतीत होते हैं, और इस कारण से जिन लोगों को ये होते हैं उन्हें कम जिम्मेदार माना जाता है। ये क्रोध, आलस्य, वासना आदि प्रवृत्तियाँ हैं।

आजकल, अध्यात्मवादी दार्शनिकों को पूरी तरह से एहसास है कि विभिन्न क्षमताओं के अनुरूप मस्तिष्क के क्षेत्रों का विकास आत्मा की गतिविधि के कारण होता है, और परिणामस्वरूप, यह विकास एक कारण के बजाय एक प्रभाव है। व्यक्ति संगीतकार नहीं हैं क्योंकि उनके पास संगीत का उपहार है; उनके पास संगीत का उपहार है क्योंकि उनकी आत्माएं पहले से ही संगीतकार हैं। यदि आत्मा की गतिविधि मस्तिष्क पर कार्य करती है, तो उसे जीव के अन्य भौतिक भागों पर भी कार्य करना चाहिए। इस प्रकार, आत्मा शरीर का कारीगर है, जिसे आत्मा की आवश्यकताओं और अभिव्यक्ति के अनुसार ढाला जाता है।

# प्रवृत्तियों

इस प्रकार, कुछ व्यक्तियों की शारीरिक पूर्णता किसी अलग रचना का उत्पाद नहीं है, बल्कि आत्मा की क्षमताओं के बढ़ने के साथ-साथ उसके भौतिक आवरण को पूर्ण करने के प्रयासों का परिणाम है। इस सिद्धांत के स्वाभाविक परिणाम के रूप में, आत्मा की नैतिक प्रकृति को रक्त के गुणों को संशोधित करना होगा, जिससे यह अधिक सक्रिय या कम सक्रिय हो जाएगा, जिससे पित्त और अन्य तरल पदार्थों का अधिक या कम प्रचुर मात्रा में स्राव होगा।

यही कारण है कि, उदाहरण के लिए, स्वादिष्ट व्यंजन खाने से पहले एक पेटू के मुंह में पानी आ जाता है। यह स्पष्ट रूप से भोजन नहीं है जो स्वाद अंगों को उत्तेजित करता है, क्योंकि यह उनके संपर्क में भी नहीं आता है। यह आत्मा ही है जिसकी संवेदना जागृत होती है और जो विचार के माध्यम से अंग पर कार्य करती है।

किसी अन्य व्यक्ति पर ऐसे दृश्य का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसके अलावा, यही कारण है कि एक संवेदनशील व्यक्ति आसानी से आँसू बहा देता है। यह आंसुओं की प्रचुरता नहीं है जो आत्मा को संवेदनशील बनाती है, बल्कि आत्मा की संवेदनशीलता ही है जो आंसुओं के प्रचुर प्रवाह को जन्म देती है। संवेदनशीलता के प्रभाव में, जीव स्वयं को ऐसी आत्मा के सामान्य स्वभाव के लिए उसी प्रकार तैयार करता है जैसे वह स्वयं को पेटू आत्मा के स्वभाव के लिए तैयार करता है।

इस विचारधारा के अनुसार, कोई यह समझ सकता है कि पित्त प्रकृति के पीछे एक गर्म स्वभाव वाली आत्मा है, जिसका अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति पित्त होने के कारण गर्म स्वभाव का है, बल्कि वह पित्त है क्योंकि उसकी आत्मा गर्म स्वभाव की है। . . यही बात अन्य सभी जन्मजात स्वभावों पर भी लागू होती है: एक आलसी और कमजोर आत्मा शरीर को उसके चरित्र के संबंध में कमजोरी की स्थिति में डाल देगी।

जबकि एक सक्रिय और ऊर्जावान आत्मा रक्त और तंत्रिकाओं को ऐसे गुण प्रदान करेगी जो बिल्कुल विपरीत हैं। भौतिक शरीर पर आत्मा का प्रभाव इतना स्पष्ट है कि हम अक्सर हिंसक मानसिक अशांति के परिणामस्वरूप गंभीर जैविक विकार देखते हैं। आम कहावत, "भावनाएँ खून को उबाल देती हैं" उतनी

निरर्थक नहीं है जितना कोई सोच सकता है। यदि आत्मा की मानसिक प्रवृत्तियाँ नहीं तो और क्या खून खौला सकता है?

परिणामस्वरूप, किसी को - कम से कम आंशिक रूप से - स्वीकार करना चाहिए कि स्वभाव आत्मा की प्रकृति से निर्धारित होता है, जो कारण है, न कि प्रभाव। हम "आंशिक रूप से" कहते हैं क्योंकि ऐसे मामले हैं जिनमें शारीरिक स्पष्ट रूप से मानसिक को प्रभावित करता है, जैसे कि जब कोई रुग्ण या असामान्य स्थिति आत्मा से स्वतंत्र किसी बाहरी और आकस्मिक कारण से निर्धारित होती है।

जैसे तापमान, जलवायु, जन्मजात शारीरिक दोष, अस्थायी बीमारी आदि। ऐसे मामलों में आत्मा की मानसिक स्थिति उसकी आंतरिक प्रकृति को संशोधित किए बिना रोग संबंधी स्थिति से प्रकट हो सकती है। अपनी गलतियों के लिए शरीर की कमजोरी को दोष देना जिम्मेदारी से बचने का एक बहाना मात्र है। शरीर कमजोर है क्योंकि आत्मा कमजोर है।

इससे मामला उलट जाता है और आत्मा अपने सभी कार्यों के लिए पूरी तरह जिम्मेदार हो जाती है। चूँकि शरीर विचार और इच्छा दोनों से रहित है, इसलिए यह कभी भी आत्मा पर हावी नहीं हो सकता है, जो अपनी इच्छा के साथ एक विचारशील प्राणी है। आत्मा ही शरीर को उसकी प्रकृति के अनुसार गुण प्रदान करती है, जैसे एक कलाकार किसी भौतिक कार्य पर अपनी आत्मा की छाप छोड़ता है। जब वह अपनी पशुवत प्रवृत्तियों से मुक्त हो जाता है, तो उसका एक ऐसा शरीर विकसित हो जाता है जो अब उसकी आध्यात्मिक आकांक्षाओं पर अत्याचार नहीं करता।

और यही वह समय है जब पुरुष और महिलाएं जीने के लिए खाना शुरू करते हैं और खाने के लिए जीना बंद कर देते हैं। अतः जीवन के कार्यों के प्रति नैतिक जिम्मेदारी बरकरार रहती है, लेकिन तर्क हमें बताता है कि आत्मा की जिम्मेदारी के परिणाम उसके बौद्धिक विकास के अनुपात में होने चाहिए। इस प्रकार, जो जितना अधिक प्रबुद्ध है, वह उतना ही अधिक दोषी है, क्योंकि बुद्धि और नैतिक समझ से अच्छे और बुरे, धर्म और अधर्म की धारणाएँ उत्पन्न होती हैं।

यह नियम बताता है कि कुछ मामलों में दवा अप्रभावी क्यों होती है। चूँकि स्वभाव एक प्रभाव है न कि कारण, इसलिए इसे बदलने का हर प्रयास आत्मा के मानसिक स्वभाव के प्रकाश में अप्रभावी है, जो एक अचेतन प्रतिरोध प्रदान करता है जो चिकित्सीय कार्रवाई को बेअसर कर देता है।

परिणामस्वरूप, यही प्राथमिक कारण है कि इस पर काम किया जाना चाहिए। इसलिए, यदि आप कर सकते हैं, तो कायर को साहस दें, और आप जल्द ही डर के शारीरिक प्रभावों को कम होते देखेंगे। इससे एक बार फिर साबित होता है कि उपचार की कला में जीव पर आध्यात्मिक प्रभाव को ध्यान में रखना आवश्यक है। (ला रिव्यू स्पिरिट देखें, मार्च 1869।

भविष्य के निर्णय के अध्यात्मवादी सिद्धांत के स्रोत भविष्य की सजा के संबंध में, अध्यात्मवादी सिद्धांत किसी पूर्वकल्पित धारणा पर आधारित नहीं है - यह एक सिद्धांत को दूसरे द्वारा प्रतिस्थापित किए जाने का मामला नहीं है। हर चीज़ में, यह अवलोकन पर आधारित है, और यही चीज़ इसे इसका पूर्ण अधिकार देती है। किसी ने कभी नहीं सोचा था कि मृत्यु के बाद आत्माएं इस या उस अवस्था में पाई जा सकती हैं, लेकिन ये वही आत्माएं हैं - जो पृथ्वी से विदा हो चुकी हैं - जो हमें भावी जीवन के रहस्यों से परिचित कराने आई हैं।

वह स्वयं अपनी सुखद या दुर्भाग्यपूर्ण स्थितियों, अपने प्रभावों, अपने शरीर की मृत्यु के बाद अपने परिवर्तनों का वर्णन करती है; दूसरे शब्दों में, वे इस मामले पर मसीह की शिक्षाओं को पूरा करते हैं। हालाँकि, हम अकेले आत्मा के रहस्योद्घाटन से निपट नहीं रहे हैं, जो चीजों को अपने दृष्टिकोण से और केवल एक ही दृष्टिकोण से देख सकता है, या जो अभी भी सांसारिक पूर्वाग्रहों से प्रभावित हो सकता है;

न ही हम किसी व्यक्ति को दिए गए रहस्योद्घाटन से निपट रहे हैं, जो दिखावे या एक परमानंद दृष्टि से प्रेरित हो सकता है जो भ्रम के प्रति संवेदनशील है और अक्सर अति-सक्रिय कल्पना के प्रतिबिंब से थोड़ा अधिक है। नहीं होता.

बल्कि, हम सभी श्रेणियों की आत्माओं द्वारा प्रस्तुत अनगिनत उदाहरणों से निपट रहे हैं - उच्चतम क्रम से लेकर पैमाने पर सबसे निचले स्तर तक - पृथ्वी भर में फैले कई मध्यस्थों (माध्यमों) के माध्यम से, ताकि रहस्योद्घाटन किसी एक व्यक्ति के लिए विशेष न हो। विशेषाधिकार। कोई भी व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के विश्वास पर भरोसा किए बिना इसका परीक्षण और निरीक्षण कर सकता है। इसलिए, भावी जीवन अध्यात्मवाद की दंड संहिता अपने आप में कल्पना की कोई संहिता तैयार करने के लिए नहीं आई है;

आत्मा के भाग्य के संबंध में इसके नियम तथ्यों के अध्ययन से प्राप्त होते हैं और इन्हें निम्नलिखित बिंदुओं में संक्षेपित किया जा सकता है: आध्यात्मिक

जीवन में, आत्मा या आत्मा उन सभी खामियों के परिणाम भुगतती है जिन्हें उसने अपने भौतिक जीवन के दौरान ठीक नहीं किया है। सकना।

उसकी सुखी या अप्रसन्न अवस्था उसकी शुद्धता या अशुद्धता की मात्रा पर निर्भर करती है। पूर्ण सुख पूर्णता अर्थात् आत्मा की पूर्ण शुद्धि में निहित है। प्रत्येक अपूर्णता एक ही समय में दुख और आशीर्वाद में कमी का कारण होती है, जैसे कि प्रत्येक अर्जित गुण आशीर्वाद और दुख के क्षीणन का स्रोत होता है। आत्मा की एक भी अपूर्णता ऐसी नहीं है जो अप्रिय और अपरिहार्य परिणाम न लाती हो, जैसे कि कोई भी अच्छा गुण नहीं है जो खुशी का स्रोत न हो। इसलिए सज़ा की मात्रा अपूर्णता की मात्रा के समानुपाती होती है, जैसे आनंद आत्मा के अच्छे गुणों के समानुपाती होता है।

उदाहरण के लिए, जिस आत्मा में दस खामियाँ हैं, वह उस आत्मा की तुलना में अधिक पीड़ित है जिसमें केवल तीन या चार खामियाँ हैं, और जब ये दस खामियाँ एक चौथाई या आधी कम हो जाती हैं, तो उसे कम पीड़ा होती है। जब इसकी सभी खामियाँ दूर हो जाती हैं, तो आत्मा पूरी तरह से खुश हो जाती है, जैसे पृथ्वी पर, जिन लोगों को कई बीमारियाँ होती हैं, वे उन लोगों की तुलना में अधिक पीड़ित होते हैं, जिन्हें कोई नहीं या केवल एक ही बीमारी होती है। यह केवल वहीं है.

इस कारण से, जिस आत्मा में दस अच्छे गुण होते हैं वह कम गुणों वाली आत्मा की तुलना में अधिक आनंद लेती है। 4) प्रगति के नियम के कारण जो प्रत्येक आत्मा को वह अच्छाई प्राप्त करने की क्षमता देता है जिसका उसके पास अभी भी अभाव है और खुद को अपने प्रयासों और इच्छा के अनुसार, उस बुराई से मुक्त करने की क्षमता देता है जो उसके पास अभी भी है, उसे पूरा करने के लिए, फिर भविष्य के लिए। सभी व्यक्तियों के लिए खुला है।

भगवान अपने किसी भी बच्चे को अस्वीकार नहीं करते - उन्हें पूर्णता के करीब पहुंचने तक दिव्य हृदय में स्वीकार किया जाता है; इस प्रकार, प्रत्येक व्यक्ति को उसके अपने कर्मों के आधार पर छोड़ दिया जाता है। चूँकि दुख अपूर्णता की डिग्री पर निर्भर करता है, और खुशी पूर्णता की डिग्री पर निर्भर करती है, आत्मा अपने दंड को अपने भीतर ही सहन करती है, चाहे वह किसी भी सीमित स्थान पर क्यों न हो।

नर्क वह है जहां पीड़ित आत्माएं हैं, और स्वर्ग वह है जहां आनंदित आत्माएं हैं। हम जो अच्छाई और बुराई करते हैं वह हमारे गुणों के कारण होता है। इसलिए जब हम अच्छा कर सकते हैं, तब भी अच्छा न करना किसी अपूर्णता का

परिणाम है। यदि प्रत्येक अपूर्णता किसी प्रकार के कष्ट का स्रोत है, तो आत्मा को न केवल उस बुराई के लिए कष्ट सहना होगा जो उसने किया है, बल्कि उस अच्छे कार्य के लिए भी जिसे वह करने में विफल रही है।

आत्मा अपने द्वारा किये गये बुरे कर्मों को इस प्रकार भोगती है कि उसका ध्यान लगातार ऐसे बुरे कर्मों के परिणामों की ओर केंद्रित होने से वह अपनी समस्याओं को बेहतर ढंग से समझती है और इस प्रकार स्वयं को सुधारने के लिए प्रेरित होती है। 8) चूँकि ईश्वर का न्याय अनंत है, अच्छे और बुरे को सख्ती से ध्यान में रखा जाता है।

यदि एक भी बुरा कार्य नहीं है, एक भी बुरा विचार नहीं है जो घातक परिणाम नहीं लाता है, एक भी पुण्य कार्य नहीं है, आत्मा की एक भी अच्छी गति या सबसे छोटा गुण नहीं है जो खो जाएगा - यहां तक कि सबसे विकृत के लिए भी व्यक्तियों, क्योंकि यह दर्शाता है कि प्रगति शुरू हो गई है। हर गलत, हर बुरे काम के लिए एक ऋण होता है जिसे चुकाना होगा, यदि एक अस्तित्व में नहीं तो अगले या किसी अन्य भविष्य में, क्योंकि सभी अस्तित्व एक-दूसरे के साथ एकजुटता में हैं। में हैं।

एक बार चुकाया गया ऋण दूसरी बार नहीं चुकाना पड़ता। आत्मा अपनी अपूर्णताओं के परिणामस्वरूप कष्ट भोगती है, चाहे वह भौतिक जगत में हो या आध्यात्मिक जगत में। भौतिक अस्तित्व में अनुभव किए गए कष्ट और उतार-चढ़ाव वर्तमान और पिछले जीवन में किए गए गलतियों की खामियों और प्रायश्चित का परिणाम हैं।

भौतिक जीवन में अनुभव किए जाने वाले कष्टों और उतार-चढ़ाव की प्रकृति से, कोई पिछले जीवन में किए गए गलत कामों की प्रकृति और उन खामियों का अनुमान लगा सकता है जिन्होंने उन्हें जन्म दिया। प्रायश्चित गलत कार्य की प्रकृति और गंभीरता के अनुसार भिन्न होता है; इसलिए, एक ही गलत कार्य के परिणामस्वरूप कई प्रायश्चित हो सकते हैं, यह उन कम करने वाली या गंभीर परिस्थितियों पर निर्भर करता है जिनमें यह किया गया था।

सज़ा की प्रकृति और अवधि के संबंध में कोई पूर्ण या समान नियम नहीं है। एकमात्र सामान्य नियम यह है कि हर गलत काम को दंडित किया जाएगा और हर अच्छे काम को उसके मूल्य के अनुसार पुरस्कृत किया जाएगा। सजा की अवधि इस बात पर निर्भर करती है कि दोषी आत्मा खुद को कितना सुधारती है। इसके विरुद्ध किसी भी निश्चित समय तक निंदा की घोषणा नहीं की जाती है।

दुख को समाप्त करने के लिए ईश्वर को एक गंभीर, प्रभावी सुधार और अच्छाई की ओर एक प्रामाणिक वापसी की आवश्यकता है।

इस तरह, आत्मा हमेशा अपने भाग्य का मध्यस्थ होती है और बुराई में बने रहने के माध्यम से अपनी पीड़ा को बढ़ा सकती है, या अच्छा अभ्यास करने के अपने प्रयासों के माध्यम से इसे कम और छोटा कर सकती है। एक निश्चित समय के लिए निंदा करने से पश्चाताप करने वाली आत्मा की सजा को जारी रखने, या बुराई में बने रहने पर उसे पीड़ा से मुक्त करने का दोहरा अनुचित प्रभाव होगा।

ईश्वर, जो न्यायी है, केवल बुराई को तब तक दण्डित करता है जब तक वह विद्यमान है और जब उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है तब वह उसे दण्ड देना बंद कर देता है। इसी प्रकार, चूंकि नैतिक बुराई स्वयं ही दुख का कारण है, इसलिए जब तक बुराई रहेगी तब तक दुख जारी रहेगा, या बुराई कम होने पर इसकी तीव्रता कम हो जाएगी।

सजा की अवधि सुधार के अधीन है, इसलिए यह माना जाएगा कि जो भी दोषी आत्मा सुधार करेगा उसे हमेशा के लिए कष्ट सहना पड़ेगा, और ऐसी आत्मा के लिए सजा अनंत होगी।

कम विकसित आत्माओं में एक अंतर्निहित स्थिति यह है कि वे अपनी स्थिति का अंत नहीं देख सकते हैं, और इस प्रकार उनका मानना है कि वे हमेशा पीड़ित रहेंगे। यही बात उनकी सज़ा को शाश्वत बनाती है।

यद्यपि पश्चाताप पुनर्जन्म की ओर पहला कदम है, यह अपने आप में पर्याप्त नहीं है; पश्चाताप और प्रायश्चित अभी भी आवश्यक है। इसलिए पश्चाताप, प्रायश्चित और क्षतिपूर्ति गलत के अवशेषों और उसके परिणामों को मिटाने के लिए तीन आवश्यक शर्तें हैं। पश्चाताप प्रायश्चित की कठोरता को नरम कर देता है क्योंकि यह आशा जगाता है और पुनर्वास का मार्ग प्रशस्त करता है।

हालाँकि, केवल मुआवजा ही प्रभाव को रद्द कर सकता है और इस प्रकार कारण को नष्ट कर सकता है; अन्यथा, क्षमा केवल अनुग्रह का कार्य होगा और ग़लती को रद्द नहीं करेगा।

पश्चाताप तो किसी भी समय और किसी भी स्थान पर हो सकता है, लेकिन पश्चात्ताप करने पर दोषी आत्मा लंबे समय तक कष्ट भोगती रहती है। जब तक गलती का अंतिम निशान भी मिट न जाए, प्रायश्चित में उसके परिणामस्वरूप

होने वाली शारीरिक और मानसिक पीड़ाएँ शामिल होती हैं, चाहे वर्तमान जीवन में, मृत्यु के बाद आध्यात्मिक जीवन में, या उसके बाद के जीवन में।

प्रायश्चित में किसी के साथ हुए गलत को सुधारना शामिल है। जो लोग, कमजोरी या द्वेष के कारण, एक अस्तित्व में अपनी गलतियों को नहीं सुधारते हैं, वे अगले अस्तित्व में खुद को उन्हीं लोगों के संपर्क में पाते हैं जिनके खिलाफ उन्होंने पहली बार शिकायत की थी, और उन परिस्थितियों में जिनकी उन्होंने पहले से उम्मीद नहीं की थी। स्वेच्छा से चुना था.

इस तरह से उन्हें उन लोगों के प्रति अपनी ईमानदारी साबित करने का अवसर मिलता है जिन्हें उन्होंने उतना ही अच्छा करके नाराज किया है जितना उन्होंने बुरा किया है। सभी गलत कार्यों का परिणाम प्रत्यक्ष और तत्काल नुकसान नहीं होता है। ऐसे मामलों में, मुआवजा उन कार्यों को पूरा करके प्राप्त किया जाता है जिन्हें उन्होंने उपेक्षित या नजरअंदाज कर दिया था, या उन मिशनों को पूरा करके जिनमें वे विफल रहे थे।

दूसरे शब्दों में, पिछली बुराई के मुआवजे के रूप में अच्छाई का अभ्यास करना: यदि वे अहंकारी थे तो विनम्र बनना, यदि वे तपस्वी थे तो देखभाल करना, यदि वे स्वार्थी थे तो परोपकारी बनना, यदि वे विकृत थे तो परोपकारी बनना, यदि वे आलसी थे तो मेहनती बनना। यदि वे बेकार थे तो उपयोगी होने के लिए, यदि वे आत्म-भोगी थे तो बुद्धिमान होने के लिए, यदि वे बुरे थे तो एक अच्छा उदाहरण प्रदर्शित करने के लिए, इत्यादि।

इस प्रकार आत्मा अपने अतीत का लाभ उठाकर प्रगति करती है।39 18) अपूर्ण आत्माओं को उन सुखी संसारों से वंचित कर दिया जाता है जिनकी सद्भावना वे खराब कर देंगे। वे एक कम विकसित दुनिया में रहते हैं जहां वे जीवन की पीड़ाओं के माध्यम से अपने गलत कामों का प्रायश्चित करते हैं और अपनी अपूर्णताओं से खुद को शुद्ध करते हैं जब तक कि वे अधिक शारीरिक और नैतिक रूप से विकसित दुनिया में अवतार लेने के योग्य नहीं हो जाते। जाऊंगा।

यदि हम सजा के एक सीमित स्थान की कल्पना कर सकते हैं, तो यह प्रायश्चित की इन दुनियाओं में होगा, क्योंकि यह वह दुनिया है जहां अपूर्ण अवतार वाली आत्माएं एक नए अस्तित्व की प्रतीक्षा करती हैं जो उनके द्वारा की गई बुराइयों का प्रायश्चित करेगी। उन्हें सुधार करने में सक्षम बनाएगा, जो बदले में उन्हें प्रगति करने में सक्षम बनाएगा।

चूँकि आत्मा की हमेशा अपनी स्वतंत्र इच्छा होती है, वह कभी-कभी काफी धीमी गति से चलती है और बुराई में उसकी दृढ़ता काफी दृढ़ हो सकती है। यह स्थिति वर्षों और यहां तक कि सदियों तक जारी रह सकती है, लेकिन अंततः वह समय आएगा जब ईश्वर के न्याय की अवहेलना करने की उसकी जिद उसके कष्टों के परिणामस्वरूप कम हो जाएगी, और अपने घमंड के बावजूद वह उस श्रेष्ठ शक्ति को पहचान लेगा जो उस पर शासन करती है। हावी है.

उस क्षण, पश्चाताप की पहली रोशनी चमकती है और भगवान उसे आशा की झलक पाने में सक्षम बनाते हैं। कोई भी आत्मा स्वयं को बेहतर बनाने के लिए कभी तैयार नहीं होती; अन्यथा, उसका हमेशा के लिए निचली श्रेणी में बने रहना घातक होगा और वह प्रगति के उस नियम से बच जाएगा जो सभी प्राणियों को नियंत्रित करता है।

आत्माएं चाहे कितनी ही अल्प विकसित एवं विकृत क्यों न हों, ईश्वर उनका कभी त्याग नहीं करते। हर किसी का अपना अभिभावक देवदूत होता है जो उनकी देखभाल करता है, उनकी आत्मा के विस्तार पर नज़र रखता है, अच्छे विचार और विकास की इच्छा जगाने के लिए हर संभव प्रयास करता है, और नए अस्तित्व में उन बुराइयों को ठीक करने में उनकी मदद करता है। पिछले जीवन में उसने जो किया उसके लिए प्रोत्साहित करता है।

हालाँकि, अभिभावक देवदूत लगभग हमेशा बिना किसी दबाव के गुप्त तरीके से कार्य करते हैं। आत्मा को अपनी इच्छा के आवेग से चलना चाहिए - किसी दबाव से नहीं। अच्छाई और बुराई आत्मा की स्वतंत्र इच्छा के आधार पर की जाती है, बिना किसी भाग्यवादी तरीके से एक दिशा या दूसरी दिशा में धकेले। यदि आत्मा बुराई में लगी रहती है, तो जब तक वह ऐसा करती रहेगी तब तक परिणाम भुगतती रहेगी, लेकिन यदि वह अच्छाई की ओर कदम बढ़ाती है, तो उसे तुरंत लाभकारी प्रभाव महसूस होगा।

यह मानना गलत होगा कि प्रगति के नियम के कारण देर-सबेर पूर्णता और खुशी प्राप्त करने की निश्चितता किसी को बाद में पश्चाताप करने के उद्देश्य से बुराई में बने रहने के लिए प्रेरित कर सकती है; पहला, क्योंकि एक अविकसित आत्मा अपनी स्थिति का अंत सुनिश्चित नहीं कर सकती; दूसरा, क्योंकि, जब यह उसके दुख का कारण बन जाता है, तो अंततः उसे एहसास होता है कि इसे समाप्त करना केवल उसी पर निर्भर है।

तीसरा, वह जितनी देर तक बुराई में लगा रहेगा, उतनी देर तक दुखी रहेगा, क्योंकि वह जानता है कि यदि वह स्वयं इसे समाप्त नहीं करेगा, तो उसका दुख

हमेशा बना रहेगा। इस प्रकार, वह जानबूझकर गलती कर रहा होगा, और धोखा खाने वाला वह पहला व्यक्ति होगा। दूसरी ओर, शाश्वत दंड की हठधर्मिता के साथ, सारी आशा व्यर्थ हो जाएगी; आत्मा को अच्छे की ओर मुड़ने में कोई दिलचस्पी नहीं होगी क्योंकि इससे कोई लाभ नहीं होगा।

इस नियम से ईश्वर के पूर्वज्ञान पर भी आपत्ति उत्पन्न होती है, क्योंकि ईश्वर जीवात्मा की रचना करने के बाद यह निश्चित रूप से जानता है कि वह अपनी स्वतंत्र इच्छा के कारण अच्छे या बुरे मार्ग की ओर उन्मुख होगा। परमेश्वर जानता है कि उसे बुराई करने का दण्ड मिलेगा; हालाँकि, ईश्वर यह भी जानता है कि अस्थायी सज़ा उसे अपनी गलती समझने और देर-सबेर नैतिक पथ पर प्रवेश करने में सक्षम बनाने का एक तरीका है।

शाश्वत दंड के सिद्धांत के अनुसार, किसी को यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि भगवान जानता है कि ऐसी आत्मा विफल हो जाएगी और इसलिए, वह पहले से ही शाश्वत यातना के लिए दोषी ठहराया गया है। गलतियों की जिम्मेदारी पूरी तरह से व्यक्ति पर होती है। कोई भी व्यक्ति दूसरे की गलतियों के लिए तब तक पीड़ित नहीं होता, जब तक कि वह पहले से ही गलतियों का कारण न बना हो, उदाहरण देकर उन्हें उकसाया न हो, या जब वह ऐसा कर सकता था, उन्हें रोका न हो।

परिणामस्वरूप, आत्महत्या के लिए हमेशा सज़ा दी जाएगी, लेकिन जो कोई अपनी कठोरता से किसी को निराश करेगा और आत्महत्या करने के लिए मजबूर करेगा, उसे और भी बड़ी सज़ा भुगतनी होगी। हालाँकि सज़ाओं की विविधता अनंत है, कुछ ऐसे भी हैं जो आत्मा के कम विकसित होने में निहित हैं; कुछ विवरणों को छोड़कर, उनके परिणाम कमोबेश एक जैसे ही हैं।

जो लोग विशेष रूप से भौतिकवादी जीवन से जुड़े हुए हैं और जो आध्यात्मिक प्रगति की उपेक्षा करते हैं, उनके बीच सबसे आम सजा आत्मा के अलग होने की धीमी गति है। मृत्यु के समय शरीर और आत्मा का मिलन होता है, इसके साथ होने वाली पीड़ा और दूसरे जीवन में उनका जागरण होता है, और परिणामस्वरूप भ्रम की स्थिति होती है जो महीनों और वर्षों तक बनी रह सकती है।

दूसरी ओर, उन लोगों के लिए जिन्होंने शुद्ध अंतःकरण बनाए रखा है, जिन्होंने खुद को आध्यात्मिक जीवन के साथ पहचाना है और अपने भौतिक जीवन के दौरान खुद को भौतिकवाद से मुक्त कर लिया है, संक्रमण त्वरित और बिना

किसी कठिनाई के होता है; जागृति सुखद होती है और मतिभ्रम शायद ही कभी होता है।

जिन आत्माओं का एक निश्चित सीमा तक नैतिक विकास नहीं हुआ है, उनके बीच एक बहुत ही सामान्य घटना यह है कि वे मानते हैं कि वे अभी भी जीवित हैं, और यह भ्रम कई वर्षों तक बना रह सकता है, जिसके दौरान वे भौतिक जीवन का सारा ज्ञान खो देते हैं। अनुभव की जरूरतें, दर्द और भ्रम। अपराधियों के लिए, उनके पीड़ितों की निरंतर उपस्थिति और उनके अपराधों की परिस्थितियाँ एक क्रूर पीड़ा है।

कुछ आत्माएँ घने अँधेरे में डूबी हुई हैं। अन्य लोग खुद को अंतरिक्ष में पूरी तरह से अलग-थलग पाते हैं और स्थिति से अनभिज्ञ होने के बावजूद अपने भाग्य का इंतजार करते हैं। सबसे अधिक दोषी लोगों को यातनाएँ सहनी पड़ती हैं जो और भी अधिक तीव्र होती हैं क्योंकि उन्हें इसका कोई अंत नहीं दिखता।

कुछ को अपने प्रियजनों से मिलने से रोका जाता है, और सभी आम तौर पर पीड़ा सहते हैं जिसकी तीव्रता उनके द्वारा किए गए बुरे कार्यों और उनके द्वारा दूसरों को दिए गए दर्द और जरूरतों से संबंधित होती है, जब तक कि पश्चाताप और क्षतिपूर्ति की इच्छा न हो जाए। उनके पास इतनी मानसिक शांति नहीं है कि वे अपने प्रयासों से अपनी स्थिति को ख़त्म करने की संभावना का अनुमान लगा सकें।

अभिमानियों के लिए अपने से ऊपर के लोगों को घिरा हुआ और महिमा से सुशोभित देखना दर्दनाक है, जिन्हें वे पहले पृथ्वी पर तुच्छ समझते थे, जबकि वे स्वयं निचले स्तरों पर उतरते हैं; पाखंडियों के लिए, खुद को एक ऐसी रोशनी से छलनी देखना जो उनके सबसे गुप्त विचारों को प्रकट करती है, हर किसी के लिए पढ़ने के लिए, जिसमें खुद को छिपाने या छिपाने का कोई तरीका नहीं है।

सुखवादियों के लिए सभी प्रलोभनों और सभी इच्छाओं का अनुभव करना, उन्हें संतुष्ट करने में सक्षम हुए बिना; कंजूसों को अपना सोना बर्बाद करते हुए और उसे बचा नहीं पाते हुए देखना; स्वार्थी लोगों को सभी को त्याग देना चाहिए और वही सहना चाहिए जो उन्होंने दूसरों को सहने के लिए मजबूर किया है। वे प्यासे होंगे और कोई उन्हें पानी नहीं देगा, वे भूखे होंगे और कोई उन्हें खाना नहीं देगा।

कोई मित्रतापूर्ण हाथ उनका हाथ नहीं दबाएगा, कोई करुणामयी आवाज उन्हें सांत्वना नहीं देगी। उन्होंने अपने जीवनकाल में अपने अलावा किसी के बारे में

नहीं सोचा, इसलिए उनकी मृत्यु के बाद कोई भी उनके बारे में नहीं सोचेगा या उन पर दया नहीं करेगा।

भविष्य में किसी गलती के परिणामों से बचने या कम करने का एकमात्र तरीका यह है कि वर्तमान जीवन में जितना संभव हो उतना सुधार करके इससे छुटकारा पाया जाए ताकि बाद में अधिक पीड़ादायक सुधार के लिए कोई गलती न रह जाए। किसी गलती का सुधार जितना अधिक समय तक टाला जाएगा, भविष्य में उसके परिणाम उतने ही अधिक कष्टदायक एवं कठोर होंगे।

आध्यात्मिक दुनिया में आत्मा की स्थिति और कुछ नहीं बल्कि वह है जो उसने अपने भौतिक जीवन के दौरान अपने लिए तैयार की थी। बाद में, दूसरे अवतार में, उसे नए परीक्षणों से गुज़रकर प्रायश्चित करने और पिछले अवतार में सुधार करने का एक नया अवसर दिया जाता है, जिससे वह अपनी स्वतंत्र इच्छा के आधार पर अधिक या कम हद तक लाभान्वित होता है।

और यदि उसे उनसे लाभ न हो, तो उसे फिर से आरम्भ करना होगा,
हर बार अधिक दुखद परिस्थितियों में। इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि जो लोग पृथ्वी पर बहुत कष्ट सहते हैं उनके पास प्रायश्चित करने के लिए बहुत कुछ होता है, और जो लोग अपनी बुराइयों और निकम्मेपन के बावजूद स्पष्ट सुख का आनंद लेते हैं उनके पास मृत्यु के बाद प्रायश्चित करने के लिए बहुत कुछ होता है। ज्यादा कीमत चुकानी पड़ेगी.

प्रभु का यही मतलब था जब उन्होंने कहा, "धन्य हैं वे, जो पीड़ित हैं, क्योंकि उन्हें शान्ति मिलेगी।" बेशक, भगवान की दया असीम है, लेकिन वह अंधी नहीं है।

जिन दोषियों को क्षमा कर दिया गया है, उन्हें दोषमुक्त नहीं किया गया है और उन्हें अपने गलत कार्यों का परिणाम तब तक भुगतना होगा जब तक वे न्याय से संतुष्ट नहीं हो जाते। हमें अनंत दया का अर्थ समझना चाहिए, कि ईश्वर अपरिवर्तनीय नहीं है, बल्कि ईश्वर हमेशा दोषियों के लिए अच्छाई की ओर लौटने के लिए दरवाजा खुला छोड़ देता है।

चूँकि पीड़ा अस्थायी है और पश्चाताप और पुनर्स्थापन के अधीन है - जो दोनों मानव की स्वतंत्र इच्छा पर निर्भर हैं - यही बात उन दंडों और उपचारों पर भी लागू होती है जो बुराई के घावों को ठीक करने में मदद करते हैं। जिन आत्माओं को दंडित किया जा रहा है, वे गैली गुलामों की तरह नहीं हैं, जिन्हें वर्षों की कड़ी मेहनत की सजा सुनाई गई है, बल्कि वे अस्पताल में भर्ती मरीजों की तरह हैं,

जो बिना किसी गलती के बीमारियों से पीड़ित हैं और जिन्हें अब अंततः ठीक होने की उम्मीद है। इलाज के जरूरी साधन उठाने पड़ेंगे.

जब वे एक चिकित्सक के नुस्खों का ठीक से पालन करते हैं जो उनकी सावधानीपूर्वक निगरानी करता है तो वे अधिक तेजी से ठीक हो जाते हैं। यदि उनकी गलती के कारण उनकी तकलीफ बढ़ती है तो इसके लिए डॉक्टर जिम्मेदार नहीं है। आत्मिक जीवन के दौरान आत्माओं द्वारा अनुभव किए गए कष्टों में उनके भौतिक जीवन के कष्ट भी शामिल हैं: मानवीय अपूर्णताओं के परिणाम, उनके जुनून, उनकी क्षमताओं का दुरुपयोग, और वर्तमान और पिछले गलत कार्यों का प्रायश्चित। अपने भौतिक जीवन के दौरान आत्माएं अपने पिछले जीवन की बुराइयों को सुधारती हैं और अपने आत्मिक जीवन के दौरान किए गए संकल्पों को क्रियान्वित करती हैं।

यह उन कष्टों और उतार-चढ़ावों की व्याख्या करता है जो पहली नज़र में अकारण प्रतीत होते हैं। फिर भी, वे उचित हैं, क्योंकि वे अतीत में निर्धारित थे और पूर्णता की ओर हमारे मार्ग की सेवा करते हैं। यह अक्सर पूछा जाता है कि क्या ईश्वर अपने प्राणियों के प्रति अधिक प्रेम नहीं दिखाते यदि उन्हें अचूक बनाया गया होता और इसलिए वे अपूर्णता में निहित दोषों से मुक्त हो जाते।

ऐसा होने के लिए, ईश्वर को पूर्ण प्राणियों का निर्माण करना होगा जिन्हें ज्ञान या नैतिकता में कुछ भी हासिल करने की आवश्यकता नहीं होगी। निःसंदेह, ईश्वर ऐसा कर सकता था, लेकिन यदि नहीं, तो इसका अर्थ यह है कि ईश्वरीय ज्ञान के द्वारा, ईश्वर प्रगति को एक सामान्य नियम का हिस्सा बनाना चाहता था।

मनुष्य अपूर्ण है, और इस प्रकार उतार-चढ़ाव के अधीन है जो अधिक दर्दनाक या कम दर्दनाक है, और चूंकि चीजें ऐसी ही हैं, तो बेहतर होगा कि हम इसे स्वीकार कर लें। यह विश्वास करना कि ईश्वर न तो अच्छा है और न ही न्यायपूर्ण है, ईश्वर के प्रति असंवेदनशील विद्रोह होगा। यह सच्चा अन्याय होता यदि ईश्वर ने विशेषाधिकार प्राप्त प्राणियों को बनाया होता जो दूसरों की तुलना में अधिक इष्ट थे, बिना प्रयास के उस खुशी का आनंद ले रहे थे जिसे अन्य लोग केवल दर्द के माध्यम से प्राप्त कर सकते थे या बिल्कुल नहीं।

ईश्वरीय न्याय पूर्ण समानता में स्पष्ट है जो आत्माओं के निर्माण की अध्यक्षता करता है। उन सभी का प्रारंभिक बिंदु एक ही है, और कोई भी अपनी रचना में दूसरों से बेहतर होने के कारण प्रतिष्ठित नहीं है। ऐसा कोई नहीं है जिसकी विकासवादी प्रगति अपवाद द्वारा आसान हो गई हो, और अन्य सभी की तरह,

जो अंततः लक्ष्य तक पहुंचते हैं उन्हें आदिमता और संबंधित परीक्षणों के चरणों से गुजरना होगा।

ऐसा कहा जा रहा है कि, क्या हर किसी को दी गई कार्रवाई की स्वतंत्रता से अधिक कुछ भी उचित है? ख़ुशी का रास्ता सभी के लिए खुला है और इसे प्राप्त करने के लिए सभी की परिस्थितियाँ समान हैं। कानून सभी के विवेक में स्थापित किया गया है और सभी को सिखाया जाता है। ईश्वर पक्षपात नहीं करता बल्कि खुशी को परिश्रम का प्रतिफल बनाता है, ताकि हर आत्मा को वह मिले जिसके वह हकदार है।

सभी अपनी उन्नति के लिए श्रम करने या कुछ न करने के लिए स्वतंत्र हैं। जो लोग पर्याप्त रूप से और तत्परता से परिश्रम करते हैं उन्हें शीघ्र ही पुरस्कार मिलता है, लेकिन जो लोग मार्ग से भटक जाते हैं या अपना समय बर्बाद करते हैं उनके आगमन में देरी होती है और इसके लिए केवल वे ही दोषी होते हैं। अच्छाई और बुराई मनमानी और मनमौजी हैं। चूँकि मनुष्य स्वतंत्र हैं, वे अंततः एक या दूसरे रास्ते पर नहीं जाते।

अपूर्ण आत्माओं को मिलने वाली सजा के प्रकार और डिग्री में विविधता के बावजूद, भविष्य के जीवन की दंड संहिता को इन तीन सिद्धांतों में संक्षेपित किया जा सकता है: पीड़ा अपूर्णता में अंतर्निहित है। प्रत्येक अपूर्णता और उसके परिणामस्वरूप होने वाला प्रत्येक गलत कार्य स्वाभाविक और अपरिहार्य परिणामों में अपनी सजा लाता है।

इसलिए अति से बीमारी आती है, और हर गलत काम या व्यक्ति के लिए किसी विशेष प्रकार की निंदा के बिना आलस्य से ऊब आती है। चूँकि सभी लोग अपनी इच्छानुसार स्वयं को अपनी अपूर्णताओं से मुक्त कर सकते हैं, वे अपने अंदर उत्पन्न बुराइयों को आसानी से दूर कर सकते हैं और अपनी भविष्य की खुशियाँ सुनिश्चित कर सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति का न्याय उसके कर्मों के अनुसार किया जाएगा, स्वर्ग में भी और पृथ्वी पर भी - ऐसा ईश्वरीय न्याय का नियम है।

## अध्यात्मवाद के अनुसार देवदूत

इसमें कोई संदेह नहीं है कि ऐसे प्राणी हैं जो देवदूतों के सभी गुणों से संपन्न हैं। इस बिंदु पर अध्यात्मवादी रहस्योद्घाटन सभी संस्कृतियों की मान्यताओं की

पुष्टि करता है और हमें ऐसे प्राणियों की प्रकृति और उत्पत्ति दोनों को जानने में सक्षम बनाता है।

आत्माओं या आत्माओं को सरल और अज्ञानी बनाया गया है, अर्थात, अच्छे और बुरे के ज्ञान या जागरूकता के बिना, लेकिन वे श्रम के माध्यम से वह सब प्राप्त करने में सक्षम हैं जो उनके पास नहीं है। लक्ष्य, जो पूर्णता है, सभी के लिए समान है। वे इसे किस गति से हासिल करते हैं यह उनकी स्वतंत्र इच्छा और उनके स्वयं के प्रयासों पर निर्भर करता है। हर किसी को समान स्तर तक आगे बढ़ना होगा और समान कार्य पूरा करना होगा।

ईश्वर किसी पर दूसरों की तुलना में कोई भारी या हल्की ज़िम्मेदारी नहीं डालता, क्योंकि ईश्वर न्यायकारी है, और चूँकि वे सभी ईश्वर की संतान हैं, इसलिए कोई पसंदीदा नहीं है। परमेश्वर ने उन से कहा, यह वह नियम है, जिस में तुम्हारे आचरण के नियम सम्मिलित होने चाहिए; यह नियम आपको आपके लक्ष्य तक ले जाएगा;

इसके अनुसार सब कुछ अच्छा है; इसके विपरीत सब कुछ बुरा है. आपको इस कानून का पालन करने या तोड़ने की पूरी स्वतंत्रता है, और इस प्रकार आप अपने भाग्य के मध्यस्थ स्वयं हैं। नतीजतन, भगवान ने बुराई नहीं बनाई। सभी दैवीय नियम अच्छे के लिए हैं, और यह मनुष्य ही थे जिन्होंने उनका उल्लंघन करके बुराई पैदा की।

यदि उन्होंने ईमानदारी से उनका पालन किया होता तो वे कभी भी नैतिक पथ से विचलित नहीं होते। हालाँकि, आत्मा अपने अस्तित्व के पहले चरण में एक बच्चे की तरह है, जिसमें अनुभव की कमी है, और इसलिए गलती हो सकती है। ईश्वर उसे सीधे अनुभव नहीं देता, बल्कि उसे प्राप्त करने का साधन देता है: बुराई के रास्ते पर प्रत्येक गलत कदम आत्मा के लिए देरी है, जो परिणाम भुगतने में, अपने खर्च पर सीखता है कि उसे क्या नहीं करना चाहिए।

इस तरह, यह धीरे-धीरे विकसित होता है, खुद को पूर्ण करता है, और आत्मा पदानुक्रम में आगे बढ़ता है44 जब तक यह एक शुद्ध आत्मा या देवदूत की स्थिति तक नहीं पहुंच जाता। देवदूत इस प्रकार मानव आत्माएं हैं जिन्होंने पूर्णता की वह डिग्री प्राप्त कर ली है जिसे प्राणी प्राप्त करने में सक्षम हैं, और वादा किए गए आनंद का पूरी तरह से आनंद ले रहे हैं।

हालाँकि, उच्चतम स्तर तक पहुँचने से पहले, वे उस ख़ुशी का आनंद लेते हैं जो उनकी उन्नति से संबंधित होती है; उनकी ख़ुशी आलस्य में नहीं बल्कि उन

कार्यों में है जो भगवान ने प्रसन्न होकर उन्हें सौंपा है। ऐसे बिजनेस को तरक्की का जरिया माना जाता है।

मनुष्य पृथ्वी तक ही सीमित नहीं हैं: वे अंतरिक्ष में घूमते हैं और अनगिनत दुनिया में निवास करते हैं; वे एक बार ऐसी दुनिया में रहते थे जो पहले ही गायब हो चुकी है और वे ऐसी दुनिया में निवास करेंगे जो अभी तक बनाई नहीं गई है। भगवान ने हमेशा के लिए बनाया है और ऐसा करना कभी बंद नहीं किया है।

पृथ्वी के अस्तित्व में आने से बहुत पहले, और जितना हम कभी कल्पना भी नहीं कर सकते, उससे भी बहुत पहले, अन्य दुनियाएँ थीं जिनमें अवतरित आत्माएँ हमारे जैसी हाल ही में बनी आत्माओं के समान चरणों से गुज़री थीं। और जो हमारे निर्माता के हाथों से मुक्त होने से पहले ही अपने गंतव्य तक पहुंच चुके थे।

अनंत काल से, शुद्ध आत्माएं या देवदूत रहे हैं, लेकिन चूंकि उनका मानव अस्तित्व अनंत अतीत में खो गया है, हम मानते हैं कि वे हमेशा देवदूत रहे हैं। सृष्टि की एकता का महान नियम हमें यही बताता है। ईश्वर कभी भी निष्क्रिय नहीं रहा है और उसके पास हमेशा शुद्ध, अनुभवी और प्रबुद्ध आत्माएं रही हैं जो दिव्य आदेशों को प्रसारित करती हैं और ब्रह्मांड के सभी हिस्सों को निर्देशित करती हैं, पूरी दुनिया के शासन से लेकर छोटी-छोटी चीजों तक।

परिणामस्वरूप, ईश्वर को प्रगति के कर्तव्य से मुक्त विशेषाधिकार प्राप्त प्राणियों को बनाने की आवश्यकता नहीं पड़ी। प्राचीन और नवीन सभी ने संघर्ष और अपनी योग्यता के माध्यम से अपना स्थान हासिल किया है। अंततः, हर कोई अपने कर्मों की संतान है। इस प्रकार ईश्वर का सर्वोच्च न्याय समान रूप से पूरा होता है।

# राक्षस

## राक्षसों में विश्वास की उत्पत्ति • अध्यात्मवाद के अनुसार राक्षस

1. समय के साथ, राक्षसों ने विभिन्न धर्मशास्त्रों में एक प्रमुख भूमिका निभाई है। हालाँकि उन्हें मुख्यधारा की सोच से हटा दिया गया है, लेकिन आज भी उन्हें जो महत्व दिया जाता है, वह इस मुद्दे को एक निश्चित गंभीरता देता है क्योंकि

यह धार्मिक विश्वास की नींव को संबोधित करता है। परिणामस्वरूप, हमारे लिए इसके सभी पहलुओं की जांच करना उचित है। श्रेष्ठ शक्ति में विश्वास मनुष्य में जन्मजात होता है।

हम इसे विभिन्न रूपों में और विश्व के इतिहास में पाते हैं। हालाँकि, यदि आज - जिस बौद्धिक परिष्कार तक हम पहुँच चुके हैं - उसे देखते हुए इस शक्ति की प्रकृति और विशेषताओं के बारे में अभी भी बहुत चर्चा होती है, तो मानव जाति के प्रारंभिक चरण में इसके बारे में लोगों के विचार कितने अधिक अपूर्ण रहे होंगे!

प्रकृति की सुंदरता के सामने आश्चर्यचकित होकर, सृष्टिकर्ता की अच्छाई पर आश्चर्यचकित होकर आदिम लोगों की मासूमियत का चित्रण निस्संदेह बहुत काव्यात्मक है लेकिन वास्तविकता से बहुत दूर है। वस्तुतः मनुष्य जितना आदिम अवस्था के निकट आता है, वह उतना ही अधिक प्रवृत्तियों से प्रभावित होता है, जैसा कि आज भी विभिन्न बर्बर एवं आदिम संस्कृतियों में देखा जा सकता है।

जिस चीज़ में वे सबसे अधिक व्यस्त रहते हैं - जिस चीज़ में वे विशेष रूप से व्यस्त रहते हैं - वह है उनकी भौतिक आवश्यकताओं की संतुष्टि, क्योंकि वास्तव में उनके पास और कुछ नहीं है। वह भावना जो मनुष्य को शुद्ध मानसिक सुख की ओर ले जा सकती है, धीरे-धीरे ही विकसित होती है।

आत्मा मानव शरीर की तरह ही अपने बचपन, किशोरावस्था और वयस्कता से गुजरती है, लेकिन उस परिपक्वता को प्राप्त करने के लिए जो उसे विशुद्ध रूप से अमूर्त चीजों को समझने में सक्षम बनाएगी, आत्मा को अभी भी मानव रूप में विकसित होना होगा। ! उसे अभी भी कई जन्मों से गुजरना होगा! अधिक आदिम युगों की ओर देखे बिना, हमें केवल ग्रामीण आबादी को देखने की जरूरत है और सूर्योदय, तारों से भरे आकाश, पक्षियों की चहचहाहट, लहरों के टकराने या घास के मैदानों के फूलों की चमक पर उनके भीतर जागने वाले आश्चर्य पर ध्यान देना चाहिए। . भावनाओं की जांच होनी चाहिए.

ऐसे लोगों के लिए, सूरज आदतन उगता है, और जब तक वह फसलों को बिना जलाए पकाने के लिए पर्याप्त गर्मी प्रदान करता है, वे बस यही उम्मीद करते हैं। वे यह जानने के लिए आकाश की ओर देखते हैं कि मौसम अच्छा है या ख़राब, और पक्षी गाते हैं या नहीं, यह तब तक महत्वहीन है जब तक वे अपने बोए हुए बीज खाते हैं।

वे कोयल के गाने की अपेक्षा मुर्गी की चहचहाहट और सुअर की गुर्राहट को अधिक पसंद करते हैं। वे क्रिस्टलीय या कीचड़युक्त जलधाराओं से जो चाहते हैं वह यह है कि वे न तो सूखें और न ही बाढ़ें; वे अपने खेतों से फूलों वाली या बिना फूलों वाली अच्छी घास पैदा करते हैं।

वे बस यही चाहते हैं, और इससे भी अधिक, यह वह सब कुछ है जो वे प्रकृति के बारे में समझते हैं, और वे पहले से ही आदिम मनुष्यों से बहुत दूर हैं!45 3. यदि हम आदिम मनुष्यों को देखें, तो हम देखेंगे कि किसी को आश्चर्य होगा कि वे इसे पूरा करने में कितने व्यस्त थे उनकी भौतिक ज़रूरतें; जो कुछ भी उनकी सहायता या हानि कर सकता था वह उनके लिए अच्छा और बुरा था।

वे एक अतिरिक्त-मानवीय शक्ति में विश्वास करते थे, और क्योंकि शारीरिक क्षति ही उन पर सबसे अधिक प्रभाव डालती थी, इसलिए उन्होंने इसका श्रेय इस शक्ति को दिया, हालाँकि उन्हें इस बात का बहुत अस्पष्ट विचार था कि यह शक्ति वास्तव में क्या थी। और चूँकि वे दृश्य और मूर्त दुनिया के बाहर किसी भी चीज़ की कल्पना नहीं कर सकते थे, उन्होंने कल्पना की कि यह शक्ति उन प्राणियों और चीज़ों में निवास करती है जो उनके लिए हानिकारक हैं।

इस प्रकार खतरनाक जानवर इसके प्राकृतिक और प्रत्यक्ष प्रतिनिधि थे। इसी तरह, उन्होंने उपयोगी चीज़ों में अच्छाई की पहचान देखी, जिससे कुछ जानवरों, पौधों और यहां तक कि निर्जीव वस्तुओं की भी पूजा होने लगी। हालाँकि, मनुष्य आमतौर पर अच्छाई की तुलना में बुराई के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं, इसलिए जो कुछ भी अच्छा था वह उन्हें स्वाभाविक लगता था, जबकि जो कुछ भी बुरा था उसका उन पर अधिक प्रभाव पड़ता था।

इस कारण से, आदिम पूजा में समारोह हमेशा एक हानिकारक शक्ति के सम्मान में अधिक होते थे: भय ने कृतज्ञता को दबा दिया। लंबे समय तक, मनुष्य केवल भौतिक दृष्टिकोण से ही अच्छाई और बुराई को समझता था; केवल बाद में अच्छे और बुरे की नैतिक भावनाओं ने मनुष्य की बुद्धि की प्रगति का संकेत दिया, जिससे उसे आध्यात्मिकता की आशा करने और यह समझने की अनुमति मिली कि एक अतिरिक्त-मानवीय शक्ति दृश्यमान दुनिया से परे है, भौतिक चीजों में नहीं। इस तथ्य को निश्चित रूप से कुछ चुनिंदा दिमागों ने समझा, जो एक निश्चित सीमा से आगे नहीं जा सकते थे।

चूँकि अच्छाई और बुराई के बीच निरंतर संघर्ष होता था, जिसमें बाद वाली अक्सर पहले पर विजय पाती थी, और चूँकि कोई भी तर्कसंगत रूप से विश्वास नहीं कर सकता था कि बुराई एक परोपकारी शक्ति से उत्पन्न हो सकती है,

इसलिए यह निष्कर्ष निकाला गया कि ऐसा कहा गया था कि दो प्रतिद्वंद्वी शक्तियाँ नियंत्रण कर रही थीं दुनिया।

इससे दो सिद्धांतों का सिद्धांत उत्पन्न हुआ: अच्छाई और बुराई, जो उस समय एक तार्किक सिद्धांत था जब मनुष्य अभी भी किसी अन्य की कल्पना करने और सर्वोच्च प्राणी की प्रकृति को समझने में असमर्थ थे। परिणामस्वरूप, वे यह कैसे समझ पाए कि बुराई एक क्षणभंगुर अवस्था से अधिक कुछ नहीं है जहाँ से अच्छाई उत्पन्न हो सकती है, और जो बीमारियाँ उन्हें पीड़ित करती हैं वे उन्हें खुशी की ओर ले जा सकती हैं और उनके विकास में सहायता कर सकती हैं?

उसके नैतिक क्षितिज की सीमाएँ उसे वर्तमान जीवन से परे देखने की अनुमति नहीं देती हैं - न तो अतीत और न ही भविष्य; इसलिए, वे यह नहीं समझ पाए कि वे पहले से ही व्यक्तिगत रूप से विकसित हो चुके हैं, या कि वे और विकसित होंगे, इस बात को तो बिल्कुल भी नहीं समझ पाए कि जीवन के उतार-चढ़ाव उनके भीतर रहने वाली आत्मा की खामियों का परिणाम थे। थे, और जो पहले से मौजूद है और शरीर में जीवित रहता है, वह कई जन्मों तक खुद को शुद्ध करता है जब तक कि वह अंततः पूर्णता तक नहीं पहुंच जाता।

यह समझने के लिए कि बुराई का परिणाम अच्छाई में कैसे हो सकता है, किसी को केवल एक नहीं बल्कि कई अस्तित्वों को ध्यान में रखना होगा। उन्हें एकता के रूप में माना जाना चाहिए, क्योंकि तभी सही कारण और उनके प्रभाव स्पष्ट होते हैं। 5. अच्छाई और बुराई का दोहरा सिद्धांत कई शताब्दियों तक और विभिन्न नामों के तहत सभी धार्मिक मान्यताओं का आधार था।

हम इसे ओहुरा मज़्दा और अहरिमन में फारसियों के बीच और यहोवा और शैतान में इब्रानियों के बीच देखते हैं। हालाँकि, जिस प्रकार प्रत्येक संप्रभु के पास अपने मंत्री होने चाहिए, उसी प्रकार सभी धर्म आम तौर पर द्वितीयक शक्तियों - अच्छी या बुरी आत्माओं - में विश्वास करते हैं। बुतपरस्तों ने उन्हें "देवताओं" के सामान्य लेबल के तहत असंख्य व्यक्तित्वों के रूप में दर्शाया, और उन्हें अच्छे और बुरे, पाप और पुण्य के लिए विशेष जिम्मेदार ठहराया।

ईसाइयों और मुसलमानों को हिब्रू लोगों से देवदूत और राक्षस विरासत में मिले। परिणामस्वरूप, राक्षसों के सिद्धांत की उत्पत्ति अच्छे और बुरे के दो सिद्धांतों में प्राचीन विश्वास से हुई है। यहां हम इसे केवल ईसाई दृष्टिकोण से जांचेंगे और देखेंगे कि क्या यह आजकल देवत्व के गुणों के बारे में हमारे पास मौजूद अधिक सटीक विचारों के अनुरूप है।

ये गुण सभी धार्मिक सिद्धांतों के लिए प्रारंभिक बिंदु, आधार हैं। हठधर्मिता, पंथ, समारोह, प्रथाएं और नैतिकता - सब कुछ बुतपरस्ती से लेकर ईसाई धर्म तक ईश्वर के बारे में विचारों की शुद्धता और ऊंचाई की अलग-अलग डिग्री से संबंधित है। यदि ईश्वर का सार हमारे मन के लिए एक रहस्य बना हुआ है, फिर भी हम इसे पहले से बेहतर समझ सकते हैं, तो धर्म हमें तर्कसंगत रूप से सिखाता है कि: ईश्वर अद्वितीय, शाश्वत, अपरिवर्तनीय, अभौतिक, सर्वशक्तिमान, सर्वोच्च न्यायपूर्ण और अच्छा है, दिव्य पूर्णता में सभी अनंत हैं .

जैसा कि हमने पहले "द डॉक्ट्रिन ऑफ़ इटरनल पनिशमेंट" में कहा था: "यदि ईश्वर के केवल एक गुण का एक छोटा सा हिस्सा हटा दिया जाए, तो ईश्वर का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा, क्योंकि तब संभवतः एक अधिक परिपूर्ण अस्तित्व अस्तित्व में हो सकता है।" इसलिए ये गुण सभी धर्मों के लिए उनकी पूर्ण पूर्णता के मानदंड हैं, उनके द्वारा सिखाए जाने वाले प्रत्येक सिद्धांत के लिए सत्य के मानदंड हैं।

इसके अलावा, ऐसे किसी भी सिद्धांत के सत्य होने के लिए, उसे ईश्वर की किसी भी पूर्णता का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। आइए देखें कि राक्षसों का सामान्य सिद्धांत इस आवश्यकता को पूरा करता है या नहीं।

## अध्यात्मवाद के अनुसार राक्षस

अध्यात्मवाद के अनुसार, न तो देवदूत और न ही राक्षस अलग-अलग संस्थाएँ हैं; सभी बुद्धिमान प्राणी एक ही स्वभाव से संपन्न हैं। भौतिक शरीर से जुड़े ये प्राणी पृथ्वी और अन्य रहने योग्य क्षेत्रों पर रहने वाली मानव जाति का निर्माण करते हैं। एक बार शरीर से मुक्त होने के बाद, वे आध्यात्मिक दुनिया या अंतरिक्ष में रहने वाली आत्माओं की दुनिया का निर्माण करते हैं।

ईश्वर ने उन्हें पूर्णता के साथ बनाया, पूर्णता को उनका लक्ष्य बनाया और इसका परिणाम खुशी के रूप में सामने आया; हालाँकि, भगवान ने उन्हें पूर्ण नहीं बनाया। भगवान चाहते थे कि वे अपने स्वयं के प्रयासों के माध्यम से पूर्णता तक पहुँचें ताकि योग्यताएँ वास्तव में उनकी अपनी हों। अपनी रचना के क्षण से, प्राणी विकसित होते हैं, चाहे अवतार में हों या आत्मिक अवस्था में।

चरमोत्कर्ष पर पहुँचने के बाद, वे शुद्ध आत्माएँ या देवदूत बन जाते हैं (सामान्य अभिव्यक्ति के अनुसार) ताकि बुद्धिमान प्राणी की भ्रूण अवस्था से लेकर उसकी देवदूत अवस्था तक, एक अटूट श्रृंखला हो जिसमें प्रत्येक कड़ी प्रगति की

एक डिग्री का प्रतिनिधित्व करती है। परिणामस्वरूप, नैतिक एवं बौद्धिक विकास के प्रत्येक स्तर पर आत्माएँ हैं, जिनकी उन्नति के पैमाने पर शीर्ष, मध्य अथवा नीचे के अनुसार स्थिति होती है।

इसलिए, हर स्तर पर अज्ञान और ज्ञान, अच्छाई और बुराई है। सबसे निचले क्रम में वे आत्माएँ हैं जिनका अभी भी बुराई की ओर गहरा झुकाव है और जो इसमें आनंद लेते हैं। यदि कोई चाहे तो इन्हें राक्षस कहा जा सकता है, क्योंकि वे उस शब्द से जुड़ी सभी चालों में सक्षम हैं।

यदि अध्यात्मवाद उन्हें ऐसा नहीं कहता है, तो ऐसा इसलिए है क्योंकि यह मानव जाति से अलग एक ऐसी रचना के विचार की ओर ले जाता है, जो अनिवार्य रूप से दुष्ट प्रकृति वाले प्राणियों से बनी है, जो हमेशा बुराई के प्रति समर्पित है और बुराई से मुक्त है। और कोई प्रगति नहीं कर पाता है.

चर्च सिद्धांत के अनुसार, राक्षसों को अच्छा बनाया गया था, लेकिन उनकी अवज्ञा के कारण वे बुरे बन गए: वे गिरे हुए स्वर्गदूत हैं; वे देवदूत हैं जिन्हें पहले ईश्वर ने तराजू के शीर्ष पर रखा था, लेकिन फिर वे तराजू से गिर गए। अध्यात्मवाद के अनुसार, राक्षस अभी भी अपूर्ण आत्माएं हैं जो पुनर्जन्म के लिए अतिसंवेदनशील हैं और हालांकि वे पैमाने के निचले भाग में स्थित हैं, फिर भी वे इससे ऊपर उठेंगे। जो आत्माएं उदासीनता, लापरवाही, हठ या द्वेष के कारण लंबे समय तक निचले क्रम में रहती हैं, उन्हें अपने दृष्टिकोण का परिणाम भुगतना पड़ता है, और उनकी बुरी आदतें उनके लिए इसे पीछे छोड़ना कठिन बना देती हैं।

हालाँकि, कभी-कभी वे ऐसे दुखद जीवन और उससे जुड़े परिणामों से थक जाते हैं। इस प्रकार वे अपनी स्थिति की तुलना अच्छी आत्माओं से करते हैं और वे समझते हैं कि उनका हित अच्छाई में है; इसलिए, वे खुद को बेहतर बनाने की कोशिश करते हैं, लेकिन अपनी इच्छा से और बिना किसी दबाव के सहज कार्य के माध्यम से।

प्रगति के लिए उनकी योग्यता के कारण वे प्रगति के नियम के अधीन हैं, लेकिन उन्हें उनकी इच्छा के विरुद्ध प्रगति करने के लिए मजबूर नहीं किया जाता है। भगवान उन्हें लगातार संसाधन प्रदान करते हैं; हालाँकि, वे ऐसे साधनों को स्वीकार करने या न करने के लिए स्वतंत्र हैं।

यदि प्रगति अपरिहार्य होती, तो इसमें कोई योग्यता नहीं होती, और ईश्वर चाहता है कि हम सभी अपने कार्यों का परिणाम भुगतें। ईश्वर किसी को

विशेषाधिकार के कारण शीर्ष पर नहीं रखता, बल्कि वह स्थान ईश्वर द्वारा चुना जाता है।

सभी के लिए खुला है और वे केवल अपने प्रयासों की कीमत पर ही इस तक पहुंचते हैं। सबसे उच्च विकसित स्वर्गदूतों ने अन्य सभी की तरह अपनी डिग्रियाँ अर्जित की हैं - सभी के लिए सामान्य मार्ग का अनुसरण करके। शुद्धता की एक निश्चित डिग्री तक पहुंचने के बाद, आत्माओं को उनकी प्रगति के अनुसार मिशन दिए जाते हैं, जो विभिन्न पदानुक्रमों के स्वर्गदूतों को दिए गए सभी कार्यों को करते हैं।

चूँकि ईश्वर ने अनंत काल के लिए रचना की है, इसका मतलब यह है कि सार्वभौमिक शासन की जरूरतों को पूरा करने के लिए स्वर्गदूत अनंत काल तक तत्पर रहे हैं। इस प्रकार प्रगति के नियम का पालन करने वाले बुद्धिमान प्राणियों की एक ही प्रजाति पर्याप्त है।

अंत में, सृष्टि की यह एकता, इस विचार से जुड़ी है कि सभी का प्रारंभिक बिंदु एक ही है और एक ही रास्ता है, साथ ही इस विचार के साथ कि वे आत्म-योग्यता के माध्यम से प्रगति करते हैं, विभिन्न प्रजातियों में मौजूद है। सृष्टि की तुलना में ईश्वर के न्याय के साथ अधिक सुसंगत, प्राकृतिक उपहारों की अलग-अलग डिग्री द्वारा समर्थित, का अर्थ विभिन्न अन्य विशेषाधिकार होंगे। प्रगति के नियम को स्वीकार किए बिना, फिर भी विभिन्न डिग्री के प्राणियों को स्वीकार करते हुए, स्वर्गदूतों, राक्षसों और आत्माओं की प्रकृति के बारे में सामान्य सिद्धांत यह निष्कर्ष निकालता है कि वे विभिन्न विशेष रचनाओं के उत्पाद हैं। इस प्रकार यह ईश्वर को एक पक्षपाती पिता बनाता है, जो केवल अपने कुछ बच्चों को सब कुछ देता है जबकि दूसरों पर सबसे कठोर श्रम थोपता है।

यह आश्चर्य की बात नहीं है कि लंबे समय तक लोगों को ऐसी प्राथमिकताएँ चौंकाने वाली नहीं लगीं, क्योंकि उन्होंने स्वयं ज्येष्ठाधिकार और जन्म के अन्य विशेषाधिकारों की स्थापना करके उन्हें अपने बच्चों के संबंध में नियोजित किया था। क्या ऐसे लोग स्वीकार कर सकते हैं कि वे ईश्वर से भी अधिक गलत थे?

हालाँकि, आज विचारों का दायरा व्यापक हो गया है: लोग न्याय को अधिक स्पष्ट रूप से देखते हैं और उनके पास न्याय के बारे में अधिक सटीक धारणाएँ हैं। वे इसे अपने लिए चाहते हैं, और यदि ऐसा न्याय हमेशा पृथ्वी पर नहीं मिलता है, तो कम से कम वे इसे स्वर्ग में पाने की उम्मीद करते हैं। इसीलिए

प्रत्येक सिद्धांत जिसमें ईश्वरीय न्याय अपनी सबसे बड़ी शुद्धता में प्रदर्शित नहीं होता है, उनके तर्क के प्रतिकूल है।

## देवयान और पितृयान आदि मार्ग

भावी जीवन के बारे में निश्चित होने का मतलब यह नहीं है कि इस जीवन से उस जीवन में जाने को लेकर भी आशंका बनी रहे। ऐसे बहुत से लोग हैं जो मृत्यु से नहीं डरते, लेकिन वे परिवर्तन के क्षण से डरते हैं। उस यात्रा के दौरान हमें कष्ट होता है या नहीं? यही बात उन्हें चिंतित करती है, और अच्छे कारण के साथ, क्योंकि कोई भी उस संक्रमण से भाग नहीं सकता है।

इस दुनिया में रहते हुए कोई भी यात्रा करने से इनकार कर सकता है, लेकिन इस मामले में अमीर और गरीब दोनों को यात्रा करनी होगी, और यदि यात्रा दर्दनाक है तो न तो स्थिति और न ही भाग्य इसकी कड़वाहट को कम कर सकता है।

कुछ मौतों की शांति और दूसरों की पीड़ा की भयानक ऐंठन को देखकर, कोई भी अच्छी तरह से देख सकता है कि उस पल की संवेदनाएं हमेशा एक जैसी नहीं होती हैं। लेकिन इस मामले में हमें कौन बता सकता है? आत्मा के शरीर से अलग होने की भौतिक घटना का वर्णन कौन कर सकता है? उस परम क्षण के प्रभावों के बारे में हमें कौन बता सकता है? इस मामले में विज्ञान और धर्म के पास कहने को कुछ नहीं है। लेकिन वे ऐसा क्यों नहीं करते?

क्योंकि उनमें आत्मा और पदार्थ के बीच संबंध को नियंत्रित करने वाले नियमों की समझ नहीं है; एक आत्मिक जीवन की दहलीज पर रुकता है, जबकि दूसरा भौतिक जीवन की दहलीज पर रुकता है। अध्यात्मवाद दोनों के बीच प्रतिच्छेदन का बिंदु है, और केवल अध्यात्मवाद ही हमें बता सकता है कि संक्रमण कैसे होता है, चाहे आत्मा की प्रकृति के बारे में सकारात्मक विश्वासों के कारण, या उन लोगों द्वारा दी गई जानकारी के कारण जो पहले ही पृथ्वी पर जीवन छोड़ चुके हैं .

आत्मा को शरीर से जोड़ने वाले तरल बंधन को समझना इस और कई अन्य घटनाओं की कुंजी है। 3. तथ्य यह है कि निर्जीव पदार्थ असंवेदनशील है; केवल आत्मा ही दुःख और सुख की अनुभूति का अनुभव करती है। जीवन के दौरान, प्रत्येक शारीरिक व्यवधान का आत्मा पर प्रभाव पड़ता है, जिससे बदले में एक धारणा प्राप्त होती है जो या तो अधिक दर्दनाक होती है या कम दर्दनाक होती है।

कष्ट आत्मा को होता है, शरीर को नहीं। शरीर स्वयं दर्द के एक साधन से अधिक कुछ नहीं है - आत्मा ही वह है जो वास्तव में इसे महसूस करती है।

मृत्यु के समय आत्मा से अलग होने पर, शरीर को इच्छानुसार क्षत-विक्षत किया जा सकता है और उसे कुछ भी महसूस नहीं होगा। आत्मा शरीर से अलग हो जाती है और शरीर के विनाश के किसी भी प्रभाव से प्रभावित नहीं होती है। आत्मा की अपनी संवेदनाएँ हैं लेकिन उनका स्रोत मूर्त पदार्थ में नहीं है। पेरिस्पिरिट आत्मा का तरल आवरण है और मृत्यु से पहले या बाद में इससे अलग नहीं होता है।

दोनों को मिलाकर समग्र कहा जा सकता है, क्योंकि एक के बिना दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती। सांसारिक जीवन के दौरान, पेरिस्पिरिटुअल तरल पदार्थ हर बिंदु पर शरीर में प्रवेश करता है और आत्मा की शारीरिक संवेदनाओं के लिए एक वाहन के रूप में कार्य करता है, जबकि आत्मा पेरिस्पिरिट के माध्यम से शरीर पर कार्य करती है और उसकी गतिविधियों का मार्गदर्शन करती है। क्या यह।

जैविक जीवन का विलुप्त होना आत्मा को शरीर से अलग कर देता है, जिससे उन्हें एक साथ बांधने वाले तरल संबंध टूट जाते हैं; हालाँकि, यह प्रक्रिया कभी भी अचानक नहीं होती है। पेरिस्पिरिटुअल द्रव को सभी अंगों से थोड़ा-थोड़ा करके अलग किया जाता है, ताकि पृथक्करण तभी पूर्ण और अंतिम हो जब पेरिस्पिरिट का एक भी परमाणु शरीर के किसी एक अणु से जुड़ा न हो।

उस पल में आत्मा जो दर्दनाक अनुभूति अनुभव करती है वह सीधे शरीर और पेरिस्पिरिट के बीच संपर्क के बिंदुओं की संख्या से उत्पन्न होती है, और यह बदले में अलगाव की अधिक या कम कठिनाई या धीमी गति को निर्धारित करती है। कहने की जरूरत नहीं कि मौत कम या ज्यादा दर्दनाक होगी, यह परिस्थितियों पर निर्भर करता है। अब हम यह निर्धारित करेंगे कि ऐसी परिस्थितियाँ क्या हो सकती हैं।

सबसे पहले, आइए हम निम्नलिखित चार मामले स्थापित करें, जिन्हें हम चरम स्थितियों के रूप में मान सकते हैं, जिनकी सीमाओं के भीतर अनंत विविधताएँ हैं:
यदि जैविक जीवन के विलुप्त होने के समय पेरिस्पिरिट का विघटन पहले ही पूरा हो चुका है, तो आत्मा को कुछ भी महसूस नहीं होगा; यदि उस समय दोनों तत्वों का मिलन अभी भी पूरी ताकत पर है, तो एक प्रकार का टूटन होगा जिसका आत्मा पर बहुत दर्दनाक प्रभाव पड़ता है;

यदि मिलन कमज़ोर है, तो अलगाव आसान और बिना किसी झटके के होगा; यदि जैविक जीवन की पूर्ण समाप्ति के बाद भी शरीर और पेरिस्पिरिट के बीच संपर्क के कई बिंदु हैं, तो आत्मा शरीर के विघटन के प्रभावों को तब तक महसूस करती रहेगी जब तक कि बंधन पूरी तरह से भंग नहीं हो जाता।

इन तथ्यों के आधार पर, मृत्यु के साथ होने वाली पीड़ा उस चिपकने वाली शक्ति पर निर्भर करेगी जो शरीर को पेरिस्पिरिट से बांधती है। जो कुछ भी इस बल को कमजोर करने में मदद कर सकता है वह विघटन प्रक्रिया की गति को तेज कर देगा, जिससे मार्ग कम कठिन हो जाएगा। अंत में, यदि विघटन बिना किसी कठिनाई के होता है, तो आत्मा को किसी भी अप्रिय संवेदना का अनुभव नहीं होगा।

भौतिक जीवन से आध्यात्मिक जीवन की ओर संक्रमण में, एक और महत्वपूर्ण घटना घटित होती है: भ्रम की स्थिति। इस समय के दौरान, आत्मा एक प्रकार की सुन्नता का अनुभव करती है जो अस्थायी रूप से उसकी क्षमताओं को पंगु बना देती है और कम से कम आंशिक रूप से उसके द्वारा महसूस की जाने वाली संवेदनाओं को बेअसर कर देती है।

आत्मा एक प्रकार की उत्प्रेरक स्थिति में है, क्योंकि उसे मृत्यु की अंतिम सांस के बारे में लगभग कभी भी सचेत रूप से पता नहीं चलता है। हम लगभग कभी भी ना नहीं कहते हैं, क्योंकि ऐसे मामले होते हैं जिनमें आत्मा सचेत रूप से विघटन महसूस कर सकती है, जैसा कि हम शीघ्र ही चर्चा करेंगे। इस प्रकार, मृत्यु के समय भ्रम को सामान्य माना जा सकता है और यह अनिश्चित काल तक, कुछ घंटों से लेकर कई वर्षों तक बना रह सकता है।

जैसे-जैसे आत्मा धीरे-धीरे खुद को मुक्त करती है, वह किसी अपराधबोध से जागने वाले व्यक्ति के समान स्थिति में होती है। गहरी नींद: इसके विचार भ्रमित, अस्पष्ट और अनिश्चित होते हैं; चीजें धुंध से दिखाई देती हैं, लेकिन धीरे-धीरे दृष्टि स्पष्ट हो जाती है और स्मृति लौट आती है।

कुछ आत्माओं के लिए, यह जागृति प्रक्रिया शांतिपूर्ण, आनंददायक अनुभूतियों वाली होती है; हालाँकि दूसरों के लिए यह पूरी तरह से अलग है: आतंक और चिंता से भरा हुआ, एक भयानक दुःस्वप्न का प्रभाव पैदा करता है। इसलिए मृत्यु की अंतिम सांस सबसे दर्दनाक क्षण नहीं है, क्योंकि आत्मा को आमतौर पर इसका एहसास भी नहीं होता है; हालाँकि, आत्मा उस क्षण से पहले मृत्यु के

दौरान शरीर के पदार्थ के विघटन और उसके बाद भ्रम की चिंता से पीड़ित हो सकती है।

हम यह भी कहना चाहेंगे कि यह स्थिति हमेशा नियम नहीं होती है क्योंकि पीड़ा की तीव्रता और अवधि (जैसा कि हमने पहले कहा है) शरीर और आत्मा के बीच घनिष्ठता का प्रत्यक्ष परिणाम है। परिणामस्वरूप, जितनी अधिक घनिष्ठता होगी, उतनी ही अधिक होगी। आत्मा का ही अधिक पृथक्करण। कोशिशें भी उतनी ही कठिन और लंबी होंगी. ऐसे व्यक्ति होते हैं जिनमें संबंध इतना कमजोर होता है कि आत्मा स्वाभाविक रूप से अपने आप अलग हो जाती है; आत्मा शरीर से ऐसे अलग हो जाती है जैसे पका हुआ फल तने से गिर जाता है।

शांतिपूर्ण मृत्यु और शांतिपूर्ण जागृति का मामला भी ऐसा ही है। 8. अलगाव की अधिक या कम कठिनाई का मुख्य कारण आत्मा की नैतिक स्थिति है। शरीर और आत्मा के बीच का संबंध आत्मा और पदार्थ के बीच के लगाव के समानुपाती होता है, जो उन व्यक्तियों में सबसे अधिक स्पष्ट होता है जिनकी व्यस्तता केवल जीवन द्वारा प्रदान किए गए भौतिक सुखों में होती है।

दूसरी ओर, शुद्ध आत्माओं में जो पहले से ही आध्यात्मिक जीवन से पहचाने हुए हैं, ऐसा लगाव लगभग न के बराबर है। और चूँकि अलगाव की धीमी गति और कठिनाई आत्मा की पवित्रता और अभौतिकीकरण की डिग्री का परिणाम है, यह हम पर निर्भर करता है कि हम अलगाव को आसान बनाते हैं या कठिन, सुखद या दर्दनाक।

इसलिए, चाहे सिद्धांत के रूप में या अवलोकन के परिणाम के रूप में, हमें यह जांचना होगा कि मृत्यु का अंतिम क्षण में आत्मा की इंद्रियों पर क्या प्रभाव पड़ता है। वृद्धावस्था या रोग के कारण प्राणशक्ति के नष्ट हो जाने से होने वाली प्राकृतिक मृत्यु में मृत्यु से पहले ही अलगाव हो जाता है। जिन व्यक्तियों की आत्मा अमूर्त हो गई है और जिनके विचार सांसारिक मामलों से अलग हो गए हैं, वास्तविक मृत्यु से पहले अलगाव लगभग पूरा हो गया है।

अर्थात्, भले ही शरीर में अभी भी जैविक जीवन है, आत्मा पहले ही आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश कर चुकी है और शरीर से केवल एक बहुत ही नाजुक डोर से जुड़ी हुई है जो दिल की आखिरी धड़कन के साथ आसानी से टूट जाती है। ऐसे मामले में, आत्मा पहले से ही अपनी स्पष्टता हासिल कर सकती है और सचेत रूप से शरीर से जीवन के विलुप्त होने का गवाह बन सकती है, जिससे वह खुद को मुक्त करने में प्रसन्न होती है।

ऐसी आत्मा के लिए, लगभग कोई भ्रम नहीं है; इसके बजाय, यह अवस्था शांतिपूर्ण नींद के एक क्षण से अधिक नहीं रहती। यह आशा और धन्यता की एक अवर्णनीय भावना के साथ जागृत होता है। हालाँकि, भौतिकवादी और कामुक व्यक्तियों में, जो आत्मा की तुलना में शरीर के अनुसार अधिक जीते हैं, और जिनके लिए आध्यात्मिक जीवन का कोई अर्थ नहीं है - यह उनकी वास्तविकता का हिस्सा भी नहीं रहा है - सब कुछ भौतिक बंधनों को मजबूत करने में है . योगदान देता है.

जीवन के दौरान उन्हें ढीला करने के लिए कुछ भी नहीं किया गया है, इसलिए जब मृत्यु आती है, तो अंततः अलगाव होता है, हालांकि इसके लिए निरंतर प्रयास की आवश्यकता होती है। मृत्यु का दर्द आत्मा के संघर्ष का सूचक है, जो प्रतिरोधी डोर को तोड़ने की कोशिश और शरीर को पकड़ने की कोशिश के बीच झूलता रहता है; फिर भी, एक अप्रतिरोध्य शक्ति आत्मा को अणु-अणु द्वारा हिंसक रूप से तोड़ देती है।

आत्मा भौतिक जीवन से जितना अधिक चिपकती है, वह उससे परे उतना ही कम देखती है। ऐसा महसूस होता है कि जीवन भाग रहा है और वह उसे पकड़ना चाहता है। जो ताकतें उसे बाहर खींच रही हैं उनके सामने झुकने के बजाय, वह अपनी पूरी ताकत से प्रतिरोध करता है और इस तरह संघर्ष को दिनों, हफ्तों और महीनों तक खींच सकता है। इस समय के दौरान, निश्चित रूप से, आत्मा को पूर्ण स्पष्टता का आनंद नहीं मिलता है, क्योंकि भ्रम वास्तव में मृत्यु से बहुत पहले शुरू होता है।

हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं है कि उसे कम पीड़ा होती है, और मानसिक शून्यता की स्थिति जिसमें वह खुद को पाता है और आगे क्या होगा की अनिश्चितता उसकी पीड़ा को बढ़ा देती है। मौत तो आ गयी पर ख़त्म कुछ नहीं; भ्रम जारी है. आत्मा को महसूस होता है कि वह जीवित है, लेकिन वह यह नहीं जानती कि यह जीवन भौतिक है या आध्यात्मिक। यह तब तक संघर्ष करता रहता है जब तक कि पेरिस्पिरिट और शरीर के बीच का अंतिम संबंध टूट न जाए। मृत्यु ने उस रोग को ख़त्म कर दिया है जिससे शरीर पीड़ित था लेकिन उसके परिणामों को नहीं रोका है।

इसलिए जब तक शरीर और पेरिस्पिरिट के बीच संपर्क के बिंदु हैं, तब तक आत्मा ऐसे परिणामों से प्रभावित होती है और उनसे पीड़ित होती है। 11. सबसे भयानक दुर्बलताओं के मामले में भी, अभौतिक आत्मा के लिए स्थिति स्पष्ट रूप से भिन्न होती है। काफी कमजोर हो जाने के कारण, आत्मा को शरीर से बांधने वाले तरल बंधन आसानी से टूट जाते हैं।

इसके अलावा, भविष्य में उसका आत्मविश्वास, जिसे वह मानसिक रूप से और कभी-कभी वास्तव में देखता है, उसे अपनी कमजोरियों को एक परीक्षण और मृत्यु को एक मोक्ष के रूप में देखने में सक्षम बनाता है; इसलिए मानसिक शांति और त्याग उसकी पीड़ा को कम कर देता है। मृत्यु के बाद, जब बंधन तुरंत टूट जाते हैं, तो उसे कोई दर्दनाक प्रतिक्रिया महसूस नहीं होती है। जागने पर, वह स्वतंत्र, जीवित, भारी बोझ से मुक्त और अब दर्द न होने से बहुत खुश महसूस करता है।

हिंसक मृत्यु में स्थिति बिल्कुल वैसी नहीं होती। चूँकि पहले किसी भी आंशिक विघटन के कारण शरीर और पेरिस्पिरिट के बीच अलगाव नहीं हुआ है, पूरी तरह से सक्रिय रहते हुए भी जैविक जीवन अचानक छीन लिया जाता है। पेरिस्पिरिट का पृथक्करण मृत्यु के बाद ही शुरू होता है और ऐसे मामले में, अन्य मामलों की तरह, यह एक बार में नहीं हो सकता है।

आत्मा आश्चर्यचकित है और भ्रमित महसूस करती है, लेकिन यह महसूस करते हुए कि वह अभी भी सोच सकता है, उसे लगता है कि वह अभी भी जीवित है। यह आपकी नई स्थिति की समझ है. भौतिक और आध्यात्मिक जीवन के बीच की इस तरह की मध्यवर्ती स्थिति अध्ययन के लिए सबसे दिलचस्प विषयों में से एक है क्योंकि यह एक आत्मा की अजीब स्थिति को प्रस्तुत करती है जो अपने तरल शरीर को अपना भौतिक शरीर समझती है और जो जैविक जीवन की सभी संवेदनाओं का अनुभव करती है। अनुभव.

ऐसा मामला विभिन्न प्रकार की बारीकियों को प्रदर्शित करता है जो आत्मा के चरित्र, ज्ञान और नैतिक विकास की डिग्री पर निर्भर करता है। यह उन लोगों के लिए केवल थोड़े समय के लिए रहता है जिनकी आत्माएं शुद्ध हो चुकी हैं, क्योंकि अलगाव हमेशा पहले ही शुरू हो जाता है, यहां तक कि सबसे अप्रत्याशित मृत्यु भी इसके पूरा होने में तेजी लाती है। हालाँकि, दूसरों के लिए, यह वर्षों तक चल सकता है।

सामान्य मृत्यु के मामलों में भी यह स्थिति अक्सर उत्पन्न होती है। कुछ लोगों के लिए यह कुछ भी दर्दनाक नहीं है - आत्मा के नैतिक गुणों पर निर्भर करता है - जबकि दूसरों के लिए यह एक भयानक स्थिति है। आत्महत्या के मामलों में, विशेष रूप से, यह स्थिति सबसे अधिक कष्टकारी होती है: शरीर अपने सभी तंतुओं द्वारा पेरिस्पिरिट से जुड़ा रहता है, और इस प्रकार शरीर की सभी ऐंठन आत्मा में प्रतिध्वनित होती है और वह भयानक पीड़ा से गुजरती है।

मृत्यु के समय आत्मा की स्थिति को इस प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है: पेरिस्पिरिट का पृथक्करण जितनी धीमी गति से होता है, आत्मा को उतना ही अधिक कष्ट होता है। अलगाव की गति आत्मा के नैतिक विकास की डिग्री पर निर्भर करती है। स्पष्ट विवेक वाली अमूर्त आत्मा के लिए, मृत्यु केवल एक अस्थायी नींद है, जो पीड़ा से मुक्त है, और जागृति बहुत कोमल है।

लोगों को अपनी बुरी प्रवृत्तियों को नियंत्रित करके और अपने जुनून पर काबू पाकर खुद को शुद्ध करने के लिए हर संभव प्रयास करने के लिए, उन्हें भविष्य के लिए ऐसा करने के लाभों को समझना चाहिए। भविष्य के जीवन को पहचानने, उसकी आकांक्षा करने और उसे सांसारिक जीवन से अधिक प्राथमिकता देने के लिए, लोगों के लिए केवल यह विश्वास करना पर्याप्त नहीं है कि इसका अस्तित्व है। ये बात उन्हें समझनी चाहिए.

उन्हें जीवन को ऐसे दृष्टिकोण से देखना चाहिए जो तर्क को संतुष्ट करता हो और जो तर्क और सामान्य ज्ञान से पूरी तरह सहमत हो, और उन्हें ईश्वर की महिमा, अच्छाई और न्याय का अंदाजा होना चाहिए। सभी दार्शनिक सिद्धांतों में से, अध्यात्मवाद वह है जिसका इस संबंध में सबसे शक्तिशाली प्रभाव है, अपने अटल विश्वास के कारण।

प्रामाणिक अध्यात्मवादी केवल विश्वास करने से संतुष्ट नहीं होते हैं: वे विश्वास करते हैं क्योंकि वे समझते हैं, और वे अपने तर्क का उपयोग करके समझते हैं। इस प्रकार भावी जीवन उनकी आंखों के सामने निरंतर घटित होने वाली एक वास्तविकता है। कहा जा सकता है कि वे उस जीवन को हर पल देखते और छूते हैं। उसके मन में संदेह नहीं आ सकता.

यह सीमित भौतिक जीवन आध्यात्मिक जीवन के सामने लुप्त हो जाता है, जो स्वयं को सच्चे जीवन के रूप में प्रस्तुत करता है। इसीलिए वे रास्ते में घटित होने वाली घटनाओं को कम महत्व देते हैं और जीवन के सभी उतार-चढ़ावों का सामना उनके कारणों और उपयोगिता को समझकर त्यागपत्र देकर करते हैं।

अध्यात्मवादी अदृश्य जगत के साथ जो सीधा संबंध बनाए रखते हैं, वह उनकी आत्मा को उन्नत करता है। उनकी आत्मा को पदार्थ से जोड़ने वाले तरल बंधन कमजोर हो जाते हैं, और इस प्रकार एक प्रारंभिक, आंशिक अलगाव होता है जो इस जीवन से अगले जीवन तक जाने की सुविधा प्रदान करता है। भ्रम की स्थिति संक्रमण से अविभाज्य है, लेकिन यह अल्पकालिक है, क्योंकि जैसे ही ऐसी आत्मा दहलीज को पार करती है, वह खुद को पहचानती है और महसूस करती है कि कुछ भी अजीब नहीं है; वह नये हालात को समझती है.

निःसंदेह, इस परिणाम पर पहुंचने के लिए अध्यात्मवाद स्पष्ट रूप से अपरिहार्य नहीं है, न ही यह आत्मा की मुक्ति सुनिश्चित करने का एकमात्र साधन होने का दावा करता है। फिर भी, यह अपने द्वारा दिए गए ज्ञान, जिन भावनाओं को प्रेरित करता है और आत्मा को जो स्वभाव प्रदान करता है, उसके माध्यम से यह इसे सुविधाजनक बनाता है, जिससे वह खुद को बेहतर बनाने की आवश्यकता को समझने में सक्षम हो जाती है।

इसके अलावा, यह प्रत्येक व्यक्ति को अपने सांसारिक आवरण को पीछे छोड़ते समय अन्य आत्माओं से खुद को अलग करने और प्रार्थना और आह्वान के माध्यम से भ्रम की स्थिति को कम करने का साधन देता है। सच्ची प्रार्थना आध्यात्मिक चुंबकत्व का एक रूप है जो परिधीय द्रव को अधिक तेजी से घोलती है।

समझदारी और समझदारी से निर्देशित आह्वान, परोपकार और प्रोत्साहन के शब्दों का उपयोग करते हुए, दिवंगत आत्मा को उसकी घबराहट से बाहर निकालने में मदद करता है और उसे खुद को और अधिक तेज़ी से पहचानने में सक्षम बनाता है। यदि यह एक पीड़ित आत्मा है, तो आह्वान पश्चाताप को प्रेरित कर सकता है, जो उसकी पीड़ा को कम करने का एकमात्र साधन है।

# प्रसन्न आत्माएँ

## Mr. sanson

पेरिस स्पिरिटिस्ट सोसाइटी के पूर्व सदस्य श्री सैन्सन की एक वर्ष तक क्रूर पीड़ा सहने के बाद 21 अप्रैल, 1862 को मृत्यु हो गई।

अपने अंत की आशा करते हुए, उन्होंने सोसायटी के अध्यक्ष को एक पत्र भेजा जिसमें निम्नलिखित अंश थे:

“मेरे शरीर से मेरी आत्मा के अचानक अलग होने की स्थिति में, मैं आपको लगभग एक साल पहले किए गए अनुरोध की याद दिलाना चाहूंगा। कृपया जितनी जल्दी हो सके और जितनी बार आपके लिए सुविधाजनक हो मेरी आत्मा

को जगाएं, ताकि, पृथ्वी पर रहने के दौरान हमारे समाज का एक बेकार सदस्य होने के नाते, मैं कब्र से परे कम से कम कुछ काम में आ सकूं, ताकि आप जागृति के माध्यम से, चरण दर चरण, उन विभिन्न स्थितियों का अध्ययन करने के साधन खोजें, जिन्हें आमतौर पर मृत्यु कहा जाता है, लेकिन जो हम अध्यात्मवादियों के लिए केवल ईश्वर की अभेद्य योजनाओं के अनुसार एक परिवर्तन है, हालांकि हमेशा उनके उद्देश्यों के अनुसार। के लिए उपयोगी है.

"इस अधिकार और आपसे अनुरोध के अलावा कि आप मुझे ऐसी 'आध्यात्मिक शव-परीक्षा' का सम्मान दें - कि एक आत्मा के रूप में मेरी थोड़ी सी भी प्रगति शायद निरर्थक होगी, उस स्थिति में आपका विवेक स्वाभाविक रूप से आपको बताएगा कि आगे नहीं जाने दूंगा प्रयोगों की एक निश्चित संख्या से आगे बढ़ें - मैं आपसे व्यक्तिगत रूप से, साथ ही अपने सभी सहयोगियों से, सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करने का साहस करूंगा कि वे अच्छी आत्माओं को अपनी दयालु सलाह के साथ मेरी सहायता करने की अनुमति दें।

विशेष रूप से, मैं हमारे आध्यात्मिक अध्यक्ष, सेंट लुइस से एक नए अवतार की पसंद और समय के बारे में मार्गदर्शन करने के लिए कहूंगा, एक ऐसा विचार जिसे लेकर मैं हाल ही में बहुत व्यस्त रहा हूं। मुझे अपनी आध्यात्मिक क्षमताओं के बारे में गलतफहमियां होने का डर है और मैं ईश्वर से भौतिक जीवन के लिए बहुत जल्दी और अहंकार से प्रार्थना कर रहा हूं जिसमें मुझे दिव्य अच्छाई की गारंटी नहीं मिलेगी, और जो मेरी उन्नति के लिए काम करने के बजाय, मुझे सांसारिक स्तर पर ले जाएगा या मेरे जीवन का विस्तार करेगा। यदि मैं असफल हो गया तो कहीं और रहना।

उनके निधन के बाद उन्हें जल्द से जल्द याद करने की उनकी इच्छा को पूरा करने के लिए, हम सोसायटी के कुछ सदस्यों के साथ शवगृह में गए, और उनके शरीर की उपस्थिति में और उनके दफनाने से एक घंटे पहले, हमें निम्नलिखित सूचना दी गई। ऐसा करने में हमारा उद्देश्य दोहरा था: उनकी अंतिम इच्छा को पूरा करना और मृत्यु के तुरंत बाद आत्मा की स्थिति को एक बार फिर से देखना, और यह सब एक ऐसे व्यक्ति के साथ जो बहुत बुद्धिमान, प्रबुद्ध और अध्यात्मवादी सिद्धांतों का गहराई से आश्वस्त था। .

हमारे लिए यह जानना दिलचस्प था कि इस तरह के विश्वासों का उसकी आत्मा की स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ा क्योंकि इसने उसके आत्मिक जीवन के बारे में पहला प्रभाव एकत्र किया। हमारी उम्मीदें निराश नहीं हुईं. पूरी स्पष्टता के साथ, श्री सैन्सन ने अपने परिवर्तन के क्षण का वर्णन किया। वह अपनी मृत्यु और

पुनर्जन्म को देखने में सक्षम था, एक असामान्य परिस्थिति जो उसकी आत्मा के उत्थान के कारण थी।

## धर्मी की मौत

पेरिसियन सोसाइटी में श्री सैनसन द्वारा दिए गए पहले संचार के बाद, एक आत्मा ने उपरोक्त शीर्षक के तहत निम्नलिखित संचार प्रसारित किया:
"जिस मनुष्य के विषय में तुम इस समय चिन्ता कर रहे हो वह धर्मात्मा होकर मरे

यह उनकी मृत्यु थी, यानी आशा से भरी एक शांतिपूर्ण मौत। जैसे दिन स्वाभाविक रूप से भोर के बाद आता है, वैसे ही आत्मा का जीवन बिना किसी परेशानी या रुकावट के अपने सांसारिक जीवन का अनुसरण करता है, और उसकी अंतिम सांस मान्यता और प्रेम के सच्चे भजन में निकलती है। कितने कम लोग हैं जो उस कठिन राह को इस तरह तय करते हैं!

कितने कम लोग हैं जो उसके बाद जीवन की उलझनों और निराशाओं से मुक्त होकर क्षेत्रों की सामंजस्यपूर्ण लय को समझते हैं! जिस प्रकार किसी स्वस्थ व्यक्ति का अंग काट दिया जाता है, लेकिन वह ऐसी संवेदनाओं को झेलता रहता है मानो वह अभी भी अपनी जगह पर हो, उसी प्रकार जो व्यक्ति बिना विश्वास या आशा के मर जाता है, उसकी आत्मा शरीर छोड़ने पर टूट जाती है। वह जाती है और कष्ट भोगती है; इसे स्वयं के प्रति सचेत हुए बिना ही अंतरिक्ष में फेंक दिया जाता है।

"ऐसी परेशान आत्माओं के लिए प्रार्थना करें; उन सभी के लिए प्रार्थना करें जो पीड़ित हैं। दान उन लोगों तक सीमित नहीं है जिन्हें आप देख सकते हैं: यह उन प्राणियों की भी मदद करता है और उन्हें सांत्वना देता है जो आध्यात्मिक दुनिया में रहते हैं। आपने उस आत्मा के अचानक परिवर्तन में इसका मार्मिक प्रमाण देखा, जो इस धर्मी व्यक्ति की कब्र पर आपके द्वारा की गई अध्यात्मवादी प्रार्थनाओं से प्रेरित था।

आपके लिए उनका साक्षात्कार करना उचित है, क्योंकि वह आपको धर्म पथ पर आगे बढ़ने में सक्षम बनाना चाहते हैं। प्यार की कोई सीमा नहीं है। यह पूरे अंतरिक्ष में फैल जाता है, बारी-बारी से दिव्य सांत्वना देता और प्राप्त करता है। ऐसा लगता है कि समुद्र हमारी दृष्टि से परे अनंत तक फैला हुआ है।

क्षितिज पर इसका किनारा आकाश से मिलता हुआ प्रतीत होता है और हमारी आत्मा उन दो विशालताओं के शानदार दृश्य से चकाचौंध हो जाती है। इस प्रकार, प्रेम, जो समुद्र से भी गहरा है और अंतरिक्ष से भी अधिक अनंत है, आप सभी को, जीवित और आत्माओं को, एक ही दान के बंधन में बांधना चाहिए, जिससे क्षणभंगुर और शाश्वत का अद्भुत मिलन हो सके।

## सैमुअल फिलिप

सैमुअल फिलिप शब्द के हर अर्थ में एक महान व्यक्ति थे। कोई भी उसे कोई बुरा काम करते या जानबूझकर किसी के साथ गलत करते हुए नहीं देख सकता था। वह अपने दोस्तों के प्रति पूरी तरह से समर्पित थे, जो हमेशा उनकी सेवा में रहते थे, यहां तक कि अपने निजी हितों की कीमत पर भी। काम, थकान, त्याग - कुछ भी उन्हें उपयोगी होने से नहीं रोकता था; उन्होंने बिना किसी आडंबर के स्वाभाविक रूप से सेवा की और जब भी कोई उन्हें इसका श्रेय देता था तो आश्चर्यचकित रह जाते थे।

उसने कभी भी किसी ऐसे व्यक्ति का बुरा नहीं चाहा जिसने उसे नुकसान पहुँचाया हो; इसके बजाय, उन्होंने उनकी इस तरह सेवा करने की कोशिश की मानो उन्होंने वास्तव में उनके साथ अच्छा किया हो। जब भी उन्हें कृतघ्नता सहनी पड़ती, वे हमसे कहते, "मैं वह व्यक्ति नहीं हूं जिस पर आपको दया करनी चाहिए - वे हैं।"

हालाँकि वह बहुत बुद्धिमान और अत्यधिक ऊर्जा से संपन्न थे, उनका अत्यधिक परिश्रमी जीवन अस्पष्टता और गंभीर परीक्षणों से भरा था। वह उन महान लोगों में से एक थे जो छाया में भी पनपते हैं, जिन्हें दुनिया नहीं पहचानती और जिनकी रोशनी धरती पर नहीं पड़ती। अध्यात्मवाद की समझ के कारण उनका परलोक में दृढ़ विश्वास था और सांसारिक जीवन की बुराइयों का उन्होंने महान त्याग किया था। घटित। एक दर्दनाक बीमारी से पीड़ित होने के बाद, दिसंबर 1862 में 50 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई।

उनके परिवार और दोस्तों ने वास्तव में उनका शोक मनाया और उनकी मृत्यु के बाद से उन्हें कई बार याद किया है। 1. क्या आपको पृथ्वी पर अपने अंतिम कुछ

क्षण स्पष्ट रूप से याद हैं? "बिल्कुल। उनके बारे में मेरी यादें धीरे-धीरे वापस आ गई हैं, हालांकि उस समय मेरे विचार अभी भी भ्रमित थे।"

चूँकि आपके अनुकरणीय जीवन ने हमारी रुचि को इतना अधिक जगाया है, तो क्या आप हमें यह बताने में संकोच नहीं करेंगे, हमारे स्वयं के निर्देश के अनुसार, आप भौतिक जीवन से आध्यात्मिक जीवन में कैसे चले गए, और साथ ही अब आप आध्यात्मिक दुनिया में किस स्थान पर हैं? में हैं? "क्यों नहीं। यह विवरण न केवल आपके लिये बल्कि मेरे लिये भी उपयोगी होगा।

अपने विचारों को धरती पर वापस लाते हुए, तुलना मुझे हमारे निर्माता की अच्छाई की और भी अधिक सराहना करने में सक्षम बनाएगी। "आप जानते हैं कि मेरा जीवन कितना कष्टों से भरा था; हालाँकि, विपरीत परिस्थितियों में भी मुझमें साहस की कमी नहीं थी - भगवान का शुक्र है! और अब मुझे इसके लिए खुद को बधाई देनी चाहिए।

अगर मैं निराशा के आगे हार मान लेता तो मैं कितना कुछ खो देता! मैं यह सोचकर कांप उठता हूं, क्योंकि तब मेरी पीड़ा व्यर्थ हो जाएगी और मुझे सब कुछ फिर से शुरू करना होगा। अरे मेरे दोस्तों! आपको इस सत्य को अवश्य समझना चाहिए, क्योंकि आपकी भविष्य की ख़ुशी इसी में निहित है। नहीं, ऐसी ख़ुशी के लिए कुछ वर्षों का दुःख निश्चित रूप से बहुत ज़्यादा नहीं है। काश आप जानते कि कुछ वर्षों की तुलना अनंत काल से क्या होती है! "यदि आपकी दृष्टि में मेरे पिछले जीवन में वास्तव में कोई योग्यता होती, तो आप उससे पहले के जीवन के बारे में वैसा महसूस नहीं करते।

यह केवल बहुत सारे व्यक्तिगत प्रयासों का परिणाम है कि मैं आज जो कुछ भी हूं वह बन पाया हूं। अपनी पिछली गलतियों के आखिरी निशान मिटाने के लिए, मुझे उन अंतिम परीक्षाओं को सहना पड़ा और मैंने स्वेच्छा से उन्हें स्वीकार कर लिया। अपने संकल्प के बल पर मैंने उन्हें बिना किसी शिकायत के सहन करने की शक्ति प्राप्त कर ली। अब मैं उन सभी परीक्षणों को आशीर्वाद देता हूं। उनके लिए धन्यवाद, मैंने अतीत से अपना नाता तोड़ लिया है और यह केवल एक स्मृति बनकर रह गया है।

मैं अब उस रास्ते पर सच्ची संतुष्टि के साथ विचार कर सकता हूं जिस पर मैंने यात्रा की है। "ओह, जब मैं पृथ्वी पर था तब आपने मुझे कष्ट पहुँचाया, आप मेरे प्रति कठोर और द्वेषपूर्ण थे, आपने मुझे अपमानित किया और पीड़ा दी, आपके बुरे विश्वास ने अक्सर मुझे सबसे कठिन अभावों में डाल दिया, मैं न केवल आपको क्षमा करता हूँ, बल्कि आपका धन्यवाद भी करता हूँ!" मेरे साथ बुरा

करने की इच्छा करते हुए तुम्हें यह भी संदेह न हुआ कि तुम सचमुच इतना अच्छा कर रहे हो।

तो यह सच है कि मैं अब जो खुशी प्राप्त कर रहा हूँ उसका एक बड़ा हिस्सा आपके कारण हूँ, क्योंकि आपने मुझे क्षमा करने, बुराई का बदला अच्छाई से देने का अवसर दिया। भगवान ने मेरे धैर्य की परीक्षा लेने और मुझे सबसे कठिन प्रकार का दान करने में सक्षम बनाने के लिए तुम्हें भेजा है: अपने दुश्मनों से प्यार करना। "कृपया इस विषयांतर से अधीर न हों।

अब मैं अंततः वही बताऊंगा जो आपने मुझसे पूछा था। "हालाँकि मुझे अपनी पिछली बीमारी से बहुत कष्ट हुआ, फिर भी मैं पीड़ा में नहीं मरा। मेरी मौत नींद की तरह थी, बिना किसी संघर्ष या सदमे के। चूँकि मुझे अपने भविष्य के बारे में कोई डर नहीं था, इसलिए मैंने जीवन से चिपके रहने की कोशिश नहीं की और परिणामस्वरूप मुझे अपने अंतिम क्षणों में संघर्ष नहीं करना पड़ा। अलगाव बिना प्रयास, बिना दर्द और मुझे इसका अहसास हुए बिना ही हो गया।

"मुझे नहीं पता कि वह आखिरी नींद कितनी देर तक चली, लेकिन वह संक्षिप्त थी। मेरी जागृति मेरी पिछली स्थिति की तुलना में अधिक शांत थी। मुझे अब कोई दर्द महसूस नहीं हुआ और मैं आनंद से भर गया। मैं उठना चाहता था और इधर-उधर घूमना चाहता था, लेकिन एक प्रकार की हल्की स्तब्धता, जिसमें कुछ भी अप्रिय नहीं था - जिसमें एक विशेष आकर्षण भी था - ने मुझे रोक दिया और मैंने अपनी स्थिति से अवगत हुए बिना, ख़ुशी से अपने आप को उसके हवाले कर दिया। मैंने किया, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं था कि मैंने अभी-अभी पृथ्वी छोड़ी है। मेरे चारों ओर सब कुछ एक सपने जैसा लग रहा था।

मैंने अपनी पत्नी और कुछ दोस्तों को अपने कमरे में घुटनों के बल बैठकर रोते हुए देखा और मैंने खुद से कहा कि उन्होंने स्पष्ट रूप से सोचा था कि मैं मर गया हूँ। मैं उन्हें सुधारना चाहता था लेकिन मैं कुछ भी नहीं बोल सका और इससे मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि मैं सपना देख रहा था। इस विचार की पुष्टि करते हुए मैंने खुद को कई प्रियजनों से घिरा हुआ देखा जो बहुत पहले मर चुके थे, और अन्य जिन्हें मैंने तुरंत नहीं पहचाना, लेकिन जो मुझे देख रहे थे, मेरे जागने का इंतजार कर रहे थे। रह रहा था।

"यह स्थिति स्पष्टता और उनींदापन के क्षणों से जुड़ी थी, जिसके दौरान मैं बारी-बारी से अपनी चेतना खो देता था। धीरे-धीरे मेरा मन स्पष्ट हो गया। जो रोशनी मैंने केवल एक तरह के कोहरे के बीच से देखी थी वह और भी तेज़ हो

गई। तब मैंने अपनी स्थिति को पहचानना शुरू किया और समझ गया कि मैं अब पार्थिव दुनिया से संबंधित नहीं हूं।

यदि मैं अध्यात्मवाद को न जानता होता तो निःसंदेह भ्रम लंबे समय तक बना रहता। "मेरे पार्थिव शरीर को अभी तक दफनाया नहीं गया था। मैंने उनके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार किया, हालाँकि मुझे उनसे मुक्त होने की ख़ुशी थी। मैं आज़ाद होकर बहुत खुश था! मैं उतनी ही सहजता से सांस ले रहा था जैसे कि कोई अभी-अभी दमघोंटू माहौल से बाहर आया हो, और खुशी की एक अवर्णनीय अनुभूति मेरे पूरे अस्तित्व में व्याप्त हो गई थी।

जिन व्यक्तियों से मैं प्यार करता था उनकी उपस्थिति ने मुझे खुशी से भर दिया और उन्हें देखकर मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। यह बिल्कुल स्वाभाविक लगा, मानो मैं एक लंबी यात्रा के बाद उन्हें फिर से देख रहा हूँ। एक बात ने मुझे सबसे पहले आश्चर्यचकित कर दिया: यह तथ्य कि हम बिना कुछ कहे एक-दूसरे को समझते थे। हम एक-दूसरे को देखकर ही अपने विचार व्यक्त कर रहे थे, मानो किसी तरल पदार्थ के प्रवेश के माध्यम से। "फिर भी, मैं अभी भी सांसारिक विचारों से पूरी तरह अलग नहीं हुआ था।

मैंने जो कुछ सहा था उसकी यादें समय-समय पर मेरे पास आती रहीं ताकि मैं अपनी नई स्थिति को बेहतर ढंग से समझ सकूं। मुझे शारीरिक रूप से, लेकिन विशेष रूप से मानसिक रूप से कष्ट हुआ। मैं द्वेष का पात्र था, हजारों परेशानियाँ जो शायद स्पष्ट रूप से दुर्भाग्यपूर्ण से भी अधिक दर्दनाक थीं, क्योंकि वे हमें लगातार चिंता की स्थिति में रखती थीं।

ये भावनाएँ अभी तक पूरी तरह से गायब नहीं हुई थीं, और कभी-कभी मैं खुद से पूछता था कि क्या मैं वास्तव में उनसे मुक्त हूँ। ऐसा अब भी लग रहा था जैसे मैं कुछ अप्रिय आवाज़ें सुन रहा हूँ। मैं अक्सर इस बात को लेकर चिंतित रहती थी कि इन आवाजों से मुझे कितनी असुविधा होगी और मैं निश्चिंत होकर कांप उठती थी।

मैंने खुद को महसूस करने की कोशिश की, ताकि मुझे यकीन हो जाए कि मुझे किसी सपने ने धोखा नहीं दिया है, और जब मुझे यकीन हो गया कि सब कुछ खत्म हो गया है, तो मुझे लगा कि मैं एक बड़े बोझ से मुक्त हो गया हूं। मैं चला गया. यह बिल्कुल सच है - मैंने खुद से कहा - मैं आखिरकार उन सभी चिंताओं से मुक्त हो गया हूं जो मेरे जीवन को पीड़ा देती थीं, और मैंने इस तथ्य के लिए भगवान को धन्यवाद दिया।

मैं उस गरीब आदमी की तरह था जिसे अचानक एक बड़ी संपत्ति विरासत में मिली थी और जो लंबे समय तक विश्वास नहीं कर सका कि यह असली है, फिर भी वह अपनी जरूरतों के बारे में चिंतित था। ओह, यदि लोग भावी जीवन को समझ सकें, तो यह उन्हें कितनी शक्ति, कितना साहस देगा! पृथ्वी पर अपने जीवनकाल के दौरान वे खुद को उस खुशी की गारंटी देने के लिए क्या नहीं करेंगे जो भगवान ने उन बच्चों के लिए आरक्षित की है जो उनके कानूनों का पालन करते हैं! तब वे देखेंगे कि जिन सुखों से वे अपने जीवन में ईर्ष्या करते हैं वे उन सुखों की तुलना में कितने महत्वहीन हैं जिनसे वे घृणा करते हैं!"

क्या वह दुनिया - जो आपके लिए बहुत नई है, और जिसके प्रकाश में हमारी दुनिया का इतना कम मूल्य है - और जिन कई दोस्तों के साथ आप फिर से जुड़े हैं, उन्होंने आपको अपने परिवार और दोस्तों को भूलने पर मजबूर कर दिया है, जिन्हें आप इस धरती पर जानते थे? लेकिन पीछे छूट गया? "अगर मैं उन्हें भूल जाऊं, तो मैं उस खुशी के लायक नहीं रहूंगा जिसका मैं आनंद ले रहा हूं। ईश्वर स्वार्थ को पुरस्कृत नहीं करता बल्कि दंडित करता है।

जिस दुनिया में मैं खुद को पाता हूं वह मुझे पृथ्वी का तिरस्कार करने के लिए प्रेरित कर सकती है, लेकिन मैं उन आत्माओं का तिरस्कार कभी नहीं कर सकता जो वहां अवतरित हुई हैं। केवल पुरुषों और महिलाओं के बीच ही हम देखते हैं कि समृद्धि दुर्भाग्य में पूर्व साथियों को भूलने की ओर ले जाती है। मैं अक्सर अपने दोस्तों से मिलने जाता हूं और जो यादें वे मुझे देते हैं, उससे मुझे खुशी होती है; उसके विचार मुझे उसकी ओर आकर्षित करते हैं.

मैं उनकी बातचीत देखता हूँ; मैं उनके सुख से आनन्दित होता हूं, और उनकी चिन्ता से मैं उदास हो जाता हूं; हालाँकि, क्योंकि मैं समझता हूँ कि उनकी समस्याएँ केवल अस्थायी हैं और उनके अपने भले के लिए हैं; यह चिंता से भरा वह दुःख नहीं है जो हम अवतार लेते समय सहते हैं। मुझे यह सोचकर खुशी होती है कि किसी दिन वे भी इस खुशहाल दुनिया में आएंगे जहां दर्द अज्ञात है। मैं उन्हें योग्य बनाने में मदद करने की कोशिश कर रहा हूं। मैं उन्हें अच्छे विचार सुझाने की पूरी कोशिश कर रहा हूं, खासकर उस बलिदान के बारे में जो मैंने खुद ईश्वर की इच्छा के सामने प्रदर्शित किया है।

मुझे सबसे अधिक पीड़ा यह देखकर होती है कि वे अपने साहस की कमी, अपनी शिकायतों, भविष्य के बारे में अपने संदेह या किसी निंदनीय कृत्य के कारण उस समय को विलंबित कर रहे हैं। इस प्रकार, मैं उन्हें बुराई के रास्ते से हटाने की कोशिश करता हूं। जब भी मैं सफल होता हूं तो यह मेरे लिए बहुत खुशी की बात होती है और हम सभी यहां खुशी मनाते हैं; जब भी मैं असफल होता हूं, मैं दुखी

होकर अपने आप से कहता हूं: एक बार फिर, उसने खुशी के क्षण में देरी कर दी है। लेकिन मुझे यह याद करके सांत्वना मिलती है कि कोई भी पूरी तरह से खोया नहीं है।

सैमुअल फिलिप।

## डर्ट का

(पूर्व सिविल सेवक, 1863 में अस्सी वर्ष की आयु में एंटवर्प में मृत्यु हो गई)

वान डर्स्ट के निधन के कुछ ही समय बाद, एक माध्यम ने उनके आध्यात्मिक मार्गदर्शक से पूछा कि क्या वह मृतक को वापस बुला सकते हैं और उन्हें यह उत्तर मिला:

"यह आत्मा धीरे-धीरे अपनी भ्रम की स्थिति से बाहर आ रही है।

वह जवाब देने में सक्षम हो सकता है लेकिन संचार उसके लिए महंगा होगा। मैं आपसे चार दिन और इंतजार करने के लिए कहूंगा और फिर वह आपको जवाब दे पाएंगे। तब तक, उसे आपके प्रति व्यक्त किए गए अच्छे इरादों के बारे में पता चल जाएगा और वह कृतज्ञतापूर्वक एक अच्छे दोस्त के रूप में आपके पास आएगा।

चार दिन बाद, आत्मा ने निम्नलिखित निर्देश दिये:

"मेरे दोस्त, अनंत काल के पैमाने पर मेरा जीवन बहुत छोटा था। फिर भी, मैं दुखी होने से बहुत दूर हूं। मैं एक विनम्र स्थिति में हूं, लेकिन उस व्यक्ति के लिए अपेक्षाकृत खुश हूं जिसने पूर्णता के लिए प्रयास किए बिना कुछ गलतियां कीं। यदि प्राणी सीमित दायरे में रहकर खुश रह सकते हैं, तो ऐसा ही होगा - मैं उनमें से एक हूं। मुझे केवल एक ही अफसोस है कि मैं स्वयं तब नहीं जानता था जो आप अब जानते हैं, क्योंकि मेरी स्थिति कम भ्रमित और कम कठिन होती।

वास्तव में, वह चरण लंबा था - जीवित महसूस करना और नहीं करना, अपने शरीर को देखना और उससे दृढ़ता से जुड़ा हुआ महसूस करना लेकिन इसका उपयोग करने में असमर्थ होना, जिन्हें मैं प्यार करता हूं उन्हें देखना और मुझे

उनसे जोड़ने वाले विचार को याद करना। ऐसा होते देखना; कितना भयानक! ओह, कैसा क्रूर समय है! कैसा क्षण होता है जब घबराहट आप पर हावी हो जाती है और आपका गला घोंट देती है! और उसके तुरंत बाद, पूर्ण अंधकार; जीवित महसूस करना और फिर एक क्षण बाद अस्तित्वहीन महसूस करना; अपने आप को जानना चाहते हैं लेकिन समझ नहीं पाते।

अस्तित्व में नहीं हैं लेकिन भ्रम की गहन स्थिति में महसूस कर रहे हैं कि आप वास्तव में मौजूद हैं! और फिर, एक अथाह समय के बाद, दम घुटने वाले दर्द का समय क्योंकि आप इसे समझ नहीं सकते, एक ऐसा समय जो अंतहीन लगता है, आप धीरे-धीरे एक नए अस्तित्व में पुनर्जन्म लेते हैं।

आप एक नई दुनिया में जागते हैं! “कोई भौतिक शरीर नहीं, कोई सांसारिक जीवन नहीं, बल्कि अमर जीवन! कोई पुरुष या महिला अवतरित नहीं है, बल्कि चमकदार आत्माएं हर तरफ से घूमती हैं, आपके चारों ओर घूमती हैं, जिससे आप एक ही नजर में उन सभी को गले लगा लेते हैं। सक्षम नहीं हैं, क्योंकि अनंत में फड़फड़ाते हैं!

आपके सामने जगह होना और इच्छानुसार उसमें यात्रा करने में सक्षम होना! अपने आस-पास की हर चीज़ के साथ विचारों के माध्यम से संचार करना... मेरे दोस्तों, यह एक बिल्कुल नया जीवन है! यह कैसी चकाचौंध भरी जिंदगी है! यह कैसा धन्य जीवन है! अरे जय हो! ओह, आपकी सदैव महिमा हो; तुमने मुझे अपने दिल में बसा लिया है!

अलविदा, हे पृथ्वी; आपने मुझे इतने लंबे समय तक मेरी सच्ची आत्मा प्रकृति से दूर रखा! नहीं, मैं तुमसे और कुछ नहीं माँगूँगा, क्योंकि तुम निर्वासन की धरती हो और तुम्हारी सबसे बड़ी ख़ुशी मेरे लिए कोई मायने नहीं रखती! “लेकिन अगर मैं वही जानता जो तुम जानते हो, तो इस दूसरे जीवन की शुरुआत कितनी आसान और सुखद होती! मरने से पहले ही मुझे पता चल जाता कि अलगाव के बहुत बाद के क्षण में मुझे क्या सीखना है, और मेरी आत्मा स्वयं उसे अधिक आसानी से मुक्त कर देती।

आप रास्ते पर हैं, लेकिन आपने कभी बहुत कुछ नहीं किया है! यह बात मेरे बेटे से कहो; उसे इतनी बार बताएं कि वह विश्वास करना और समझना शुरू कर दे, क्योंकि फिर, जब वह यहां आएगा, तो हम कभी अलग नहीं होंगे। "आप सभी को अलविदा, मेरे दोस्तों, अलविदा।

मैं आपकी प्रतीक्षा कर रहा हूं, और जब तक आप पृथ्वी पर रहेंगे, मैं अक्सर आपके पास आता रहूंगा और सीखता रहूंगा क्योंकि मैं अभी भी आप में से बहुतों को उतना नहीं जानता हूं। लेकिन मैं यहां जल्दी ही सीख लूंगा, क्योंकि मैं अब उन परेशानियों को सहन नहीं कर सकता जो मुझे परेशान करती थीं या बुढ़ापे ने जिसने मेरी ताकत छीन ली है। यहां, हम पूरी तरह से रहते हैं और विकसित होते हैं, क्योंकि क्षितिज हमारी आंखों के सामने इतनी खूबसूरती से फैलते हैं कि हम उन्हें गले लगाने के लिए अधीर हो जाते हैं। अलविदा; मैं तुम्हें अब छोड़ता हूं, अलविदा।"

डर्ट का.

# सिक्सडेनियर्स

(एक नैतिक रूप से ईमानदार व्यक्ति, एक दुर्घटना में मारा गया और जीवित रहते हुए माध्यम से परिचित था) बोर्डो, 11 फरवरी, 1861 क्या आप कृपया मुझे अपनी मृत्यु के बारे में कुछ विवरण प्रदान करेंगे?
"मेरे डूबने के बाद - हाँ।"

उसके बाद क्यों?
"क्योंकि आप पहले से ही जानते हैं कि पहले क्या हुआ था।" (माध्यम वास्तव में डूबने का विवरण जानता था।)

तो क्या आप मृत्यु के बाद अपनी भावनाओं का वर्णन करना चाहेंगे?

“काफ़ी समय तक मुझे पता ही नहीं चल पाया कि मैं कहाँ हूँ, लेकिन भगवान की कृपा और मेरे आस-पास के लोगों की मदद से, जब आख़िरकार रोशनी दिखाई दी, तो मैं उससे चकाचौंध हो गया। आशा रखें: आप हमेशा जितना सोचा था उससे अधिक पाएंगे। कुछ भी भौतिक नहीं; हर चीज़ छिपी हुई इंद्रियों को छूती है।

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जिसे आँखों या हाथों से छुआ जा सके। क्या तुम समझ रहे हो? यह एक आध्यात्मिक आश्चर्य है जो आपकी समझ से परे है क्योंकि इसे समझाने के लिए शब्द नहीं हैं। इसका एहसास हम आत्मा के माध्यम से ही कर सकते हैं।

“मेरा जागना काफी सुखद था। जीवन उन सपनों में से एक है, जिसे शब्द से जुड़े भयानक विचार के बावजूद, मैं केवल एक भयानक दुःस्वप्न के रूप में वर्णित कर सकता हूं। कल्पना कीजिए कि आप एक संक्रमित जेल में बंद हैं, कि आपका शरीर संक्रमित है।

तुम्हें कीड़े खा रहे हैं जो तुम्हारी अस्थि मज्जा में भी छेद कर रहे हैं और तुम जलती भट्टी के ऊपर लटके हो। आगे कल्पना करें कि आपके सूखे मुंह को ताज़ा करने के लिए कोई हवा नहीं है, आपकी भयभीत आत्मा आपके चारों ओर केवल राक्षसों को देखती है, जो आपको खाने की धमकी दे रहे हैं।

अंत में, कल्पना करें कि इतना अद्भुत सपना कितना घृणित, सबसे भयानक जैसा लग सकता है और फिर अचानक आप खुद को आनंद के स्वर्ग में ले जाया हुआ पाएंगे। आप जागते हैं, अपने उन सभी प्रियजनों से घिरे होते हैं जिनके लिए आप रोये थे। अपने आस-पास प्यारे चेहरों को देखें जो आपको देखकर खुशी से मुस्कुराते हैं; सबसे मीठी खुशबू में सांस लें; शुद्ध जल के सोते में अपने सूखे गले को ताज़ा करो; महसूस करें कि आपका शरीर उस अनंत स्थान में उठा हुआ है जो उसे सहारा देता है और घुमाता है जैसे हवा किसी पेड़ से तोड़े हुए फूल को ले जाती है; अपने आप को ईश्वर के प्रेम में लिपटा हुआ महसूस करें जैसे जन्म के समय एक बच्चा अपनी माँ के प्रेम में लिपटा होता है।

तभी आपको मृत्यु की ओर संक्रमण का अधूरा विचार मिलेगा। “मैंने जीवन की उस खुशी का वर्णन करने की कोशिश की है जो शरीर की मृत्यु के बाद पुरुषों और महिलाओं की प्रतीक्षा करती है, लेकिन मैं असफल रहा हूं; आख़िरकार, क्या आप उस अनंत का वर्णन उस व्यक्ति से कर सकते हैं जिसकी आँखें प्रकाश के लिए बंद हैं, और जिसके अंग कभी भी उस सीमित दायरे से बाहर नहीं निकल सकते जिसमें वे घिरे हुए हैं? ऐसे शाश्वत सुख का वर्णन करने के लिए, मैं तुमसे कहता हूँ: प्रेम! क्योंकि केवल प्यार ही हमें इसका पहले से एहसास करा सकता है।

और जिसका अर्थ प्रेम है उसका अर्थ स्वार्थ का अभाव है।” क्या आध्यात्मिक जगत में आपकी स्थिति शुरू से ही सुखद रही है? "नहीं। मुझे एक इंसान के रूप में अपना कर्ज चुकाना था। मेरे दिल को आत्मा के भविष्य का एहसास नहीं था, और इसके अलावा, मुझे कोई विश्वास नहीं था। मुझे अपने निर्माता के प्रति अपनी उदासीनता का प्रायश्चित करना था।

लेकिन अपनी दया में उन्होंने उस छोटे से अच्छे काम को ध्यान में रखा जो मैं करने में सक्षम था, उस दर्द को जो मैंने हार मानकर अपने दुःख के बावजूद सहन किया; उनका न्याय, जो एक ऐसे पैमाने पर है जिसे लोग कभी नहीं समझ

पाएंगे, अच्छे को इतनी दया और प्रेम से तौला कि बुराई तुरंत मिटा दी गई। 5. क्या आप मुझे अपनी बेटी के बारे में खबर दे सकते हैं? (जिसकी मृत्यु उसके पिता से चार या पाँच साल पहले हुई थी)

"वह आपकी भूमि पर एक मिशन पर है।" क्या वह एक अवतार के रूप में खुश हैं? मेरा अभिप्राय विवेकहीन होना नहीं है। "मैं जानता हूं। क्या मैं तुम्हारी सोच को अपनी आंखों के सामने चित्र की तरह नहीं देखता? नहीं, वह अवतार के रूप में खुश नहीं हैं।"

इसके विपरीत, सांसारिक जीवन के सभी दुःख उसका इंतजार कर रहे हैं। लेकिन अपने उदाहरण से वह उन महान गुणों का बखान करेगी जो आपको महज़ सुखद शब्दों में मिलेंगे। मैं उसकी मदद करूंगा क्योंकि मुझे उसकी रक्षा करनी है।' हालाँकि, बाधाओं से पार पाने में उसे ज़्यादा कठिनाई नहीं होगी। वह वहां तपस्या के लिए नहीं, बल्कि एक मिशन के लिए हैं।'

तो इस बारे में निश्चिंत रहें. और उसे याद करने के लिए धन्यवाद।" उस क्षण, माध्यम के लिए लिखना मुश्किल हो गया, और उसने कहा: यदि कोई पीड़ित आत्मा अब मुझे रोक रही है, तो मैं उससे उसका नाम लिखने के लिए कहता हूं। "एक पीड़ित आत्मा"

अपना नाम नहीं बताना चाहते? "वैलेरी।" 9. क्या आप बताना चाहते हैं कि आपको सज़ा क्यों दी गई?

नहीं।"

क्या आपको अपनी गलतियों पर पछतावा है?

"आप देख सकते हैं कि मैं पछता रहा हूँ।"

तुम्हें यहाँ कौन लाया?

"सिक्सडेनियर्स।"

किस कारण के लिए?

"तो आप मेरी मदद कर सकते हैं।"

क्या आपने ही कुछ समय पहले मुझे लिखने से रोका था?

"उसने मुझे मेरी जगह पर रख दिया।"

आपका रिश्ता क्या है?

"वह मेरा मार्गदर्शन करता है।"

उससे प्रार्थना में हमारे साथ शामिल होने के लिए कहें।

(प्रार्थना के बाद, सिक्सडेनियर्स लेखन में लौट आए) "उसकी मदद करने के लिए धन्यवाद। आप समझ गए हैं। मैं आपको नहीं भूलूंगा। उसके बारे में सोचो।"

(सिक्सडेनियर्स से पूछा) एक आत्मा के रूप में, क्या आपके पास मार्गदर्शन करने के लिए कई पीड़ित आत्माएं हैं? "नहीं, लेकिन जैसे ही हम एक को नैतिक रास्ते पर वापस लाने में सफल होते हैं, हम दूसरे के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलते हैं, हालाँकि, पहले को छोड़े बिना।"

आप उस निगरानी का प्रबंधन कैसे कर सकते हैं जो सदियों तक असीमित रूप से विस्तारित हो सकती है? "आपको यह समझना चाहिए कि जिन्हें हम नैतिक मार्ग पर वापस लाते हैं वे अंततः विकसित होते हैं और खुद को शुद्ध करते हैं। इस प्रकार, वे हमारे लिए कम काम के हो जाते हैं। साथ ही, हम स्वयं विकसित होते हैं और ऐसा करने से हमारी क्षमताएं विकसित होती हैं और हमारी क्षमताएं उसी अनुपात में बढ़ती हैं हमारी पवित्रता के लिए।"

इसलिए कम विकसित आत्माओं को अच्छी आत्माओं द्वारा सहायता प्रदान की जाती है, जिन्हें उनका मार्गदर्शन करने का कार्य सौंपा गया है। यह कार्य केवल अवतारों को समर्पित नहीं है, उन्हें भी इसमें भाग लेना चाहिए क्योंकि यह उनके लिए प्रगति का साधन है। जब एक कम विकसित भावना अच्छे संचार के दौरान हस्तक्षेप करती है - जैसा कि इस मामले में हुआ - यह निश्चित रूप से हमेशा अच्छे इरादों के साथ ऐसा नहीं करता है।

हालाँकि, अच्छी आत्माएँ इसे ऐसा करने की अनुमति दे सकती हैं, चाहे एक परीक्षण के रूप में या उपस्थित लोगों के लिए शायद इसे बेहतर बनाने में मदद करने के तरीके के रूप में। यह सच है कि उसकी जिद जुनून में बदल सकती है, लेकिन वह जितनी अधिक जिद्दी होगी, उसे उतना ही अधिक प्रमाण मिलेगा कि उसे वास्तव में मदद की जरूरत है।

ऐसी आत्मा को हटाना गलत है. हमें इसे एक गरीब प्राणी के रूप में मानना चाहिए जो भीख मांगने आया है, और हमें खुद को याद दिलाना चाहिए कि यह एक दुखी आत्मा है जिसे अच्छे लोगों ने हमें निर्देश देने के लिए भेजा है। यदि हम सफल होते हैं, तो हम एक आत्मा को अच्छे मार्ग पर स्थापित करने की खुशी का अनुभव करेंगे, जिससे उसकी पीड़ा कम हो जाएगी।

यह कार्य प्रायः कठिन होता है। बेशक, अच्छा संचार प्राप्त करना और केवल उन आत्माओं के साथ बातचीत करना अधिक सुखद होगा जिन्हें आप पसंद करते हैं। हालाँकि, हम अच्छी आत्माओं की सुरक्षा के पात्र हैं, अपनी इच्छाओं को पूरा करने की कोशिश करने से नहीं, बल्कि उन अवसरों को ठुकराने से जो हमें अच्छाई का अभ्यास करने का अवसर देते हैं।

## डॉ. रतराज़

(मृत्यु जनवरी 25, 1865 को एल्बी (टार्न) में)
डॉ. डेमूर एल्बी में एक प्रसिद्ध होम्योपैथिक चिकित्सक थे। उनके चरित्र और बुद्धिमत्ता ने उन्हें अपने साथी नागरिकों का सम्मान और सम्मान दिलाया। उनकी दयालुता और उदारता अटूट थी. अपनी वृद्धावस्था के बावजूद, वह गरीबों की देखभाल करने से कभी नहीं थकते थे। उनके लिए, उनके दौरे के लिए भुगतान सबसे कम महत्व का था।

उन्हें अपने उन गरीब ग्राहकों की तुलना में कम असुविधा महसूस हुई, जिनके बारे में उन्हें पता था कि वे उन्हें भुगतान कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसा इसलिए था क्योंकि उनकी अनुपस्थिति में डॉक्टर को हमेशा कोई दूसरा डॉक्टर मिल सकता था। वह न केवल अपने गरीब ग्राहकों को बिना किसी शुल्क के नुस्खे और दवाइयाँ देते थे, बल्कि वह अक्सर उनकी शारीरिक जरूरतों को पूरा करने के लिए आवश्यक चीजें भी देते थे, कभी-कभी सबसे प्रभावी दवा भी।

हम कह सकते हैं कि वह "चिकित्सा कला के पुजारी" थे। डॉ. डेम्योर ने अध्यात्मवादी सिद्धांत को बड़े उत्साह के साथ अपनाया, जिसमें उन्हें उन सबसे गंभीर समस्याओं की कुंजी मिल गई, जिनकी उन्होंने विज्ञान और हर दर्शन में व्यर्थ खोज की थी। उनकी गहन और खोजी भावना ने तुरंत ही सिद्धांत के पूरे दायरे को समझ लिया और वह इसके सबसे प्रबल प्रचारकों में से एक बन गए।

पत्राचार के माध्यम से हमारे बीच सबसे जीवंत और परस्पर सहानुभूतिपूर्ण संबंध स्थापित हुआ। हमें उनकी मृत्यु के बारे में 30 जनवरी को पता चला। हमारा पहला विचार उनसे एक संदेश प्राप्त करना था, जो उन्होंने हमें उसी दिन प्रदान किया: “मैं यहाँ हूँ।

जब मैं जीवित था, तो मैंने खुद से वादा किया था कि जब मैं मरूंगा, तो मैं अपने प्रिय शिक्षक और मित्र, श्री एलन कार्डेक से 'हाथ मिलाने' आऊंगा। “मौत ने मेरी आत्मा को उस भारी नींद में डुबा दिया जिसे सुस्ती कहा जाता है, लेकिन मेरा दिमाग जागता रहा। मैंने उस निराशाजनक सुस्ती को दूर भगाया जो मुझे परेशान कर रही थी।

मृत्यु के बाद भ्रम की स्थिति को लम्बा खींचता है और जागकर एक ही छलाँग में पार हो जाता है। "मैं इतना खुश कैसे हूं! अब न तो मैं कमजोर हूं और न ही बूढ़ा. मेरा शरीर मुझ पर थोपा गया एक वस्त्र मात्र था। मैं अब आत्माओं की उस शाश्वत, युवा सुंदरता के साथ युवा और सुंदर हूं, जिनके चेहरे पर कभी झुर्रियां नहीं पड़तीं और जिनके बाल समय के साथ कभी सफेद नहीं होते। मैं उस पक्षी के समान हल्का हूं जो आपके बादलों वाले आकाश के क्षितिज पर तेजी से उड़ता है। और मैं आश्चर्य करता हूं, चिंतन करता हूं, आशीर्वाद देता हूं, प्यार करता हूं और झुकता हूं - मैं जो अणु हूं - हमारे निर्माता की भव्यता, ज्ञान और ज्ञान के सामने, और उन चमत्कारों के सामने जो मुझे घेरते हैं। “मैं खुश हूं, मैं गौरव में हूं! ओह, चुने हुए लोगों की भूमि की शानदार सुंदरता का वर्णन कौन कर सकता है: स्वर्ग, दुनिया और सूर्य और सार्वभौमिक सद्भाव के महान संगम में उनकी भूमिका? फिर भी, मेरे मालिक, मैं कोशिश करूँगा। मैं ये अध्ययन करूंगा और अपने परिश्रम के प्रयासों को आपके चरणों में जमा करने के लिए एक आत्मा के रूप में लौटूंगा, और जिनके लिए मैं पहले से ही खुद को समर्पित करता हूं। अलविदा!"

संकोची।

1 और 2 फरवरी के निम्नलिखित दो संचार उस बीमारी से संबंधित हैं जिसने मुझे उस समय घेर लिया था। हालाँकि ये संचार व्यक्तिगत हैं, मैंने उन्हें यहाँ पुन: प्रस्तुत किया है क्योंकि वे दिखाते हैं कि डॉ. डेम्योर आज भी उतने ही अच्छे इंसान हैं जितने एक इंसान के रूप में थे। मेरे अच्छे दोस्त, हम पर भरोसा करो

और साहस रखो। हालाँकि यह संकट थका देने वाला और दर्दनाक है, लेकिन यह लंबे समय तक नहीं रहेगा। निर्धारित उपचार के साथ, और अपनी इच्छा के आधार पर, आप जल्द ही वह पूरा कर लेंगे जो आपके जीवन का मुख्य उद्देश्य है।

मैं सदैव सत्य की आत्मा में आपके साथ हूं, जो मुझे मेरे नाम पर बोलने की अनुमति देता है। चूँकि मैं आपके मित्रों में सबसे हाल ही में आत्मा की दुनिया में आया हूँ, इसलिए अन्य लोगों ने मुझे यह सम्मान दिया है। प्रिय शिक्षक, इस समय उसके साथ रहने के लिए मरकर मैं कितना खुश हूँ! यदि मैं पहले मर गया होता, तो शायद मैं इस अप्रत्याशित संकट से बच सकता था। हालाँकि, मेरा निधन हाल ही में हुआ है कि मैं आत्मा के मामलों के अलावा किसी अन्य चीज़ में खुद को शामिल नहीं कर पाया हूँ, लेकिन अब मैं आपका ख्याल रखूँगा, प्रिय शिक्षक।

मैं आपका भाई और मित्र हूं, और मुझे खुशी है कि आपकी बीमारी में आपकी सेवा करने के लिए मेरे पास एक आत्मा है। लेकिन आप यह कहावत जानते हैं: 'स्वर्ग उनकी मदद करता है जो अपनी मदद खुद करते हैं।' इसलिए अच्छी आत्माओं को आपकी देखभाल करने में मदद करने दें और उनके नुस्खों का ठीक से पालन करें। "यह यहाँ बहुत गर्म है। कोयले की आग तुम्हें थका देती है।

जब तुम बीमार हो तो कोयला न जलाओ; इससे आपकी सांस लेने में दिक्कत बढ़ जाती है. इससे निकलने वाली गैसें हानिकारक हैं।" आपका मित्र, डिम्योर "यह मैं हूं, डिम्योर, श्री कार्डेक का मित्र। मैं उसे यह बताने आया हूं कि जब वह दुर्घटना से बच गया तो मैं उसके साथ था, जो समय पर हस्तक्षेप के बिना विनाशकारी हो सकता था, जिसकी सहायता करने का मुझे सौभाग्य मिला। मेरे अवलोकन और एक अच्छे स्रोत से प्राप्त जानकारी के अनुसार, मुझे ऐसा लगता है कि वह जितनी जल्दी शरीर छोड़ेगा, उतनी ही जल्दी उसका पुनर्जन्म होगा, जिससे वह अपना कार्य पूरा कर सकेगा।

हालाँकि, जाने से पहले उसे वह काम पूरा करना होगा जो उस सैद्धांतिक प्रणाली को पूरा करेगा जिसके वह प्रवर्तक हैं। और वह जानबूझकर आत्महत्या का दोषी होगा यदि, अत्यधिक काम के माध्यम से, वह अपने जीव के टूटने में योगदान देता है, जो उसे अचानक हमारी दुनिया में लाने की धमकी देता है। आपको उसे मामले की पूरी सच्चाई बताने से नहीं डरना चाहिए ताकि वह सतर्क हो सके और हमारे नुस्खों का अक्षरशः पालन कर सके।

26 जनवरी को मोंटौबैन में - उनकी मृत्यु के अगले दिन - उनके अध्यात्मवादी मित्रों के बीच निम्नलिखित संदेश प्राप्त हुआ:

“एंटोनी डिम्योर। मैं तुम्हारे लिए नहीं मरा, मेरे अच्छे दोस्त, बल्कि केवल उन लोगों के लिए मरा जो अभी तक इस पवित्र सिद्धांत को नहीं जानते हैं, जैसा कि तुम जानते हो, जो पृथ्वी पर उन सभी को जोड़ता है जो एक दूसरे से प्यार करते हैं, उन सभी को जो एक जैसे दिमाग के हैं और जिनके पास समान विचार हैं प्रेम और परोपकार की वही भावनाएँ। “मैं खुश हूं, जितना मैंने सोचा था उससे कहीं अधिक खुश हूं, क्योंकि मैं उस स्पष्टता का आनंद ले रहा हूं जो उन आत्माओं में बहुत दुर्लभ है जो हाल ही में पदार्थ से मुक्त हुई हैं। हिम्मत रखो, मेरे अच्छे दोस्त। मैं हमेशा आपके साथ रहूंगा और आपको उन चीजों के बारे में बताने में कभी असफल नहीं होऊंगा जिनके बारे में हम तब अनभिज्ञ होते हैं जब हम अपने गरीब भौतिक शरीर से जुड़े होते हैं, क्योंकि यह बहुत भव्यता को छुपाता है और बहुत सी खुशियों को रोकता है। .

उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जो इस खुशी से वंचित हैं, क्योंकि वे नहीं जानते कि वे अपने साथ क्या गलत कर रहे हैं। “मैं आज अधिक देर तक नहीं रह सकता, लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूं कि अदृश्य प्राणियों की इस दुनिया में मैं बिल्कुल भी अजनबी महसूस नहीं करता; ऐसा लगता है जैसे मैं हमेशा से यहीं रहता आया हूं। मैं खुश हूं क्योंकि मैं यहां अपने दोस्तों को देखता हूं और जब चाहूं उनसे बातचीत कर सकता हूं।

“मत रोओ मेरे दोस्तों. ऐसा करने से मुझे तुम्हें जानकर पछतावा होगा। समय बीतने के साथ ईश्वर तुम्हें भी इस दुनिया में लाएगा जहां हम सब फिर से एक साथ होंगे। शुभरात्रि मेरे मित्रों। भगवान आपको शांति दे. मैं तुम्हारे साथ हूँ।"

संकोची,

मोंटौबैन के एक अन्य पत्र में निम्नलिखित विवरण शामिल थे: उनकी अत्यधिक संवेदनशीलता के कारण, हमने डॉ. डेम्योर की मृत्यु के बारे में श्रीमती जी से बात नहीं की, जो एक दृष्टि माध्यम हैं और बहुत स्पष्ट रूप से नींद में चलने वाली हैं। जाहिर तौर पर हमारे इरादों को समझते हुए, अच्छे डॉक्टर ने खुद को उनके सामने उजागर करने से परहेज किया। पिछले 10 फरवरी को, हम

अपने गाइड के निमंत्रण पर इकट्ठे हुए, जिसने कहा कि वह श्रीमती जी को टखने की मोच से राहत दिलाना चाहता था, जो पिछले दिन से उन्हें बहुत परेशानी दे रही थी। हमें इस बारे में कुछ भी पता नहीं था.

हम इस मामले को लेकर बिल्कुल भी उत्साहित नहीं थे और उस आश्चर्य की कल्पना भी नहीं कर सकते थे जो हमारे गाइड ने हमें दिया था। जैसे ही यह महिला नींद में चलने की स्थिति में आई, उसने अपने पैर की ओर इशारा करते हुए जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया। हुआ यूं कि श्रीमती जी ने देखा कि एक आत्मा, जिसका चेहरा छिपा हुआ था, उनके पैरों पर झुक रही थी। यह आत्मा उसे रगड़ रही थी और मालिश कर रही थी, कभी-कभी बिल्कुल अनुदैर्ध्य हरकतें कर रही थी जैसे एक चिकित्सक करता है।

यह प्रक्रिया इतनी दर्दनाक थी कि मरीज बेकाबू होकर चिल्लाने और छटपटाने लगा। हालाँकि, संकट जल्द ही टल गया। दस मिनट के भीतर, मोच और उसकी सूजन के सभी निशान गायब हो गए और उसका पैर अपनी सामान्य स्थिति में वापस आ गया। श्रीमतीजी ठीक हो गई थीं.

हालाँकि, आत्मा श्रीमती जी के लिए अज्ञात रही और उन्होंने अपना चेहरा न दिखाने पर जोर दिया। ऐसा लग रहा था जैसे वह जाना चाहती थी, तभी श्रीमती जी, जो कुछ मिनट पहले एक कदम भी चलने में सक्षम नहीं थीं, अपने आत्मा चिकित्सक से हाथ मिलाने के लिए कमरे के बीच में कूद गईं। फिर, आत्मा ने उसका चेहरा दूसरी ओर कर दिया, केवल उसका हाथ अपने हाथ में छोड़ दिया। उसी समय वह चीख पड़ी और बेहोश होकर फर्श पर गिर पड़ी।

उन्होंने डॉ. डेम्योर को अपनी आत्मा का उपचार करने वाला माना। जब वह बेहोश थी, तब उसने कई सहानुभूतिशील आत्माओं का ध्यान आकर्षित किया। अंत में, जब वह गहरी नींद में चलने लगी, तो उसने उनसे बात की और उनका गर्मजोशी से स्वागत किया, विशेष रूप से स्पिरिट हीलर के साथ, जिसने उसके स्नेह के प्रदर्शन का जवाब उसे पुनर्स्थापनात्मक तरल पदार्थों में लपेटकर दिया।

क्या यह दृश्य अद्भुत एवं नाटकीय नहीं है; क्या इससे हमें यह आभास नहीं होता कि हम इन सभी अलग-अलग व्यक्तियों को मानव जीवन में उनकी भूमिका निभाते हुए देख रहे हैं? क्या यह कई अन्य प्रमाणों के बीच एक और प्रमाण नहीं है कि आत्माएँ वास्तविक प्राणी हैं, जिनके पास शरीर हैं और वे ऐसे कार्य करती हैं मानो वे अभी भी पृथ्वी पर हों?

हम अपने आत्मीय साथी से मिलकर खुश थे, उसका हृदय भी उतना ही उत्कृष्ट और दयालु था। अपने जीवनकाल के दौरान, वह मीडियमशिप के अभ्यासी थे। वह उसकी अत्यधिक संवेदनशीलता से अवगत थे और उसे अपनी बेटी की तरह मानते थे। क्या यह पहचान का प्रमाण नहीं है - जो उन लोगों को दिया गया है जिनसे यह आत्मा प्यार करती है - और साथ ही यह हमें भविष्य के जीवन को अधिक आरामदायक दृष्टिकोण से देखने के लिए पर्याप्त नहीं है?

[अंत लेख] एक आत्मा के रूप में डॉ. डेम्योर की स्थिति बिल्कुल वैसी ही है जैसी हम पृथ्वी पर उनके योग्य और उपयोगी जीवन से उम्मीद कर सकते हैं। हालाँकि, एक कम शिक्षाप्रद तथ्य इन संचारों पर प्रकाश डालता है: उपयोगी होने के लिए वह अपनी मृत्यु के तुरंत बाद जिस गतिविधि में संलग्न होता है। अपनी परिष्कृत बुद्धि और नैतिक गुणों के कारण, वह सबसे उन्नत आत्माओं में से एक हैं।

वह खुश है, लेकिन उसकी खुशी आलस्य में नहीं है। अभी कुछ दिन पहले वह एक चिकित्सक के रूप में बीमारों की देखभाल कर रहा था; एक बार मुक्त होने के बाद, वह एक आत्मा के रूप में उनकी देखभाल करने के लिए दौड़ पड़ता है। तब कुछ लोग कहेंगे कि यदि दूसरी दुनिया में आराम नहीं मिल सकता तो वहां जाने से क्या फायदा?

हम सबसे पहले उनसे पूछेंगे: क्या यह सच है कि हमें कोई चिंता या आवश्यकता नहीं होगी, या हम अब मानव जीवन की कमजोरियों के अधीन नहीं होंगे, या यह तथ्य है कि हम की गति से अंतरिक्ष में यात्रा करने के लिए स्वतंत्र होंगे। बिना थके सोचा? क्या हम किसी भी समय और किसी भी दूरी पर अपने दोस्तों से मिलने में सक्षम होंगे, चाहे वे कहीं भी हों?

दूसरा, हम जोड़ेंगे: जब आप दूसरी दुनिया में होंगे, तो कोई भी आपको कुछ भी करने के लिए मजबूर नहीं करेगा; आप जब तक चाहें तब तक आनंदमय आलस्य में रहने के लिए पूर्णतया स्वतंत्र होंगे। हालाँकि, आप जल्द ही इस तरह के स्वार्थी आराम से थक जाएंगे और आप किसी प्रकार के व्यवसाय की मांग करने वाले पहले व्यक्ति होंगे। तब आपसे कहा जा सकता है: यदि आप कुछ भी नहीं करने से थक गए हैं, तो कुछ करने के लिए चारों ओर देखें।

आध्यात्मिक दुनिया में उपयोगी होने के अवसरों की कोई कमी नहीं है, जैसे पुरुषों और महिलाओं के बीच उनकी कोई कमी नहीं है। इस प्रकार, आध्यात्मिक गतिविधि किसी भी प्रकार का दबाव नहीं दर्शाती है, बल्कि यह उन आत्माओं के

लिए एक आवश्यकता, संतुष्टि है, जो अपनी पसंद और योग्यता के अनुसार व्यवसाय की तलाश करते हैं, उन लोगों को प्राथमिकता देते हैं जो उनके विकास में सबसे अधिक मदद करेंगे। मदद कर सकते है।

## विधवा फाउलोन, नी वोलिस

श्रीमती फाउलोन, जिनकी मृत्यु 3 फरवरी, 1865 को एंटिबेस में हुई, लंबे समय तक हावरे में रहीं, जहाँ उन्होंने एक कुशल लघु-कलाकार के रूप में ख्याति प्राप्त की। उनकी उल्लेखनीय प्रतिभा शुरू में केवल मनोरंजक व्याकुलता के रूप में काम करती थी।

हालाँकि, बाद में, जब वह बुरे दौर में पहुँची, तो उसने अपनी कला को एक मूल्यवान संसाधन के रूप में उपयोग करना सीख लिया। जिस चीज़ ने उन्हें विशेष रूप से प्रिय और सम्मानित बनाया, जिसने उनकी स्मृति को उन सभी के लिए इतना प्रिय बना दिया जो उन्हें जानते थे, उनका मिलनसार स्वभाव और उनके व्यक्तिगत गुण थे, जिनकी पूरी तरह से केवल उन लोगों ने सराहना की जो उनके करीबी थे। तब से जानता था.

उन सभी लोगों की तरह, जिनमें अच्छाई की सहज भावना होती है
अपने गुणों का दिखावा नहीं करता था - शायद उसे इनके बारे में पता भी नहीं था। यदि कभी कोई ऐसा व्यक्ति था जिसने खुद को स्वार्थ से प्रभावित नहीं होने दिया, तो वह निस्संदेह यही महिला थी। व्यक्तिगत निःस्वार्थता की भावना शायद इतनी दूर तक कभी नहीं पहुंची। वह उन लोगों के लिए अपने आराम, अपने स्वास्थ्य और अपने हितों का त्याग करने के लिए हमेशा तैयार रहती थी जिनके लिए वह उपयोगी हो सकती थी।

युवावस्था से ही उनका जीवन बलिदानों और कठिन परीक्षाओं की एक लंबी शृंखला था, जिसके सामने उनका साहस, बलिदान और दृढ़ता कभी नहीं डिगी। हालाँकि, उनकी कला की श्रमसाध्य प्रकृति के कारण, उनकी दृष्टि दिन-ब-दिन कमजोर होती गई, जिसके परिणामस्वरूप कुछ समय बाद वे पूरी तरह से अंधे हो गए। जब श्रीमती फ़ौलान को अध्यात्मवादी सिद्धांत से परिचित कराया गया, तो यह उन्हें प्रकाश की किरण लगा।

ऐसा लग रहा था मानो पर्दा उठ गया हो, जिससे उसे कुछ ऐसा देखने को मिला जो पूरी तरह से विदेशी नहीं था, लेकिन जिसके बारे में उसे केवल एक अस्पष्ट अंतर्ज्ञान था। उन्होंने उत्साहपूर्वक इसका अध्ययन किया, आत्मा की स्पष्टता और निर्णय की शुद्धता से संपन्न थे जो उनकी उन्नत बुद्धि के लिए उपयुक्त था।

किसी को केवल उसके जीवन की सभी उलझनों के बारे में जानना होगा - उलझाव जो कभी उसके अपने जीवन से संबंधित नहीं थे, लेकिन उन लोगों के जीवन से थे जिन्हें वह प्यार करती थी - यह समझने के लिए कि उसे कितनी सांत्वना मिली, उदात्त रहस्योद्घाटन जिसने उसे भविष्य में अटल विश्वास दिया और उसे सांसारिक वस्तुओं का खालीपन दिखाया। उनकी मृत्यु भी उनके जीवन की तरह ही गरिमापूर्ण थी।

उसने महसूस किया कि यह बिना किसी भयानक आशंका के निकट आ रहा है। उनके लिए, यह सांसारिक बंधनों से मुक्ति थी जो उनके लिए आध्यात्मिक और धन्य मार्ग खोलेगी जिसके साथ उन्होंने अध्यात्मवाद का अध्ययन करके खुद को पहचाना था। वह शांति से मर गई, क्योंकि वह जानती थी कि उसने पृथ्वी पर आकर जो मिशन स्वीकार किया था, उसे पूरा कर लिया है और एक पत्नी और माँ के रूप में अपने कर्तव्यों को पूरी ईमानदारी से पूरा किया है; इसलिए भी कि अपने जीवन में उन्होंने उन लोगों के प्रति किसी भी प्रकार की नाराजगी से परहेज किया था जिन्होंने उनका अपमान किया था और जिन्होंने कृतघ्नतापूर्वक उनसे बदला लिया था।

उन्होंने हमेशा बुराई का बदला अच्छाई से दिया और सभी को क्षमा करते हुए खुद को ईश्वर की अच्छाई और न्याय के प्रति समर्पित करने के लिए अपना जीवन त्याग दिया। वह अंततः अंतरात्मा की शुद्ध शांति के साथ मर गई और उसे यकीन था कि वह अपने बच्चों से उतनी ही अलग रहेगी जितनी वह भौतिक जीवन के दौरान थी, क्योंकि वह आत्मा में अभी भी उनके साथ रह सकती है, चाहे वे दुनिया में कहीं भी हों।

ताकि उन्हें सलाह देकर मदद की जा सके और उनकी देखभाल की जा सके। जब हमने पहली बार श्रीमती फाउलोन की मृत्यु के बारे में सुना, तो हमारी पहली इच्छा उनसे बात करने की थी। अध्यात्मवादी सिद्धांत ने हमारे बीच जो मैत्रीपूर्ण और सहानुभूतिपूर्ण संबंध बनाए हैं, वे उनकी कुछ अभिव्यक्तियों और उनकी प्राकृतिक भाषा को स्पष्ट करते हैं।

**(पेरिस, फरवरी 6, 1865, मृत्यु के तीन दिन बाद)**

“मुझे यकीन था कि आप मेरी मुक्ति के तुरंत बाद मुझे याद करेंगे और मैं जवाब देने के लिए तैयार था, क्योंकि मुझे कोई भ्रम नहीं हुआ। केवल वे ही लोग भ्रमित हैं जो भयभीत हैं और भय के संकीर्ण अंधकार से घिरे हुए हैं।

“ठीक है, मेरे दोस्त, मैं अब खुश हूँ। ये बेचारी आंखें, जो कमजोर हो गई थीं और केवल उन दृश्यों को याद करती थीं, जिन्होंने मेरी जवानी को अपनी चमकदार चमक से रंग दिया था, यहां फिर से खुल गए हैं और उन शानदार क्षितिजों को फिर से खोज लिया है, जिन्हें आपके कुछ महान कलाकार अपनी पीली प्रतिकृतियों में आदर्श बनाते हैं, लेकिन जिनकी राजसी वास्तविकता, कठोर है और फिर भी जादू से भरपूर, सबसे उत्तम वास्तविकता से युक्त। “मेरे निधन को केवल तीन दिन हुए हैं और मैं पहले से ही एक कलाकार की तरह महसूस करता हूं।

कला में सौंदर्य के आदर्श के संबंध में मेरी आकांक्षाएं उन क्षमताओं की अंतर्ज्ञान थीं जिनका मैंने अन्य अस्तित्वों में अध्ययन और अधिग्रहण किया था, और जिन्हें मैंने अपने पिछले जीवन के दौरान विकसित किया था। लेकिन प्रकाश के इस क्षेत्र में मेरी आत्मा को छूने वाली भव्यता के योग्य उत्कृष्ट कृति बनाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए? तूलिका, तूलिका!

मैं दुनिया के सामने यह साबित कर दूँगा कि प्रेतात्मवादी कला बुतपरस्त कला, ईसाई कला का मुकुट है, जो इस समय खतरे में है, और आपके बंजर संसार में इसकी सारी भव्यता के साथ इसे पुनर्जीवित करने का सम्मान केवल प्रेतवाद के पास आरक्षित है। "लेकिन कलाकार के बारे में बहुत हो गया।

अब मेरे मित्र से: "प्रिय मित्र (श्रीमती कार्डेक), आप मेरी मृत्यु पर इतने व्याकुल क्यों हैं? विशेष रूप से यह जानकर कि आप मेरे जीवन की निराशाओं और कड़वाहट के बारे में क्या जानते हैं, आपको यह देखकर प्रसन्न होना चाहिए कि मुझे अब सांसारिक दुखों का वह कड़वा प्याला नहीं पीना पड़ेगा, जिसे मुझे झेलना पड़ा था।

आपको विश्वास करना चाहिए कि मृत लोग जीवित लोगों की तुलना में अधिक खुश हैं; उनके लिए शोक मनाना प्रेतात्मवाद की सच्चाई पर संदेह करना होगा।

तुम मुझे फिर देखोगे; इस बारे में निश्चिंत रहें. मैं पहले चला गया, क्योंकि उस दुनिया में मेरा काम ख़त्म हो चुका था। सभी लोगों का अपना-अपना कार्य होता है और उन्हें पृथ्वी पर रहते हुए ही इसे पूरा करना होता है। जब तुम्हारा काम पूरा हो जायेगा तो तुम मेरे पास कुछ देर विश्राम करोगे।

फिर, यदि आवश्यक हो, तो हम फिर से शुरू करेंगे, क्योंकि निष्क्रिय रहना स्वाभाविक नहीं है। हर किसी की अपनी-अपनी प्रवृत्ति होती है और वे उसका पालन करते हैं।

यह एक सर्वोच्च कानून है जो स्वतंत्र इच्छा की शक्ति को प्रदर्शित करता है। इसलिए, मेरे अच्छे दोस्त, उदार और परोपकारी बनो, ऐसी भावनाएँ जिनकी हम सभी को, चाहे दृश्य या अदृश्य दुनिया में, पारस्परिक रूप से आवश्यकता होती है। इस मूलमंत्र पर जीने से सब ठीक हो जाएगा।

"आप मुझसे यह बातचीत ख़त्म करने के लिए नहीं कहेंगे; हालाँकि, आप जानते हैं कि यह पहले ही बहुत लंबी बातचीत हो चुकी है, और यही कारण है कि अब मैं आपको छोड़ता हूँ और अपने उत्कृष्ट मित्र, श्री कार्डेक की ओर मुड़ता हूँ।

मैं आपको उन स्नेहपूर्ण शब्दों के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं जो आपने उस मित्र को कहे थे जो आपसे पहले कब्र पर गया था - हम लगभग इस दुनिया में चले गए थे जिसमें मैं खुद को पाता हूं, मेरे प्यारे दोस्त! एक संकेत जिसके बारे में डॉ. डेमूर ने बात की।

यदि अच्छी आत्माओं ने समय पर आपकी सहायता न की होती तो आपके जीवन के प्रिय साथी ने क्या कहा होता? हां, वह रोई और कराह उठी होगी, जो समझ में आता है। लेकिन अब उसे यह देखना होगा कि अध्यात्मवादी आंदोलन शुरू करने का काम पूरा करने से पहले आप खुद को दोबारा ऐसे खतरे में डालने से बचें।

यदि वह ऐसा नहीं करती है, तो आपको जितनी जल्दी होना चाहिए था, उससे पहले हमारे बीच समाप्त होने का जोखिम उठाते हैं, और मूसा की तरह, वादा किए गए देश को दूर से देखने का जोखिम उठाते हैं; मैं एक दोस्त के तौर पर आपको सावधान कर रहा हूं. मैं अपने प्यारे बच्चों के पास लौटना चाहता हूं।

फिर, मैं यह देखने के लिए समुद्र पार कर रहा हूं कि क्या मेरी भटकती भेड़ अंततः बंदरगाह पर पहुंच गई है या वह तूफान की दया पर है (उसकी एक बेटी

अमेरिका में रहती थी)। अच्छी आत्माएँ उसकी रक्षा करें। मैं उस उद्देश्य के लिए उनके साथ फिर से जुड़ने जा रहा हूं।

मैं आपके साथ बातचीत करने के लिए वापस आऊंगा, क्योंकि मैं एक अथक बात करने वाला व्यक्ति हूं, जैसा कि आपको निश्चित रूप से याद होगा। तब तक के लिए अलविदा, मेरे अच्छे और प्यारे दोस्तों।"

विधवा फाउलान.

(फरवरी 8,1865)

मेरी प्रिय श्रीमती फाउलोन, मैं उस दिन आपके संचार और हमारी बातचीत जारी रखने के आपके वादे से बहुत प्रसन्न हुआ।

मुझे पूरी तरह से एहसास हुआ कि वास्तव में आप ही थे जो संवाद कर रहे थे। आपने उन चीज़ों के बारे में बात की जो माध्यम संभवतः नहीं जान सकता था, और जो केवल आपसे ही आ सकती थी। इसके अलावा, हमारे प्रति आपकी स्नेहपूर्ण भाषा निश्चित रूप से आपकी प्रेमपूर्ण आत्मा की भाषा थी। और आपके शब्दों में एक निश्चितता, एक संतुलन और एक दृढ़ता थी जो मैंने आपके जीवनकाल में नहीं देखी थी। आपको याद होगा कि कुछ अवसरों पर मैंने आपको एक से अधिक बार चेताया था।

"यह सच है, लेकिन चूंकि मैं गंभीर रूप से बीमार हो गया हूं, मैंने आत्मा की दृढ़ता को पुनः प्राप्त कर लिया है जो मैंने कष्टों और उतार-चढ़ाव के कारण खो दी थी, जो कभी-कभी मुझे जीवन के बारे में आशंकित कर देती थी। मैंने खुद से कहा: पृथ्वी को भूल जाओ; इसके लिए खुद को तैयार करो आपके अस्तित्व का परिवर्तन, आपकी आत्मा द्वारा अनुसरण किया जाने वाला मार्ग। "आप सोच सकते हैं कि पृथ्वी छोड़ने के बाद पूर्ण सुख की आशा करने में मैं थोड़ा अहंकारी था, लेकिन मुझे लगा कि मुझे इसके लिए प्रायश्चित करना होगा।"

जीवन और मेरे सभी पिछले पाप। उस अंतर्ज्ञान ने मुझे धोखा नहीं दिया; बल्कि, इसने मुझे मेरे अंतिम क्षणों में साहस, शांति और दृढ़ता दी। जब मेरी मुक्ति के बाद, मैंने अपनी आशाओं को साकार होते देखा।" क्या आप हमें अपने पथ, अपनी जागृति और अपनी पहली छापों के बारे में बताना चाहेंगे? "वास्तव में, मुझे कष्ट हुआ, लेकिन मेरी आत्मा उस शारीरिक दर्द से अधिक मजबूत थी

जो अलगाव के कारण उसे हुआ था। अपनी आखिरी सांस के बाद, मैं एक प्रकार की बेहोशी से गुजरा, अपनी स्थिति के बारे में होश खो बैठा, कुछ भी महसूस नहीं हुआ, एक अस्पष्ट तंद्रा में जो था न शरीर की नींद, न आत्मा का जागरण उसके बाद, जैसे कि मैं लंबे समय तक बेहोशी की हालत से बाहर आ रहा था, मैं धीरे-धीरे उठा और अपने आप को उन दोस्तों से घिरा हुआ पाया जिनके साथ मैं नहीं था। पहचानो।

उन्होंने मुझे अंतरिक्ष में एक बिंदु दिखाया जो एक चमकते तारे जैसा था और कहा, 'तुम हमारे साथ वहां जा रहे हो, क्योंकि तुम अब पृथ्वी के नहीं हो।' तब मुझे याद आया। जब हमने एक खूबसूरत समूह बनाया और खुशी पाने की निश्चितता के साथ हम अज्ञात प्रदेशों में भाग गए, तो उन्होंने मेरी मदद की और हमारे सामने का सितारा बड़ा और बड़ा होता गया।

एक उच्च दुनिया जहां आपके अच्छे दोस्त को अंततः आराम मिलने वाला था; मेरा मतलब उन शारीरिक थकानों के संबंध में आराम है जो मैंने सहन की थीं और सांसारिक जीवन के उतार-चढ़ाव, आत्मा की गतिविधि का स्रोत नहीं है; खुशी। तो आपने पृथ्वी को हमेशा के लिए छोड़ दिया है, मैं अपने पीछे बहुत सारे प्रियजनों को छोड़ गया हूँ, मैं आत्मा में वापस नहीं आऊँगा, क्योंकि मुझे अपने बच्चों के साथ मिलकर एक मिशन पूरा करना है।

आप अच्छी तरह जानते हैं कि कोई बाधा नहीं आ सकती पृथ्वी से, श्रेष्ठ दुनिया से आत्माओं के आगमन का विरोध नहीं कर सकते। क्या आपकी वर्तमान स्थिति उन लोगों के साथ आपके संबंधों को कमजोर नहीं करती है जिन्हें आप इस दुनिया में पीछे छोड़ आए हैं? "नहीं, मेरे दोस्त, प्यार आत्माओं को एक साथ लाता है, आप उन लोगों के करीब हो सकते हैं जिन्होंने पूर्णता प्राप्त कर ली है, उनकी तुलना में जिनकी हीनता और स्वार्थ उन्हें भटकने के लिए मजबूर करते हैं सांसारिक क्षेत्र में दान और प्रेम एक शक्तिशाली आकर्षण के पीछे दो प्रेरणाएँ हैं।

जो आत्माओं के मिलन को बांधता है, और जो दूरी और स्थान की परवाह किए बिना जारी रहता है, वह दूरी केवल भौतिक शरीरों के लिए है, आत्माओं के लिए नहीं। अब आप आध्यात्म के संबंध में मेरे प्रयासों के बारे में क्या सोचते हैं? "मुझे एहसास है कि आप एक मिशनरी हैं और आपका बोझ भारी है, लेकिन मैं लक्ष्य भी देखता हूं और जानता हूं कि आप मेरी आध्यात्मिक सलाह से इसे हासिल करेंगे जितना संभव हो सके आप अपने सामने आने वाली सभी कठिनाइयों को दूर कर सकें। मैं अध्यात्मवाद द्वारा लाए गए नवीनीकरण के आंदोलन के संबंध में कुछ उचित उपाय भी सुझाऊंगा, और यह भी कि वह अधिक बुद्धिमान है मुझसे ज्यादा सक्षम.

चूँकि मैं जानता हूँ कि अच्छी आत्माओं की मदद से आप अपने काम में मजबूत और समर्थित हैं, आप निश्चिंत हो सकते हैं कि मैं आपको कहीं भी और कभी भी अपनी मदद की गारंटी दे सकता हूँ। आपने जो कहा है, उससे कोई यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि आप अध्यात्मवाद के कार्य में बहुत व्यक्तिगत और सक्रिय भाग नहीं लेंगे। “आप गलत हैं. बात सिर्फ इतनी है कि मैं कई अन्य आत्माओं को देखता हूं जो इस तरह के महत्वपूर्ण मामले को संबोधित करने में मुझसे अधिक सक्षम हैं; इसलिए, अजेय भीरुता की भावना मुझे इस समय आपकी इच्छाओं का जवाब देने से रोकती है।

शायद समय के साथ मैं और अधिक साहसी और निडर हो जाऊंगा, लेकिन यह महत्वपूर्ण है कि मैं इन आत्माओं को बेहतर तरीके से जान सकूं। आख़िरकार, मेरी मृत्यु को केवल चार दिन ही हुए हैं और मैं अभी भी अपने आस-पास की हर चीज़ से आश्चर्यचकित हूँ। मेरे दोस्त, क्या तुम नहीं समझे? मैं जो नई भावनाएँ अनुभव कर रहा हूँ, उन्हें व्यक्त करने में सक्षम नहीं हूँ। मुझे इन चमत्कारों के आकर्षण पर काबू पाने के लिए खुद को मजबूत करने की जरूरत है; फिलहाल, मैं केवल भगवान की पूजा कर सकता हूं और उनके कार्यों के लिए उन्हें धन्यवाद दे सकता हूं। लेकिन ये आकर्षण ख़त्म हो जाएगा।

आत्माओं ने मुझे आश्वासन दिया है कि मैं जल्द ही इन सभी शानदार चीजों का आदी हो जाऊंगा, और फिर एक आत्मा के रूप में अपनी स्पष्टता के साथ मैं पृथ्वी के नवीनीकरण से संबंधित सभी मुद्दों से निपटने में सक्षम हो जाऊंगा। इस बीच, याद रखें कि अभी, विशेष रूप से, मेरे पास सांत्वना देने के लिए एक परिवार है। "अभी के लिए अलविदा। मैं जल्द ही आपसे मिलूंगा। आपका अच्छा दोस्त आपसे प्यार करता है और हमेशा करता रहेगा, मेरे शिक्षक, क्योंकि आपने उसे पृथ्वी पर रहने के दौरान एकमात्र स्थायी और सच्ची सांत्वना प्रदान की थी।"

विधवा फाउलान।

(यह संदेश अपने बच्चों को 9 फरवरी को दिया था)

“मेरे बच्चों, मेरे प्रियजनों, भगवान ने मुझे तुमसे दूर कर दिया है लेकिन उसने मुझे जो इनाम दिया है वह पृथ्वी पर रहते हुए मैंने जो किया उसकी तुलना में बहुत बड़ा है। मेरे अच्छे बच्चों, अपने आप को परमप्रधान की योजनाओं के प्रति समर्पित कर दो। उसने आपको जो कुछ भी प्राप्त करने की अनुमति दी है, उससे अपने जीवन की परीक्षाओं का सामना करने की शक्ति प्राप्त करें। उस विश्वास

को हमेशा अपने दिलों में बनाए रखें जिसने सांसारिक जीवन से उस तक का सफर इतना आसान बना दिया जो उस निचली दुनिया को छोड़ने पर हमारा इंतजार कर रहा है। भगवान ने मेरी मृत्यु के बाद मुझ पर अपनी असीम कृपा बरसाई, जैसा कि उन्होंने तब किया था जब मैं पृथ्वी पर था। मैं उन्हें उन सभी लाभों के लिए धन्यवाद देता हूं जो उन्होंने आपको दिए हैं।

हे मेरे बच्चों, उसे आशीर्वाद दो; उसे हमेशा और हर समय आशीर्वाद दें। जो लक्ष्य तुम्हें दिखाया गया है या जिस रास्ते पर तुम्हें चलना है उसे कभी मत भूलो। उस समय का उपयोग करने के बारे में सोचें जो भगवान ने आपको पृथ्वी पर दिया है। तुम खुश होओगे, मेरे प्यारे; एकजुट रहेंगे तो खुश रहेंगे। आप अपने बच्चों से खुश होंगे यदि आप उन्हें अच्छे मार्ग पर चलने का निर्देश देंगे, जिस मार्ग को भगवान ने आपको प्रकट करने की अनुमति दी है। “आप मुझे नहीं देख सकते, लेकिन आप निश्चिंत हो सकते हैं कि पृथ्वी पर हमें एक साथ बांधने वाला बंधन मेरे शरीर की मृत्यु के साथ नहीं टूटा, क्योंकि यह शरीर नहीं था जो हमें जोड़ता था, बल्कि आत्मा थी।

इसीलिए, मेरे प्रियजनों - सर्वशक्तिमान की भलाई के लिए धन्यवाद - मैं अभी भी आपका मार्गदर्शन कर सकूंगा, और आपकी प्रगति में आपको प्रोत्साहित कर सकूंगा ताकि हम बाद में फिर से एक-दूसरे के साथ रह सकें। "आगे बढ़ो, मेरे बच्चों; उसी प्रेम के साथ उस उत्कृष्ट विश्वास को विकसित करो। विश्वास करने वालों के लिए अच्छे दिन आरक्षित हैं। यह तुम्हें पहले ही बताया जा चुका है, लेकिन मेरे लिए पृथ्वी पर ऐसे दिन देखना संभव नहीं था। यह से है इससे ऊपर मैं हमारे अच्छे, न्यायप्रिय और दयालु भगवान द्वारा वादा किए गए सुखद समय की सराहना करूंगा "कृपया रोओ मत, बच्चों।

ये संदेश ईश्वर के प्रति आपके विश्वास और आपके प्यार को मजबूत करें, जिन्होंने आपको इतने सारे उपहार दिए हैं और जिन्होंने कई बार आपकी माँ को मदद भेजी है। हर समय प्रार्थना करो; प्रार्थना आपको मजबूत करेगी. भगवान उन शिक्षाओं का पालन करें जिनका मैंने जीवन भर इतनी लगन से पालन किया है।

“मैं तुम्हारे पास वापस आऊंगा, मेरे बच्चों, लेकिन अभी मुझे अपनी दूसरी गरीब बेटी की मदद करनी है, जिसे अभी भी मेरी बहुत ज़रूरत है। अलविदा, मैं जल्द ही आपसे दोबारा मिलूंगा। सर्वशक्तिमान की अच्छाई पर विश्वास रखें. मैं आपके लिए प्रार्थना करता हूं मैं यह कर रहा हूं। अलविदा।"

विधवा फाउलान।

कोई भी गंभीर और प्रबुद्ध व्यक्ति इन संचारों से प्राप्त होने वाले पाठ को आसानी से समझ सकता है, लेकिन फिर भी हम कुछ बिंदुओं पर ध्यान आकर्षित करेंगे। पहला तथ्य यह है कि यह उदाहरण हमें यह संभावना दिखाता है कि पृथ्वी पर पुनर्जन्म होना आवश्यक नहीं है, लेकिन हम अपने पीछे छोड़े गए प्रियजनों से अलग हुए बिना उच्च लोकों में जा सकते हैं। इस प्रकार, जो लोग यहां जीवन की कठिनाइयों के कारण पुनर्जन्म से डरते हैं, वे खुद को बेहतर बनाने के लिए कड़ी मेहनत करके इस तरह के डर से बच सकते हैं।

यह उस व्यक्ति की तरह है जो निचले पद पर अटका नहीं रहना चाहता और इसलिए उसे बेहतर पद पाने के लिए सीखना और काम करना चाहिए। दूसरा बिंदु इस सिद्धांत की पुष्टि है कि मृत्यु के बाद हम जीवन के दौरान अपने प्रियजनों से कम अलग होते हैं। श्रीमती फाउलोन, बुढ़ापे और बीमारी के कारण दक्षिण के एक छोटे शहर में सीमित थीं, उनके परिवार का केवल एक हिस्सा उनके साथ था।

उसके अधिकांश बच्चे और दोस्त दूर-दूर फैले हुए थे, इसलिए शारीरिक बाधाएँ उसे उनसे उतनी बार मिलने से रोकती थीं, जितनी बार वह चाहती थी। लंबी दूरी के कारण उनमें से कुछ के साथ पत्र-व्यवहार भी दुर्लभ और कठिन हो गया था। हालाँकि, वह शायद ही अपने शरीर से इतनी दूर थी कि वह उनमें से किसी तक पहुँचने के लिए हल्के से दौड़ सके, बिना थके और प्रकाश की गति से दूरी तय कर सके।

फिर वह उन्हें देख सकती थी, उनके पारिवारिक समारोहों को देख सकती थी, उनकी सुरक्षा में भाग ले सकती थी और एक माध्यम के माध्यम से वह किसी भी समय उनसे बात कर सकती थी जैसे कि वे अभी भी जीवित हों। और यह सोचने के लिए कि ऐसे लोग भी हैं जो इस तरह के सांत्वना देने वाले विचार के बजाय अनिश्चितकालीन अलगाव पसंद करते हैं।

## पाश्च्यात समकक्ष 'गरुड़ पुराण ' समाप्त

-----------------------

# खंड - II

# भारतीय गरुड़ पुराण

## प्रारम्भ



# Part - II

## The Indian Garuda Purana begins

# अध्याय 1

## पापियों के इहलोक और परलोक में दु:ख का वर्णन |

1. मधुसूदन वृक्ष सर्वोत्तम है, जिसकी जड़ नियम है, जिसका तना वेद है, जिसकी शाखाएँ पुराण हैं, जिसके फूल यज्ञ हैं और जिसका फल मोक्ष है।

2. शयन भूमि नैमिष में शौनक आदि ऋषियों ने स्वर्ग प्राप्ति के लिए हजारों वर्षों तक यज्ञ किया।

3-5. एक बार प्रातःकाल यज्ञ-अग्नि में आहुति देने के बाद उन ऋषियों ने वहाँ बैठे पूज्य सूतजी से आदरपूर्वक पूछा:-

ऋषियों ने कहा: आपने भगवान के सुखदायक मार्ग का वर्णन किया है। अब हम भय उत्पन्न करने वाले यम के मार्ग के विषय में सुनना चाहते हैं;

A. बदलती दुनिया के दुखों के बारे में भी,

बी. उसके कष्टों को दूर करने के उपाय के बारे में भी. कृपया हमें इस लोक और परलोक के दुःखों के विषय में ठीक-ठीक बताइये।

6. सूतजी बोले: तो सुनो. मैं यम के मार्ग का वर्णन करने के लिए तैयार हूं, जो अत्यंत कठिन है, पुण्यात्माओं को सुख और पापियों को दुःख देता है।

7. जिस प्रकार भगवान विष्णु ने वनतेय के पूछने पर उससे कहा था, उसी प्रकार मैं भी उनसे तुम्हारे कष्ट दूर करने के लिए कहूँगा।

8-9. एक बार जब श्रीहरि वैकुण्ठ में सुखपूर्वक बैठे थे, तब विनता के पुत्र गरुड़जी ने उन्हें प्रणाम करके पूछा, गरुड़जी ने कहा: आपने मुझे अनेक प्रकार के भक्ति मार्ग बताये हैं, और हे महिमामयी! भक्तों का अंतिम लक्ष्य भी बताया गया है।

10. अब मैं यम के उस भयानक मार्ग के विषय में सुनना चाहता हूं, जिससे जो लोग आपकी भक्ति से विमुख हो जाते हैं, उन्हें गुजरना पड़ता है।

11. भगवान के नाम का उच्चारण आसानी से हो जाता है और जीभ नियंत्रण में रहती है। धिक्कार है उन अभागे मनुष्यों पर जो अब भी नरक में जाते हैं!

12. हे भगवान, अब मुझे बताएं कि पापियों को कौन सा मार्ग प्राप्त होता है और वे यम मार्ग के दुखों को कैसे प्राप्त करते हैं।

13. भगवान ने कहा: हे पक्षीराज, सुनो और मैं यम के मार्ग का वर्णन करूंगा, जिसके बारे में सुनना भी भयानक है, जिसके द्वारा पापी लोग नरक में जाते हैं।

14-16. हे तार्क्ष्य! जो पाप में प्रसन्न होते हैं, दया और धर्म से रहित होते हैं, दुष्टों में आसक्त होते हैं, सच्चे शास्त्रों और अच्छे लोगों की संगति से विमुख होते हैं, आत्मसंतुष्ट, बेचैन, धन के नशे में चूर, अधर्मी गुणों से युक्त होते हैं . जो लोग दीन-हीन, दैवी गुणों से रहित, अनेक विचारों से मोहित, मोह-जाल में फँसे हुए, काम-सुख भोगते हैं और घोर नरक में गिरते हैं।

17. जो मनुष्य ज्ञान की ओर प्रवृत्त होते हैं वे परम गति को प्राप्त होते हैं; पाप में लिप्त लोग दुखी होते हैं और यम की यातना सहते हैं।

18. सुनो, पापी इस जगत में किस प्रकार दु:ख उठाते हैं, और फिर मृत्यु में प्रवेश करके किस प्रकार यातना सहते हैं।

19. पूर्व कर्मों के अनुसार अच्छे या बुरे कर्मों को भोगने के बाद कर्मों के फलस्वरूप रोग उत्पन्न होते हैं।

20. ताकतवर मौत अप्रत्याशित रूप से उसके पास आती है, एक सांप की तरह, शारीरिक और मानसिक पीड़ा सहते हुए, फिर भी जीने की उत्सुकता से उम्मीद करता है।

21-24. जीवन से अभी तक थका नहीं, आश्रितों द्वारा पालन-पोषण किया जा रहा है, बुढ़ापे से शरीर क्षीण हो गया है, मृत्यु के निकट है, कुत्ते की तरह घर में

पड़ा रहता है, जो भी सामने रख दिया खा लेता है, बीमार है, पाचन शक्ति कमजोर है, बहुत कम खाता है, चलता है बहुत कम, ताकत की कमी के कारण आंखें भिंची हुई, नलिकाएं कफ से भरी हुई, खांसी और सांस लेने में कठिनाई से थका हुआ, गले में मौत की खड़खड़ाहट, घिरे हुए रोते-बिलखते परिजन; बोलने पर भी वह उत्तर नहीं देता, क्योंकि वह मृत्यु के पाश में फँसा हुआ है।

25. इस अवस्था में उसका मन अपने परिवार के भरण-पोषण में केन्द्रित हो गया, उसकी इन्द्रियाँ शांत हो गईं, तीव्र पीड़ा से व्याकुल होकर वह अपने रोते-बिलखते रिश्तेदारों के बीच मर गया।

26. हे ताक्ष्यं! इस अंतिम क्षण में दिव्य दृष्टि उत्पन्न होती है, - सभी संसार एक जैसे दिखाई देते हैं, - और वह कुछ भी न कहने का प्रयास करता है।

27. फिर जब दुर्बल इन्द्रियाँ नष्ट हो जाती हैं और बुद्धि सुन्न हो जाती है, तब यम के दूत समीप आते हैं और प्राण चले जाते हैं।

28. जब सांस अपनी जगह छोड़ देती है तो मृत्यु का क्षण एक युग के समान लगता है और दर्द सैकड़ों बिच्छुओं के डंक के समान महसूस होता है।

29. अब उसके मुंह से झाग निकलने लगा, और उसका मुंह लार से भर गया। पापी की आत्मा नीचे के दरवाजे से बाहर निकलती है।

30-31. तभी यम के दो डरावने दूत आये, जिनकी आकृति बहुत ही भयानक थी, वे पाश और दण्ड लिये हुए थे, नग्न थे, दाँत पीस रहे थे, कौवे के समान काले थे, उनके बाल खड़े थे, कुरूप मुख थे, वे शस्त्रों के समान शूल लिये हुए थे। हुई थी; उन्हें देखकर उसका दिल धड़कने लगता है और वह शौच करने लगता है।

32. यम के सेवक 'ओह, ओह' कहते हुए उस अंगूठे के आकार के पुरुष को शरीर से बाहर निकालते हैं और उस समय उसके शरीर को देखते रहते हैं।

33. और उसके चारों ओर यातना की वस्तुएं रखकर, और उसके गले में फंदा डालकर, उसे बलपूर्वक बहुत दूर तक ले जाते हैं, जैसे राजा के हाकिम अपराधी को पकड़ लेते हैं।

34-35. इस प्रकार उसे पकड़कर देवदूत उसे धमकाते हैं और नरकों की भयानक भयावहता का बार-बार वर्णन करते हैं - 'हे दुष्ट, शीघ्रता कर। तुम्हें यम के घर

जाना होगा. हम तुम्हें बिना किसी देरी के अभी कुम्भीपाक तथा अन्य नरकों में ले चलेंगे।'

36. तब ये बातें सुनकर, और उसके कुटुम्बियों का रोना, हाय, हाय, सुनकर यम के सेवकों ने उसे पीटा।

37-38. उनकी धमकियों से कांपता हुआ, रास्ते में जूतों से पीटा गया, अपने कुकर्मों को याद करता हुआ, भूखा-प्यासा, धूप से झुलसा हुआ, जंगल की आग और गर्म हवाओं में जलता हुआ, पीठ पर कोड़े मारे, वह जलती हुई रेत के पास लेटा हुआ है। आया। रास्ते में, आश्रयहीन और जलविहीन, लगभग शक्तिहीन, वह दर्द में चल रहा है।

39-40. इधर-उधर थकता, गिरता, फिर उठता- इस प्रकार बड़े दुःख के साथ उसे अँधेरे में से यम के घर ले जाया जाता है, कुछ ही देर में वह वहाँ पहुँच जाता है और देवदूत उसे नरक की भयानक यातनाएँ दिखाते हैं।

41. भयानक यम को देखकर वह व्यक्ति कुछ देर बाद यम के आदेश पर दूतों के साथ हवाई मार्ग से वापस लौट आता है।

42. वह अपनी पूर्व प्रवृत्तियों से बंधा हुआ, मांस की इच्छा वाला, यम के अनुयायियों द्वारा पाश में बंधा हुआ, भूख और प्यास से पीड़ित होकर रोता हुआ लौटता है।

43. उसे अपने बच्चों द्वारा दिया गया चावल तथा बीमारी के समय दिया हुआ अनाज मिलता है। फिर भी हे तार्क्ष्य! इन्कार करने वाले पापी को संतुष्टि नहीं मिलती।

44. श्राद्ध, दान और जल की एक बूँद भी पापियों को नहीं बचाती। हालाँकि वे चावल का प्रसाद खाते हैं, फिर भी वे भूख से पीड़ित होते हैं।

45. जो लोग मृत्यु के समय चावल के प्रसाद से वंचित रह जाते हैं, वे अंत तक महान दुःख भोगते हुए निर्जन वन में भटकते रहते हैं।

46. भोगे हुए कर्म हजारों-लाखों युगों में भी नष्ट नहीं होते; जिस प्राणी ने यातना नहीं झेली उसे मनुष्य जीवन नहीं मिलता।

47. इसलिए, हे द्विज, दस दिनों तक पुत्र को चावल का प्रसाद देना चाहिए। हे पक्षीश्रेष्ठ, हर दिन चावल का प्रसाद चार भागों में बांटा जाता है।

48. शरीर के पांचों तत्वों को पोषण दो भागों से मिलता है; तीसरा भाग यम के दूतों को जाता है; वे चौथे भाग तक जीवित रहते हैं।

49. मृतक नौ दिन और नौ रात तक चावल की गोलियाँ खाता है और दसवें दिन पूर्ण विकसित शरीर वाला प्राणी पुनः शक्ति प्राप्त कर लेता है।

50. हे पक्षी! इन यज्ञों के माध्यम से पुराने शरीर का दाह संस्कार कर नए शरीर का निर्माण किया जाता है। इससे हाथ के आकार के व्यक्ति को सड़क पर अच्छे और बुरे अनुभव मिलते हैं।

51-53. पहले दिन के चावल के गोले से सिर, दूसरे दिन से गर्दन और कंधे, तीसरे दिन से हृदय, चौथे दिन से पीठ, पांचवें दिन से नाभि, छठे दिन से कूल्हे और गुप्तांग, छठे दिन से जांघें बनती हैं। . सातवें दिन दो घुटने और पैर बन जाते हैं। दसवें दिन भूख और प्यास लगती है।

54. मृतक चावल के पिंड से बने शरीर में रहता है और ग्यारहवें तथा बारहवें दिन बहुत भूखा-प्यासा भोजन करता है।

55. तेरहवें दिन मृतक यम के सेवकों द्वारा बांधे गए बंदर की तरह रास्ते पर अकेला चलता है।

56. हे पक्षी! यम के मार्ग का विस्तार छियासी हजार योजन है, अर्थात 1 वैतरणी से रहित।

57. मृतक प्रतिदिन दिन-रात दो सौ सैंतालीस योजन यात्रा करता है।

58-59. धीरे-धीरे यात्रा करके. रास्ते में पापी मनुष्य इन सोलह नगरों से होकर गुजरता है और धर्मराज के यहाँ जाता है। 2:-- सौम्य, 3 सौरिपुर, 4 नागेंद्रभवन, 5 गंधर्व, 6 शैलगाम, 7 क्रौंच, 8 क्रूरपुर, 9 विचित्रभवन, 10 बह्वापाद, 11 दुखहद, 12 नानाक्रंदपुर, 13 सुतप्तभवन, 14 रौद्र, 15 पयोवर्षण, 16 शीतढ्य, 17 बहुभीति .18:-- यम की नगरी से पहले, धर्म का निवास.

60. यम के पाश में बंधा हुआ पापी मनुष्य अपना घर छोड़कर "ओह-ओह" चिल्लाता हुआ यमनगर की ओर चला जाता है।

इसलिए टिप्पणी संपादित करें : अलौकिक प्राणी, जो सोते नहीं हैं।

1. यम मृत्यु के देवता हैं।

2. संसार: तीन लोक जिनमें मनुष्य जन्म और मृत्यु के माध्यम से विचरण करते हैं।

2. गरुड़ का एक नाम, विनता गरुड़ की माता थी।

3. इस रचना में सर्वनामों की अस्पष्टता अपरिहार्य है, इन्हें सामान्य ज्ञान की सहायता से ही समझाया जा सकता है।

4. मृतकों के लिए समारोह.

5. तीन ऊंची जातियों के सदस्य पवित्र धागा पहनने पर "दूसरा जन्म" लेते हैं; सभी पक्षी दो बार जन्म लेते हैं, अंडे के अंदर और बाहर।

6. एक योजन 8 से 9 मील के बीच होता है।

7. यम का दूसरा रूप.

8ए. शांत स्थान।

8. शनि का शहर.

9. नाग देवता का निवास।

10. गायकों का स्थान.
11. दुर्गम पर्वत.
12. एक पर्वत का नाम.
13. क्रूरता का शहर.

14. एक अद्भुत जगह.
15. अनेक विपत्तियाँ।
16. दुःखद.
17. तरह-तरह की चीखों का शहर.
18. बहुत गरम जगह.
19. बर्बरता.
20. बहुत ठंडा.
21. अनेक भयावहताएँ।

## दूसरा अध्याय

## यम के मार्ग का वर्णन |

1. गरुड़ ने कहा: यमलोक में दुःख का मार्ग क्या है? हे केशव, बताओ पापी मनुष्य किस मार्ग पर जाते हैं?

2. भगवान ने कहा: मैं तुम्हें यम के मार्ग के बारे में बताता हूं जो महान दुख देने वाला है। यद्यपि तुम मेरे भक्त हो फिर भी यह सुनोगे तो चिंतित हो जाओगे।

3. इस मार्ग पर न तो वृक्ष की छाया है, जिस पर मनुष्य विश्राम कर सके, न भोजन है, जिसके सहारे वह अपना जीवन निर्वाह कर सके।

4. कहीं भी पानी नजर नहीं आता जिसे वह अत्यधिक प्यास लगने पर पी सके। हे पक्षी, प्रलय के अंत में बारह सूर्य चमक रहे हैं।

5. पापात्मा वहीं जाता है, कहीं ठंडी हवाओं से काटा हुआ, कहीं कांटों से काटा हुआ, कहीं अत्यंत विषैले सांपों से काटा हुआ।

6. पापी को कहीं खूंखार सिंह, बाघ और कुत्ते काटते हैं, कहीं बिच्छू डंक मारते हैं और कहीं आग से जला दिया जाता है।

7-8. एक स्थान पर दो हजार योजन लम्बा और चौड़ा तलवार के समान पत्तों वाला अत्यंत भयानक वन है, जिसमें कौवे, उल्लू, बाज, गिद्ध, मधुमक्खियाँ, मच्छर रहते हैं और उस वन में भी रहते हैं। , जिसके पत्तों से उसे छेदा गया था। और यह फटा हुआ है.

9. कहीं वह गुप्त कुएँ में गिरता है, कहीं ऊँचे पर्वत से गिरता है, कहीं छुरियों और भालों की नोंक पर चलता है।

10. कहीं वह भयंकर अन्धकार में ठोकर खाकर जल में गिर पड़ता है, कहीं जोंकों से भरी कीचड़ में गिर जाता है, कहीं गरम कीचड़ में गिर जाता है।

11. एक स्थान पर पिघले हुए तांबे से बनी गरम बालू का एक खेत है; दूसरे स्थान पर कोयले का ढेर है; तीसरी जगह पर धुएं का बड़ा गुबार है.

12-13. कहीं-कहीं कोयले की वर्षा, पत्थरों और वज्रों की वर्षा, रक्त की वर्षा, अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा, उबलते पानी और दाहक कीचड़ की वर्षा होती है। कहीं-कहीं गहरी खाइयाँ हैं; चढ़ने के लिए पहाड़ियाँ हैं और उतरने के लिए घाटियाँ हैं।

14. कहीं घोर अन्धियारा है; कुछ स्थानों पर ऐसी चट्टानें हैं जिन पर चढ़ना कठिन है; कुछ स्थानों पर मवाद, रक्त और मल से भरी झीलें हैं।

15-17. रास्ते के बीचों-बीच भयानक वैतरणी नदी बहती है, जिसे देखना कष्टदायक है और जिसके स्मरण मात्र से भय उत्पन्न हो जाता है। सौ योजन तक फैली हुई, मवाद और रक्त की धारा, अगम्य, किनारों पर हड्डियों के ढेर, मांस और रक्त की कीचड़, पापियों के लिए दुर्गम, बालों वाली काई से अवरुद्ध, विशाल मगरमच्छों से भरी हुई और सैकड़ों भयानक पक्षियों से भरी हुई।

18-20. हे ताक्ष्र्य, जब यह नदी आग की लपटों और धुएं से भरी होती है, तवे पर मक्खन की तरह उबलती है, डंक मारने वाले कीड़ों के भयानक झुंड से ढकी होती है, विशाल गिद्धों और कठोर चोंच वाले कौवों से भरी होती है, पर्पोइज़ से भरी होती है, मगरमच्छ होती है तो पापियों को आते हुए देखती है, जोंक , मछलियाँ और कछुए और अन्य मांसाहारी जलीय जानवर।

21. बहुत से पापी जल में गिरकर, हे भाई, हे पुत्र, हे पिता कहकर चिल्लाते हैं। - बार-बार कराहना।

22-23. कहते हैं कि भूखे-प्यासे पापी खून पीते हैं। वह नदी रक्त से भरी हुई, अत्यंत झागदार, अत्यंत भयानक, अत्यंत तीव्र गर्जना करने वाली, देखने में कठिन, भय पैदा करने वाली, पापी लोग उसे देखकर मूर्च्छित हो जाते हैं।

24. वह बहुत बिच्छुओंऔर काले सांपोंसे भरा हुआ है, और जो उस में गिरते हैं उनको कोई बचानेवाला नहीं।

25. पापी लाखों भँवरों से होकर नीचे की ओर उतरते हैं। वे एक क्षण के लिए नीचे रुकते हैं और एक क्षण के बाद फिर ऊपर चले जाते हैं।

26. हे पक्षी! यह नदी इसलिए बनाई गई है ताकि पापी इसमें गिर सकें। इसे पार करना कठिन एवं अत्यंत कष्टकारी होता है तथा इसका विपरीत पक्ष भी दिखाई नहीं देता है।

27. इस प्रकार पापी मनुष्य रोने और दुःख से भरकर यम के मार्ग का अनुसरण करते हैं, जो अनेक प्रकार के कष्ट और अपार दुःख पहुँचाता है।

28. पापी पाश से बँधे हुए, काँटों से घसीटे हुए, और पीछे से शस्त्रों की नोकों से छेदते हुए आगे बढ़ते हैं।

29. कितनों को नाक की नोक से, और कानों से भी फन्दे में घसीटा जाता है; किसी को मृत्यु का पाश खींच ले जाता है और किसी को कौवे चोंच मार देते हैं।

30-32. कुछ लोग अपनी गर्दन, हाथ, पैर और पीठ को जंजीरों से बांध कर चलते हैं, लोहे के कई भार लादते हैं और यम के भयंकर दूतों द्वारा हथौड़ों से पीटे जाते हैं, उनके मुंह से खून निकलता है, जिसे वे खाते हैं। ये प्राणी अपने कर्मों पर विलाप करते हुए, अत्यंत दुःख से भरे हुए और थके हुए होकर यम के घर की ओर बढ़ते हैं।

33-34. और इस प्रकार वह मूर्ख सड़क पर जाकर अपने पुत्र-पौत्रों से 'ओह, ओह' कहकर पछताता है - 'मनुष्य जीवन बड़े पुण्य से प्राप्त होता है। पाकर भी मैंने अपना कर्तव्य नहीं निभाया और जो कुछ किया है!

35. 'मैंने न तो दान दिया, न अग्नि में यज्ञ किया, न तप किया, न देवताओं की पूजा की, न तीर्थस्थान पर अनुष्ठान किया; हे शरीर में रहने वालो, अपने किये पर पश्चाताप करो!

36. 'मैंने ब्राह्मणों की सभा को उचित सम्मान नहीं दिया, पवित्र नदी की यात्रा नहीं की, अच्छे लोगों की सेवा नहीं की, कभी कोई दान कार्य नहीं किया; हे शरीर में रहने वालो, अपने किये पर पश्चाताप करो!

37. 'अफसोस, मैंने मनुष्यों, जानवरों के कल्याण के लिए या बांधों के लिए जलविहीन स्थानों में तालाब नहीं खोदे; गौओं और ब्राह्मणों के भरण-पोषण के लिये किंचितमात्र भी न किया; हे शरीर में रहने वालो, अपने किये पर पश्चाताप करो!

38. मैं न तो प्रति दिन दान देता था, और न गाय को प्रतिदिन भोजन देता था; वेदों और शास्त्रों की आज्ञाओं का सम्मान नहीं किया, पुराणों को नहीं सुना, ज्ञानियों की पूजा नहीं की; हे देहधारी, तुमने जो कुछ भी किया है उसके लिए पश्चाताप करो!'

39. 'मैंने अपने पति की अच्छी सलाह का पालन नहीं किया है, मैं अपने पति के प्रति कभी वफादार नहीं रही, मैंने अपने सक्षम बड़ों को उचित सम्मान नहीं दिया; हे देहधारी, तुमने जो कुछ भी किया है उसके लिए पश्चाताप करो!'

40. 'अपने कर्तव्य को न जानकर मैंने अपने पति की सेवा नहीं की और न ही उनकी मृत्यु के बाद अग्नि में प्रवेश किया। विधवा होकर मैंने पश्चाताप नहीं किया; हे देहधारी, तुमने जो कुछ भी किया है उसके लिए पश्चाताप करो!'

41. 'मैंने न तो मासिक उपवासों से, न ही विस्तृत अनुष्ठानों से अपने शरीर को कमजोर किया है। पिछले जन्मों के पाप कर्मों के कारण मुझे स्त्री शरीर मिला है, जो महान दुःख का कारण है।

42. पूर्व जन्म को स्मरण करके बार-बार इस प्रकार विलाप करने पर 'मुझे यह मनुष्य योनि कहाँ से प्राप्त हुई?' इतना कहकर वह आगे बढ़ जाता है।

43. सत्रह दिन तक वह वायु की गति से अकेला चलता रहता है। हे ताक्ष्र्य, अठारहवें दिन मृतक सौम्य नगर पहुंचता है।

44. उस अच्छे और खूबसूरत शहर में कई मरे हुए लोग हैं. यहां देखने के लिए पुष्पभद्रा नदी और खूबसूरत गूलर का पेड़ है।

45. उस नगर में वह यम के सेवकों के साथ विश्राम करता है। वहां उसे अपनी पत्नी, पुत्र तथा अन्य लोगों के सुखों की याद आती है और वह दुखी हो जाता है।

46-47. जब वह अपने धन, परिवार और आश्रितों के लिए शोक मनाता है, तो मृतक और नौकर कहते हैं: अब तुम्हारा धन कहाँ है? अब आपके बच्चे और पत्नी कहाँ हैं? अब आपके दोस्त और रिश्तेदार कहाँ हैं? मूर्ख, तुम केवल अपने कर्मों का फल भोग रहे हो। अमर रहे!

48. 'आप जानते हैं कि भोजन यात्री की शक्ति है। हे दूसरी दुनिया के यात्री, भोजन के लिए प्रयास मत करो! अभी भी तुम्हें उस रास्ते पर चलना है जहां न खरीदना है, न बेचना है.

49. हे मनुष्य, क्या तू ने इस मार्ग के विषय में नहीं सुना, जिस से बालक भी परिचित हैं? क्या आपने पुराणों में वर्णित द्विजों से इसके बारे में नहीं सुना है?

50. दूतों के ऐसा कहने पर और हथौड़ों से पीटने पर वह बलपूर्वक फंदे से घसीटा जाता है और गिरकर उठ जाता है और भाग जाता है।

51. यहाँ वह अपने पुत्रों और पौत्रों द्वारा प्रेम या करुणावश दिये गये मासिक चावल के लड्डू खाता है और वहाँ से सौरिपुर चला जाता है।

52. जंगम नाम का एक राजा है, जो मृत्यु के समान दिखता है। उसे देखकर वह भयभीत हो जाता है और प्रयास छोड़ने का फैसला करता है।

53. उस नगर में वह तीन पखवाड़े के अंत में दिए गए जल और भोजन का मिश्रण खाता है और फिर उस नगर से आगे बढ़ जाता है।

54. वहाँ से मृतक शीघ्र ही नागेन्द्र भवन चला जाता है; और वहाँ के भयानक वनों को देखकर दुःख से रोने लगता है।

55-56. बेरहमी से घसीटे जाने पर वह बार-बार रोता है। दो महीने के अंत में पीड़ित अपने रिश्तेदारों द्वारा दिए गए चावल के गोले, पानी और कपड़ों का आनंद लेने के बाद शहर छोड़ देता है, और उसे फिर से फांसी से खींच लिया जाता है और नौकरों द्वारा आगे बढ़ाया जाता है।

57-58. तीसरा महीना आने पर वह गंधर्वों की नगरी में पहुंचता है और तीसरे महीने का प्रसाद खाकर आगे बढ़ता है। चौथे महीने में जब वह शैलगाम नगर पहुंचता है तो वहां मृतकों पर पत्थरों की भारी वर्षा होती है।

59. चौथे महीने का चावल खाने से कुछ हद तक मन प्रसन्न रहता है। पांचवें महीने में मृतक वहां से क्रौंच नगर में चला जाता है।

60. मृतक ने क्रौंच नगर में रहते हुए पांचवें महीने में दिए गए चावल खाए और फिर उसे खाकर क्रौंचपुर चला गया।

61. साढ़े पांच महीने बीत जाने पर पिछले छह महीने का अनुष्ठान किया जाता है। फिर दिए गए चावल और घड़ों से संतुष्ट होकर वह वहीं रह जाता है।

62-63. कुछ समय वहां रहने के बाद, बहुत दुखी और कांपते हुए, यम के सेवकों से भयभीत होकर, वह शहर छोड़ देता है और चित्रभवन चला जाता है, जहां विचित्र नाम का राजा राज्य करता है, जो यम का छोटा भाई है।

64-65. जब वह उनका विशाल रूप देखता है तो डर के मारे भाग जाता है। तभी कुछ मछुआरे उसके सामने आते हैं और कहते हैं: 'हम आपके लिए नावें लाए हैं - जो लोग ग्रेट स्टाइक्स को पार करना चाहते हैं - यदि आपका पुण्य पर्याप्त है।'

66-67. 'सत्य को देखने वाले ऋषियों ने कहा है कि वितरण दान है, और इसे वैतरणी कहा जाता है क्योंकि इसके माध्यम से व्यक्ति पार हो सकता है। 'यदि आपने गाय का दान किया है तो नाव आपके पास आएगी, अन्यथा नहीं।' उनकी बातें सुनकर वह कहता है, 'हे भगवान!'

68. वह उस व्यक्ति को देखकर क्रोधित हो जाता है और जोर-जोर से चिल्लाने लगता है। जिसने कोई दान नहीं किया उसकी पाप आत्मा इसमें डूब जाती है।

69. दूत उसके होठों में खंजर डाल कर उसे हवा में उड़ाते हैं और काँटे में फँसी मछली की तरह उसे पार ले जाते हैं।

70. फिर वह छठे महीने का चावल खाकर आगे बढ़ता है। वह सड़क पर कराहता हुआ और खाने की इच्छा से अत्यंत कष्ट सहता हुआ चलता है।

71. जब सातवाँ महीना आता है, तब वह बह्वापद नगर को जाता है। वहां वह सातवें महीने में अपने पुत्रों द्वारा दिये गये भोजन का आनंद लेता है।

72. वह उस नगर से आगे बढ़ा, और दुखड़ नामक नगर में पहुंचा। हे पक्षियों के राजा! हवाई यात्रा करते समय उसे बहुत दुःख होता है।

73. आठवें महीने में दिए गए चावल के लड्डू खाकर वह आगे बढ़ता है। नौवें महीने के अंत में वह नानक्रंद नामक शहर में जाता है।

74. अनेक मनुष्यों को भिन्न-भिन्न प्रकार से दुःख से रोते देखकर और स्वयं दुःखी होकर वह बड़े दुःख से रोता है।

75. यम के सेवकों द्वारा धमकाए जाने पर मृतक उस शहर को छोड़ देता है और दसवें महीने में कठिनाई से सुत्तपभवन जाता है।

76. वहाँ उसे चावल और जल का दान मिलता है, परन्तु वह प्रसन्न नहीं होता। ग्यारहवाँ महीना पूरा होने पर वह रौद्र नगर जाता है।

77. वहां वह ग्यारहवें महीने में अपने पुत्रों और अन्य लोगों द्वारा दी गई वस्तुओं को खाता है और ग्यारहवें महीने के आधे दिन के बाद वह पयोवर्षण पहुंचता है।

78. वहां बादल एकत्रित होते हैं जो मृतकों को कष्ट पहुंचाते हैं और वहां कष्ट भोगकर वह वार्षिक श्राद्ध से पहले श्राद्ध करता है।

79. वर्ष के अंत में वह शीतकालीन शहर में जाता है, जहां उसे हिमालय से भी सौ गुना अधिक भयंकर ठंड सताती है।

80. वह भूख और ठंड से व्याकुल होकर दसों दिशाओं में देखता है। 'क्या कोई रिश्तेदार बचा है जो मेरा दुख दूर कर सके?'

81. वहां सेवक पूछते हैं, तेरा गुण क्या है? हर साल चावल के लड्डू खाने से उनकी हिम्मत बढ़ती है.

82. वर्ष के अंत में यम के निवास के निकट आकर बहुभीति नगर में पहुँचकर वह एक हाथ के बराबर शरीर त्याग देता है।

83. अपने कर्तव्यों को पूरा करने के लिए, अंगूठे के आकार की आत्मा, एक प्रताड़ित शरीर धारण करके, यम के सेवकों के साथ हवा में निकलती है।

84. हे कश्यप, जो लोग ऊपरी शरीर में रहने के लिए भिक्षा नहीं देते, वे इस प्रकार कठोर बंधनों से बंधे होते हैं।

85. हे पक्षी, न्याय के राजा के नगर में चार द्वार हैं, जिनमें से दक्षिणी द्वार का मार्ग तुझे बता दिया गया है।

86. भूख, प्यास और थकान से पीड़ित होकर वे किस प्रकार इस भयानक मार्ग पर चलते हैं, इसका वर्णन किया गया है। आप और क्या सुनना चाहते हैं?

## <u>अध्याय III.</u>

## यम की यातनाओं का वर्णन |

1. गरुड़ ने कहा- यम के मार्ग से यम के घर जाने पर पापी को कैसी यातनाएं सहनी पड़ती हैं? अरे केशव, ये तो बताओ.

2. भगवान ने कहा: हे विनता के वंशज, सुनो। मैं तुम्हें शुरू से अंत तक सब कुछ बताऊंगा. नर्क का वर्णन सुनकर आप भी कांप जायेंगे.

3. हे कश्यप! बहुभीति नगर से चालीस योजन दूर एक न्यायप्रिय राजा का महान नगर है।

4-5. 'ओह, ओह' की मिश्रित विलाप सुनकर पापी मनुष्य चिल्ला उठता है और उसकी कराह सुनकर यम नगर में घूमने वाले सभी लोग द्वारपाल के पास जाते हैं और उसे सारी बात बताते हैं। द्वारपाल धर्मध्वज सदैव वहीं खड़ा रहता है।

6. वह चित्रगुप्त के पास जाता है और अपने अच्छे-बुरे कर्मों का वर्णन करता है। तब चित्रगुप्त यह बात न्यायप्रिय राजा को बताते हैं।

7. हे ताक्ष्र्य! जो लोग पाप करने से इनकार करते हैं और हमेशा बड़े पाप में आनंद लेते हैं, वे न्याय के राजा के लिए अच्छी तरह से जाने जाते हैं।

8. फिर भी वह चित्रगुप्त से अपने पापों के बारे में पूछता है। सर्वज्ञ होते हुए भी चित्रगुप्त श्रोताओं से प्रश्न पूछते हैं।

9. श्रवण ब्राह्मण का पुत्र है जो स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल में घूमता है, दूर से सुनता और समझता है और बहुत दूर तक देखता है।

10. उनकी पत्नियाँ भी समान स्वभाव की हैं और विशेष रूप से श्रावणी कहलाती हैं। वे महिलाओं द्वारा किये जाने वाले सभी कार्यों से भलीभांति परिचित हैं।

11. ये लोग चित्रगुप्त को मनुष्य द्वारा कही और की गयी सारी बातें, चाहे खुले में या गुप्त रूप से, सुनाते हैं।

12. न्याय के राजा के ये अनुयायी मनुष्य के सभी गुणों और पापों और मन, वाणी और शरीर से उत्पन्न होने वाले कार्यों को ठीक-ठीक जानते हैं।

13. ये लोग इतने शक्तिशाली होते हैं कि इनका नश्वर और अमर प्राणियों पर भी अधिकार होता है। इस प्रकार ये सत्य के श्रोता मनुष्यों के कर्मों का वर्णन करते हैं।

14. जो मनुष्य तप, दान और सत्य बोलकर उन्हें प्रसन्न कर लेता है, उसके लिए वे स्वर्ग और मोक्ष प्रदान करने वाले दाता बन जाते हैं।

15 सुभाषी मनुष्य पापियों के बुरे कामों को जानकर न्याय के राजा के साम्हने उनका वर्णन करते हैं, और दु:ख देनेवाले बनते हैं।

16. सूर्य और चंद्रमा, अग्नि, वायु, आकाश, पृथ्वी और जल, हृदय, यम, दिन और रात, दोनों संध्या और न्याय - ये सभी मनुष्य के कर्मों को जानते हैं।

17. न्याय के राजा चित्रगुप्त, श्रवण, सूर्य और अन्य देवता देहधारी प्राणियों के पापों और पुण्यों का पूरी तरह पालन करते हैं।

18. तब यमराज पापियों के पापों से आश्वस्त होकर उन्हें बुलाते हैं और उन्हें अपना सबसे भयानक रूप दिखाते हैं।

19-21. बड़े-बड़े पापी लोग यमराज का भयानक रूप देखते हैं - विशाल शरीर, हाथ में छड़ी लिए हुए, भैंसे पर बैठे हुए, प्रलय के समय बादल के समान गर्जना करने वाले, काले पर्वत के समान, बिजली के समान चमकते हुए हथियारों वाले। युक्त, तीस-तीस युक्त। दो बाहें। तीन योजन तक फैला हुआ, कुएं जैसी आंखों वाला, भयानक दांतों से भरा मुंह वाला, लाल आंखों वाला और लंबी नाक वाला।

22. चित्रगुप्त भी डरते हैं, उनके साथ मृत्यु, ज्वर आदि भी हैं। यम आदि सभी दूत उनके पास खड़े होकर गर्जना कर रहे हैं।

23. दुष्ट उनको देखकर घबरा जाता है, और हाय, हाय कहकर चिल्लाता है। जिस पापात्मा ने कोई दान नहीं किया हो वह कांपती है और फिर रोती है।

24. फिर यम की आज्ञा से चित्रगुप्त उन सभी पापियों से कहते हैं, जो अपने कर्मों पर रो रहे हैं और विलाप कर रहे हैं।

25. हे पापियों, हे कुकर्मियों, हे अभिमानियों, हे अभिमानियों, तुम ने क्यों पाप किया है?

26. हे मूर्खों, तुम ने काम, क्रोध और पापियों की संगति से उत्पन्न होकर यह घोर पाप क्यों किया?

27 अब तक तुम बड़े आनन्द से पाप करते आए हो, इसलिये अब दुख भी तुम्हारे लिये ठहराया गया है। इससे मुंह मोड़ने का कोई फायदा नहीं है.

28. 'तुमने जो पाप किये हैं वे बहुत हैं और वे पाप अवश्यम्भावी दुःख का कारण हैं।

29. 'यह ज्ञात है कि यमराज मूर्ख और विद्वान, भिखारी और अमीर, मजबूत और कमजोर के साथ समान व्यवहार करते हैं।'

30. चित्रगुप्त के ये वचन सुनकर पापी मनुष्य अपने कर्मों पर शोक करते हैं और शांत रहते हैं।

31. उन्हें चोरों के समान निश्चल खड़े देखकर न्याय राजा ने पापियों को उचित दण्ड देने की आज्ञा दी।

32. तब क्रूर दूतोंने उसे पीटकर कहा, हे पापी, तू अत्यन्त भयानक नरकोंमें जा।

33. प्रचंड, चंडक आदि को यम के दूत पाश से बाँधकर नरक में ले जाते हैं।

34. वहां एक बड़ा वृक्ष है, जो धधकती आग के समान चमक रहा है। इसका विस्तार पांच योजन और ऊंचाई एक योजन है।

35. वे उनको जंजीरोंसे वृझ से बान्धते, और सिर झुकाकर पीटते हैं। जिनको कोई बचाने वाला नहीं होता, वे वहीं जलते हुए चिल्लाते हैं।

36. भूख-प्यास से व्याकुल अनेक पापी मनुष्यों को उस रेशम-कपास के वृक्ष पर लटका दिया जाता है और यम के दूत उन्हें पीटते हैं।

37. 'हे मेरे पापों को क्षमा कर' - वे परम पापी असहाय होकर देवदूतों से प्रार्थना करते हैं।

38. दूत बार-बार धातु की छड़ों, हथौड़ों, लोहे की छड़ों, भालों, गदाओं और बड़े मूसलों से उन पर बलपूर्वक आक्रमण करते हैं।

39-40. इस प्रकार मार खाने के बाद वे शांत हो जाते हैं और बेहोश हो जाते हैं। तब उन्हें शान्त देखकर सेवकों ने उन से कहा, हे पापियों, हे दुष्टों, तुम ने ऐसा पाप क्यों किया? आपने जल और अन्न का हवन भी नहीं किया।

41. तू ने कुत्तोंऔर कौवोंको एक टुकड़ा भी भोजन न दिया, और न अतिथियोंकी सत्कार किया, और न पितरोंको जल पिलाया।

42. तुमने न तो यमराज और चित्रगुप्त का ध्यान किया और न ही उनके मन्त्र का जाप किया, जिसे सताया नहीं जा सकता।

43. तू ने कभी तीर्थस्थानों की यात्रा नहीं की, और न देवताओं की पूजा की। पारिवारिक व्यक्ति होते हुए भी आपने दया तक नहीं दिखाई।

44. 'आपने कोई सेवा कार्य नहीं किया. अपने पाप का फल भोगो! तुम अधर्मी हो, इसलिये मार के योग्य हो।

45. 'भगवान् हरि ईश्वर दोषों को क्षमा कर देते हैं। हम केवल दुष्टों को दण्ड देते हैं, जैसा हमें आदेश दिया गया है।

46. यह कह कर स्वर्गदूत उन्हें बेरहमी से तपाते हैं, और झटके से वे जलते अंगारों की नाईं गिर पड़ते हैं।

47. गिरते समय इनके अंग नुकीले पत्तों से कट जाते हैं तथा कुत्तों के काटने पर ये गिरकर चिल्लाते हैं।

48. तब फ़रिश्ते रोनेवालोंके मुंह में धूलि भर देते हैं, और उन में से कितनों को भांति भांति के फंदे से बांध देते हैं, और हथौड़ों से पीटते हैं।

49. कुछ पापी लकड़ी की नाईं आरी से काटे जाते हैं, और कुछ भूमि पर पटककर कुल्हाड़ियों से टुकड़े टुकड़े किए जाते हैं।

50. कुछ को गड्ढे में आधा दफनाया गया है और उनके सिर तीरों से छेदे गए हैं। कुछ को मशीन के बीच में खड़ा करके गन्ने की तरह निचोड़ा जाता है.

51. कुछ जलते हुए कोयले से घिरे हुए हैं, मशालों से लिपटे हुए हैं और उनमें अयस्क के टुकड़ों जैसी गंध आ रही है।

52. कुछ को गर्म मक्खन में और कुछ को गर्म तेल में डुबाकर तवे पर केक की तरह घुमाया जाता है.

53. कुछ को विशाल उपद्रवी हाथियों के सामने सड़क पर फेंक दिया जाता है और कुछ के हाथ-पैर बांधकर सिर के बल लिटा दिया जाता है।

54. कुछ को कुओं में फेंक दिया जाता है, कुछ को ऊंचाई से फेंक दिया जाता है, और कुछ को कीड़ों से भरे गड्ढों में फेंक दिया जाता है, जहां कीड़े उन्हें खा जाते हैं।

55. उनके सिर, आंखें और चेहरे विशाल मांसाहारी कौवों और गिद्धों की कठोर चोंचों से चोंच खाते हैं।

56. दूसरे चिल्लाते हैं, 'इसे छोड़ दो, इसे मेरे पैसे के साथ छोड़ दो, जो तुम्हें मुझ पर बकाया है।' मैं देख रहा हूं कि तुम यमलोक में अपने धन का आनंद ले रहे हो।'

57. जो पापी इस प्रकार विवाद करते हैं, उन्हें नरकलोक में देवदूत चिमटे से फाड़े हुए मांस के टुकड़े देते हैं।

58. इस प्रकार झगड़ते हुए वे यम के आदेश से दूतों द्वारा पकड़ लिये जाते हैं और तामिस्र आदि भयानक नरकों में डाल दिये जाते हैं।

59. वहां उस वृक्ष के निकट महान दु:ख से भरे हुए नरक हैं, जिनमें महान् दु:ख है जिसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता।

60. हे पक्षी, चौरासी लाख नरक हैं, जिनमें से इक्कीस सबसे भयानक हैं।

61-64. तमिस्रा, 1 लोहशंकु, 2 महारौरवशाल्मली, 3 रौरव, 4 कुड्मल, 5 कालसूत्रक, 6 पुतिमृतिका, 7 संघात, 8 लोहितोड, 9 सविषा, 10 संप्रतिपन, 11 महानिराय, 12 काक, 13 उलू, 14 संजीवन, 15 महापथिन, 16 अवीचि, 17 अंधतामिश्र, 18 कुंभिपक, 19 संप्रपतन, 20 और तपन, 21 - कुल मिलाकर इक्कीस, सभी विभिन्न प्रकार के कष्टों और रोगों से भरे हुए, विभिन्न प्रकार के पापों के फल से भरे हुए, और कई सेवकों से भरे हुए।

65. जो पापी और धर्म से रहित मूर्ख लोग इनमें पड़ गये हैं, वे अंत तक नरक में नाना प्रकार की यातनाएँ भोगते हैं।

66. गुप्त संगति से उत्पन्न होने वाले तामिस्र, अंधतामिस्र, रौरव आदि नरकों की यातना स्त्री-पुरुषों को भोगनी पड़ती है।

67. इस प्रकार जो मनुष्य पहले अपने परिवार का भरण-पोषण करता था या अपना भरण-पोषण करता था, वह दोनों को त्यागकर स्वर्ग में जाता है और उचित फल पाता है।

68. अन्य प्राणियों की कीमत पर अर्जित शरीर को छोड़कर वह अकेला ही नरक में जाता है, जहां उसे सुख के विपरीत सुख मिलता है।

69. मनुष्य अपने भाग्य के अनुसार घोर नरक में दुःख भोगता है, जैसे कोई रोगी अपने धन और परिवार के भरण-पोषण से वंचित हो जाता है।

70: जो केवल अधर्म के माध्यम से अपने परिवार का पालन-पोषण करने में रुचि रखता है, वह अत्यंत अंधकार से भरे स्थान अंधतामिश्र में जाता है।

71. उचित समय पर नीचे की यातनाओं को सहकर वह शुद्ध होकर पुनः यहीं लौट आता है।

## <u>अध्याय IV.</u>

## नरक में ले जाने वाले पापों का वर्णन |

1. गरुड़ ने कहा- वे किस पाप के कारण उस महान पथ पर जाते हैं? वे स्टाइक्स में क्यों आते हैं? वे नरक में क्यों जाते हैं? अरे केशव, ये तो बताओ.

2. भगवान ने कहा: 'जो लोग हमेशा गलत कार्यों में प्रसन्न होते हैं, जो अच्छे कार्यों से दूर रहते हैं, वे नरक से नरक, दुःख से दुःख, भय से भय की ओर जाते हैं।

3. धर्मी लोग न्याय के राजा के नगर में तीन द्वारों से प्रवेश करते हैं, परन्तु पापी उस में केवल दक्षिणी द्वार से प्रवेश करते हैं।

4. स्टाइक्स नदी इसी ख़राब रास्ते पर है. मैं तुम्हें बताऊंगा कि इसके पास से गुजरने वाले पापी कौन हैं।

5 - 12. जो लोग ब्राह्मणों की हत्या करते हैं, मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं, ऋण हत्याएं करते हैं, भ्रूण हत्या करते हैं, स्त्रियों की हत्या करते हैं, भ्रूण नष्ट करते हैं, गुप्त पाप करते हैं, गुरु के धन, मंदिरों को नष्ट करते हैं या द्विज को नष्ट करते हैं। जो संपत्ति चुराते हैं, जो स्त्री की संपत्ति छीनते हैं, जो बच्चों की संपत्ति चुराते हैं, जो कर्ज नहीं चुकाते, जो संचित धन हड़प लेते हैं, जो विश्वासघात करते हैं, जो विषैला भोजन खाकर हत्या करते हैं, जो दोष

निकालकर गुण खोजते हैं। जो सज्जनों से ईर्ष्या करते हैं। जो लोग बुरे कर्म करते हैं, दुष्टों से आसक्त होते हैं, मूर्ख होते हैं, अच्छे लोगों की संगति से विमुख होते हैं, तीर्थस्थानों, अच्छे कर्मों, गुरुओं और प्रतिभाशाली पुरुषों का तिरस्कार करते हैं;

जो लोग पुराण, वेद, मीमांसा, न्याय और वेदांत की आलोचना करते हैं, जो दुखी देखकर खुश होते हैं, जो खुश को दुखी करने की कोशिश करते हैं, बुरे शब्द बोलते हैं और हमेशा बुरी मानसिकता के होते हैं, जो अच्छी सलाह नहीं सुनते और क्या करते हैं शास्त्र कहते हैं? जो लोग आत्मसंतुष्ट, हठधर्मी, मूर्ख और अपने को विद्वान समझते हैं वे भी नहीं सुनते; ये तथा अन्य बहुत से लोग यम के मार्ग पर चलने वाले, अत्यंत पापी, धर्म से रहित, दिन-रात रोने वाले होते हैं।

13. यम के दूतों से पिटकर वे वैतरणी की ओर चले जाते हैं। मैं तुम्हें बताता हूँ कि पापी लोग इसमें कैसे फँसते हैं।

14. जो लोग अपने माता, पिता, गुरु, गुरु और पूज्य जनों का अनादर करते हैं, वे इस पाप में डूबते हैं।

15. जो लोग दुष्टता से समर्पित, गुणी, कुलीन और विनम्र स्त्री का परित्याग करते हैं, वे वैतरणी में गिरते हैं।

16. जो लोग बुरा सोचते हैं और हजारों गुणों वाले अच्छे लोगों का अपमान करते हैं वे वैतरणी में गिरते हैं।

17. जो लोग ब्राह्मणों को दिया हुआ वचन पूरा नहीं करते और उन्हें बुलाकर कहते हैं, 'तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं है', उन दोनों का अस्तित्व समाप्त हो जाता है।

18-24. जो अपना दिया हुआ वापस लेता है; जो अपने दान से विरत रहता है; जो दूसरे की आजीविका छीन लेता है; जो दूसरों को दान देने से रोकता है; जो यज्ञ में विघ्न डालता हो; जो कहानी कहने से रोकता है; जो क्षेत्र की सीमाएँ हटा दे; वह जो चरागाह जोतता है; एक ब्राह्मण जो शराब बेचता है और जिसका निचली जाति की महिला से संबंध है; जो वेदों में वर्णित यज्ञों के लिए नहीं, बल्कि अपनी संतुष्टि के लिए पशुओं की हत्या करता है; जिसने अपने ब्राह्मण कर्तव्यों का त्याग कर दिया है; जो मांस खाता और शराब पीता है;

जो उपद्रवी स्वभाव का हो; जो शास्त्रों का अध्ययन नहीं करता; जो शूद्र वेदों का अध्ययन करता है, जो भूरी गाय का दूध पीता है, जो पवित्र धागा पहनता है या जो ब्राह्मण महिलाओं के साथ संबंध रखता है; जो राजा की पत्नी का लालच करता है; जो पराई स्त्रियों का अपहरण करता है, कुमारियों के प्रति वासना रखता है और पवित्र स्त्रियों की निंदा करता है; ये तथा अन्य बहुत से मूर्ख लोग वर्जित मार्गों पर चलने के शौकीन होते हैं तथा वैध व्रतों को त्याग कर वैतरणी में गिर जाते हैं।

25. मार्ग में चलते-चलते पापी मनुष्य यमलोक पहुँच जाते हैं और वहाँ पहुँचने के बाद यम के आदेश से दूत उन्हें वापस उसी नदी में फेंक देते हैं।

26. हे पक्षियों के राजा! उन पापियों को वैतरणी अर्थात् सर्वोत्तम नर्क में डाल देते हैं।

27. जो लोग काली गाय का दान नहीं करते और न सीधे शरीर वालों का श्राद्ध करते हैं, वे वृक्ष के किनारे खड़े होकर महान दुःख भोगते हैं।

28-30. जो झूठी गवाही देते हैं, जो झूठे काम करते हैं, जो छल से कमाते हैं, और जो चोरी करके अपनी जीविका चलाते हैं, जो बड़े-बड़े वृक्षों, बगीचों और वनों को काटते और नष्ट करते हैं, जो व्रतों और तीर्थयात्राओं की उपेक्षा करते हैं, जो विधवाओं की पवित्रता को नष्ट करते हैं। जो स्त्री अपने पति का तिरस्कार करती है और दूसरे के बारे में सोचती है, ऐसे लोगों को रेशम-कपास के पेड़ के पास बहुत कष्ट होता है।

31. जो लोग मार खाकर गिर जाते हैं, फरिश्ते उन्हें नर्क में भेज देते हैं। आइए मैं आपको उन पापियों के बारे में बताता हूं जो इसमें फंस जाते हैं।

32. जो लोग अस्वीकार करते हैं, नीति के नियमों को तोड़ते हैं, लालची, कामुक वस्तुओं में आसक्त, धोखेबाज, कृतघ्न होते हैं, वे निश्चित रूप से नरक में जाते हैं।

33. जो लोग कुएं, तालाब, पोखर, मंदिर या लोगों के घरों को नष्ट करते हैं वे निश्चित रूप से नरक में जाएंगे।

34. जो लोग अपनी पत्नी, बच्चों, नौकरों और शिक्षकों की उपेक्षा करके भोजन करते हैं और पितरों और देवताओं को तर्पण करने में आनाकानी करते हैं, वे निश्चय ही नरक में पड़ते हैं।

35. जो लोग खंभे, टीले, लकड़ी, पत्थर या कांटों से मार्ग रोकते हैं, वे निश्चय ही नरक में गिरेंगे।

36. जो लोग स्वार्थवश शिव, शिव, हरि, सूर्य, गणेश, बुद्धिमान तथा अच्छे गुरुओं की पूजा नहीं करते, वे निश्चय ही नरक में जाते हैं।

37-38. जो ब्राह्मण वेश्या को अपने शयनकक्ष में रखता है, वह नीच पद पाता है; यदि उसके पास शूद्र महिला से बच्चा है, तो वह निश्चित रूप से ब्राह्मण के रूप में अपना दर्जा खो देता है। वह अभागा द्विज कभी भी नमस्कार करने योग्य नहीं है; जो मूर्ख उसकी पूजा करते हैं वे निश्चय ही नरक में जाते हैं।

39. जो लोग झगड़ों में रुचि रखते हैं, ब्राह्मणों में फूट डालने और गाय की हत्या करने में संकोच नहीं करते, बल्कि उनमें आनंद लेते हैं, वे निश्चित रूप से नरक में जाते हैं।

40. जो पुरुष गर्भाधान के समय ऐसी स्त्रियों के साथ दुष्ट अपराध करते हैं जिनका कोई अन्य आश्रय नहीं है, वे निश्चय ही नरक में जाते हैं।

41. जो पुरुष कामवासना में अंधे होकर किसी स्त्री के साथ मासिक धर्म के दौरान, चतुर्दशी के दिन, दिन में, जल में या श्राद्ध के समय संभोग करते हैं, वे नरक में जाते हैं।

42. जो लोग अपने शरीर के मल को आग, पानी, बगीचे, सड़क या गौशाला में फेंकते हैं वे नरक में जाते हैं।

43. जो तलवार, धनुष और बाण बनाते हैं तथा जो उन्हें बेचते हैं वे नरक में गिरते हैं।

44. जो वैश्य चमड़े का व्यापार करते हैं, जो स्त्रियाँ अपने बाल बेचती हैं, जो विष बेचते हैं, वे सभी नरक में जाते हैं।

45. जो असहायों पर दया नहीं करते, अच्छे लोगों से घृणा करते हैं और निर्दोषों को दण्ड देते हैं, वे निश्चय ही नरक में पड़ते हैं।

46. जो लोग आशा से भरे हुए घर आए ब्राह्मण अतिथियों को भोजन तैयार होने पर भी नहीं खिलाते, वे निश्चय ही नरक में जाते हैं।

47. जो सभी प्राणियों पर संदेह करते हैं, उनके प्रति क्रूर होते हैं, जो सभी प्राणियों को धोखा देते हैं, वे निश्चय ही नरक में जाते हैं।

48. जो लोग व्रत के नियमों का पालन करते हैं और बाद में इंद्रियों को वश में किए बिना ही उनका त्याग कर देते हैं, वे निश्चय ही नरक में जाते हैं।

49. जो लोग भगवान का ज्ञान देने वाले गुरु और पुराण पढ़ने वालों का आदर नहीं करते, वे निश्चय ही नरक में जाते हैं।

50. जो अपने मित्रों को धोखा देते हैं, जो मित्रता समाप्त कर देते हैं, जो आशाओं को नष्ट कर देते हैं, वे अवश्य नरक में जाते हैं।

51. जो विवाह, भगवान के जुलूस, तीर्थयात्रियों की सभा में बाधा डालता है, वह भयानक नरक में निवास करता है, जहां से लौटना संभव नहीं है।

52. जो अत्यंत पापी व्यक्ति अपने घर, गांव या जंगल में आग लगाता है, उसे यम के दूत पकड़ लेते हैं और आग के कुंडों में पका देते हैं।

53. जब उसके अंग आग से जल जाते हैं, तब वह छाया मांगता है, और तब दूत उसे तलवार के समान तेज पत्तोंवाले जंगल में ले जाते हैं।

54. जब उसके अंग तलवार के समान पैने पत्तों से कटते हैं, तब वे कहते हैं, अहा! इस शीतल छाया में शांति से सो जाओ!'

55. जब वह प्यास से व्याकुल होकर पीने के लिये पानी मांगता है, तो फ़रिश्ते उसे खौलता हुआ तेल पिलाते हैं।

56. फिर वह कहता है, यह रस पियो, और यह भोजन खाओ। पीते ही वह जल जाता है और गिर पड़ता है।

57. किसी तरह वह जाग जाता है और करुण क्रंदन करता है। शक्तिहीन और बेदम होने के कारण वह बोलने में भी असमर्थ है।

58. इस प्रकार कहा गया है, हे तार्क्ष्य! पापियों के लिए बहुत सी यातनाएँ हैं। जब सभी शास्त्रों में इनका वर्णन है तो फिर मैं इनका सम्पूर्ण वर्णन क्यों करूँ?

59. इस प्रकार हजारों स्त्री-पुरुष यातना सहते हैं और प्रलय आने तक भयानक नरकों में जलाये और पकाये जाते हैं।

60-62. वहाँ वे अपना अविनाशी फल खाते हैं और फिर से जन्म लेते हैं। यम की आज्ञा से वे पृथ्वी पर लौट आते हैं और अचल हो जाते हैं और अन्य प्राणी: पेड़, झाड़ियाँ, पौधे, लताएँ, चट्टानें और घास, अचल कहलाते हैं; अत्यंत मोह में लिपटे हुए, -कीड़े, पक्षी, पशु और मछलियाँ; -कहा जाता है कि जन्म भाग्य की संख्या चौरासी लाख होती है.

63. ये सभी बाद में मनुष्य अवस्था में आते हैं; नरक से लौटकर वे मानव साम्राज्य में निचली जातियों में जन्म लेते हैं और वहाँ भी पाप के कलंक के कारण बहुत दुखी होते हैं।

64. इस प्रकार वे पुरूष और स्त्रियां कोढ़ से पीड़ित, जन्म से अन्धे, गम्भीर रोगों से पीड़ित और पाप के कलंक से ग्रस्त हो जाते हैं।

## अध्याय V

## पाप के लक्षणों का वर्णन |

1. गरुड़ ने कहा: हे केशव, मुझे बताओ कि कौन से पाप विशेष लक्षणों को जन्म देते हैं और ऐसे पाप किस योनि को जन्म देते हैं?

2. भगवान ने कहा: नरक से लौटने वाले पापी जिन पापों के कारण विशेष योनि में गिरते हैं और उन विशेष पापों से उत्पन्न होने वाले लक्षणों को मुझसे सुनो।

3. जो ब्राह्मण को मारता है वह तपेदिक का रोगी हो जाता है, जो गाय को मारता है वह कुबड़ा और मूर्ख बन जाता है, जो कुंवारी कन्या को मारता है वह कोढ़ी हो जाता है, ये तीनों बहिष्कृत हो जाते हैं।

4. जो स्त्री को मार डालता और भ्रूण को नाश करता, वह रोग से पीड़ित होकर जंगली मनुष्य बन जाता है; जो अवैध संभोग करता है वह नपुंसक हो जाता है; जो अपने गुरु की पत्नी के साथ जाता है वह रोगी हो जाता है।

5. जो मांस खाता है, उसके दांत बहुत लाल हो जाते हैं, जो नशा करता है, उसके दांत टेढ़े-मेढ़े हो जाते हैं; जो ब्राह्मण लोभ के कारण अनुचित वस्तुएँ खाता है उसका पेट बड़ा होता है।

6. जो मिठाई खाता है और दूसरों को नहीं देता, उसकी गर्दन सूज जाती है; श्राद्ध के समय अशुद्ध भोजन करने वाला चित्तीदार कोढ़ी होता है।

7. जो व्यक्ति अहंकारवश अपने गुरु का अपमान करता है वह मिर्गी का रोगी होता है; जो व्यक्ति वेदों और शास्त्रों का तिरस्कार करता है वह अवश्य ही पीलिया रोग से पीड़ित होता है।

8. जो झूठी गवाही देता है, वह गूंगा हो जाता है; जो भोज के बर्तन तोड़ता है, वह काना हो जाता है; जो विवाह में बाधा डालता है, वह निःशब्द हो जाता है; जो कोई किताब चुराता है वह अंधा पैदा होता है।

9. जो गाय या ब्राह्मण को लात मारता है वह जन्म से दुर्बल और कुरूप होता है; झूठ बोलने वाला हकलाता है और सुनने वाला बहरा हो जाता है।

10. विष देनेवाला पागल हो जाता है; आगजनी करने वाला गंजा हो जाता है; जो मांस बेचता है, वह अभागा हो जाता है; जो दूसरे पशुओं का मांस खाता है वह रोगी हो जाता है।

11. जो मणि चुराता है, वह नीच कुल में जन्म लेता है; जो सोना चुराता है उसके नाखून ख़राब हो जाते हैं; जो कोई धातु चुराता है वह दरिद्र हो जाता है।

12. जो भोजन चुराता है वह चूहा बन जाता है; जो भोजन चुराता है वह टिड्डा बन जाता है; जल चुराने वाला चातक पक्षी है; और जो विष चुराता है वह बिच्छू बनता है।

13. जो साग-सब्जी और पत्ते चुराता है, वह मोर बनता है; इत्र, कस्तूरी, शहद, मगरमच्छ, मांस, गिद्ध और नमक चींटियाँ बन जाते हैं।

14. जो पान के पत्ते, फल और फूल चुराता है, वह जंगल का बन्दर है; जूते, घास और कपास चुराने वाला भेड़ के गर्भ से पैदा होता है।

15. जो हिंसा करके अपनी जीविका चलाता है, जो रास्ते में काफिलों को लूटता है, और जो शिकार का शौकीन है, वह कसाई के घर का बकरा बनता है।

16. जो विष पीकर मर जाता है, वह पहाड़ पर के काले सांप के समान है; जिसका मुख अनियंत्रित होता है वह निर्जन वन में हाथी बन जाता है।

17. जो द्विज विश्व देवताओं को प्रसाद नहीं चढ़ाते और बिना सोचे-समझे सारा भोजन खा लेते हैं, वे निर्जन वन में बाघ बनते हैं।

18. जो ब्राह्मण गायत्री का जप नहीं करता, जो सन्ध्या ध्यान नहीं करता, जो बाहर से पवित्र और अन्दर से दुष्ट है, वह सारस है।

19. जो ब्राह्मण अयोग्य व्यक्ति के लिए यज्ञ करता है वह सुअर बन जाता है, जो बहुत अधिक यज्ञ करता है वह गधा बन जाता है और जो प्रसाद नहीं खाता वह कौआ बन जाता है।

20. जो द्विज योग्य व्यक्तियों को ज्ञान नहीं देता वह बैल बन जाता है और जो शिष्य अपने गुरु की सेवा नहीं करता वह गधा या गाय बन जाता है।

21. जो अपने गुरु को धमकाता है, उन पर थूकता है या ब्राह्मण को डांटता है, वह निर्जल वन में ब्राह्मण-पिशाच के रूप में जन्म लेता है।

22. जो वचन के अनुसार द्विज को दान नहीं देता, वह गीदड़ बनता है; जो सज्जन का आदर नहीं करता वह अग्नि बन जाता है।

23. जो मित्र को धोखा देता है वह गिद्ध बन जाता है, जो बेच में धोखा देता है वह उल्लू बन जाता है, जो जाति और व्यवस्था के बारे में बुरा बोलता है वह जंगल में कबूतर बन जाता है।

24. जो आशा और स्नेह को नष्ट कर देता है, जो वैराग्य के कारण अपनी पत्नी को त्याग देता है, वह दीर्घकाल तक लाल हंस बना रहता है।

25. जो माता, पिता और गुरु से द्वेष रखता है, जो बहन और भाई से झगड़ा करता है, वह हजारों जन्मों तक गर्भ में भ्रूण के रूप में नष्ट हो जाता है।

26 जो स्त्री अपनी सास को गाली देती और उस से झगड़ती है, वह जोंक बन जाती है, और जो अपने पति को डांटती है, वह जूं बन जाती है।

27. जो अपने पति को छोड़कर दूसरे के पीछे दौड़ती है, वह लोमड़ी, छिपकली या साँप बनती है।

28. जो अपने ही कुल की स्त्री के साथ समागम करके अपने कुल का नाश करता है, वह रीछ के गर्भ से जन्म लेता है और लकड़बग्घा और साही बनता है।

29. जो कामी पुरूष किसी तपस्वी स्त्री के साथ फिरता है, वह जंगल में राक्षस बन जाता है, और जो कुरूप कन्या के साथ संभोग करता है, वह जंगल में बड़ा सांप बन जाता है।

30. जो अपने गुरू की स्त्री का लालच करता है, वह गिरगिट बन जाता है; जो राजा की पत्नी के साथ जाता है वह भ्रष्ट हो जाता है; और जो अपने मित्र की स्त्री के साथ जाता है वह गधा बनता है।

31. जो अप्राकृतिक दुराचार करता है, वह गांव का सुअर बनता है; जो शूद्र स्त्री के साथ जाता है वह बैल बन जाता है; जो कामी होता है वह कामी घोड़ा बन जाता है।

32-33. जो ग्यारहवें दिन मृतक का प्रसाद खाता है, वह कुत्ता पैदा होता है। देवलक का जन्म मुर्गी के गर्भ से हुआ था। द्विजों में से एक जो अल्प धन के लिए देवताओं की पूजा करता है, उसे देवलक कहा जाता है और वह देवताओं और पूर्वजों को प्रसाद देने के लिए अयोग्य है।

34. जो लोग अत्यंत पापी होते हैं वे अपने कर्मों की समाप्ति के बाद यहां जन्म लेते हैं और अपने महान पापों के कारण भयानक नरकों से गुजरते हैं।

35. ब्राह्मण का खूनी गदही, ऊंट, और भैंस के गर्भ में जाता है; जो व्यक्ति मादक द्रव्यों का सेवन करता है वह भेड़िया, कुत्ते और सियार की दुनिया में जाता है।

36. सोना चोर कीड़े, मकोड़े और पक्षियों की योनि में पाया जाता है। जो अपने स्वामी की पत्नी के साथ जाता है उसे घास, झाड़ियों और पौधों का जीवन प्राप्त होता है।

37. जो दूसरे की पत्नी को चुराता है, जो अपनी बचत का दुरुपयोग करता है, जो ब्राह्मण को लूटता है, वह ब्राह्मण-राक्षस के रूप में पैदा होता है।

38-40. ब्राह्मण का छल से अर्जित धन, मित्रता में भी भोगा हुआ धन, सात पीढ़ियों तक परिवार को परेशान करता है - और जब तक चाँद और तारे हैं तब तक बलपूर्वक लूटा जाता है। मनुष्य लोहे का बुरादा, पत्थर का चूर्ण और यहां तक कि जहर भी पचा सकता है; परंतु तीनों लोकों में ऐसा कौन है जो ब्राह्मण के धन को पचा सके? ब्राह्मणों के धन से चलने वाले रथ और सेनाएँ युद्ध में कृत्रिम रेत के टीलों की तरह बिखर जाती हैं।

41-43. मंदिर की संपत्ति हड़पना, ब्राह्मण की संपत्ति छीनना और ब्राह्मणों की उपेक्षा करने से परिवार टूट जाते हैं। लापरवाह व्यक्ति वह कहा जाता है जो वेदों के जानकार और उसकी शरण में आए व्यक्ति को दान न देकर दूसरे को दान देता है। परन्तु यदि कोई ब्राह्मण वेदों के ज्ञान से रहित है तो यह लापरवाही नहीं है; यह पास में जल रही आग में आहुति देने के बजाय राख में आहुति देने जैसा है।

44. हे ताक्ष्र्य! उपेक्षा करने और अगले नरकों में उसका फल भोगने के कारण व्यक्ति अंधा और दरिद्र पैदा होता है और दाता की बजाय याचक बन जाता है।

45. जो अपनी दी हुई भूमि दूसरे को छीन लेता है, वह साठ हजार वर्ष तक विष्ठा में रहने वाले कीड़े के समान जन्म लेता है।

46. जो पापी अपना दिया हुआ बलपूर्वक वापस लेता है, वह प्रलय तक नरक में गिरता है।

47. वह उसे जीविका का साधन और भूमि का एक टुकड़ा देकर उसकी दृढ़ता से रक्षा करे। जो रक्षा नहीं करता, बल्कि लूटता है, वह लंगड़ा कुत्ता बन जाता है।

48. जो ब्राह्मणों को जीविका का साधन उपलब्ध कराता है, उसे एक लाख गायों के बराबर फल मिलता है; जो ब्राह्मणों की आजीविका का साधन छीन लेता है वह बंदर, कुत्ता और बंदर बनता है।

49. हे पक्षियों के राजा! ये और अन्य लक्षण और जन्म इस संसार में देहधारी प्राणियों के स्व-प्रदत्त कर्म प्रतीत होते हैं।

50. इस प्रकार जो लोग बुरे कर्म करते हैं, वे नरक की यातनाएँ भोगने के बाद इन योनियों में अपने पापों का अवशेष लेकर जन्म लेते हैं।

51. फिर हजारों जन्मों तक उन्हें पशु का शरीर प्राप्त होता है और उन्हें बोझ उठाना तथा अन्य कष्ट भोगना पड़ता है।

52. पक्षी के रूप में सर्दी, बारिश और गर्मी के कष्ट सहने के बाद वह मनुष्य योनि में पहुंचता है, जहां अच्छाई और बुराई के बीच संतुलन होता है।

53. समय आने पर स्त्री-पुरुष का मिलन भ्रूण बन जाता है. गर्भधारण से लेकर मृत्यु तक कष्ट झेलने के बाद वह दोबारा मर जाती है।

54. जन्म और मृत्यु सभी देहधारी प्राणियों का भाग्य है; इस प्रकार चक्र चारों लोकों में घूमता है।

55. जैसे समय का पहिया घूमता है, वैसे ही मेरी माया से लोग घूमते हैं. कर्मपाश में बंधकर वे कभी पृथ्वी पर तो कभी नरक में भटकते रहते हैं।

56. जो दान नहीं करता, वह दरिद्र हो जाता है, और दरिद्रता के कारण पाप करता है; पाप की शक्ति के कारण वह नरक में जाता है, फिर से गरीबी में जन्म लेता है और फिर से पापी बन जाता है।

57. जो भी कर्म किया गया है, चाहे अच्छा हो या बुरा, उसे भोगना ही पड़ेगा। जिस कर्म का भोग नहीं किया जाता वह करोड़ों युगों में भी नष्ट नहीं होता।

## अध्याय VI.

## पाप योनि का दुःख

1. गरुड़ ने कहा:- हे केशव, मुझे बताओ कि नरक से लौटने वाले मनुष्य का अपनी मां के गर्भ में कैसा निर्माण होता है और भ्रूण अवस्था में उसे कौन-कौन से कष्ट सहने पड़ते हैं।

2. विष्णु ने कहा: मैं तुम्हें बताता हूं कि जब एक पुरुष और एक महिला के मिलन से पुरुष और महिला तत्व एक साथ बंधे होते हैं तो मृत्यु कैसे उत्पन्न होती है।

3. मासिक धर्म के मध्य में, जिन तीन दिनों में इंद्र ब्रह्महत्या का पाप करते हैं, उन दिनों में पापी का शरीर बनना शुरू हो जाता है।

4. नरक से लौटने वाले व्यक्ति की मां को पहले दिन व्यभिचारिणी, दूसरे दिन ब्राह्मण की हत्यारी और तीसरे दिन धोबिन माना जाता है।

5. आत्मा अपने कर्म के अनुसार दिव्य दृष्टि से शरीर प्राप्त करके स्त्री के गर्भ में प्रवेश करती है, जो पुरुष के वीर्य का भण्डार है।

6. एक रात में वह गांठ बन जाती है, पांचवीं रात तक वह गोल हो जाती है, दसवें दिन वह बेर के फल के समान हो जाती है और उसके बाद वह मांसल अंडे के समान हो जाती है।

7-8. पहले महीने में सिर बनता है, दूसरे में भुजाएं और शरीर के अन्य अंग, तीसरे में नाखून, बाल, हड्डियां, त्वचा, लिंग और अन्य गुहाएं बनती हैं, चौथे में सात शारीरिक तरल पदार्थ बनते हैं। पांचवें में भूख और प्यास लगती है, छठे में यह कोरियोन से ढक जाता है और गर्भाशय के बाईं ओर चला जाता है।

9. शारीरिक पदार्थ माँ के भोजन और तरल पदार्थों से बनते हैं और जन्म के समय प्राणी कमर के घृणित गड्ढे में मल और मूत्र के बीच पड़ा रहता है।

10. उसके शरीर के सभी अंगों को भूखे कीड़े लगातार काटते रहते हैं, अत्यधिक दर्द के कारण वह बार-बार बेहोश हो जाता है, क्योंकि वे बहुत नरम होते हैं।

11. इस प्रकार गर्भ से ढका हुआ और बाहर से स्नायुबंधन से बंधा हुआ, उसके पूरे शरीर में दर्द होता है, जो मां द्वारा तीखे, कड़वा, गर्म, नमकीन, खट्टा और अम्लीय आदि विभिन्न पदार्थों को खाने से होता है।

12. सिर पेट में तथा पीठ एवं गर्दन टेढ़ी होने के कारण यह पिंजरे में बंद तोते की तरह अपने अंगों को हिलाने-डुलाने में असमर्थ हो जाता है।

13. वहां उसे दैवीय शक्ति से सैकड़ों जन्मों के कर्म याद आ जाते हैं और याद करते-करते वह बहुत देर तक रोता रहता है और उसे थोड़ी सी भी खुशी नहीं मिलती।

14. ऐसा ज्ञान पाकर वह सात हाथ जोड़कर, कांपती हुई और करुण स्वर में प्रार्थना करके उस पुरूष को दण्डवत् करती है, जिस ने उसे गर्भवती किया है।

15. सातवें महीने की शुरुआत से ही होश में आने के बाद भी भ्रूण प्रसव वायु के कारण गर्भाशय में कीड़े की तरह कांपता और घूमता रहता है।

16-23. जीव कहता है, “मैं भगवान विष्णु की शरण लेता हूँ; वह श्री के पति हैं, जो संसार के पालनकर्ता हैं, जो दुष्टों का नाश करने वाले हैं, जो अपनी शरण में आने वालों पर दयालु हैं। मैं उनकी शरण लेता हूं. हे भगवान, मैं अपने अहंकार के जादू से मोहित हो गया हूं और मैंने अपने आश्रितों के लिए अच्छे और बुरे कर्म किए हैं, और परिणामस्वरूप आपके शरीर का फल भोगते हुए पीड़ित हो गया हूं, हे भगवान।

"यदि मुझे इस गर्भ से मुक्ति मिल जाए तो मैं अपने आप को आपके चरणों में रख दूंगी और वह उपाय अपनाऊंगी जिससे मुझे मुक्ति मिल सके।" मैं मल-मूत्र के कुएँ में गिर पड़ा हूँ, पेट की अग्नि से जल रहा हूँ। मैं हूं, और मैं इससे बचने के लिए बेताब हूं। मैं कब बाहर निकलूंगा? “मैं उसकी शरण लूँगा जिसने मुझे यह अनुभव दिया है, और जो गरीबों और निराश्रितों पर दया करता है। शायद मुझे दोबारा ये जन्म न लेना पड़े.

“लेकिन नहीं, मैं कभी भी उस गर्भ से बाहर नहीं आना चाहता जहाँ मेरे पाप कर्मों के कारण कष्ट होता है।” क्योंकि यहां भी मैं अत्यंत दुःख में रहते हुए, थकान सहते हुए, आपके चरणों की शरण लेकर, परिवर्तन की इस दुनिया से खुद को मुक्त करता हूं। मैं इसे एक तरफ रखूंगा।”

24. यहोवा ने कहा, जो कोई ऐसा सोचता है, और गर्भ में दस महीने रहकर, बुद्धि से धन्य होकर प्रार्थना करता है, वह अचानक प्रसव की हवाओं से सिर के बल नीचे गिर जाता है।

25. वह बलपूर्वक बाहर फेंक दिया गया, और सिर झुकाए हुए, चिन्तित, बेदम और बिना किसी स्मृति के निकला।

26. वह भूमि पर गिर पड़ता है, और विष्ठा में पड़े हुए कीड़े की नाईं इधर उधर फिरता है। उसकी हालत बदल जाती है और वह बिना किसी जानकारी के जोर-जोर से चिल्लाने लगता है।

27. गर्भ में, बीमारी के समय, श्मशान में या पुराण सुनने से जो मन की स्थिति उत्पन्न होती है, वह यदि स्थायी होती - तो कौन बंधन से मुक्त नहीं होता?

28. जब वह अपने कर्मों को भोगकर गर्भ से बाहर आता है, तब निश्चय ही वह मनुष्य विष्णु की माया से मोहित हो जाता है।

29. फिर जब वह जादू उस पर छू जाता है, तो वह शक्तिहीन हो जाता है, और बोल नहीं पाता। वह निर्भरता के परिणामस्वरूप शैशवावस्था और बचपन के आघात का अनुभव करता है।

30. उसका पालन-पोषण ऐसे लोगों द्वारा होता है जो उसकी इच्छाओं को नहीं समझते हैं, जो उसकी इच्छा के विरुद्ध उस पर थोपी गई चीजों को रोकने में असमर्थ हैं।

31. वह अशुद्ध और पसीने से लथपथ बिस्तर पर पड़ा रहता है, खुजलाने, बैठने, उठने या अपने अंगों को हिलाने में असमर्थ होता है।

32. मच्छर, मक्खियाँ और अन्य मक्खियाँ उसे काटती हैं, वह त्वचाहीन, रोने वाला और समझ से रहित होता है, जैसे कीड़े छोटे कीड़ों को काटते हैं।

33. इस प्रकार वह शैशव और बाल्यकाल के दुःख भोगकर युवावस्था में पहुँचता है और बुरी प्रवृत्तियों को प्राप्त कर लेता है।

34. तब वह दुष्टोंकी संगति में जाकर बुरे विचार सोचने लगता है; वह शास्त्रों और अच्छे लोगों से नफरत करता है और कामुक हो जाता है।

35. किसी मनोहर स्त्री को देखकर उसकी इन्द्रियां उस पर मोहित हो जाती हैं, और उस पर मोहित होकर वह घोर अन्धियारे में गिर जाता है, जैसे पतंगा आग में गिर जाता है।

36. हिरण, हाथी, पक्षी, मधुमक्खी और मछली - ये पांच इंद्रियों में से किसी एक द्वारा नष्ट हो जाते हैं, फिर पांच इंद्रियों के माध्यम से पांच प्रकार के विषयों का आनंद लेते हुए मोहग्रस्त व्यक्ति क्यों नष्ट नहीं होगा?

37. वह अप्राप्य की कामना करता है, अज्ञानता के कारण क्रोधित और दुखी रहता है और जैसे-जैसे शरीर बढ़ता है उसका अभिमान और क्रोध भी बढ़ता है।

38. प्रेमी प्रतिद्वंद्वियों से झगड़ा करता है, जिससे उसका विनाश होता है और वह अपने से अधिक शक्तिशाली लोगों द्वारा नष्ट हो जाता है, जैसे एक हाथी को दूसरे हाथी द्वारा नष्ट कर दिया जाता है।

39. उस मूर्ख से अधिक पापी कौन है जो वस्तुओं में आसक्त होकर उस मानव जीवन को बर्बाद कर देता है जिसे प्राप्त करना कठिन है।

40: सैकड़ों जन्मों के बाद मनुष्य पृथ्वी पर जन्म लेता है; और उससे भी कठिन है द्विज का सुख, और जो केवल इन्द्रियों का पोषण करता है वह मूर्खता से अमृत छोड़ देता है।

41. फिर जब वह बुढ़ापा पहुंचता है, तो बहुत सी बीमारियों से पीड़ित होता है, और जब मृत्यु आती है, तो पहिले के समान दु:खदायी नरक में गिरता है।

42. इस प्रकार कर्म चक्र से बंधे पापी मेरे जादू से कभी मुक्त नहीं होते।

43. हे तार्क्ष्य! इस प्रकार मैंने तुम्हें बताया कि जो पापी मृतकों के लिये किये जाने वाले यज्ञ को भूल जाते हैं, वे किस प्रकार नरक में जाते हैं। अब आप और क्या सुनना चाहते हैं?

# <u>अध्याय VII.</u>

## शवयात्रा

1. सूतजी बोले: यह सुनकर गरुड़जी ने वटवृक्ष के पत्ते की भाँति काँपते हुए मनुष्यों के कल्याण के लिए केशवजी से पुनः प्रार्थना की।

2. गरुड़जी बोले- मुझे बताओ कि जाने-अनजाने में पाप करने वाले लोग किस उपाय से यमराज की यातनाओं से बच सकते हैं।

3-4. हे भगवान, जो लोग भवसागर में डूबे हुए हैं, जिनकी बुद्धि कमजोर है, जिनकी बुद्धि पाप से घिरी हुई है, जिनका मन कामुक इच्छाओं से सुस्त हो गया है, उनके उद्धार के लिए कृपया हमें पुराणों का सही अर्थ बताएं; और हे माधव, कृपया मुझे वह उपाय बताएं जिससे मनुष्य सुखी हो सके।

5. भगवान ने कहा: हे तार्क्ष्य! आपने मानव कल्याण के लिए जो मांगा है वह अच्छा है। ध्यान से सुनो, मैं तुम्हें सब कुछ बताऊंगा।

6. जैसा कि पहले कहा गया है, पापियों और पुत्रहीनों का भाग्य कठिन होता है; परन्तु हे पक्षीराज! जो पुत्रवान और सदाचारी होते हैं उनका भाग्य ऐसा नहीं होता।

7. यदि किसी पूर्व कर्म के कारण पुत्र पैदा नहीं हो रहा हो तो पुत्र प्राप्ति के लिए कोई उपाय करना चाहिए।

8. बुद्धिमान मनुष्य को हरिवंश श्रवण, शतचंडी अनुष्ठान या भगवान शिव की भक्तिपूर्वक पूजा करके पुत्र की प्राप्ति करनी चाहिए।

9. पुत्र अपने पिता को पूत नामक नरक से बचाता है, इसलिए स्वयं भगवान ने उसका नाम पुत्र रखा है।

10. यदि पुत्र धार्मिक हो तो भी वह पूरे परिवार का ख्याल रखता है। एक प्राचीन कहावत है कि 'पुत्र के माध्यम से वह सभी लोकों को जीत लेता है।'

11. वेदों में भी पुत्र का महत्व बताया गया है। इसके अनुसार पुत्र का मुख देखने से व्यक्ति पितृ ऋण से मुक्त हो जाता है।

12. पोते के स्पर्श से मनुष्य तीन गुना ऋण से मुक्त हो जाता है। अपने बेटे, पोते और परपोते की मदद से वह दुनिया छोड़कर स्वर्ग पहुंच जाता है।

13. ब्राह्मण का पुत्र तो भला होता है, परन्तु बुरा पुत्र विनाश का कारण बनता है। हे श्रेष्ठ पक्षी! यह जानकर पुरुष को निचली जाति की स्त्रियों से दूर रहना चाहिए।

14. हे पक्षीश्रेष्ठ! वही पुत्र पवित्र है जिसके पिता और माता एक ही जाति के हों। वे ही श्राद्ध करते हैं और अपने पिता को स्वर्ग की प्राप्ति कराते हैं।

15. जब कोई मृत व्यक्ति स्वर्ग जाता है भले ही उसे कोई दूसरा तर्पण भी दे तो उसे अपने पुत्र द्वारा किए गए श्राद्ध से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। अभी सुनो.

16. इस संबंध में मैं तुम्हें दान की श्रेष्ठता का प्राचीन इतिहास से एक उदाहरण सुनाता हूँ।

17-19. प्राचीन काल में, त्रेता युग में, ताक्ष्र्य नामक एक सुंदर नगर में बभ्रुवाहन नाम का एक राजा राज्य करता था, जो बहुत शक्तिशाली, धर्म में दृढ़, यज्ञ करने वाला, दान में निपुण, समृद्ध, ब्राह्मणों का प्रेमी था। वह सद्गुणों का दाता, सच्चरित्र और अच्छे आचरण से परिपूर्ण, दयालु, कुशल, अपने पुत्रों की तरह धर्मपूर्वक अपनी प्रजा की रक्षा करने वाला, क्षत्रिय धर्म में सदैव प्रसन्न रहने वाला और दोषियों को दंडित करने वाला था।

20-21. एक बार वह पराक्रमी राजा अपनी सेना के साथ शिकार खेलने गया। वह विभिन्न प्रकार के पेड़ों से भरे, विभिन्न प्रजातियों के जानवरों से भरे हुए और विभिन्न पक्षियों की चीखों से गूंजते हुए एक घने जंगल में प्रवेश किया। राजा को दूर से जंगल के बीच में एक हिरण दिखाई दिया।

22. उसके अत्यंत कठोर बाण से गंभीर रूप से घायल होकर हिरण बाण को साथ लेकर जंगल में भाग गया।

23. राजा घास पर पड़े खून के धब्बों का पीछा करते हुए हिरण के पीछे दूसरे जंगल में चला गया।

24. वह भूखा, सूखा गला, गर्मी और थकान से मूर्छित होकर अपने घोड़ों समेत झील के पास आया।

25-27. फिर, कमल पराग से सुगंधित ठंडा पानी पीने के बाद, बभ्रुवाहन तरोताजा होकर पानी से बाहर आया। उसने एक सुंदर अंजीर का पेड़ देखा, जो अपनी बड़ी-बड़ी फैली हुई शाखाओं से ठंडी छाया दे रहा था, बहुत से पक्षी चहचहा रहे थे और सारे जंगल में एक बड़े झंडे की तरह खड़े थे। राजा उसके पास गया और उसकी जड़ों पर बैठ गया।

28. और उस ने एक मरते हुए मनुष्य को देखा, जो भयानक रूप का, कुबड़ा और मांसहीन था, उसके बाल खड़े थे, वह मलिन था, और उसकी इन्द्रियां भूख और प्यास से व्याकुल हो रही थीं।

29-31. उसे विकृत और भयानक देखकर बभ्रुवाहन को आश्चर्य हुआ। मरणासन्न व्यक्ति ने भी राजा को उस भयानक जंगल में आते देखा और जिज्ञासा से भरकर उनकी ओर आया। तब हे ताक्ष्र्य इस मृतात्मा के राजा ने राजा से इस प्रकार कहा - हे महाबाहो, आपके संपर्क में आकर मैं मृतात्मा की अवस्था से मुक्त हो गया हूं और परम गति को प्राप्त हो गया हूं - मैं महान और भाग्यशाली हूं।"

32-33. राजा ने कहा, "हे काले रंग और खुले चेहरे वाले, तुमने किन बुरे कर्मों से इस मृत अवस्था को प्राप्त किया है, जो देखने में भयानक और अत्यंत दुखद है?" "प्रिय, अपनी इस स्थिति का कारण विस्तार से बताओ। तुम कौन हो और कौन सा वरदान तुम्हारी मृत अवस्था को दूर कर देगा?"

34-38. मृतात्मा ने कहा, "हे राजन्! मैं तुम्हें शुरू से सब कुछ बताऊँगी। जब तुम मेरी मृतात्मा का कारण सुनोगे, तब तुम्हें मुझ पर अवश्य दया आयेगी।" सभी प्रकार की समृद्धि. जिसमें अनेक जनपद हैं तथा जो अनेक प्रकार के रत्नों से परिपूर्ण है, जो महलों तथा राजप्रासादों से सुशोभित है तथा जिसमें अनेक धार्मिक कार्य होते हैं। हे श्रद्धेय, मैं वहां निवास करता था और सदैव गौरवशाली देवताओं की पूजा में लीन रहता था। “मैं जाति से वैश्य हूं, मेरा नाम सुदेव है, कृपया जान लें।”

मैंने अग्नि यज्ञ से दीप्तिमान देवताओं को प्रसन्न किया और उसी प्रकार भोजन से पितरों को भी प्रसन्न किया।" मैंने विभिन्न प्रकार के दान देकर द्विजों को प्रसन्न किया। मैंने गरीबों, अंधों और निराश्रितों को विभिन्न प्रकार का भोजन दिया।

39-41. "हे राजन! यह सब मेरे दुर्भाग्य के कारण विफल हुआ है। मैं आपको बताता हूं कि मेरे अच्छे कर्म कैसे विफल हुए हैं।" मेरे लिए। “हे राजा! यदि सोलह मासिक श्राद्ध न किये जायें तो सैकड़ों वार्षिक श्राद्ध करने पर भी उनकी स्थिति निश्चित हो जाती है।

42-45. "हे पृथ्वी के भगवान! मेरे उन्नत शरीर के लिए अनुष्ठान करके मुझे उन्नत करें। ऐसा कहा जाता है कि इस दुनिया में राजा सभी जातियों का रिश्तेदार होता है।" अत: हे राजन्! मेरी सहायता करो और मैं तुम्हें एक अत्यंत

मूल्यवान रत्न दूँगा, जो मेरी निचली अवस्था को नष्ट करके मुझे ऊँची अवस्था में ले आयेगा। “हे योद्धा, यदि आप मेरा कल्याण चाहते हैं तो कृपया ऐसा ही करें। भूख-प्यास की पीड़ा से पीड़ित होकर मैं इस वियोग की स्थिति को सहन नहीं कर सकता।

46-48. "हे राजा, यदि वैदिक मंत्रों के साथ उच्च शरीर के लिए सभी अनुष्ठानों के साथ मेरे लिए महान नारायण अनुष्ठान किया जाता है, तो निश्चित रूप से मेरा दिवंगत राज्य निश्चित रूप से दूर हो जाएगा। वैदिक मंत्रों, तपस्या, दान और जीवन के प्रति सभी करुणा द्वारा प्राणी, पवित्र ग्रंथों का श्रवण, विष्णु की पूजा, अच्छे लोगों की संगति - ये, मैंने सुना है, दिवंगत अवस्था को नष्ट करने वाले हैं।

49-50. "इसलिए मैं तुम्हें दिवंगत साम्राज्यों के विनाशक विष्णु की पूजा के बारे में बताऊंगा। हे राजा, ईमानदारी से अर्जित सोने के दो टुकड़े लाओ और उनसे नारायण की एक मूर्ति बनाओ। "इसे पीले कपड़े पहनाओ, इस पर विभिन्न आभूषण रखो खूब जल से स्नान करें और इस प्रकार पूजा करें।

51-56. "पूर्व में श्रीधर 1, दक्षिण में मधुसूदन 2, पश्चिम में वामनदेव 3, उत्तर में गदाधर 4, मध्य में पितामह 5 और महेश्वर 5 की स्थापना करें। इन सभी की चंदन और पुष्प से विधिपूर्वक पूजा करें।" उनकी परिक्रमा करें और पूजा करें. अग्नि में देवताओं को आहुतियाँ अर्पित करें। विश्व देवताओं को घी, दही और दूध का भोग लगाएं। "इसके बाद यज्ञकर्ता को स्नान करके शांत मन से नारायण के समक्ष विधि के अनुसार ऊपरी शरीर का अनुष्ठान करना चाहिए।" एक बैल, जैसा कि शास्त्रों में बताया गया है। शुरू कर देना चाहिए। "तब वह ब्राह्मणों को तेरह पात्र दे और शय्यादान करके मृतक के निमित्त एक पात्र में जल शुद्ध कर ले।"

57. राजा ने पूछा, "मृतकों के लिये पात्र कैसे तैयार किया जाता है, और उसे किस रीति से दिया जाना चाहिए? सभी के प्रति मेरी सहानुभूति के कारण, मुझे उस पात्र के बारे में बताओ जो मृतकों को मोक्ष प्रदान करता है" 58- 63. मृतक आदमी ने कहा: “हे महान राजा, आपने यह पूछकर अच्छा किया है। कृपया ध्यान दें और मैं उस अच्छे उपहार का वर्णन करूंगा जो मृतक को दुर्दशा से बचाएगा।

"शुद्ध सोने का एक पात्र तैयार करो, इसे ब्रह्मा, ईशा, केशव और दुनिया के सभी लोगों को समर्पित करो, इसे घी से भर दो, भक्तिपूर्वक इसकी पूजा करो और द्विज को दे दो। तुम्हें अन्य सौ दानों से क्या लाभ है? दे गये?" मध्य में ब्रह्मा

हैं, पूर्व में विष्णु हैं, और उनके कंठ में अनंत सुख देने वाले शंकर हैं, पूर्व में और अन्य दिशाओं में क्रमशः जगत के रक्षक हैं - "हे राजन, इन सभी की पूजा करने के बाद धूप, दूध से फूल और चंदन दें तथा घी से भरे स्वर्ण पात्र का दान, जो महान पापों को दूर करने में अन्य सभी दानों से श्रेष्ठ है, दिवंगत की मुक्ति के लिए भक्तिपूर्वक किया जाना चाहिए।

64-65. भगवान ने कहा: हे कश्यप, जब वह मृतक से इस प्रकार बात कर रहा था, उसकी सेना हाथियों, घोड़ों और रथों के साथ उसके पीछे हो ली। जब सेना पहुंची, तो मृतक ने राजा को वह महान रत्न दिया, उसे प्रणाम किया, उससे फिर से प्रार्थना की और गायब हो गया।

66-68. जंगल से निकलकर राजा अपने नगर में आया और वहां पहुंचकर उसे मृतक की कही हुई सारी बातें याद आ गईं। हे पक्षी! वे ऊपरी शरीर में रहने वाले व्यक्ति के लिए निर्धारित अनुष्ठान करते थे और इन पवित्र उपहारों को प्राप्त करने के बाद मृतक को स्वर्ग प्राप्त होता था। यदि किसी अजनबी द्वारा श्राद्ध किया जाए तो भी मृतक प्रसन्न होता है - फिर आश्चर्य की बात तो यह है कि जब पुत्र श्राद्ध करता है तो पिता को भी वही फल मिलता है! 60. जो व्यक्ति इस पवित्र कथा को सुनता है और दूसरों को सुनाता है वह इस संसार को कभी नहीं छोड़ता, भले ही वह पाप कर्म ही क्यों न करता हो।

## <u>अध्याय VIII</u>

# मृतकों के लिये उपहारों का वर्णन |

1. गरुड़ ने कहा: हे भगवान, मुझे वे सभी कर्म बताएं जो अन्य लोकों में पुण्य कर्म करने वालों के लिए आवश्यक हैं और मुझे यह भी बताएं कि पुत्रों को ये कर्म कैसे करने चाहिए।

2. भगवान ने कहा: हे ताक्ष्र्य, तुमने मनुष्यों के हित के लिए मुझसे प्रश्न पूछकर अच्छा किया है। मैं तुम से धर्मियों के लिये उचित सब काम बताऊंगा।

3-4. जब कोई सदाचारी व्यक्ति बुढ़ापे में रोगों से पीड़ित हो, ग्रहों की स्थिति प्रतिकूल हो और वह जीवन की ध्वनि सुनने में असमर्थ हो, तो उसे अपनी मृत्यु निकट जानकर निर्भय और सतर्क रहना चाहिए और अपने पापों का प्रायश्चित करना चाहिए जानबूझ कर। . या अज्ञानतावश.

5-8. जब मृत्यु का समय निकट आ जाए तो उसे स्नान करके शालग्राम रूपी भगवान विष्णु की पूजा करनी चाहिए। सुगंधित द्रव्यों, पुष्पों, लाल केसर, तुलसी, धूप, दीप, भोजन, मिठाई आदि से उनकी पूजा करनी चाहिए। ब्राह्मणों को दान देना चाहिए, उन्हें प्रसाद खिलाना चाहिए और आठ अक्षर और बारह अक्षर वाले मंत्रों का जाप करना चाहिए। विष्णु और शिव के नामों का स्मरण और श्रवण करना चाहिए। श्रवण से आने वाला हरि नाम मनुष्य के पापों को दूर कर देता है।

9. रोगी से मिलने आने वाले रिश्तेदारों को विलाप नहीं करना चाहिए। मेरे पवित्र नाम का बार-बार स्मरण और ध्यान करना चाहिए।

10-11. मछली, कछुआ, सुअर, नरसिम्हा, बौना, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्कि 1: बुद्धिमानों को सदैव इन दस नामों का ध्यान करना चाहिए। रोगी के निकट इनका उच्चारण करने वाले परिजन कहलाते हैं।

12-16. जो शुभ नाम "कृष्ण" का जप करता है, उसके करोड़ों महान पाप शीघ्र ही भस्म हो जाते हैं। यहाँ तक कि मरते हुए अजामिल को भी अपने पुत्र को हरि नाम सुनाने से स्वर्ग की प्राप्ति हुई। 2 फिर जब यह आदर के साथ कहा जाता है, तो उसका प्रभाव कितना प्रबल होता है! जब ध्यान किया जाता है, तो बुरे विचार रखने वाले व्यक्ति के भी पाप दूर हो जाते हैं: गलती से छूने पर भी आग जल जाती है।

हे द्विज! जब तक हरि नाम की शक्ति पापों का नाश कर रही है, तब तक पापी मनुष्य पाप नहीं कर सकता। यम ने अपने सेवकों से कहा: “उस व्यक्ति को लाओ जो इनकार करता है, लेकिन हे दूतों, उस व्यक्ति को मत लाओ जो हरि के नाम का ध्यान करता है।

17-20. अच्युत, केशव, नारायण, कृष्ण, दामोदर, वासुदेव, हरि, श्रीधर, माधवम्, गोपिकवल्लभम्, रामचन्द्र, जानकी आदि देवताओं की पूजा करनी चाहिए। 1 “हे सेवकों, उन पापहीन लोगों के पास मत जाओ जो कमल-नेत्र वासुदेव और विष्णु की शरण लेते हैं जो पृथ्वी को धारण करते हैं और अपने हाथों में शंख और चक्र रखते हैं।

"उन पापियों को लाओ जो सदैव भगवान विष्णु के चरण कमलों का रस पीते हैं-- परमहंस जाति द्वारा जिनकी सेवा की जाती है, जो चीजों का असली सार जानते हैं, और जिनके पास संपत्ति नहीं है, - और जिनकी इच्छाएं घरेलू जीवन से जुड़ी हैं, जो नरक का मार्ग है।
"उन लोगों को सामने लाओ जिनकी वाणी भगवान के गुणों और नामों का उच्चारण नहीं करती, जिनका मन उनके कमल चरणों पर ध्यान नहीं करता, जिनके सिर कभी कृष्ण के सामने नहीं झुकते, जो विष्णु की पूजा नहीं करते।"

21-23. तो हे भगवान, जानो. हे पक्षियों, संपूर्ण जगत का कल्याण करने वाले भगवान विष्णु की स्तुति गाना बड़े से बड़े पापों का भी सर्वोत्तम प्रायश्चित है। नारायण से विमुख दुष्ट मनुष्य तपस्या करके भी पवित्रता प्राप्त नहीं कर सकता, जैसे शराब के घड़े को नदियाँ भी पवित्र नहीं कर सकतीं। कृष्ण के नाम से मनुष्य पापों से मुक्त हो जाता है और उसे स्वप्न में भी यमराज या उसके सेवक नहीं दिखते।

24-25. जो मनुष्य रक्त और मांस से बना है और अंत में 'नंदनादम्' कहकर द्विजों को गायें दे देता है, वह कभी वैतरणी में नहीं जाता। अतः उसे महाविष्णु के नाम का स्मरण करना चाहिए, जो अनेक पापों का नाश करने वाले हैं तथा गीता तथा सहस्रनाम का पाठ अथवा श्रवण करना चाहिए।

26-27. ग्यारहवें दिन का व्रत, गीता, गंगा जल, तुलसी के पत्ते, चरण-जल और विष्णु का नाम - ये सभी मृत्यु के समय मोक्ष देते हैं। फिर उसे विद्वान द्विजों को और बछड़ों सहित गायों को भी घी और सोना खिलाना चाहिए।

28-31. हे ताक्ष्र्य, यदि कोई मनुष्य अपने अंतिम दिनों में जो कुछ भी देता है, चाहे वह थोड़ा हो या नहीं, उसके पुत्र द्वारा स्वीकार किया जाता है, वह नष्ट नहीं होता है। इन अंतिम दिनों में सब कुछ किसी अच्छे पुत्र को दान कर देना चाहिए। इसीलिए बुद्धिमान लोग इस संसार में धर्मात्मा पुत्र के लिए प्रार्थना करते हैं। पुत्रों को अपने पिता को आधी बंद आँखों से भूमि पर पड़ा हुआ देखकर उनके द्वारा अर्जित धन का लालच नहीं करना चाहिए। 1 एक अच्छा पुत्र इस प्रकार दान करेगा कि उसके पिता दीर्घायु हों और परलोक में जाने पर दुःख से मुक्त रहें।

32-34. बीमारी और संकट के समय दो दान सर्वोत्तम हैं। ये अपरिहार्य हैं- आठ बार तिल और अन्य वस्तुओं का दान। तिल, लोहा, सोना, कपास का सामान, नमक, सात अनाज, भूमि का एक टुकड़ा, एक गाय - इनमें से प्रत्येक को पवित्र

करने वाला कहा जाता है। आठ महान उपहार वे हैं जो महान पापों को मिटा देते हैं, और उन्हें अंतिम दिनों में दिया जाना चाहिए। अब उनके अच्छे प्रभाव सुनें:

35-36. मेरे पसीने से तीन प्रकार के पवित्र तिल उत्पन्न होते हैं। इन तिलों के दान से असुर, राक्षस और राक्षस तृप्त होते हैं। तिल तीन प्रकार के होते हैं: सफेद, काले और भूरे। इनका दान करने से वाणी, विचार और कर्म में संचित पाप दूर हो जाते हैं।

37-40. लोहे का दान भूमि का स्पर्श करते हुए हाथ से करना चाहिए, तो वह न तो यमलोक जाता है और न ही उसके मार्ग का अनुसरण करता है। पापियों को दंड देने के लिए यमराज अपने हाथों में कुल्हाड़ी, मूसल, दण्ड, तलवार और खंजर रखते हैं। यह दान यम के इन अस्त्रों की शांति प्रदान करने वाला माना गया है। अत: मनुष्य को लोहे का दान करना चाहिए, जो यम लोक में सुख प्रदान करता है। लोहे के इस दान से यम के ये महान दूत सुख प्रदान करते हैं:- उरण, श्यामसूत्र, शुंडमार्क, उदुम्बर, शेष और बल।

41-44. हे ताक्ष्र्य! जिस महान रहस्य से पृथ्वी, बवण्डर और संसार में रहने वाले लोग सुखी होते हैं, उसे सुनो। ब्रह्मा जैसे ऋषियों और तेजस्वी तथा न्यायप्रिय राजा के दरबार में रहने वाले लोग स्वर्ण दान से संतुष्ट होते हैं और वरदान देने वाले बनते हैं। अत: मृतक की मुक्ति के लिए स्वर्ण दान करना चाहिए। वह यमलोक नहीं जाता, बल्कि स्वर्ग पहुँच जाता है। वह लंबे समय तक सत्यलोक में रहता है और फिर यहां एक राजा के रूप में जन्म लेता है, जो सुंदर, गुणी, वाक्पटु, धनवान और अद्वितीय शक्तिशाली होता है।

45. कपास का दान करने से दूतों के भय से मुक्ति मिलती है। नमक का दान करने से यम के भय से मुक्ति मिलती है।

46-48. सरई, नमक, कपास, तिल और सोने का दान चित्रगुप्त और यम नगर में रहने वाले अन्य लोगों को प्रसन्न करता है। और सात अनाज का दान न्याय के राजा के ध्वजवाहकों और द्वार पर खड़े अन्य लोगों को प्रसन्न करता है। चावल, जौ, गेहूं, राजमा, माशा, 1 अनाज के बीज; बौनी मटर : इन्हें सात मटर कहा जाता है।

49-52. ऋषियों का मानना है कि गाय की खाल के बराबर भूमि का एक भूखंड उचित व्यक्ति को अनुष्ठान के अनुसार दान करने से ब्रह्महत्या से मुक्ति मिलती है। व्रत करने से नहीं, तीर्थयात्रा करने से नहीं, दान करने से नहीं, बल्कि

भूमि दान करने से राजा की पदवी मिलती है। किये गये महान पाप का प्रायश्चित हो जाता है। जो व्यक्ति द्विजों को अन्न से परिपूर्ण भूमि का दान करता है, वह इंद्र के लोक में जाता है और देवताओं तथा दानवों द्वारा पूजा जाता है। हे कश्यप! अन्य सभी दानों का फल बहुत कम मिलता है। भूमि दान करने का फल दिन प्रतिदिन बढ़ता जाता है।

53-55. जो राजा होकर भी द्विजों को भूमि नहीं देता, वह प्राय: भिखारी के रूप में जन्म लेता है और उसे झोपड़ी भी नहीं मिलती। जो राजा अहंकारवश भूमि दान नहीं करता, वह तब तक नरक में रहता है, जब तक उसके पास शेष पृथ्वी रहती है। इसलिये राजा को विशेषतः भूमि का दान करना चाहिये; हालाँकि दूसरों के लिए, मैं कहता हूँ, गाय का दान भूमि के दान के बराबर है।

56-57. अंत में एक गाय देनी चाहिए. एक गाय मृत्यु से बचने के लिए, दूसरी कर्ज से मुक्ति के लिए और तीसरी मोक्ष प्राप्ति के लिए देनी चाहिए। हे पक्षी! वैतरणी गाय का दान विशेष अनुष्ठान के साथ करना चाहिए। गायें मनुष्य को तीन प्रकार के नरकों से पार कराती हैं।

58-61. बचपन, युवावस्था, पुरुषत्व, बुढ़ापे और पिछले जन्मों में किए गए पाप; रात्रि, प्रातः, पूर्वाह्न, मध्याह्न तथा सायंकाल में क्रिया, वाणी, विचार आदि द्वारा किये गये पाप; यदि एक बार भी गाय का दूध, बछड़ा तथा अन्य आवश्यक वस्तुएँ किसी वेद-ज्ञानी एवं सदाचारी ब्राह्मण को दान कर दी जाय तो वह इन सभी पापों से मुक्त हो जाता है। अंततः दानकर्ता संचित पापों से मुक्त हो जाता है।

62-63. पूर्ण मानसिक शक्ति होने पर एक गाय का दान, बीमार होने पर सौ गायों का दान, मृत्यु और बुद्धि के नष्ट होने पर एक हजार गायों का दान और मृत्यु के बाद एक लाख गायों का दान, ये तीनों बराबर हैं। तीर्थ में स्नान करने वाले सुपात्र व्यक्ति को दिया गया दान लाखों गुना बढ़ जाता है।

64. सुपात्र को दिया गया दान लाखों गुना बढ़ जाता है। इससे देने वाले को अनंत फल मिलता है और लेने वाले को कोई हानि नहीं होती।

65-68. जिसने शास्त्रों का अध्ययन किया है और गौरवशाली देवताओं के लिए यज्ञ किया है और जो दूसरों के हाथ का पकाया भोजन नहीं खाता है, वह रत्नों से भरी मिट्टी का सेवन करके भी अशुद्ध नहीं होता है। शीत, विष और अग्नि को दूर करने वाले मंत्रों में स्वयं ये दुर्गुण नहीं होते। अयोग्य व्यक्ति को गाय देने से देने वाला नरक में जाता है और लेने वाले का परिवार सौ पीढ़ियों तक कष्ट

भोगता है। अपना कल्याण चाहने वाले बुद्धिमान व्यक्ति को अयोग्य व्यक्ति को दान नहीं देना चाहिए। गाय केवल एक ही व्यक्ति को देनी चाहिए, अनेक को नहीं। यदि वह इसे बेचता या बांटता है तो उसके परिवार को सातवीं पीढ़ी तक कष्ट उठाना पड़ता है।

69. मैं आपको स्टाइक्स नदी को पार करने के साधन गाय के सोने के बारे में बताता हूं, जिसके बारे में मैं आपको पहले ही बता चुका हूं।

70-76. काली या लाल गाय को सजाकर, उसके सींगों को सोने से मढ़कर, उसके पैरों को चाँदी से मढ़कर, उसे काँसे के बर्तन में दूध पिलाकर, काले कपड़े से ढँककर, उसके गले में घंटी लटकाकर, और ढके हुए काँसे के बर्तन को किसी पर रखकर कपास। , और उसमें यम की स्थापना करें। भगवान गणेश की स्वर्ण प्रतिमा और लोहे की छड़ी स्थापित करें, कांसे के पात्र में घी भरकर गाय को डालें। गन्ने का एक बेड़ा बनाएं, उसे रेशम के धागे से बांधें, उसमें एक छेद करें, उसमें पानी भरें और उसमें बेड़ा रखें।

सूर्य के शरीर से उत्पन्न वस्तुओं को इसमें रखकर शास्त्र के अनुसार गाय को समर्पित करना चाहिए। वस्त्र और आभूषण किसी ब्राह्मण को दान करना चाहिए। गंध, पुष्प और रंगीन चावल से विधिवत पूजा करें, गाय की पूंछ पकड़ें, नाव पर चढ़ें और ब्राह्मण को प्रणाम करके इस मंत्र का जाप करें:--

77-82. "हे ब्रह्मांड के भगवान, आप उन लोगों के प्रति दयालु हैं जो आपकी शरण में आते हैं, आप वास्तव में उन लोगों के उद्धारकर्ता हैं जो भौतिक अस्तित्व के सागर में डूबे हुए हैं, दुःख और पश्चाताप की लहरों से अभिभूत हैं। "हे द्विजों में श्रेष्ठ! , भगवान विष्णु के रूप, पृथ्वी के स्वामी, मेरा उद्धार करें। मैंने तुम्हें यह उपहार दिया है. नमस्ते स्टाइक्स! "मैंने इसे उस नदी को पार करने की इच्छा से तुम्हें दिया है, जो सौ योजन तक फैली हुई है, और यम के सबसे भयानक मार्ग पर स्थित है। वैतरणी को नमस्कार है।" रतालू. मेरे लिए देखो। हे वैतरणी, हे देदीप्यमान रानी, तुम्हें नमस्कार है! "मेरे आगे गायें हों, मेरे पीछे गायें हों, मेरे हृदय में गायें हों और मैं गायों के बीच में निवास करूं। जो समस्त प्राणियों के कल्याण की देवी हैं, जो तेजस्वी प्राणियों का आश्रय हैं, उनका गौ रूप मेरे पापों का नाश करें। करने के लिए।"

83-84. इन मंत्रों से गाय रूपी यमराज का आह्वान करके उनकी परिक्रमा करके ये सभी चीजें ब्राह्मण को दे देनी चाहिए। जो व्यक्ति इन विधियों से वैतरणी गाय का दान करता है, वह धर्म के मार्ग पर चलता है और न्यायप्रिय राजा के दरबार में जाता है।

85-86. शरीर स्वस्थ हो या अस्वस्थ, वैतरणी व्रत अवश्य करना चाहिए। बुद्धिमान व्यक्ति को उस नदी को पार करने की इच्छा से गाय का दान करना चाहिए। हे पक्षी! गाय का दान करने के बाद वह नदी राजमार्ग में नहीं आती। 2 इसलिए सभी पवित्र समयों पर गाय का दान करना जरूरी है।

87-88. गंगा आदि सभी पवित्र स्नान-स्थानों पर, ब्राह्मणों के निवास पर, सूर्य और चंद्रमा के ग्रहण के समय, अमावस्या के दिन, विषुव और संक्रांति के समय, व्यतिपात के समय , दूसरे युग, तीसरे युग और अन्य पवित्र समयों में, सर्वोच्च दान दें। किया जाना चाहिए।

89. पुण्य काल वह है जिसमें विश्वास जागता है और जब योग्य व्यक्ति उपस्थित होता है तो शाश्वत कल्याण होता है। 90. शरीर अनित्य है, धन अनित्य है, मृत्यु सदैव निकट है, इसलिए मनुष्य को धर्म का संचय करना चाहिए।

91-92. इसलिए अपना कल्याण चाहने वाले व्यक्ति को अपनी संपत्ति के अनुसार विद्वान ब्राह्मण को असीमित दान देना चाहिए। अपने हाथ से दिया हुआ थोड़ा सा धन भी अनन्त है और उसका समय भी अनन्त है।

93-94. जिसके पास दान है वह राजमार्ग पर सुखपूर्वक चलता है। अन्यथा दान के बिना मनुष्य मार्ग में कष्ट उठाता है। इस संसार में मनुष्य द्वारा किये गये सभी दान यमलोक का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

95-96. मनुष्य जन्म महान पुण्य के बल पर प्राप्त होता है। जो इसे प्राप्त कर धर्म का पालन करता है, उसे परम लक्ष्य की प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति धर्म की उपेक्षा करता है वह दुःख में आता-जाता रहता है। मनुष्य जन्म की सार्थकता धर्म के पालन पर ही निर्भर है।

97-99. धन, पुत्र, स्त्री, सुख, शरीर, मित्र- ये सब क्षणभंगुर हैं। इसलिए धर्म की खोज करनी चाहिए. जब तक मनुष्य जीवित रहता है, तब तक उसके पिता तथा अन्य सम्बन्धी होते हैं; लेकिन उनका स्नेह जल्द ही ख़त्म हो जाता है जब वे उसे मृत पाते हैं। उसे सदैव स्मरण रखना चाहिए कि आत्मा का सच्चा रिश्तेदार आत्मा ही है। जीवितों को नहीं तो मृतकों को भी कोई नहीं देगा।

100. यह सब जानकर मनुष्य को जीवित रहते हुए ही अपने हाथों से दान करना चाहिए। जीवन क्षणभंगुर है, उसके बाद कौन दे सकता है?

101-102. मृतक को लकड़ी या मिट्टी के ढेर की तरह जमीन पर छोड़ कर परिजन मुंह फेर लेते हैं, लेकिन धर्म उनका पीछा करता है। घर से धन गायब हो जाता है और श्मशान से रिश्तेदार गायब हो जाते हैं। उसके द्वारा किये गये अच्छे और बुरे कर्म उसके साथ रहते हैं।

103-104. जब शरीर अग्नि में भस्म हो जाता है, तब भी उसके कर्म शेष रहते हैं और वह जहां भी होता है, अच्छे और बुरे कर्म भोगता है। इस बदलते दुःख के सागर में किसी से कोई लेना-देना नहीं है। यह कर्म के आकर्षण से जन्म लेता है और क्षीण होने पर पुनः चला जाता है।

105-106. मनुष्य का माता, पिता, पुत्र, भाई-भाभी, पत्नी तथा अन्यों के साथ संबंध नदी में पानी के बर्तन तथा लकड़ी की गति के समान है। वे किसके बेटे और पोते हैं? यह किसकी पत्नी है या किसका पैसा है? इस बदलती दुनिया में कोई किसी का नहीं होता. इसलिए व्यक्ति को स्वयं ही दान करना चाहिए।

107-109 . जब तक मनुष्य के पास धन हो, तब तक उसे ब्राह्मण को दान देना चाहिए; लेकिन जब पैसा किसी और का हो तो उसे कुछ नहीं कहना चाहिए. पूर्व जन्म में किये गये दान के फलस्वरूप व्यक्ति को बहुत सारा धन प्राप्त होता है। अत: जो यह जानता है उसे धर्म के लिये धन देना चाहिये। धर्म धन पैदा करता है; धर्म से इच्छा पर विजय प्राप्त होती है। धर्म वास्तव में मोक्ष का कारण है। इसलिए धर्म का पालन करना चाहिए.

110-111. धर्म आस्था से ही जीवित रहता है, धन संचय से नहीं। यहां तक कि जब एक बुद्धिमान व्यक्ति गरीब होता है, तो वह अपना विश्वास छोड़ देता है और स्वर्ग चला जाता है। जो व्यक्ति मुझे भक्तिपूर्वक पत्र, पुष्प, फल अथवा जल अर्पित करता है, मैं आत्मलीन व्यक्ति भक्तिपूर्वक दिये गये दान को स्वीकार कर लेता हूं।

112. अतः दान अवश्य देना चाहिए, और जैसा बताया गया है वैसा ही देना चाहिए। चाहे वह छोटा हो या बड़ा, इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।'

113-114. बुद्धिमान लोग भी धर्मात्मा पुत्र का आदर करते हैं। उसे अपने बीमार पिता से पृथ्वी पर धन दान करवाना चाहिए। यदि पिता द्वारा कमाया हुआ धन

उसके पुत्र योग्य व्यक्तियों को देते हैं तो वह स्वयं, उसके पुत्र, पौत्र और प्रपौत्र सभी श्रेष्ठ हो जाते हैं।

115. पिता द्वारा दिया गया दान सौ गुना पुण्य देता है, माता द्वारा दिया गया दान हजार गुना पुण्य देता है; बहन से दस हजार गुना और भाई से बेशुमार सवाब मिलता है।

116-118. दान करने वाले को न मृत्यु के समय कोई कष्ट होता है, न नरक की यातनाएँ होती हैं, न राक्षसों का भय रहता है। हे पक्षी! जो पापी और कंजूस लोग लालच के कारण बीमारी के समय दान नहीं करते, वे मरने पर दुखी होते हैं। जो पुत्र, पौत्र, भाई, बन्धु-बान्धव और मित्र किसी मरते हुए मनुष्य के लिये धन का दान नहीं करते, वे निःसन्देह ब्रह्महत्यारे हैं।

## <u>अध्याय **IX**</u>

## मरणोपरांत संस्कारों का वर्णन

1. गरुड़ ने कहा- आपने रोगियों को दान देने के विषय में बहुत अच्छी बात कही है। अब हे भगवान, मुझे बताओ कि मरते हुए व्यक्ति के लिए क्या अनुष्ठान किया जाना चाहिए।

2. भगवान ने कहा: हे ताक्ष्र्य, सुनो, मैं तुम्हें बताऊंगा कि शरीर छोड़ने वाले व्यक्ति के लिए क्या अनुष्ठान करना चाहिए और यह भी कि किस अनुष्ठान से व्यक्ति को मृत्यु के बाद सौभाग्य प्राप्त होता है।

3-5. जब कर्म के प्रभाव से देहधारी शरीर अपना सामान्य शरीर छोड़ देता है, तब तुलसी के पेड़ के पास गाय के गोबर से एक घेरा बनाना चाहिए। 1. फिर उस पर तिल छिड़कें और दरभा घास बिछाएं और फिर साफ जगह पर शालग्राम शिला रखें। शालग्राम शिला के पास मरने वाले व्यक्ति को निश्चित ही मोक्ष की प्राप्ति होती है, जिससे सभी कष्ट और पाप दूर हो जाते हैं।

6-9 जहां जीवन के कष्टों को दूर करने वाली तुलसी की छाया होती है, वहां मरने वाले को सदैव मोक्ष मिलता है, जो दान से भी नहीं मिलता। जिस घर में तुलसी का वृक्ष स्थापित होता है वह पवित्र स्नान स्थान के समान होता है, वहां यम के सेवक नहीं आते। जो मनुष्य तुलसी की एक शाखा खाकर अपने प्राण त्याग देता है, भले ही उसने सैकड़ों पाप किए हों, यमराज उसे नहीं देख पाते। जो मनुष्य पुत्रहीन होते हुए भी तिल और दर्भा के आसन पर बैठकर तुलसी का पत्ता मुंह में लेकर मरता है, वह निश्चय ही भगवान विष्णु के नगर में जाता है।

10-13. तिल के बीज, दरभा-घास और पवित्र तुलसी तीन पवित्र चीजें हैं, और वे एक बीमार आदमी को दुखी स्थिति में जाने से रोकते हैं। चूँकि तिल मेरे पसीने से उत्पन्न हुआ है, अत: पवित्र है; इसीलिए राक्षस, राक्षस और राक्षस भाग जाते हैं। दर्भा घास, मेरी संपत्ति, हे ताक्ष्र्य, मेरे बालों से उत्पन्न होती है; अत: इनके स्पर्श मात्र से मनुष्य को स्वर्ग की प्राप्ति होती है। कुश की जड़ में ब्रह्मा, कुश के मध्य में जनार्दन और कुश की नोक पर शंकरदेव विराजमान हैं।

2- कुश घास में तीन ज्योतिर्मय व्यक्ति बैठे हैं। 14-15. इसलिए कुश, अग्नि, मंत्र, पवित्र तुलसी; ब्राह्मण और गायें बार-बार प्रयोग से अपनी पवित्रता नहीं खोतीं। दरभा घास चावल के दाने खाने से अशुद्ध हो जाती है, ब्राह्मण मृतकों के लिए दिया गया प्रसाद खाने से अशुद्ध हो जाते हैं, मंत्र, गाय और तुलसी का उपयोग करने से अशुद्ध हो जाते हैं और श्मशान में आग जलाने से अशुद्ध हो जाते हैं। . ,

16-20. मरते हुए व्यक्ति को गाय के गोबर से लीपकर घास बिछाकर जमीन पर लिटा देना चाहिए और हवा में नहीं उठाना चाहिए। 1. ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, 2. सभी तेजस्वी लोग और यज्ञ अग्नि अंगूठी पर खड़े हों, इसलिए अंगूठी बनानी चाहिए। भूमि सर्वत्र पवित्र होनी चाहिए, उस पर कोई दाग दिखाई नहीं देना चाहिए।

यदि दाग हों तो उन्हें दोबारा लेप लगाकर साफ करना चाहिए। राक्षस, राक्षस, भूत, प्रेत और यम के अनुयायी अपवित्र स्थानों में प्रवेश करते हैं और जमीन पर खाट बिछाते हैं। अत: इस अंगूठी के बिना अग्नि में आहुति, श्राद्ध, ब्राह्मण भोजन, पवित्र लोगों की पूजा आदि नहीं करनी चाहिए और न ही मरते हुए व्यक्ति को जमीन पर लिटाना चाहिए।

21-22. फिर उसे शुद्ध भूमि पर लिटा देना चाहिए, उसके होठों पर सोना और रत्न लगाना चाहिए और उसे शालग्राम के रूप में भगवान विष्णु के चरणों का जल पिलाना चाहिए। जो व्यक्ति शालग्राम शिला से जल की एक बूंद भी पीता है वह सभी पापों से मुक्त होकर वैकुंठ धाम को जाता है।

23-30. फिर उसे गंगाजल देना चाहिए, जो बड़े से बड़े पापों का नाश कर देता है और सभी तीर्थों में स्नान-दान के बराबर पुण्य देता है। जो व्यक्ति एक हजार बार चान्द्रायण व्रत का पालन करता है, जिससे शरीर शुद्ध होता है और जो व्यक्ति गंगा जल पीता है, वे दोनों समान हैं। हे ताक्ष्र्य! जिस प्रकार कपास का बंडल आग में गिरने से नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार गंगाजल पीने से पाप जल जाते हैं।

जो मनुष्य सूर्य की किरणों से तपकर गंगाजल पीता है, वह समस्त लोकों से मुक्त होकर हरि के धाम को जाता है। अन्य नदियों में स्नान करने से मनुष्य पवित्र हो जाता है, उसी प्रकार गंगा को छूने, पीने या बुलाने मात्र से ही मनुष्य पवित्र हो जाता है। वह पुण्यात्मा मनुष्य को सैकड़ों-हजारों बार पवित्र कर देता है।

इसलिए मनुष्य को गंगा का जल पीना चाहिए, जिसका जल उसे भवसागर से पार लगाता है। जो व्यक्ति जीवित रहते हुए अपने कंठ से 'हे गंगा, गंगे' कहता है, वह मृत्यु के बाद विष्णु लोक को जाता है और दोबारा पृथ्वी पर जन्म नहीं लेता। और जो व्यक्ति अपने प्राण त्यागते समय भक्ति भाव से गंगा का चिंतन करता है, उसे परम गति की प्राप्ति होती है। ऐसा होता है।

31-33. इसलिए उसे गंगा का ध्यान करना चाहिए, प्रणाम करना चाहिए, ध्यान करना चाहिए और उसका जल पीना चाहिए। इसलिए उन्हें थोड़ा सा भागवत का श्रवण करना चाहिए, क्योंकि इससे मोक्ष मिलता है। जो व्यक्ति अपने अंतिम समय में भागवत के एक श्लोक, आधे या चौथाई श्लोक का जप करता है वह कभी ब्रह्मलोक से नहीं लौटता। वेदों और उपनिषदों का जप, विष्णु और शिव का कीर्तन - ये मृत्यु के समय ब्राह्मणों, क्षत्रियों और वैश्यों को मोक्ष प्रदान करते हैं।

34-35. हे पक्षी! जब प्राण शरीर से निकल रहा हो तब उपवास करना चाहिए। सांसारिक वस्तुओं से असंतुष्ट होकर द्विजों को उनका त्याग कर देना चाहिए। 2 जो व्यक्ति गले में प्राण फड़फड़ाते हुए भी कहता है कि उसने हार स्वीकार कर ली है, वह मृत्यु के समय विष्णु लोक में जाता है और फिर कभी पृथ्वी पर जन्म नहीं लेता।

36-39. फिर हे पक्षी! जो व्यक्ति सदाचारी है और उसने ऐसे कर्म किये हैं उसकी आत्मा आसानी से उच्च द्वार से गुजर जाती है। मुँह, आँख, नासिका और कान ये सात द्वार हैं जहाँ से अच्छे कर्मों की आत्मा निकलती है। योगी मस्तक के द्वार से निकलते हैं।

जब चढ़ते और उतरते प्राण एक होकर अलग हो जाते हैं, तब प्राण सूक्ष्म हो जाता है और जड़ शरीर से बाहर निकल जाता है।

जब आत्मा का स्वामी चला जाता है, तो शरीर बिना सहारे के और समय से त्रस्त होकर गिर जाता है।

40-41. प्राण द्वारा छोड़ा गया स्थिर शरीर घृणित और अछूत नहीं रहता; इससे शीघ्र ही दुर्गंध उत्पन्न होती है और यह सभी को अप्रिय लगती है। जो मनुष्य क्षण भर में नष्ट हो जाते हैं, उन्हें शरीर पर अभिमान कैसे हो सकता है, क्योंकि शरीर की तीन अवस्थाएँ हैं - कीड़ा, गोबर और राख?

42-43. मिट्टी मिट्टी में मिल जाती है; पानी पानी में मिल जाता है; अग्नि अग्नि में विलीन हो जाती है; वायु वायु में विलीन हो जाती है। और इस प्रकार आकाश आकाश में विलीन हो जाता है; तथा शरीरों में रहने वाली आत्मा सुखी, सर्वव्यापक, नित्य मुक्त, संसार का साक्षी, जन्म व मृत्यु से मुक्त है।

44-45. वह आत्मा, जो सभी इंद्रियों से परिपूर्ण है, शब्द आदि इंद्रिय विषयों से घिरी हुई है, इच्छा और प्रेम में लिप्त है, कर्म के आवरण से घिरी हुई है, श्रेष्ठ प्रवृत्तियों से परिपूर्ण है, अपने ही कर्म द्वारा निर्मित एक नए शरीर में प्रवेश करती है। क्या यह। ठीक उस गृहस्थ की तरह जिसका घर जल गया हो।

46-47: तब देवताओं के दूत चमकते पंखों से सुसज्जित, असंख्य घंटियों से सुसज्जित रथों के साथ आते हैं, और वे अपने रथ में एक ऐसे व्यक्ति को ले जाते हैं जो सच्चे धर्म को जानता है, बुद्धिमान है, जो हमेशा धर्मियों का रक्षक है। प्रिय है, और उसकी आज्ञा मानता है। धार्मिक संस्कार. चल दर।

48. वह तेजस्वी शरीर वाला, चमकते हुए वस्त्रों और मालाओं से विभूषित, सोने और हीरे के आभूषणों से सुसज्जित, दान से स्वर्ग प्राप्त करता है और पवित्र लोगों द्वारा सम्मानित किया जाता है।

## <u>अध्याय X</u>

## आग से हड्डियाँ इकट्ठा करना

1. गरुड़ ने कहा: हे भगवन्, कृपया मुझे सज्जनों के शवों को जलाने की विधि बताएं और पतिव्रता स्त्री की महिमा का भी वर्णन करें।

2. भगवान ने कहा हे तार्क्ष्य सुनो. आइए मैं आपको शरीर के ऊपरी भाग के लिए किए जाने वाले सभी अनुष्ठानों के बारे में बताता हूं, जिन्हें करने से पुत्र और पौत्र को पारिवारिक ऋण से मुक्ति मिलती है।

3. ज्यादा दान-पुण्य की जरूरत नहीं है, लेकिन माता-पिता का अंतिम संस्कार अवश्य करना चाहिए; ऐसा करने वाले पुत्र को अग्निष्टोमा के समान ही फल मिलता है।

4-6. तब पुत्र को अपना शोक त्याग कर अपने सभी बंधुओं सहित अपना मुंडन करवाना चाहिए, ताकि उसके सारे पाप धुल जाएं। जो पुत्र अपने माता या पिता की मृत्यु के बाद मुंडन नहीं कराता, वह भवसागर से तरने वाला पुत्र कैसे कहा जा सकता है? इसलिए उसे नाखून और बगल के बालों को छोड़कर बाकी सारे बाल मुंडवा लेने चाहिए. फिर अपने मित्रों के साथ स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करें।

7-9. फिर नदी का जल लाकर शव को स्नान कराएं, फिर उसे चंदन, माला या गंगा मिट्टी से सजाएं; उसे नए कपड़े पहनाएं, दाहिने कंधे पर पवित्र धागा बांधें, उपनाम का उच्चारण करें, मृत्यु के स्थान पर तथाकथित मृतक के नाम पर चावल के गोले और उपहार चढ़ाएं। इससे पृथ्वी और उसके अधिष्ठाता देवता प्रसन्न होते हैं।

10. जिस व्यक्ति की मृत्यु हुई हो उसके नाम से दरवाजे पर हवन करना चाहिए; इससे करोड़ों भूतों में से दुष्ट भी कोई हानि नहीं पहुँचा पाते।

11-13. फिर बहू और अन्य लोग उसकी परिक्रमा करके पूजा करते हैं; फिर बेटे को अन्य रिश्तेदारों के साथ मिलकर इसे कंधा देना चाहिए। जो पुत्र अपने पिता को कंधे पर बिठाकर श्मशान तक ले जाता है, उसे हर कदम पर अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है। जो व्यक्ति अपने मृत पिता को कंधे, पीठ या कूल्हे पर लेकर चलता है वह अपने माता-पिता की दयालुता का ऋण चुकाता रहता है।

14. फिर, आधे रास्ते में, सफाई और छिड़काव के बाद, उसे रुकना चाहिए। शव को स्नान कराकर तर्पण करना चाहिए।

15. तर्पण इस उद्देश्य से करना चाहिए कि अलग-अलग दिशाओं में रहने वाले भूत, प्रेत, पिशाच आदि उस शरीर में कोई विघ्न न डालें।

16-19. फिर उसे श्मशान में ले जाकर उत्तर दिशा की ओर सिर करके लिटा देना चाहिए। किसी शव को जलाने के लिए किसी स्थान को इस प्रकार साफ करना चाहिए: जमीन को साफ करके, गोबर से धोना, मिट्टी हटाना, वेदी बनाना, पानी छिड़कना, उचित तरीके से अग्नि जलाना, फूल चढ़ाना और रंग-बिरंगे फूल चढ़ाना। पुष्प। भगवान के उस उज्ज्वल रूप को चावल अर्पित करें जो मांसाहारी माने जाते हैं।

पूजा के बाद 'लोमन' से शुरुआत करनी चाहिए और निर्धारित तरीके से आहुति देनी चाहिए - "हे जीवों के पालनकर्ता, जगत के गर्भ, जीवों के पोषणकर्ता! परिवर्तनशील संसार का यह जीव मर गया है; इसे ले जाओ स्वर्ग!"

20-22. इस प्रकार अग्नि की प्रार्थना करके वहां चंदन की लकड़ी, पवित्र स्नान की लकड़ी, पलाश और अश्वत्थ की लकड़ी से चिता बनानी चाहिए। मृतक को चिता पर रखने के बाद मृतक के नाम से दो चावल के गोले मृतक के हाथ में रखकर चिता पर चढ़ाने चाहिए। चिता पर छोड़ते ही मृतक की हालत खराब होने लगती है। जो लोग मृतक के तरीकों को जानते हैं उन्हें साधक कहा जाता है। चिता पर मृतक के नाम पर या मृतक के नाम पर तर्पण करना चाहिए।

23. इस प्रकार मृतक को पांच चावल के गोले चढ़ाने का लाभ मिलता है, अन्यथा उपरोक्त बाधाएं उत्पन्न होती हैं।

24. यदि पंचक न हो तो पुत्र मृतक को पांच चावल के गोले खिलाएं और भूसे सहित आहुति लाकर अग्नि में डाल दें।

25-27. पंचक में मरने वाले की मृत्यु अच्छी नहीं होती। उस समय दाह-संस्कार नहीं करना चाहिए; दाह संस्कार होता है तो मृत्यु होती है. पांच पंचक भवनों में धनिष्ठा से रेवती 2 के मध्य का समय दाह संस्कार के लिए उपयुक्त नहीं है। दाह संस्कार करने पर अशुभ घटित होता है। जिस घर ऋक्षा भवन में मृत्यु होती है, उस घर में अनिष्ट होता है और पुत्र तथा परिवार को खतरा रहता है।

28. यदि रक्षा के मध्य में अग्नि हो तो समस्त अनिष्टों से बचने का उपाय मैं तुम्हें बताऊंगा।

20-33. फिर हे ताक्ष्र्य, शव के पास दर्भा घास से बनी एक मूर्ति स्थापित करनी चाहिए और उसे चार ऋक्ष मंत्रों से शुद्ध करना चाहिए।

परिष्कृत सोने का प्रयोग करना चाहिए तथा ऋक्ष मंत्र, प्रेतजायत मंत्र तथा पत्र पात्र से हवन करना चाहिए। इसके बाद मूर्तियों सहित दाह संस्कार करना चाहिए और चावल की पिंडी चढ़ाने के दिन पुत्र शांति संस्कार करना चाहिए। कष्टों से मुक्ति के लिए उन्हें तिल, सोना, चांदी, हीरे से भरा बर्तन और घी से भरा कांसे का बर्तन देना चाहिए। इस प्रकार शांतिपूर्वक दाह संस्कार करने वाले व्यक्ति को कोई कष्ट नहीं होता और उसे परम गति की प्राप्ति होती है।

56-50. चाहे वह आधा जला हो या पूरा जला हो, उसकी खोपड़ी तोड़ देनी चाहिए, गृहस्थ को लकड़ी के टुकड़े से, संन्यासी को नारियल से। अपने पुत्र को पितर लोक की प्राप्ति के लिए इस मंत्र से ब्रह्मरंध्र को तोड़कर घी की आहुति देनी चाहिए।
"आप उससे पैदा हुए हैं, 2 वह आपसे फिर से पैदा हो सकता है। वह स्वर्गीय दुनिया के लिए एक प्रसाद है। हे अग्नि, प्रज्वलित हो जाओ!" इस प्रकार मंत्रों के साथ-साथ घी और तिल चढ़ाकर ऊंचे स्वर में उनका जाप करना चाहिए। रोना चाहिए ताकि वह खुश रह सके

60-61. जब जलना समाप्त हो जाए तो महिलाओं को स्नान करना चाहिए, फिर तिल मिश्रित जल अपने पुत्रों और परिवार के नाम पर देना चाहिए। उसे निंब वृक्ष के पत्ते खाने चाहिए और मृतक के गुणों का वर्णन करना चाहिए। उन्हें घर जाना चाहिए, महिलाएं आगे और पुरुष पीछे।

62. घर में दोबारा स्नान करके गाय को भोजन कराएं और थाली में रखकर खा लें, लेकिन घर में पहले से रखा हुआ खाना न खाएं। 63. बारहवें दिन मृत्यु स्थान को गाय के गोबर से लीपें और वहां दक्षिण दिशा की ओर दीपक जलाकर रखें।

63 - 66. हे ताक्ष्र्य, तीन दिन तक सूर्यास्त के समय चौराहे पर या श्मशान भूमि पर मिट्टी के बर्तन में दूध और जल चढ़ाएं। दूध और पानी से भरा एक कच्चा मिट्टी का घड़ा तीन डंडियों में बांधें और इस मंत्र का जाप करें: "तुम श्मशान की अग्नि में जल गए हो। तुम्हें तुम्हारे रिश्तेदारों ने त्याग दिया है। यह दूध है और यह पानी है; ले लो।" और पियो।" ,

67. घर में अग्नि जले या न जले, चौथे दिन दान अवश्य करना चाहिए। यदि कोई बाधा न हो तो दूसरे या तीसरे दिन निम्नलिखित कार्य करना चाहिए:

68-78. श्मशान जाना चाहिए, स्नान करना चाहिए, शुद्ध होना चाहिए, ऊनी कपड़े और एक पवित्र अंगूठी पहननी चाहिए और श्मशान में रहने वाले लोगों को खाना खिलाना चाहिए और तीन बार परिक्रमा करनी चाहिए और "यमयात्व" मंत्र का जाप करना चाहिए। फिर, हे पक्षीराज, चिता पर दूध और पानी छिड़कें और हड्डियों के ढेर को उठाना शुरू करें।

उन्हें पलाश के पत्तों पर रखकर उन पर दूध और जल छिड़कना चाहिए और मिट्टी के बर्तन में रखकर बताए गए निर्देशों के अनुसार श्राद्ध करना चाहिए। त्रिकोणीय भूमि तैयार करके उसे गाय के गोबर से लीपकर तीन चावल के गोले दक्षिण दिशा की ओर मुख करके तीन दिशाओं में चढ़ाने चाहिए।

चिता की राख एकत्र करने के बाद तीन पैरों वाला एक स्टूल लेना चाहिए और उस पर पानी से भरा एक खुला घड़ा रखना चाहिए। फिर मृतक को पके हुए चावल, दही, घी, पानी और मिठाई का प्रसाद चढ़ाना चाहिए। उत्तर दिशा में पंद्रह कदम चलने के बाद वहां एक गड्ढा खोदकर उसमें हड्डियों का एक पात्र रखना चाहिए। फिर उस पर चावल की गोलियां रखनी चाहिए, जिससे जलन से राहत मिलती है और बर्तन को गड्ढे से निकालकर किसी पानी के तालाब के पास ले जाना चाहिए।

फिर राख पर कई बार जल और दूध छिड़कना चाहिए और चंदन और केसर से उनकी पूजा करनी चाहिए। इन्हें पत्तों की डिब्बी में रखना चाहिए और उससे अपने हृदय और माथे को छूकर प्रणाम करना चाहिए और उसकी परिक्रमा करनी चाहिए। उसे इसे बीच गंगा में फेंक देना चाहिए.

79-84. जिसकी हड्डियाँ दस दिन के भीतर गंगा के जल में डूब जाती हैं वह ब्रह्मलोक से कभी नहीं लौटता। जब तक मनुष्य की हड्डियाँ गंगा के जल में तैरती रहती हैं, तब तक वह हजारों वर्षों तक स्वर्ग में रहता है।
जब गंगा की लहरों से चलने वाली हवा मृतक को छूती है, तो उसके पाप तुरंत नष्ट हो जाते हैं। अपने पूर्वजों को मुक्त कराने के लिए भागीरथ ने कठोर तपस्या की और दिव्य गंगा की पूजा की और उन्हें ब्रह्मलोक से नीचे लाए।

सगर के जले हुए पुत्रों को स्वर्ग ले जाने वाली गंगा की पवित्र करने वाली महिमा तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। जो लोग पाप करके मरते हैं उनकी राख गंगा में गिरती है और स्वर्ग पहुंचती है।

85-86. एक शिकारी था, जो सभी प्रकार के प्राणियों को नष्ट करने वाला था, एक विशाल जंगल में एक शेर ने उसे मार डाला और नरक नामक स्थान पर चला गया। जब एक कौवे ने उनकी राख को गंगा में बहा दिया, तो वह दिव्य रथ पर सवार हो गये और महापुरुषों के निवास स्थान की ओर चल पड़े।

87. अत: किसी अच्छे पुत्र को ही अस्थियाँ गंगा में विसर्जित करनी चाहिए। राख एकत्र करने के बाद उसे दस दिनों तक अनुष्ठान करना चाहिए।

88-90. अब यदि किसी की मृत्यु किसी सुनसान स्थान पर, जंगल में या खतरनाक चोरों द्वारा हो जाए और उसका शव न मिले तो खोजे जाने वाले दिन ऊपर बताए अनुसार दरभा घास का पुतला बनाकर अकेले ही जला देना चाहिए। यदि मृतक की मृत्यु हो गई हो तो उसकी राख को एकत्र कर गंगा जल में विसर्जित कर देना चाहिए और उस दिन से दस दिन तक अनुष्ठान करने के बाद वार्षिक श्राद्ध की तिथि निश्चित करनी चाहिए।

91. यदि कोई स्त्री गर्भावस्था के दौरान मर जाती है तो उसकी कोख काट देनी चाहिए और बच्चे को निकालकर जमीन पर रखकर जला देना चाहिए।

92-93. यदि कोई बच्चा गंगा के किनारे मर जाये तो उसे गंगा में ही बहा देना चाहिए; यदि उसकी मृत्यु किसी अन्य स्थान पर हो तो उसे सत्ताईस महीने तक भूमि में गाड़ देना चाहिए। यदि गर्भस्थ शिशु मर जाए तो उसे जला देना चाहिए और उसकी राख को गंगा में प्रवाहित कर देना चाहिए। एक लोटा पानी देना चाहिए और बच्चों को उसे पिलाना चाहिए।

94-98 यदि गर्भस्थ शिशु मर जाए तो संस्कार नहीं होता। यदि बच्चा मर जाए तो दूध पिलाना चाहिए। यदि किसी बच्चे की मृत्यु हो जाए तो उसे घड़ा, दूध, दलिया तथा भोजन सामग्री देनी चाहिए। यदि कोई जवान आदमी मर जाए तो छोटे बच्चों को भोजन कराना चाहिए। यदि व्रत करने वाले किसी युवक की मृत्यु हो जाए तो उसके बच्चों सहित ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए। यदि पांच वर्ष की आयु पार कर चुका कोई व्यक्ति मर जाता है, चाहे उसने व्रत किया हो या नहीं, तो उसे दस गांठ चावल, दूध, भोजन और चीनी की डली देनी चाहिए।

ग्यारहवें और बारहवें दिन नवयुवक का संस्कार करना चाहिए, परंतु बैल को मुक्त करना और बैल का दान करना नहीं चाहिए। यदि पिता जीवित है तो नवयुवक का संयुक्त संस्कार नहीं किया जाता, केवल बारहवें दिन ही उसका संयुक्त संस्कार किया जाना चाहिए।

99. स्त्री और शूद्र से विवाह प्रतिज्ञा का स्थान कहा गया है। व्रत लेने से पहले सभी जातियों में आयु के अनुसार अनुष्ठान किया जाता है।

100. जो कर्म से कम आसक्त है, जो भौतिक वस्तुओं से कम आसक्त है, और जो शरीर से कम आसक्त है, उसे बहुत कम संस्कारों की आवश्यकता होती है।

101. बचपन और युवावस्था में शय्या, बैल और अन्य यज्ञ करने चाहिए, भूमि, महादान और गाय का दान करना चाहिए।

102-107. सभी तपस्वियों का दाह संस्कार नहीं करना चाहिए, जल दाह संस्कार नहीं करना चाहिए तथा उनके पुत्रों को दस दिवसीय संस्कार नहीं करना चाहिए। लाठी पकड़ने से नर नारायण बन जाता है; त्रिविध दण्ड भोगने के कारण उन्हें कभी देहधारी की गति प्राप्त नहीं होती। जो जानते हैं वे अपने स्वभाव को जानकर सदैव मुक्त रहते हैं, इसलिए उन्हें चावल के एक टुकड़े की अपेक्षा नहीं रहती। इसलिए उन्हें चावल का पिंड और जल नहीं देना चाहिए, बल्कि पितरों के प्रति श्रद्धा भाव से तीर्थ स्थानों में वार्षिक श्राद्ध और गया में श्राद्ध करना चाहिए।

हंस, परमहंस, कुटीचक, बहूदक; हे ताक्ष्र्य, वह तपस्वी है, उसकी मृत्यु के बाद उसे भूमि में गाड़ देना चाहिए। यदि गंगा या कोई अन्य नदी उपलब्ध न हो तो उन्हें जमीन में गाड़ देना चाहिए। जहां बड़ी नदियां हैं, वहां इन्हें डाल देना चाहिए.

## अध्याय XI

## दस दिवसीय उत्सव का विवरण

1. गरुड़ ने कहा: हे केशव! बताओ इस दस दिवसीय अनुष्ठान का फल क्या है और पुत्र न होने पर इसे कौन करेगा?

2. भगवान ने कहा: हे ताक्ष्र्य! सुनो, मैं तुम्हें दस दिवसीय अनुष्ठान के बारे में बताता हूं, जिसे करने से कुलीन पुत्र पारिवारिक ऋण से मुक्त हो जाता है।

3-8. पुत्र को धैर्य रखना चाहिए और अपने पिता को चावल के लड्डू खिलाना चाहिए और आँसू नहीं बहाना चाहिए, क्योंकि मृतक को अपने रिश्तेदारों के आँसू पीना पड़ता है और जब उसका दुःख व्यर्थ हो तो उसे रोना नहीं चाहिए। हजारों वर्षों तक दिन-रात शोक मनाते रहने पर भी मृत व्यक्ति दिखाई नहीं देता। जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है और जिसकी मृत्यु होती है उसका जन्म निश्चित है। यह अवश्यम्भावी है, इसलिये बुद्धिमान मनुष्य को इस पर शोक नहीं करना चाहिये।

इससे बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है, न तो मानवीय और न ही दैवीय; जो प्राणी मृत्यु के वश में हो गया है उसे पुनः यहीं जन्म लेना पड़ता है। यदि अपरिहार्य को टालने का कोई उपाय होता तो नल, राम और युधिष्ठिर को कष्ट नहीं उठाना पड़ता।

9-11. किसी से भी अत्यधिक लगाव नहीं रखना चाहिए; शरीर तो स्वप्न ही है, फिर अन्य लोगों का क्या हाल? जैसे कोई यात्री किसी छायादार स्थान पर जाकर कुछ देर विश्राम करता है और फिर चला जाता है, उसी प्रकार वहां प्राणियों का जमावड़ा होता है। सुबह का खाया हुआ बढ़िया से बढ़िया खाना शाम तक ख़राब हो जाता है; उस भोजन से पोषित शरीर में स्थिरता कैसे हो सकती है?

12-17. यह दुख को दूर करने वाला है, ऐसा समझकर अज्ञानजनित दुख को त्याग देना चाहिए और पुत्र का श्राद्ध करना चाहिए। यदि पुत्र नहीं है तो उसे अपनी पत्नी को दे देना चाहिए और यदि पत्नी नहीं है तो उसे अपने भाई, किसी ब्राह्मण के शिष्य या किसी रिश्तेदार को दे देना चाहिए। हे पक्षी! जिस व्यक्ति का कोई पुत्र नहीं है, उसके लिए दस दिवसीय अनुष्ठान उसके छोटे या बड़े भाई के पुत्रों या पोते द्वारा किया जाना चाहिए। मनु ने कहा है कि यदि एक ही पिता के भाइयों में से किसी एक का पुत्र हो तो वह पुत्र ही होता है क्योंकि वे सभी पुत्र ही माने जाते हैं।

यदि किसी पुरुष की कई पत्नियाँ हों, परन्तु उनमें से केवल एक का ही पुत्र हो, तो उस पुत्र के कारण उन सभी के पुत्र होते हैं। जिनके पुत्र नहीं हैं उन्हें केवल उनके मित्र ही चावल के लड्डू का भोग लगा सकते हैं। इस अनुष्ठान की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। यदि कोई नहीं है तो कुल पुरोहित ही अनुष्ठान कर सकता है।

18. जो स्त्री या पुरुष अपने मित्र के लिए यह अनुष्ठान करता है उसे असहाय मृतक के लिए इस अनुष्ठान से किए गए करोड़ों यज्ञों का फल मिलता है।

19-21. हे पक्षी! पिता का दस दिवसीय अनुष्ठान पुत्र को ही करना चाहिए। यदि ज्येष्ठ पुत्र की मृत्यु हो जाए तो भी पिता को अत्यधिक स्नेह के कारण ऐसा नहीं करना चाहिए। यदि कई पुत्र हों तो भी केवल एक को ही दस दिन का श्राद्ध, चावल का पिंडदान तथा सोलह अन्य श्राद्ध करना चाहिए। ये सभी कार्य एक ही व्यक्ति को करने चाहिए, भले ही धन का बंटवारा पहले ही हो चुका हो। लेकिन यदि धन का बंटवारा पहले ही हो चुका हो तो वार्षिक श्राद्ध अलग से करना चाहिए। अत: ज्येष्ठ पुत्र को दस दिनों तक श्रद्धापूर्वक श्राद्ध करना चाहिए, 1 समय-समय पर भोजन करना चाहिए, भूमि पर सोना चाहिए, ब्राह्मण की पूजा करनी चाहिए, 2 पवित्र रहना चाहिए।

2. माता-पिता का श्राद्ध करने से पुत्र को तीर्थ की सात बार परिक्रमा करने के समान फल मिलता है। 3 जो पुत्र दस दिन के श्राद्ध से आरंभ करके एक वर्ष तक श्राद्ध करता है, उसे गया में श्राद्ध करने का फल मिलता है।

25-30. रात्रि में नौ से बारह बजे के बीच किसी कुएं या तालाब, बगीचे, पवित्र स्नान स्थान या मंदिर में जाकर बिना मंत्र पढ़े स्नान करना चाहिए। शुद्ध होकर दक्षिण दिशा की ओर मुख करके वृक्ष की जड़ पर बैठना चाहिए और गाय के गोबर से पवित्र होकर वहां एक वेदी बनानी चाहिए। पत्तों पर दर्भा और कुश से बने द्विज को स्थापित करना चाहिए और जल आदि से उसकी पूजा करके 'अतसि' कहकर उसे नमस्कार करना चाहिए। फिर उसके सामने चावल की चटाई बिछाकर उस पर पके हुए चावल या जौ के आटे की गोली, जिस पर मृतक के परिवार का नाम लिखा हो, रखकर बेटे को हवन करना चाहिए। उसे उशीर-मूल समर्पित करना चाहिए; चंदन का पेस्ट, भृंगराज फूल, धूप, दीपक, खाद्य पदार्थ, सुगंध और उपहार।

कौवे के लिए भोजन, एक बर्तन में दूध, पानी और एक मुट्ठी अरंडी का तेल: "यह सब, जो मैंने मृतक को उसके सांसारिक नाम पर दिया है, जारी रहे।"
31-33. यदि मृतक के नाम पर भोजन, वस्त्र, जल, धन या अन्य चीजें दी जाएं तो वे मृतक को अमर बना देते हैं। इसलिए पहले दिन से ही मृत स्त्री या पुरुष का नाम सपिंड संस्कार के अनुसार उच्चारित करना चाहिए।

33. जिस प्रकार पहले दिन एक चावल का गोला दिया जाता है, उसी प्रकार नौ चावल का गोला देना चाहिए।

34-36. नौवें दिन सभी अधिकृत रिश्तेदारों को उचित समय पर अपने ऊपर तेल छिड़कना चाहिए और मृतक के स्वर्ग पहुंचने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। खुले में स्नान करने के बाद, व्यक्ति को महिलाओं के नेतृत्व में पान की घास और

भुने हुए अनाज अपने साथ लेकर मृतक के स्थान पर जाना चाहिए, और कहना चाहिए: "उसका परिवार पान की घास और भुने हुए अनाज की तरह बढ़े। उज्ज्वल रूप से चमकें," और फिर घर में मिश्रित पान घास और अनाज छोड़ें।

37-38. दसवें दिन, हे पक्षीराज, पितरों के लिए अनुष्ठान में मांस का एक गोला या माशा का एक गोला अर्पित करना चाहिए, क्योंकि कलियुग में मांस निषिद्ध है। दसवें दिन उसे अन्य रिश्तेदारों की तरह दाढ़ी बनानी चाहिए। संस्कार करने वाले बेटे को फिर से पूरा मुंडन कराना होगा.

39. द्विज को दस दिन तक मसालेदार भोजन खिलाना चाहिए। भगवान श्रीहरि का ध्यान करके हाथ जोड़कर मृतक की मुक्ति के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

40. जो लोग पीले वस्त्र पहने, अतसी फूल के समान सुंदर, शाश्वत भगवान गोविंद की पूजा करते हैं, उनके लिए डर का कोई कारण नहीं है।

41-42. "हे आदि और शाश्वत देवता, हे शंख, चक्र और गदा धारण करने वाले, अविनाशी, कमल-नयन, आप मृतकों को मोक्ष प्रदान करने वाले बनें।" उसे प्रतिदिन श्राद्ध के अंत में प्रार्थनापूर्वक इस मंत्र का जाप करना चाहिए। घर जाकर स्नान करके गाय को भोजन कराना चाहिए।

# <u>अध्याय **XII**</u>

## ग्यारहवें दिन के संस्कार का विवरण.

1. गरुड़ ने कहा: हे देवराज! ग्यारहवें दिन के कर्म भी मुझे बताओ और हे जगत् के स्वामी! वृषभ-शिष्य के संस्कार भी बतायें।

2. भगवान ने कहा: ग्यारहवें दिन की सुबह जलाशय पर जाकर दाह संस्कार की सभी क्रियाएं पूरी करनी चाहिए.

3. वेदों और शास्त्रों के जानकार ब्राह्मण को बुलाना चाहिए और सिर झुकाकर और हाथ जोड़कर मृतक की मुक्ति के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

4. आचार्य को भी स्नान, संध्या आदि करके शुद्ध हो जाना चाहिए। ग्यारहवें दिन का कार्य विधिपूर्वक करना चाहिए।

5. दसवें दिन का श्राद्ध परिवार के नाम पर बिना मंत्र जाप के करना चाहिए; और ग्यारहवें दिन मंत्रों के साथ मृतक को चावल की एक गांठ अर्पित करें।

6-10. हे पक्षी, भगवान विष्णु की सोने की मूर्ति, ब्रह्मा की चांदी की मूर्ति, रुद्र की तांबे की मूर्ति और यम की लोहे की मूर्ति बनानी चाहिए। भगवान विष्णु के लिए गंगा जल से भरा पात्र पश्चिम दिशा में रखना चाहिए; और उस पर भगवान विष्णु को पीले वस्त्र पहनाकर स्थापित करना चाहिए। ब्रह्मा के निमित्त दूध और जल का पात्र पूर्व दिशा में रखना चाहिए; और उस पर सफेद वस्त्र धारण करके भगवान ब्रह्मा की स्थापना करनी चाहिए। उत्तर दिशा में रुद्र के लिए शहद और घी का पात्र रखना चाहिए और उस पर लाल वस्त्र पहने हुए रुद्र की स्थापना करनी चाहिए। यम के लिए वर्षा जल का पात्र दक्षिण दिशा में रखना चाहिए; और उस पर काले वस्त्र पहनकर यमराज की स्थापना करनी चाहिए।

11-13. पुत्र को चाहिए कि वह बीच में घेरा बनाकर उसमें कुश रखें, दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके दाहिने कंधे पर पवित्र धागा बांधे और जल अर्पित करें। उसे विष्णु, सृष्टिकर्ता, शिव और न्याय को वैदिक मंत्रों के साथ जल चढ़ाना चाहिए, अग्नि में आहुति देनी चाहिए और फिर ग्यारहवें दिन श्राद्ध करना चाहिए, और फिर अपने पूर्वजों की मदद के लिए एक गाय का दान करना चाहिए: "यह गाय हे माधव, कृपया इसे प्रसन्न करें आप।"

12-15. उनके कपड़े, उनके आभूषण, उनके वाहन, - ये, जो वे इस्तेमाल करते थे, - शुद्ध घी से भरा पीतल का बर्तन, सात अनाज जो उन्हें पसंद थे,

तिल और अन्य आठ महादान : यदि कोई व्यक्ति अपने अंतिम दिनों में इन्हें नहीं दे सके तो उसके बिस्तर के पास लाकर इन्हें दान कर देना चाहिए।

16. ब्राह्मण के पैर धोने के बाद उसे वस्त्र आदि से सम्मानित करना चाहिए और उसे पका हुआ भोजन, मिठाई, आटे की टिकिया और दूध देना चाहिए।

17-19. फिर पुत्र को पलंग पर सोने की मूर्ति रखनी चाहिए और उसकी पूजा करके विधिपूर्वक पलंग मृतक को सौंप देना चाहिए। “हे ब्राह्मण, मैं तुम्हें मृतक के लिए यह बिस्तर, मृतक की मूर्ति और अन्य चीजों के साथ देता हूं।” इन शब्दों

के साथ इसे किसी ब्राह्मण गुरु को देना चाहिए जिसका परिवार हो; अत: उसकी परिक्रमा करके उसे प्रणाम करना चाहिए तथा उसे प्रसाद अर्पित करना चाहिए।

20. इस शैय्या दान, नवमी तथा अन्य दिनों में श्राद्ध तथा वृषभदान का अनुष्ठान करने से मृतक को परम सुख की प्राप्ति होती है।

21-30. ग्यारहवें दिन बैल का विधिपूर्वक अभिषेक करना चाहिए। अपंग, बीमार या छोटी गायों का उपयोग नहीं करना चाहिए, बल्कि स्पष्ट लक्षण वाली गायों का उपयोग करना चाहिए। ब्राह्मण के लिए लाल आंखें, लाल रंग, लाल सींग, गर्दन और खुर, सफेद पेट और काली पीठ उपयुक्त होती है। क्षत्रिय के लिए चमकीला और लाल रंग, वैश्य के लिए पीला रंग और शूद्र के लिए काला रंग उपयुक्त है। जिसके सभी अंग लाल-भूरे रंग के हों और पूंछ और पैर सफेद हों, वह लाल रंग का बैल कहलाता है और यह पितरों को तृप्त करता है। जिस बैल का मुख, पैर और पूँछ सफेद और रंग लाख के समान हो, वह काला कहलाता है। जिसका रंग लाल हो, चेहरा और पूँछ सफेद हो, खुर और सींग भूरे हों, वह सांवला कहलाता है। जिसके शरीर के अंग, पूँछ और खुर एक जैसे रंग के हों, वह काले रंग का होता है और पितरों को प्रसन्न करने वाला होता है।

जिसका रंग कबूतर के समान हो और माथे पर तिलक हो, वह सांवले रंग का होता है और उसके शरीर के सभी अंग पूर्ण रूप से सुंदर होते हैं। जिसका संपूर्ण शरीर काले रंग का हो और जिसकी आंखें लाल हों, उसे अतिश्याम वर्ण कहा जाता है - जिसके पांच प्रकार होते हैं।

इसे समर्पित किया जाना चाहिए और घरेलू उद्देश्यों के लिए इसका उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। संसार में इसका अस्तित्व इसीलिए है, ऐसी प्राचीन कहावत है।

31-35. एक आदमी को कई बेटों की इच्छा करनी चाहिए, जिनमें से एक को गाय के पास जाना चाहिए, या एक कुंवारी गौरी से शादी करनी चाहिए या खुद को एक काले बैल के लिए समर्पित करना चाहिए। जो बैल का श्राद्ध और गाय का श्राद्ध करता है उसे पुत्र समान समझना चाहिए - जो ऐसा नहीं करता वह मल के समान है। जिनके पूर्वज रौरव आदि नरकों में कष्ट भोग रहे हों, वे बैल के समर्पण से इक्कीस पीढ़ियों तक उनकी सहायता करते हैं।

जो पितर स्वर्ग चले गए हैं वे भी बैल के समर्पण की कामना करते हैं: "हमारे वंश में ऐसा कौन सा पुत्र है जो बैल को समर्पित करेगा? किसके समर्पण से हम सभी

अंतिम गंतव्य को प्राप्त करेंगे? सभी यज्ञों में वृषभ यज्ञ है केवल यही हम कर सकते हैं।" यह मुक्तिदायक है.

36. अत: पितरों की मुक्ति के लिए वृषभ यज्ञ करना चाहिए। उसे सभी कार्य व्यवस्थित एवं तत्परता से करने चाहिए।

37. रोगी व्यक्ति को ग्रहों की स्थिति देखकर शास्त्रानुसार हवन करना चाहिए तथा मंत्रों से पूजा करनी चाहिए तथा वृषभ की पूजा करनी चाहिए।

38-42. विवाह संस्कार के अनुसार, एक बछड़े और गाय को एक साथ लाकर शादी के धागे से बांधना चाहिए, फिर उन्हें एक खंभे से बांधना चाहिए; तथा बैलों और गायों को रुद्र के कलश के जल से स्नान कराकर इत्र और पुष्पमाला से पूजन करके उनकी परिक्रमा करनी चाहिए।

उसे अपनी दाहिनी ओर शिव का त्रिशूल और बायीं ओर चक्र अंकित करना चाहिए।

बैल को मुक्त करने के बाद पुत्र को अपने दोनों हाथ जोड़कर यह मंत्र पढ़ना चाहिए:--

“तुम बिल्कुल एक बैल की तरह हो। ब्रह्मा ने सबसे पहले तुम्हें उत्पन्न किया। एक बार मुक्त हो जाने पर, क्या आप इस भवसागर को पार कर सकते हैं!”

इस प्रकार प्रणाम करके इस मंत्र से बैल और गाय को मुक्त कर दें।

"मैं सदैव तुम्हें वरदान देने वाला और मृतकों को मुक्ति देने वाला रहूंगा।"

43. इसलिये ऐसा करना चाहिये। इसका फल जीवन में ही प्राप्त होता है। जिस मनुष्य के पुत्र नहीं है वह स्वयं ऐसा करके परम लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर सकता है।

44-45. कार्तिक और अन्य शुभ महीनों में, जब सूर्य उत्तर की ओर बढ़ रहा हो, शुक्ल पक्ष में, या द्वादशी तिथि को, दोनों ग्रहणों के दौरान, विषुव और संक्रांति काल के दौरान, बैल को एक पवित्र स्थान पर प्रतिष्ठित किया जाना चाहिए। स्नान स्थान. . ,

46-49. जिस समय सूर्य शुभ नक्षत्र और शुद्ध स्थान में प्रवेश करे, उस समय शुभ लक्षण और कर्मकांड जानने वाले ब्राह्मण को आमंत्रित करना चाहिए। जप, हवन और दान से शरीर को शुद्ध करना चाहिए। पहले की भाँति हवन आदि सभी अनुष्ठान किये जायें; और शालग्राम रखकर वैष्णव श्राद्ध करना चाहिए, उसके बाद श्राद्ध करना चाहिए और द्विजों को दान देना चाहिए। हे पक्षी! जो ऐसा करता है, चाहे उसके पुत्र हो या न हो, उसे बैल का श्राद्ध करने से सभी मनोकामनाओं का फल मिलता है।

50. बैल को मुक्त करने से जो गति प्राप्त होती है, वह अग्नि तथा अन्य यज्ञों में आहुति देने अथवा विभिन्न प्रकार के दान करने से नहीं मिलती।

51-53. बैल की शरण लेने से शैशवावस्था, बचपन, युवावस्था, पुरुषत्व और बुढ़ापे में किए गए पाप निस्संदेह नष्ट हो जाते हैं। मित्रों को धोखा देने वाला, कृतघ्न, शराब पीने वाला, गुरु की पत्नी के साथ जाने वाला, ब्राह्मण का हत्यारा, सोना चुराने वाला, ये सभी बैल के प्रति समर्पण करने से मुक्त हो जाते हैं। अतः हे तार्क्ष्य! मनुष्य को पूर्ण समर्पण भाव से बैल की बलि देनी चाहिए; बैल की शरण लेने के समान तीनों लोकों में कोई पुण्य नहीं है।

54. यदि किसी स्त्री का पति और पुत्र दोनों पहले मर जाएं तो उसे बैल की नहीं बल्कि दूध देने वाली गाय की बलि देनी चाहिए। 55-56. हे पक्षी! जो व्यक्ति अपने कंधे या पीठ पर बैल रखता है वह महाप्रलय तक नरक में पड़ता है।

जो व्यक्ति बैल को मुक्कों या डंडों से बुरी तरह पीटता है, वह अंत तक यम की यातना भोगता है। इस प्रकार बैल का श्राद्ध करके सोलह श्राद्ध करना चाहिए। आइए मैं आपको बताता हूं कि सपिंडीकरण से पहले क्या करना चाहिए। मृत्यु के स्थान पर, दहलीज पर, रास्ते में, चिता पर, शव के हाथ में, राख इकट्ठा करते समय - ये छठे और दसवें दिन दिए जाने वाले दस शव हैं - ये पहले सोलह कहे गए हैं अशुद्ध होना. फिर मैं तुम्हें दूसरे, मध्य सोलह शरीरों के बारे में बताऊंगा -

30-64. पहला चावल विष्णु को, दूसरा शिव को अर्पित करना चाहिए; तीसरा यम के अनुयायियों को दिया जाना चाहिए। चौथा राजा सोम को, पांचवां तेज देवताओं को, छठा पितरों को, सातवां मृत्यु को, आठवां रुद्र को, नौवां पुरुष को, दसवां मृत्यु को देना चाहिए। ग्यारहवीं गेंद भगवान विष्णु को, बारहवीं ब्रह्मा को, तेरहवीं भगवान विष्णु को, चौदहवीं शिव को, पंद्रहवीं यम को और सोलहवीं भगवान को देनी चाहिए। मनुष्य, सत्य को जानने वाले ये लोग मध्य सोलह कहलाते हैं।

65-67, हर बारह महीने में, पखवाड़े में, तीसरे पखवाड़े में, छह महीने से पहले और साल से पहले भी चावल की गांठें देनी चाहिए - ये अंतिम सोलह हैं, मैंने आपको बताया है। हे ताक्ष्र्य, पकाने के बाद। अड़तालीस श्राद्ध प्रेत योनि की गति को नष्ट कर देते हैं। जिस व्यक्ति के लिए यह श्राद्ध किया जाता है वह पितरों की सभा का सदस्य बन जाता है।

68-69. तीन सोलह श्राद्ध करने चाहिए ताकि मृतक पितरों की सभा में शामिल हो सके; श्राद्ध से वंचित रहने पर भूत सदैव भूत ही रहता है। यदि तीन सोलह श्राद्ध कर्म स्वयं या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा नहीं किए जाते हैं तो वह निश्चित रूप से उनमें भाग नहीं लेता है।

70-72. अत: तीन सोलह संस्कार विधि-विधान से पुत्र करे या पत्नी अपने पति के लिए करे तो अखंड समृद्धि बनी रहती है। मैं उस व्यक्ति को "भक्त" कहता हूं जो अपने पति का अंतिम संस्कार करता है और वार्षिक और पाक्षिक अनुष्ठान करता है। यह पूजनीय पत्नी अपने पति के कल्याण के लिए रहती है: जो अपने मृत गुरु की पूजा करती है, उसका जीवन सफल होता है।

73-78. इसके अलावा, जो कोई भी लापरवाही के कारण आग या पानी से मर जाता है, उसे निर्धारित संस्कार और अन्य अनुष्ठान करने चाहिए। यदि वह अनजाने में, जानबूझकर या साँप द्वारा मारा गया हो, तो मुझे हर पखवाड़े के पांचवें दिन साँप की पूजा करनी चाहिए। जमीन पर चावल के चूर्ण से फनधारी सांप की आकृति बनाकर सफेद फूल और चंदन से पूजा करनी चाहिए। सांप को धूप दीप अर्पित करना चाहिए, उस पर खूब सारे चावल और तिल छिड़कने चाहिए और एक कच्चा चावल, दो खाद्य पदार्थ और दूध अर्पित करना चाहिए।

अपनी शक्ति के अनुसार द्विजों को सोने से बना साँप और गाय अर्पित करनी चाहिए। फिर हाथ जोड़कर कहना चाहिए 'सर्पराज आपका कल्याण करें'; और उनके लिए नारायण-बलि अनुष्ठान करना चाहिए, जिससे वे सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं और स्वर्ग में निवास प्राप्त करते हैं।

79. इस प्रकार सभी अनुष्ठान करने के बाद वर्ष के अंत तक प्रतिदिन एक लोटा अन्न और जल या चावल का पानी देना चाहिए।

80. ग्यारहवें दिन ऐसा करने के बाद सभी पितरों को चावल की गांठें अर्पित करनी चाहिए और जब वे अपवित्रता से मुक्त हो जाएं तो उन्हें शय्या और अन्य उपहार देना चाहिए।

# <u>अध्याय **XIII**.</u>

## समस्त पितरों के निमित्त श्राद्ध का वर्णन |

1. गरुड़ ने कहा: हे भगवान, मुझे सपिंड संस्कार, अशुद्धि को दूर करने और सहायक वस्तुओं के दान की विधि बताएं।

2. भगवान ने कहा: हे ताक्ष्र्य, सुनो, मैं तुम्हें संपूर्ण सपिंड संस्कार समझाता हूं, जिससे प्रेत दूर हो जाता है और आत्मा पितरों की श्रेणी में आ जाती है।

3-5. जिनका शरीर शिव की तरह अपने पूर्वजों से विरासत में नहीं मिला है, वे अपने पुत्रों द्वारा किये गये विभिन्न दानों से मुक्त नहीं हैं। यदि पुत्र सदैव अशुद्ध रहता है तो वह कभी भी शुद्ध नहीं होता; सपिण्ड संस्कार के बिना अपवित्रता दूर नहीं की जा सकती। अत: संदूषण की अवधि समाप्त होने पर पुत्र द्वारा सपिंड तर्पण कराना चाहिए। मैं आपको प्रदूषण के खात्मे के बारे में बताता हूं जिसका हर किसी को पालन करना चाहिए।

6-9. ब्राह्मण दस दिन में, क्षत्रिय बारह दिन में, वैश्य पन्द्रह दिन में और शूद्र एक महीने में पवित्र हो जाता है। सपिण्ड रिश्तेदार 1 दस दिन में शुद्ध हो जाते हैं, शाकुल्य रिश्तेदार 2-3 रातों में शुद्ध हो जाते हैं, और 3 गोत्र रिश्तेदार स्नान मात्र से शुद्ध हो जाते हैं। चौथी डिग्री के मृतक के परिजन दस रात में, पांचवीं डिग्री के छह रात में, छठी डिग्री के चार दिन में, सातवीं डिग्री के तीन दिन में, आठवीं डिग्री के एक दिन में, नौवीं डिग्री के मृतक के परिजन शुद्ध हो जाते हैं। एक चौथाई दिन में डिग्री. दसवाँ, केवल स्नान तक; - मृत्यु और जन्म की अशुद्धता एक ही अवधि तक रहती है [मृतक से दूरी की डिग्री के अनुसार]।

10-11. यदि कोई मनुष्य परदेश में मर जाए, और कोई उसके मरने का समाचार सुन ले, तो समाचार सुनने के दिन से शेष दस दिन तक अशुद्धता बनी रहती है; यदि दस दिन बीत जाएं, तो वह तीन रातों के लिए अशुद्ध हो जाता है। यदि एक वर्ष के बाद वह स्नान करने से भी पवित्र हो जाता है।

12. यदि दूसरा प्रदूषण पहली मृत्यु पर भारी पड़ता है, तो पहले प्रदूषण से शुद्धिकरण में दूसरे प्रदूषण से शुद्धिकरण भी शामिल है।

13. यदि कोई लड़का बिना दांत के मर जाए, तो उसे तुरन्त शुद्ध करना चाहिए; ऐसा कहा जाता है, मुंडन से एक रात पहले; पवित्र धागा समारोह से पहले, तीन रातें; और उसके बाद दस रातें।

14-16. यदि कोई लड़की जन्म और मुंडन के बीच मर जाती है, तो शुद्धिकरण तुरंत होता है, सभी जातियों में समान रूप से; सगाई तक एक दिन और उसके बाद बुढ़ापे तक तीन रातों के लिए वैध; यह समझना होगा कि सगाई के बाद दोनों परिवारों के पास तीन दिन होते हैं; अगर शादी के बाद तो सिर्फ पति के परिवार के लिए.

17-18. यदि छठे महीने से पहले भ्रूण की मृत्यु हो जाती है, तो भ्रूण के जीवित रहने के दिनों की संख्या के बराबर शुद्धता पुनः प्राप्त हो जाती है। इसके बाद स्त्रियाँ अपनी जाति के अनुसार अपवित्र हो जाती हैं। यदि भ्रूण मर जाता है, तो सपिंड रिश्तेदारों को तुरंत शुद्ध किया जाता है।

19. कलियुग में - शास्त्रों में आधिकारिक तौर पर घोषित - जन्म और मृत्यु के बाद सभी जातियों के लिए दस दिवसीय शुद्धिकरण है।

20-22. मृत्यु और विनाश की अवधि के दौरान, किसी को भगवान की पूजा, आतिथ्य-सत्कार, दूसरों का अभिवादन, बिस्तर पर सोना, दूसरों को छूना आदि नहीं करना चाहिए। मृत्यु और विनाश की अवधि के दौरान, शाम की प्रार्थना, दान, कीर्तन, हवन, धार्मिक अध्ययन, प्रसाद पितरों को तर्पण, ब्राह्मणों को भोजन कराना, व्रत करना यह सब नहीं करना चाहिए। जो मनुष्य अपवित्रता के समय नित्य, नैमित्तिक तथा विशेष इच्छित कर्म करता है, उसके पूर्व तथा अन्य कर्म नष्ट हो जाते हैं।

23. व्रत करने वाले, मंत्र जाप करने वाले, हवन करने वाले, ब्राह्मण, तपस्वी या राजा के लिए कोई अशुद्धि नहीं है।

24-26. विवाह संस्कार, यज्ञ तथा जन्म-मृत्यु के पूर्व बनाया हुआ भोजन खाया जा सकता है; ऐसा मनु ने कहा है. अपवित्रता के समय अज्ञानतापूर्वक लेने वाले को कष्ट नहीं होता, परन्तु देने वाले को, चाहे वह भिखारी ही क्यों न हो, कष्ट होता है। जो अपनी अपवित्रता छिपाकर द्विज को भोजन कराता है और जो ब्राह्मण जान-बूझकर भोजन करता है, वे दोनों दुःख भोगते हैं।

27. अत: स्वयं को अशुद्धता से शुद्ध करने के लिए पिता का सपिंड संस्कार करना चाहिए, जो पितरों के लोक में जाकर पितरों की भीड़ में शामिल हो जाता है।

28-30. सत्यवेत्ता ऋषियों ने कहा है कि सपिंड संस्कार बारहवें दिन, तृतीया, छठे महीने या वर्ष के अंत में किया जाना चाहिए। परन्तु हे ताक्ष्र्य! मैं शास्त्रों के अनुसार कहता हूं कि चारों वर्णों का सपिंड संस्कार बारहवें दिन करना चाहिए। कलियुग में विभिन्न परिस्थितियों, मनुष्य की अल्पायु तथा शरीर की मृत्यु के कारण बारहवाँ दिन सर्वोत्तम है।

31-33. यदि किसी गृहस्थ ब्राह्मण की मृत्यु हो जाए तो जनेऊ धारण, व्रत, पूजा, विवाह आदि संस्कार नहीं करने चाहिए। जब तक सपिण्ड की प्राप्ति न हो जाए, भिखारी को भिक्षा नहीं लेनी चाहिए और न ही अतिथि-प्रसाद स्वीकार करना चाहिए। दैनिक एवं यदा-कदा होने वाले अनुष्ठानों को बंद कर देना चाहिए। अनुष्ठान को छोड़ने से पाप लगता है, इसलिए चाहे अग्नि के बिना या अग्नि के साथ, सपिंड संस्कार बारहवें दिन किया जाना चाहिए।

34. समस्त तीर्थों के दर्शन करने से जो फल प्राप्त होता है; सभी यज्ञों से जो फल प्राप्त होता है वही फल बारहवें दिन सपिण्ड संस्कार करने से प्राप्त होता है।

35. अत: पुत्र को स्नान कराकर मृत्यु स्थान को गाय के गोबर से लीपना चाहिए तथा शास्त्रानुसार सपिंड संस्कार करना चाहिए।

36-39. इसके बाद उसे पाद-जल, अग्निहोत्र तथा आचमन से विश्व देवताओं की पूजा करनी चाहिए। इसके बाद अन्य मृतकों को चावल की गोलियां खिलानी चाहिए और पानी पिलाना चाहिए। तीन चावल की गोलियाँ अपने दादा और अन्य को क्रमशः वसु, रुद्र और अर्क के रूप में अर्पित की जानी चाहिए, और चौथी चावल की गोलियाँ मृतक को अर्पित की जानी चाहिए।

चंदन, तुलसी, धूप, दीप, प्रिय मूर्ख, मुख-गंध, अच्छे वस्त्र और उपहार से उसकी पूजा करनी चाहिए। मृतक के लिए रखे गए चावल को सोने की पतली पट्टी के साथ तीन भागों में विभाजित किया जाना चाहिए और दादाजी और अन्य लोगों को दिए गए तीन चावलों के साथ अलग से मिलाया जाना चाहिए।

40. हे ताक्ष्र्य! यह मेरा निश्चय है कि सपिण्डा किया जाय; माता का सपिंड दादी के पास और पिता का सपिंड दादा के पास है।

41-43. यदि दादा के जीवित रहते हुए पिता की मृत्यु हो जाए तो चावल के तीन दाने परदादा और अपने पूर्वजों को अर्पित करने चाहिए। पिता के चावल को तीन भागों में बांटकर अपने चावल में मिला देना चाहिए। यदि माँ की मृत्यु दादी से पहले हो जाए तो पिता के समान ही माँ का भी श्राद्ध करना चाहिए; या फिर उसे मुझे और महालक्ष्मी दोनों को शामिल कर लेना चाहिए.

44. यदि पत्नी के कोई पुत्र न हो तो पति को अपनी सास तथा अन्य लोगों के साथ अपनी पत्नी का सपिंड संस्कार करना चाहिए।

45. "स्त्रियों का सपिण्ड संस्कार केवल पति, पिता और दादा के साथ ही किया जाना चाहिए" – हे ताक्ष्र्य, यह मेरी राय नहीं है; चूंकि पत्नी अपने पति के शरीर का आधा हिस्सा होती है, इसलिए पति के लिए सपिंड संस्कार की कोई आवश्यकता नहीं है।

46. हे कश्यप! यदि पति-पत्नी एक ही चिता पर चढ़ते हैं तो उन्हें अपने बीच में घास रखकर, सास-ससुर के साथ ही चढ़ना चाहिए।

47. यह संस्कार केवल पुत्र को ही करना चाहिए; सबसे पहले चावल आदि पिता को अर्पित करना चाहिए और फिर दोबारा स्नान करके माता को अर्पित करना चाहिए।

48-51. हे ताक्ष्र्य, सपिण्ड करके अपने पितरों को जल तर्पण करना चाहिए। उन्हें वैदिक मंत्रों के साथ 'स्वधा हो' कहना चाहिए। इसके बाद उसे अतिथि को तब तक भोजन परोसना चाहिए जब तक वह 'हंता' न कह दे। 1 ऐसा करने से पितर, ऋषि, तेजस्वी और राक्षस प्रसन्न होते हैं। एक कौर को 'भिक्षा', चार कौर को 'प्रचुरता' और चार कौर को 'हंताकार' कहते हैं।

52-53. सपिंड के दौरान उसे द्विजों के पैरों की चंदन और रंगीन चावल से पूजा करनी चाहिए और उनकी निरंतर संतुष्टि के लिए उन्हें दान करना चाहिए। उसे भोजन, घी, भोजन, सोना, चांदी, एक अच्छी गाय, एक वर्ष के लिए प्रदान किया गया घोड़ा, एक हाथी, एक रथ और गुरु को दी गई भूमि की आवश्यकता होती है।

54. फिर उसे ग्रहों, देवी, 2 और विनायकम् 3 की केसर, रंगीन चावल और खाद्य पदार्थों से, मंत्र - "आपकी जय हो" के साथ पूजा करनी चाहिए।

55. इसके बाद गुरु पर मंत्र जाप करते हुए जल छिड़कें और हाथ में धागा बांधें और मंत्रों से अभिमंत्रित रंगे हुए चावल चढ़ाएं।

56-57. इसके बाद ब्राह्मणों को तरह-तरह के मीठे पकवान खिलाने चाहिए और जल तथा भोजन से भरे हुए बारह घड़े देने चाहिए। द्विजों को भोजन कराने के बाद जल, शस्त्र, तराजू और लाठी को अलग-अलग स्पर्श करने से सभी लोग शुद्ध हो जाते हैं।

58. इस प्रकार सपिंड संस्कार करने के बाद संस्कार के समय पहने हुए वस्त्रों को उतारकर सफेद वस्त्र धारण करना चाहिए और शयन दान करना चाहिए।

59-64. इन्द्र आदि सभी देवता शयादान की प्रशंसा करते हैं। इसलिए, चाहे जीवन के दौरान या मृत्यु के बाद, बिस्तर अवश्य उपलब्ध कराया जाना चाहिए। बढ़िया लकड़ी से बना, सुंदर, सुंदर रंगों से रंगा हुआ, मजबूत, रेशमी कपड़े से ढका हुआ, सोने की पत्तियों से अलंकृत, हंस के पंखों से भरे सुंदर तकिए, फूलों की खुशबू से सुगंधित बेडशीट, उज्ज्वल पट्टियों से अच्छी तरह से बंधी हुई, चौड़ी और आरामदायक: बाद में ऐसा बिस्तर बनाते समय उसे किसी कपड़े से ढककर जमीन पर बिछा देना चाहिए।

उसके चारों ओर एक छाता, चांदी के दीपकों की एक पंक्ति, एक बैल की पूंछ वाला पंखा, एक आसन, एक बर्तन, एक पानी का बर्तन, एक दर्पण और पांच रंगों का चंदवा, और बिस्तर के अन्य सभी सामान रखे गए थे, उसे अवश्य रखना चाहिए उपयुक्त स्थान.

65-66. उस पर लक्ष्मी सहित स्वर्णमय हरि को समस्त आभूषणों, अस्त्र-शस्त्रों तथा वस्त्रों सहित स्थापित करना चाहिए। महिलाओं के लिए बिस्तर पर लाल रंग, केसरिया रंग, वस्त्र, आभूषण और अन्य सभी आवश्यक वस्तुएं रखनी चाहिए।

67-68. फिर ब्राह्मण को अपनी पत्नी को सुगंधित द्रव्यों और फूलों से सजाना चाहिए, उसके कानों और उंगलियों को आभूषणों और सोने के हार से सजाना चाहिए, उसे पगड़ी और ऊपरी वस्त्र और एक बागा पहनाना चाहिए और उसे लक्ष्मी और नारायण के सामने एक आरामदायक बिस्तर पर बिठाना चाहिए।

69-71. उसे केसर और पुष्पमालाओं से हरि और लक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए और जगत के रक्षकों, ग्रहात्माओं और विनायक की पूजा करनी चाहिए। उत्तर दिशा की ओर मुंह करके हाथों में फूल लेकर ब्राह्मण के सामने खड़े होकर इस

मंत्र का जाप करें: "हे कृष्ण, जिस तरह आपका बिस्तर दूध से भरा सागर है, उसी तरह मेरे अगले जन्मों में भी यह खाली रहे।"

72-74. इस प्रकार उसे ब्राह्मण और हरि की मूर्ति के सामने मुट्ठी भर फूल रखने चाहिए, और फिर अनुष्ठान के अनुसार शयन-उपहार और सामान रखना चाहिए। इसे व्रत करने वाले व्यक्ति को देना चाहिए, जो गुरु और ब्राह्मण के बारे में बताता है और कहता है, "हे ब्राह्मण, इसे स्वीकार करें। ऐसा बहुत कम ही कोई देता है!" उसे द्विज, लक्ष्मी और हरि को पलंग पर बिठाकर झूला झुलाना चाहिए और फिर पलटकर उन्हें विदा करना चाहिए।

75. यदि वह धनवान है तो उसे सभी आवश्यक वस्तुओं से युक्त एक सुंदर घर देना चाहिए, ताकि वह उस बिस्तर पर आराम से सो सके।

76. यदि कोई जीवित व्यक्ति पूर्णिमा के दिन अपने हाथ से शय्या दान करता है तो उसे जीवित रहते हुए ही बैल का दान करना चाहिए।

77. यह बिस्तर केवल एक ही व्यक्ति को देना चाहिए, अधिक लोगों को नहीं। इसे बांटने या बेचने से दानकर्ता का पतन होता है।

78. किसी योग्य व्यक्ति को शयन दान करने से मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। पिता और पुत्र, जिन्होंने उसे दिया, इस लोक और परलोक में आनन्द मनाते हैं।

79-80. शय्यादान की सहायता से वह निस्संदेह इंद्र के घर और यम के घर तक पहुंच जाएगा। प्रलय का दिन आने तक वह बिना किसी परेशानी के उत्कृष्ट रथों पर बैठकर कई देवी-देवताओं की सेवा में रहेगा।

81. सभी तीर्थों के स्नान और चंद्रमा के परिवर्तन के सभी दिनों का पुण्य :शय्या दान करने से जो पुण्य मिलता है, वह इनसे भी अधिक है।

82-86. इस प्रकार शय्या दान करके पुत्र को पैर देना चाहिए। मेरी बात सुनो, मैं तुम्हें विधि बताता हूँ। छाता, जूते, वस्त्र, अंगूठी, जल का लोटा, आसन, पाँच बर्तन - ये सात प्रकार के पैर कहलाते हैं। यह व्रत छड़ी, तांबे के बर्तन, कच्चे चावल, भोजन, कीमती सामान और पवित्र धागे से पूरा किया जाता है। इन तेरह पगों को प्राप्त करके अपनी सामर्थ्य के अनुसार बारहवें दिन तेरह ब्राह्मणों को दान देना चाहिए। इस पदनाम से धर्मात्मा लोगों को अच्छी उन्नति मिलती है और यह पदनाम यम मार्ग पर गए लोगों को सुख प्रदान करता है।

87-93. वहां बहुत गर्मी होती है, जिससे मनुष्य जल जाता है, लेकिन छाता दान करने से सिर पर सुखद छाया मिलती है; और जूता देने वाले बड़े-बड़े कांटों से भरे रास्ते पर घोड़ों पर सवार होकर यमलोक को जाते हैं। हे पक्षी, वहां सर्दी, गर्मी और हवा की पीड़ा भयानक होती है, लेकिन वह वस्त्र दान के सहारे खुशी-खुशी अपने रास्ते पर चला जाता है। यम के दूत, जो अत्यंत उग्र, उग्र तथा भूरे-काले रंग के हैं, अंगूठी दान करने वाले व्यक्ति को रास्ते में परेशान नहीं करते हैं।

यह स्थान अत्यधिक गर्मी से घिरा हुआ, वायुहीन और पानी से रहित है; जब उसे प्यास लगती है तो वह पानी का पात्र दान कर देता है और पानी पी लेता है। जो मनुष्य मृतक के निमित्त तांबे का पात्र दान करता है, उसे निश्चित ही हजारों कूप दान का फल प्राप्त होता है। बौने को उचित स्थान और बर्तन देकर वह सड़क पर इत्मीनान से चलते हुए खुशी-खुशी अपना भोजन खाता है। है,

94-95. इस प्रकार सपिंड संस्कार के दिन यह दान विधिपूर्वक करके बहुत से ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए, चांडाल तथा अन्य बहिष्कृतों को भी भोजन कराना चाहिए। फिर सपिंड के बाद और वार्षिक अनुष्ठान से पहले हर महीने चावल के साथ एक जल पात्र दान करना चाहिए।

96. हे पक्षी! कर्मकाण्ड के अतिरिक्त मृतक के लिये जो कुछ किया गया है वह पुनः नहीं किया जा सकता; लेकिन मृतक के लिए यह दोबारा किया जा सकता है, जिससे उसे संतुष्टि मिलती है।

97-99. अब मैं तुम्हें चंद्र दिवस पर मरने के संबंध में मासिक, वार्षिक और पाक्षिक अनुष्ठान और नियम बताता हूं। यदि किसी की मृत्यु पूर्णिमा के दिन होती है तो उसका अंतिम संस्कार चौथे दिन किया जाता है। यदि किसी की मृत्यु चौथे दिन हो जाती है तो उसका अंतिम संस्कार नौवें दिन किया जाता है। यदि कोई नौवें दिन मरता है तो वह चौदहवें दिन मरता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को पाक्षिक श्राद्ध बीसवें दिन करना चाहिए।

100-105.. जब एक माह में दो संक्रान्ति हो तो माह दोगुना होने के कारण अनियमित माह में श्राद्ध नहीं किया जाता है। 1 जब एक महीने में दो दो महीने हों, तब दोनों पक्ष और उनके बीच के तीस दिन बराबर हों [दोनों करना चाहिए।] पहिले को दिन के पहिले भाग के लिये और दूसरे को आधे भाग के लिये ले। दूसरी छमाही। इस प्रकार बुद्धिमान लोग दो महीनों को अनियमित महीने मानते हैं। हे पक्षी! जब संक्रांति न हो तो सपिंड संस्कार करना चाहिए; इसी प्रकार मासिक और प्रथम वार्षिक श्राद्ध भी करना चाहिए।

यदि वर्ष के मध्य में एक अतिरिक्त महीना हो, तो तेरहवें महीने में दिवंगत के लिए वार्षिक श्राद्ध किया जाता है। यदि संक्रांति न हो तो चावल के गोले की आवश्यकता नहीं होती, यदि संक्रांति हो तो चावल के गोले उपयुक्त होते हैं। अत: वार्षिक श्राद्ध दोनों महीनों में करना चाहिए।

106. इस प्रकार प्रथम वर्ष के अंत में वार्षिक श्राद्ध करना चाहिए और उसमें द्विजों को भोजन कराना चाहिए।

107-110. एक वर्ष के बाद श्राद्ध में तीन पिंड अवश्य देने चाहिए। श्राद्ध केवल एक ही व्यक्ति का नहीं करना चाहिए, इससे पितरों का नाश होता है। पवित्र स्नान स्थान पर श्राद्ध, गया में श्राद्ध, गजचयम्, पितरों के लिए श्राद्ध - ये वर्ष के दौरान, ग्रहण के समय या युग के दिनों में नहीं किया जाना चाहिए।

हे पक्षियों के राजा! यदि कोई पुत्र गया में श्राद्ध करता है तो पितरों के सम्मान में एक वर्ष के बाद श्राद्ध करना चाहिए। गया में श्राद्ध करने से पितरों को भवसागर से मुक्ति मिलती है और भगवान विष्णु की कृपा से उन्हें परम आनंद की प्राप्ति होती है।

111-113. तुलसी के पौधे के साथ भगवान विष्णु के चरणों की पूजा करनी चाहिए और उनके चारों ओर चावल की गोलियां चढ़ानी चाहिए। जो मनुष्य गया के मस्तक पर शमी के पत्तों के बराबर चावल की एक गांठ चढ़ाता है, उसके सात कुलों और एक सौ एक पितरों का कल्याण होता है। जो व्यक्ति गया जाकर अपने परिवार को प्रसन्न करने और अपने पितरों को तृप्त करने के लिए श्राद्ध करता है, उसका जीवन सफल हो जाता है।

114-115. हे पक्षियों के राजा! पूर्वजों ने मनुपुत्र इक्ष्वाकु की उद्यान कला में पवित्र पुरुषों द्वारा गाए गए गीत को सुना है: - "क्या आपके कुल में कोई भी अच्छे मार्ग पर चलने वाला नहीं है, जो जाकर हमें चावल के गोले खिलाए।" भक्ति?"

116-119. हे तार्क्ष्य, जो पुत्र इस प्रकार परलोक के लिए अनुष्ठान करता है वह कौशिक पुत्र के समान सुखी और मुक्त हो जाता है। हे तार्क्ष्य, भारद्वाज के सात पुत्र कई जन्मों से गुजरने के बाद अपने पूर्वजों की कृपा से मुक्त हो गए, भले ही उन्होंने गाय की हत्या की थी। दशार्ण देश में सात शिकारी, कालिंजर पर्वत पर हिरण, शारद्वीप में चक्रवाक पक्षी और मानस झील में हंस, ये सभी कौरवों की

भूमि में वेदों के जानकार ब्राह्मण के रूप में पैदा हुए थे और वे सभी द्विज थे। पितरों की भक्ति से पुत्रों को मोक्ष प्राप्त हुआ।

120. अतः मनुष्य को अपने पितरों की पूजा करने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि पितरों की पूजा करने से वह न तो इस लोक में सुखी होता है और न ही परलोक में।

121. इस प्रकार मैंने आपको मृतक से संबंधित सभी अनुष्ठान बताए, जो पुत्र को पुण्य प्रदान करते हैं, उसकी इच्छाएं पूरी करते हैं और पितरों को मोक्ष प्रदान करते हैं।

122. जो व्यक्ति गरीब है परंतु भी इस कथा को सुनता है वह पापों से मुक्त हो जाता है और उसे दान का फल मिलता है।

123-126. मेरे द्वारा बताये अनुसार श्राद्ध कर्म करने वाले को क्या फल मिलता है, इसे सुनो तथा गरुड़ पुराण का श्रवण भी करो:--
पिता अच्छे पुत्र देता है, दादा गाय का धन देता है और परदादा धन देता है। परदादा खूब खाना खिलाते हैं. वे सभी श्राद्ध से संतुष्ट होकर और अपने पुत्र की इच्छा पूरी करके धर्म के मार्ग पर चलते हैं और न्याय के राजा के घर जाते हैं और वहां धर्म की सभा में बड़े सम्मान के साथ निवास करते हैं।

127. सूत जी बोले - मृत्यु के बाद आशीर्वाद का फल और भगवान विष्णु द्वारा बताई गई अपनी महिमा सुनकर गरुड़ खुशी में डूब गए।

# अध्याय XIV.

## न्यायराज नगर का वर्णन |

1-2. गरुड़ ने कहा: यमलोक की सीमा कितनी है? वह कैसा है? इसे किसने बनाया? बैठक कैसी है और निर्णय कौन करता है? धर्मी लोग धर्म के मार्ग से न्याय के भवन में जाते हैं; हे करुणा के भंडार, मुझे उन धर्मात्माओं और उनके मार्गों के बारे में बताओ।

3-5. भगवान ने कहा: हे तार्क्ष्य, सुनो, मैं तुम्हें न्याय की उस चमकती हुई नगरी के बारे में बताता हूं, जो नारद और अन्य लोगों के लिए भी सुलभ है, जहां कई पुण्य आत्माएं पहुंच सकती हैं। दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम के बीच विवस्वत के पुत्र का शहर है, जो पवित्र पुरुषों या राक्षसों द्वारा हीरे से बनाया गया, शानदार और अभेद्य है। इसे चार कोनों, चार द्वारों, ऊंची दीवारों से घिरा और एक हजार योजन लंबा बताया गया है।

6-9. उस नगर में चित्रगुप्त का अत्यंत सुंदर निवास स्थान है, जो पच्चीस योजन में फैला हुआ है, जो लोहे की चमकती दीवारों से घिरा हुआ है, दस योजन तक ऊँचा है, सैकड़ों रास्ते ध्वजों और पताकाओं से सुशोभित हैं, रथों से भरे हुए हैं, गीत से गूंज रहे हैं और संगीत, कुशल चित्रकारों द्वारा सजाया गया, दिव्य वास्तुकारों द्वारा बनाया गया, बगीचों और पार्कों से सजाया गया, और विभिन्न पक्षियों के गीतों से गूंजता हुआ; कण-कण में दिव्य कन्याएँ और गायिकाएँ निवास करती हैं।

10-15. उस सभा में अपने सबसे अद्भुत सिंहासन पर बैठकर चित्रगुप्त प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर अलग-अलग विचार करते हैं। वे अच्छे और बुरे कर्मों में अंतर करने में कभी गलती नहीं करते, या यह नहीं जानते कि कौन अच्छे या बुरे कर्म कर रहा है। चित्रगुप्त की अनुमति से वह उन सभी का अनुभव करता है। चित्रगुप्त के निवास के पूर्व दिशा में ज्वर का महान स्थान है।

दक्षिण में गठिया, त्वचा रोग और चेचक के क्षेत्र हैं। पश्चिम में मृत्यु, अजीर्ण और पित्त के भी स्थान हैं। उत्तर में तपेदिक और पीलिया है; सिरदर्द उत्तर-पश्चिम दिशा में होता है; दक्षिण-पूर्व में मूर्च्छा रहती है। दक्षिण-पश्चिम में पेचिश है; उत्तर-पश्चिम में सर्दी और गर्मी है - इन और अन्य बीमारियों से घिरी हुई।

16-23. चित्रगुप्त ने मनुष्य की अच्छाई और बुराई का वर्णन किया है। चित्रगुप्त के निवास से बीस योजन पहले नगर के मध्य में न्याय के राजा का अत्यंत भव्य महल है। वह रत्नों से चमकता है और बिजली, ज्वाला और सूर्य के समान सुंदर है। इसका विस्तार निश्चय ही दो सौ योजन है और ऊँचाई पचास योजन है।

यह हजारों खंभों पर टिका हुआ है, पन्ने से सजा हुआ है, सोने से सजाया गया है, और महलों और महलों से भरा हुआ है, गुंबद शरद ऋतु के आकाश की महिमा से मन को प्रसन्न करते हैं; सुंदर क्रिस्टल सीढ़ियाँ और हीरे से सजी दीवारें, और मोतियों की लड़ियों से सजी खिड़कियाँ, झंडों और पताकाओं से सजी हुई; घंटियों और ढोल की ध्वनि से समृद्ध; स्वर्ण झालरों से सुशोभित, अनेक आश्चर्यों से युक्त, सैकड़ों स्वर्ण द्वारों से युक्त, वृक्षों, पौधों और कांटे रहित लताओं से

सुशोभित। सदैव इन तथा अन्य अलंकारों से विभूषित - इसे विधाता ने अपनी योगशक्ति से रचा है।

24-28. वहाँ एक दिव्य मिलन स्थल है, हजारों योजन चौड़ा, सूर्य के समान उज्ज्वल, प्रकाश से भरपूर, हर तरह से संतुष्टिदायक; जहाँ न अधिक गर्मी हो और न अधिक सर्दी; मन को अत्यंत लुभाने वाली, न कोई दुःख है, न बुढ़ापा, न भूख-प्यास का कष्ट। वहाँ हर कोई सुखी है, चाहे मनुष्य हो या देवता; वहां का भोजन हर तरह से स्वादिष्ट, प्रचुर और आनंददायक है।

वहां का पानी, चाहे गर्म हो या ठंडा, मीठा होता है; वहां की ध्वनियां और अन्य चीजें सुखद हैं; और वृक्ष सदैव मनोवांछित फल देते हैं। हे तार्क्ष्य! वह सभा बंधनों से मुक्त है, सुंदर है, कामनाओं को पूर्ण करने वाली है और सृष्टि के रचयिता भगवान ने बहुत समय तक ध्यान करके इसकी रचना की है।

29-30. जो लोग कठोर तपस्या करते हैं, अच्छे व्रतों का पालन करते हैं, सत्य बोलते हैं, शांतिप्रिय, त्यागी और पुण्य कर्मों से परिपूर्ण और पवित्र हो जाते हैं, वे वहां जाते हैं। वहां सभी लोग दीप्तिमान शरीर वाले, चमकीले वस्त्रों से सुसज्जित तथा अपने पुण्य कर्मों से सुसज्जित होकर रहते हैं।

31-33. वहां न्याय के देवता विराजमान हैं, जो दस योजन चौड़े शुद्ध और अतुलनीय सिंहासन पर विराजमान हैं, सभी प्रकार के रत्नों से सुशोभित हैं, पुरुषों में सर्वश्रेष्ठ हैं, पुरुषों में सर्वश्रेष्ठ हैं, राजसी छत्र से सुशोभित हैं, कानों में कुंडल पहने हुए हैं, वे भव्य हैं, सुशोभित हैं एक बड़े मुकुट के साथ, सभी आभूषणों से सुसज्जित। नीले बादलों के समान शोभायमान देवियाँ हाथ में पंखा लिये हुए अपने केशों को पंखा झलती हुई बैठी हैं।

34 - 40. देव गायकों की भीड़ और देव-कन्याओं के असंख्य समूह उसे घेर लेते हैं और गीत, संगीत और नृत्य के साथ उसकी सेवा करते हैं। मृत्युदेव हाथ में पाश लेकर उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, कालदेव उनसे भी अधिक शक्तिशाली हैं, भाग्य विधाता चित्रगुप्त उनके चारों ओर खड़े हैं, वे उतने ही शक्तिशाली सेवकों से घिरे हुए हैं, जो भयानक पाश और दंड लेकर तैयार हैं उसके आदेशों का पालन करना. उत्सुक, अग्निश्वथ, पितर, सोमपा और उष्मपा, शक्तिशाली बर्हिषद, निराकार और निराकार, हे पक्षी, अर्यमा और अन्य, जनकगण और अन्य आकार वाले - ये सभी ऋषियों के साथ न्याय करने वाले राजा की प्रतीक्षा कर रहे हैं: अत्रि , वशिष्ठ, पुलह, दक्ष, क्रतुरथ, अंगिरस, जामदग्न्य और भृगु, पुलस्त्य, अगस्त्य, नारद, ये और कई अन्य ऋषि, सभा में ऐसे लोग थे जिन्हें गिनना असंभव था, न तो उनके नाम से और न ही उनके नाम से। कार्रवाई।

41 - 45. जो लोग धर्मग्रंथों की सटीक व्याख्या करते हैं वे परमप्रधान के आदेश से न्याय के राजा की सेवा करते हैं। 2 सूर्य वंश के राजा, चंद्र वंश के राजा, ये धर्म विशेषज्ञ दरबार में न्यायप्रिय राजा की सेवा करते थे। मनु, दिलीप, मांधाता, सगर, भगीरथ, अंबरीष, अनार्य, मुचकुंद, निमि और पृथु, ययाति, नहुष, पुरु; दुष्मंत, शिबि, नल, भरत, शांतनु, पांडु और सहस्रार्जुन - ये राजर्षि, धर्मनिष्ठ, प्रसिद्ध, वैदिक विद्वान अनेक अश्वमेघ यज्ञ करके धर्म सभा में रहते हैं। न्याय के राजा के दरबार में केवल धार्मिकता ही निवास करती है। इसमें कोई पक्षपात, असत्य और ईर्ष्या नहीं है।

46-47. न्याय के राजा के दरबार में केवल धर्म ही रहता है। वहां कोई पक्षपात नहीं, कोई झूठ नहीं, कोई ईर्ष्या नहीं.

इस सभा में उपस्थित सभी लोग शास्त्रों के ज्ञाता हैं, सभी धर्म में लीन हैं और वे उस सभा में निरंतर वैवस्वत की सेवा करते हैं। हे तार्क्ष्य! महामना न्यायराज की ऐसी ही एक बैठक है. दक्षिण मार्ग से जाने वाले पापी उसे नहीं देखते। न्यायराजा शहर तक पहुंचने के लिए चार रास्ते हैं। पापियों का मार्ग तुम्हें पहले ही बताया जा चुका है।

50. जो लोग पूर्व और अन्य तीन द्वारों से धर्म के घर में जाते हैं, वे पुण्यात्मा हैं। वे अपने पुण्य के कारण वहां जाते हैं। सुनिए उनके बारे में:--
51-55. पूर्व की ओर एक मार्ग है, जो सब प्रकार के सुखों से परिपूर्ण, पारिजात वृक्षों की छाया से आच्छादित, रत्नों से विभूषित, अनेक रथों से सुशोभित, हंसों से सुशोभित, वृक्षों और सुख के बगीचों से घिरा हुआ, अमृत से परिपूर्ण है। पसंद करना। उनके माध्यम से पवित्र ब्राह्मण ऋषि, शुद्ध राज ऋषि, देवी, गायक, जादूगर और महान नाग, देवताओं के उपासक, शिव के भक्त, गर्मियों में विश्राम गृह और सर्दियों में ईंधन प्रदान करते थे, तपस्वियों को आश्रय प्रदान करते थे। बरसात के मौसम में.

जो मानसिक रूप से व्यथित को सांत्वना देता है और निश्चित रूप से मानसिक रूप से व्यथित को आश्रय देता है, जो सत्य और धर्म में प्रसन्न होता है, क्रोध और लोभ से मुक्त होता है, पिता और माता का भक्त होता है, जो गुरु की सेवा का आनंद लेता है। जो लोग भूमि, घर और गाय का दान करते हैं, जो शिक्षा प्रदान करते हैं, आदि सभी उनके द्वारा ही जाते हैं।

जो लोग पुराण पढ़ते और सुनते हैं वे इस मार्ग के यात्री हैं, वे तथा अन्य लोग जो अच्छे कर्म करते हैं वे पूर्व द्वार से प्रवेश करते हैं। वे अच्छे कार्यों में कुशल और शुद्ध बुद्धि वाले होते हैं और धार्मिक सभाओं में भाग लेते हैं।

59-61. दूसरी सड़क, उत्तर की ओर, सैकड़ों बड़े रथों और पालकियों से भरी हुई है, और पीले चंदन से बनी है; यह हंसों और जलपक्षियों से भरा हुआ है, और ब्राह्मण बत्तखों से सुशोभित है, और इसमें अमृत से भरा एक सुंदर जलाशय है। वेदों के विद्वान, मेहमानों का स्वागत करने वाले, दुर्गा और भानु के उपासक और चंद्रमा के परिवर्तन के समय पवित्र जल में स्नान करने वाले लोग इस मार्ग को अपनाते हैं।

जो लोग धर्म की खोज में मर जाते हैं, जो लोग उपवास करते हुए मर जाते हैं, जो लोग बनारस में मर जाते हैं, जो लोग जानवरों की रक्षा करते हुए मर जाते हैं, जो लोग गलती से पवित्र जल में डूब जाते हैं; जो लोग ब्राह्मणों के लिए, गुरु की सेवा में, पवित्र जल में और पवित्र भूमि पर, प्रकाशकों की इच्छा से मरते हैं; जो लोग योग के अभ्यास में मर जाते हैं; जो लोग सदैव योग्य का आदर करते हैं और बड़े-बड़े दान देने में प्रसन्न होते हैं, वे उत्तरी द्वार से प्रवेश करके आराधनालय में पहुँचते हैं।

65-73. पश्चिम की ओर मुख वाला तीसरा मार्ग रत्नजड़ित इमारतों से सुशोभित है और अमृत से भरे तालाबों, ऐरावत वंश के उन्मत्त हाथियों और उच्चैःश्रवा के घोड़ों से सुशोभित है। इस मार्ग से वही व्यक्ति लाभान्वित होता है जो स्वाभिमानी हो, श्रेष्ठ शास्त्रों का मनन करने वाला हो, भगवान विष्णु का परम भक्त हो, गायत्री मंत्र का जप करने वाला हो, दूसरों की हानि, दूसरों के धन और आलोचना से दूर रहने वाला तथा अपने धर्म के प्रति समर्पित हो। पत्नी। के प्रति वफादार है. सज्जन, गृहस्थ. अग्नि जलाने वाले, वेदों का जाप करने वाले, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने वाले, वनवासी, तपस्वी...

श्रीचरणों के भक्त, त्यागी, सोने, पत्थर और मिट्टी को समान दृष्टि से देखने वाले, ज्ञान और वैराग्य को प्राप्त करने वाले, सभी प्राणियों को। जो लोग दूसरों के कल्याण की कामना करते हैं, शिव और विष्णु के व्रतों का पालन करते हैं, ब्रह्मा का अनुष्ठान करते हैं, तीन गुना ऋण से मुक्त होते हैं, हमेशा पंच यज्ञों का आनंद लेते हैं, अपने पूर्वजों के लिए श्राद्ध करते हैं, उचित समय पर संध्या करते हैं। जो लोग बुरे लोगों की संगति से दूर रहकर अच्छे लोगों की संगति में लीन रहते हैं, वे अनेक देवी-देवताओं के साथ उत्तम रथों पर सवार होते हैं। अमृत पीने के बाद वे धर्म सभा में जाते हैं और पश्चिमी द्वार से प्रवेश करके धर्म सभा में जाते हैं।

74-76. उसे आता देखकर यमराज उठकर आगे बढ़े और बार-बार उसका स्वागत किया। फिर वह अपनी चार भुजाओं, शंख, चक्र, गदा और तलवार को धारण करके, पुण्य कर्मों का आनंद लेने वालों के साथ मैत्रीपूर्ण ढंग से बोलता और व्यवहार करता है। वे उसे सिंहासन देते हैं और उसकी पूजा करते हैं; उनके पैर धोएं और फिर चंदन आदि से उनका सम्मान करें।

77-81. "हे इकट्ठे हुए लोगों! उस बुद्धिमान व्यक्ति को आदरपूर्वक नमस्कार करो। वह मेरे राज्य से प्रस्थान करेगा और ब्रह्मलोक जाएगा। हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ! आप जो नरक के कष्टों से बच गए हैं! आपने अपने गुणों से देवत्व अर्थात सुख प्राप्त कर लिया है। जिससे सुधार होता है मनुष्य की स्थिति उस व्यक्ति से अधिक मूर्ख कौन है जिसे प्राप्त करना कठिन है, जो कभी अपनी बुद्धि का उपयोग नहीं करता है?

जो इस अनित्य शरीर में, नाशवान धन आदि के बीच सनातन धर्म का संचय करता है, वही बुद्धिमान है। “इसलिए आपको धर्म संचय करने का प्रयास करना चाहिए। तुम्हें उस पवित्र स्थान पर जाना चाहिए जो समस्त सुखों से परिपूर्ण है।”
82-85. न्याय के वचन सुनकर, उन्हें और सभा को प्रणाम करके, अमर लोगों द्वारा सम्मानित और ऋषियों के नेताओं द्वारा प्रशंसा की गई, असंख्य रथों के साथ सर्वोच्च पथ पर आगे बढ़ें; तब उस सभा में बैठे लोग बड़े आदर के साथ उठते हैं, कुछ समय वहां बिताते हैं और अलौकिक सुख भोगते हैं, अपने पुण्यों के फलस्वरूप वे सदाचारी मनुष्य के रूप में जन्म लेते हैं, धनवान, बुद्धिमान और सभी शास्त्रों के ज्ञाता बनते हैं।

फिर वे अपने अच्छे आचरण से ही सर्वोच्च पद प्राप्त करते हैं। 86. यह सब यम के निवास के संबंध में आपके प्रश्न के संबंध में कहा गया है। जो व्यक्ति इसे श्रद्धापूर्वक सुनता है वह न्यायाधीश के दरबार में जाता है।

## <u>अध्याय **XV.**</u>

## अच्छे कार्य करने वाले व्यक्तियों का जन्म विवरण

1-2. गरुड़ ने कहा: एक पुण्यात्मा व्यक्ति स्वर्ग का आनंद लेने के बाद निष्कलंक परिवार में जन्म लेता है। अब बताओ यह माँ के गर्भ से कैसे पैदा होता है? मैं यह सुनना चाहता हूं कि पुण्यात्मा पुरुष इस शरीर में क्या सोचता है। हे दया के भण्डार, बताओ!

3-4. भगवान ने कहा: हे ताक्ष्र्य, तुमने ठीक ही पूछा है। मैं तुम्हें वह परम रहस्य बताऊंगा, जिसे जानकर मनुष्य सर्वज्ञ हो जाता है। मैं तुम्हें शरीर का वास्तविक स्वरूप बताता हूं जिसमें योगियों के ध्यान की वस्तु, सार्वभौमिक अंडे के गुण शामिल हैं।

5-6. सुनो कि कैसे योगी इसके भीतर छह चक्रों का ध्यान करता है, और ब्रह्मरंध्र में स्थित मन और आनंद का ध्यान करता है, और कैसे पुण्य आत्मा का जन्म पवित्र और समृद्ध पुरुषों के घर में होता है। मैं आपको माता-पिता के मूल्यों और रीति-रिवाजों के बारे में भी बताऊंगा।

7-10. मासिक धर्म के बाद चार दिनों तक स्त्रियों से दूर रहना चाहिए। उस दौरान उनका मुख नहीं देखना चाहिए, अन्यथा शरीर में पाप उत्पन्न होते हैं। चौथे दिन स्त्री स्नान करके तथा कपड़े धोकर पवित्र हो जाती है। सातवें दिन से वह पितरों और देवताओं की पूजा करने की पात्र हो जाती है। गर्भस्थ शिशु सात दिनों तक अशुद्ध रहता है। यहां आठवें दिन धीरे-धीरे पुत्र प्रवेश करते हैं। सम रात्रियों में पुत्र तथा विषम रात्रियों में पुत्रियाँ जन्म लेती हैं। पहले सात दिनों तक उससे दूर रहने के बाद वह शाम को प्रवेश करता है।

11-12. महिलाओं के लिए सोलह रातें सामान्य मानी जाती हैं। 1 चौदहवीं रात्रि को बीज अवश्य रहता है।
तब एक गुणवान पुत्र का जन्म होता है, जो शुभ गुणों से परिपूर्ण होता है। दुष्टों को वह रात कभी नहीं मिलती।

13. पांचवें दिन महिलाओं को मीठा भोजन करना चाहिए। मसालेदार, खट्टे, कसैले और गर्म भोजन से पूरी तरह परहेज करना चाहिए।

14-18. पति, एक किसान की तरह, अनाज पैदा करने वाले खेत में बड़ी क्षमता वाले बीज बोता है और अच्छी फसल काटता है। पुरुष को पान, फूल, चंदन चबाकर, स्वच्छ वस्त्र पहनकर तथा मन में अच्छे विचार रखकर अपनी आदर्श

स्त्री से मिलना चाहिए। गर्भ में प्रवेश करने वाले व्यक्ति का स्वभाव मिलन के समय उसके मन में आए विचारों के अनुरूप होगा।

बीज में निहित बुद्धि सदैव वीर्य में ही रहती है। जब इच्छा, विचार और वीर्य एक हो जाते हैं तो पुरुष को वीर्य प्राप्त होता है और गर्भाशय में शुक्राणु और प्रजनन कोशिकाओं के मिलन से अंडे का निर्माण होता है।

19. गर्भ में उत्तम पुत्र परम सुख देता है। उसके लिए पुंसवन आदि अनेक अनुष्ठान हैं।2

20-23 पुण्यात्मा का जन्म उच्च कुल में होता है। जन्म के समय ही ब्राह्मणों को बहुत धन मिलता है। वह अपने माता-पिता के घर में बड़ा होता है, विद्या और नम्रता से संपन्न होता है और बुद्धिमानों की संगति से सभी विद्याओं में निपुण हो जाता है। अपनी युवावस्था में वह दिव्य रूप से सुंदर, धनवान और परोपकारी है, जो उसके अतीत में किए गए महान पुण्य, तपस्या और तीर्थयात्राओं का परिणाम है। फिर वह लगातार आत्मा और गैर-आत्मा के बीच अंतर करने की कोशिश करता है। अनुमान 1 और अपवाद 2 के माध्यम से वह ब्रह्म का ध्यान करता है।

24. जिस ब्रह्म से वह संबंधित है, उसके पृथक्करण को समझने के लिए, मैं तुम्हें पृथ्वी आदि के गुण बताऊंगा, जो "गैर-आत्मा" प्रजाति के हैं।

25-30. पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश- ये स्थिर तत्व कहलाते हैं। यह शरीर पांच तत्वों से बना है। त्वचा, हड्डियाँ, नाड़ियाँ, बाल और मांस - ये पृथ्वी के पाँच गुण हैं, जिनके बारे में मैंने आपको बताया है। लार, मूत्र, वीर्य, मज्जा और रक्त- ये जल के पांचवें गुण कहे गये हैं। अब अग्नि के गुणों को सुनो: भूख, प्यास, आलस्य, नींद और वासना - ये वही हैं जिन्हें योगी हर जगह अग्नि के पांच गुण कहते हैं। झुकना, दौड़ना, कूदना, तानना और चलना- वायु के ये पाँच गुण बताये गये हैं। वाणी, विचार, शून्यता, मोह और मानसिक अस्थिरता - ये आकाश के पांच गुण हैं, जिन्हें आप प्रयास से समझ सकते हैं।

31. मन, बुद्धि, व्यक्तित्व, विश्लेषण - ये चार आंतरिक संसाधन कहलाते हैं और इनमें पिछले कर्मों का सार होता है।

32. कान, त्वचा, आँख, जीभ और नाक ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। वाणी, हाथ, पैर, प्रजनन और उत्सर्जन कर्मेन्द्रियाँ हैं।

33. दिक, वात, अर्क, प्रचेतस, दोनों अश्विन, वह्नि, इंद्र, उपेद्र, मित्र, ये धारणा इंद्रियों और कर्म इंद्रियों के कर्तव्य कहे गए हैं। इड़ा, 1 पिंगला, 2 सुषुम्ना, 3 तीसरी और गांधारी, 4 गजजीव, 5 पूषा, 6 यशस्विनी, 7 अलम्बुषा, 8 और कुहू, 9 और शंखिनी, 10 दसवीं भी - शरीर के भीतरी भाग में स्थित हैं, और हैं दस प्रमुख तंत्रिकाएँ. . 34-3 इड़ा, 1 पिंगला, 2 सुषुम्ना, 3 तृतीया और गांधारी, 4 गजजीव, 5 पूषा, 6 यशस्विनी, अलम्बुषा, 8, कुहू, 9 और शंखिनी, 10 जो दसवीं है - के आंतरिक भाग में स्थित हैं। शरीर। शरीर में दस प्रमुख नसें होती हैं। 11

36-39 प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान भी - नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनंजय 12:- हृदय में प्राण, गुदा में अपान; नाभि में समान, गले में उदान और शरीर में फैला हुआ व्यान, उल्टी के लिए नागा, आंखें खोलने और बंद करने के लिए कूर्म, भूख के लिए कृकल, जम्हाई लेने के लिए देवदत्त, सर्वव्यापी धनंजय, जो शव को भी नहीं छोड़ते, और यह कौर से प्राप्त होता है। शरीर को पोषण प्रदान करता है। व्यान नामक वायु सभी तंत्रिकाओं के आवश्यक भागों को वहन करती है। भोजन ग्रहण करते ही वह वायु उसे दो भागों में विभाजित कर देती है।

यह गुदा के पास प्रवेश करके ठोस और तरल भाग को अलग कर देता है, पानी को अग्नि पर और ठोस को पानी पर रख देता है, अग्नि के नीचे खड़ा प्राण धीरे-धीरे उसे प्रज्वलित कर देता है। हवा से चलने वाली आग सामग्री को कचरे से अलग करती है। व्यान वायु हर जगह सार का परिवहन करती है, और बारह द्वारों के माध्यम से शरीर से अपशिष्ट को बलपूर्वक बाहर निकालती है।

40-43. व्यान नामक वायु सभी नाड़ियों का अनिवार्य अंग है। वह वायु भोजन को खाते ही दो भागों में विभाजित कर देती है। यह गुदा के पास प्रवेश करके ठोस और तरल भाग को अलग कर देता है, पानी को अग्नि पर और ठोस को पानी पर रख देता है, अग्नि के नीचे खड़ा प्राण धीरे-धीरे उसे प्रज्वलित कर देता है। वायु द्वारा प्रज्वलित अग्नि पदार्थ को मल से अलग कर देती है। व्यान वायु सार को सर्वत्र ले जाती है और अपशिष्ट को बारह द्वारों से धकेल कर शरीर से बाहर निकाल देती है।

44. कान, आंख, नासिका, जीभ, दांत, नाभि, नाखून, गुदा, गुप्तांग, सिर, धड़, बाल - ये अशुद्ध स्थान कहलाते हैं।

45. इस प्रकार वायु आत्मा से शक्ति प्राप्त कर अपना कार्य करती है और सूर्य के उदय होने के समान लोगों को प्रभावित करती है।

46. हे पक्षी! अब सुनो, मानव शरीर की दो प्रकृतियाँ हैं। एक व्यावहारिक और दूसरा आध्यात्मिक।

47-52. व्यवहार में शरीर पर पैंतीस करोड़ बाल, सिर पर सात लाख बाल और बीस नाखून होते हैं। हे विनता के पुत्र! आमतौर पर दांत बत्तीस बताए जाते हैं। मांस का मूल्य एक हजार पल और रक्त का मूल्य सौ पल बताया गया है। चर्बी दस पाउंड है. त्वचा सात सेकंड तक और मज्जा बारह सेकंड तक जीवित रहती है। "नोबल ब्लड" में तीन बीट्स हैं। बीज दो कुदव, अंडा एक कुदव और शरीर में हड्डियाँ तीन सौ साठ कही गयी हैं।

नाड़ियाँ, जो घनी और सूक्ष्म दोनों हैं, लाखों की संख्या में हैं; पित्त पचास क्षण है; कफ उसका आधा है; अपशिष्टों को मापा नहीं जा सकता क्योंकि वे लगातार बदल रहे हैं। जिस शरीर में ये गुण होते हैं वह शरीर व्यावहारिक होता है।

53. सभी संसार, पर्वत, महाद्वीप, महासागर, सूर्य और ग्रह दिव्य शरीर में हैं।

54. पारलौकिक शरीर में छह चक्र होते हैं, जिनमें ब्रह्मा के अंड के गुण स्थित बताये गये हैं।

55. मैं आपको इनके बारे में बताता हूं, जो योगियों के ध्यान के विषय हैं। इनका चिन्तन करने से मनुष्य प्रकृति का भोक्ता बन जाता है। 4

56-59. पैरों के नीचे अतल, पैरों के ऊपर विट्ठल, घुटनों के पास सुतल, जांघों के पास महातल, कूल्हों के पास तलातल, गुप्तांगों के पास रसातल, कमर के पास पाताल, ये सात लोक कहे गए हैं: बीच में भूलोक। नाभि. उसके ऊपर भुवर्लोक, हृदय में स्वर्लोक, कण्ठ के पास महर्लोक, मुख के पास जनलोक, माथे में तपोलक, ब्रह्मरंध्र में सत्यलोक - ये चौदह लोक हैं। मेरु त्रिभुज 1 में स्थित है; मंदार उल्टे त्रिकोण में है; कैलाश समकोण त्रिभुज में है; बाएं त्रिकोण में हिमाचल है। शीर्ष पंक्तियों में निषाद हैं, दाहिनी ओर की पंक्तियों में गंधमादन हैं; रमन बायीं पंक्ति में है; - सात महान पर्वत.

62-65. हड्डियों के स्थान पर जम्बू, मज्जा में शक, मांस में कुश, नाड़ियों में क्रौंच, त्वचा में शाल्मलि, बालों में गोमेद, नाखूनों के स्थान पर पुष्कर और फिर सागर है: क्षर ही मूत्र में स्थित समुद्र है। . दूध में दूध का सागर है, कफ में ध्वनि

का सागर है, मज्जा में घी का सागर है, रस में रस का सागर है, अंडे में दही का सागर है। कोमल तालु में स्वाद का सागर है, तुम विनता के पुत्र को जानते हो। .

66-68. ज्ञात हो कि नाद चक्र में सूर्य, बिन्दु चक्र में चन्द्रमा और नेत्रों में मंगल ग्रह स्थित है; यह जानना चाहिए कि बुध ग्रह हृदय में है; यह जानना चाहिए कि बृहस्पति विष्णुस्थान में है; शुक्र बीज में है; शनि नाभि में है; यह जानना चाहिए कि मुख में राहु ग्रह है; केतु ग्रह फेफड़ों में है; शरीर में ग्रहों का एक चक्र चलता है। इन सभी रूपों में अपने शरीर का ध्यान करना चाहिए।

69-71. सुबह के समय हमेशा पालथी मारकर बैठना चाहिए और छह चक्रों पर अजपा क्रम से ध्यान करना चाहिए। 1. अजपा नामक गायत्री ऋषियों को मोक्ष प्रदान करने वाली है; इसका ध्यान करने मात्र से मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो जाता है। हे ताक्ष्र्य, सुनो, मैं तुम्हें अजपा की सर्वोत्तम विधि बताता हूं, जिसे करने से जीव सदैव के लिए अपना पृथकता त्याग देता है।

72-73. मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्धि और अजना - ये छह चक्र कहलाते हैं। मनुष्य को जननेन्द्रिय के मूल में, श्रोणि क्षेत्र में स्थित चक्रों पर क्रमानुसार ध्यान करना चाहिए; नाभि में; दिल में; गले में; भौंहों के बीच; सिर के ऊपर।

74-75. आधार चार पंखुड़ियों वाला और देदीप्यमान है, जिसमें V से S अक्षर हैं; स्वाधिष्ठान सूर्य के समान है, इसकी छह पंखुड़ियाँ हैं, और इसमें B से लेकर अक्षर शामिल हैं; मणिपूरक का रंग लाल है और इसमें D से F तक दस पंखुड़ियाँ हैं; अनाहत में का से ता तक की बारह पंखुड़ियाँ हैं, और इसका रंग सुनहरा है; विशुद्धि कमल में सोलह पंखुड़ियाँ, स्वर और चंद्रमा की रोशनी होती है; खंड 1 कमल की दो पंखुड़ियाँ हैं, जिनमें ह और क्ष अक्षर हैं, और यह लाल रंग का है; सिर के ऊपर का कमल सबसे चमकीला है, इस कमल में हजारों पंखुड़ियाँ हैं, और यह सत्य और आनंद का स्थान है, हमेशा शुभ, प्रकाशमान और शाश्वत है।

76. चक्रों में क्रमशः गणेश, विधि, विष्णु, शिव, जीव, गुरु और सर्वव्यापी परम ब्रह्म का ध्यान करना चाहिए।

77-80. बुद्धिमान लोग कहते हैं कि एक दिन और रात में श्वास की इक्कीस हजार छह सौ सूक्ष्म गतिविधियाँ होती हैं। यह "हं" की ध्वनि के साथ बाहर जाता है और "सा" की ध्वनि के साथ पुनः प्रवेश करता है। दरअसल व्यक्ति हमेशा मंत्र का जाप करता रहता है। "हंस, हंस" - गणेश के लिए छह सौ; वेदों के लिए छह हजार; हरि के लिए छह हजार; प्रत्येक के लिए छह हजार। आत्मा के लिए एक

हजार; गुरु के लिए एक हजार; एक हजार या चिदात्मन्;--इस प्रकार पुनरावृत्ति की तदनुरूप संख्या समझनी चाहिए।

81-82. अरुण और अन्य ऋषि, जो गुरुओं की आज्ञा को जानते हैं, चक्रों के अधिष्ठाता देवताओं, जो ब्रह्मा की किरणें हैं, का ध्यान करते हैं। शुक और आकाश ऋषि अपने शिष्यों को यह शिक्षा देते हैं; इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति को सदैव इसी प्रकार महात्माओं के मार्ग का ध्यान करते हुए ध्यान करना चाहिए।

83. सभी चक्रों की मानसिक पूजा करने के बाद गुरु के आदेशानुसार अशान्त मन से अजपा गायत्री का जप करें।

84-88. रणध्र में हजार पंखुड़ियों वाले कमल को उल्टा रखें और हंस के भीतर धन्य गुरु का ध्यान करें, जिनका कमल भय से मुक्ति दिलाता है। उनके चरणों से निकलने वाले अमृत के प्रवाह में अपने शरीर को धुला हुआ समझें। पंचोपचार पूजा करें और उनकी स्तुति गाते हुए उनके सामने साष्टांग प्रणाम करें। फिर ऊपर-नीचे घूमकर साढ़े तीन कुंडलियों में स्थित छह चक्रों पर जाकर कुंडलिनी का ध्यान करें। फिर रणध्र से निकलने वाली सुषुम्ना नामक जगह पर ध्यान करें। इस प्रकार उसे भगवान विष्णु का सर्वोच्च पद प्राप्त होता है। फिर उसे प्रातः चार बजे से लेकर सूर्योदय तक मेरे स्वयं प्रकाशित, शाश्वत और आनंदमय स्वरूप का ध्यान करना चाहिए।

89. उसे अपने मन को स्थिर स्थिति में लाना चाहिए, केवल प्रयास से नहीं, बल्कि गुरु के निर्देश से, जिसके बिना वह गिर जाता है।

90. आंतरिक यज्ञ करने के बाद बाह्य यज्ञ करना चाहिए। शुद्धि स्नान और संध्या करने के बाद उसे हरि और हर की पूजा करनी चाहिए।

91-94. उन लोगों के लिए जो शरीर से जुड़े हुए हैं, मैं अंतर्मुखी पैदा नहीं हुआ था। क्योंकि तब भक्ति आसान हो जाती है और उससे मुक्ति मिल जाती है।

तपस्या, योग आदि भी मोक्ष के मार्ग हैं, लेकिन जो संसार से आसक्त हैं उनके लिए मेरी भक्ति का मार्ग सर्वोत्तम है। वेदों और शास्त्रों का तीन काल तक अध्ययन करने के बाद सर्वज्ञ ब्रह्मा आदि इसी निष्कर्ष पर पहुंचे हैं।

यज्ञ और अन्य धार्मिक क्रियाकलापों से मन शुद्ध होता है। मेरी भक्ति का फल ऐसा है कि इसे पाने वाले का कभी पतन नहीं होता। 95. हे तार्क्ष्य! जो श्रेष्ठ पुरुष इस प्रकार आचरण करता है, वह मुझमें भक्ति करके मोक्ष प्राप्त करता है।

# अध्याय XVI.

## मोक्ष प्राप्ति के उपाय का वर्णन |

1-4. गरुड़ ने कहा: हे करुणा के सागर, मैंने आपसे अज्ञानता के कारण बदलती दुनियाओं में आत्मा के स्थानांतरण के बारे में सुना है। अब मैं शाश्वत मोक्ष के साधन के विषय में सुनना चाहता हूं। हे भगवान, हे यशस्वी शासक, शरण लेने वालों पर दया करने वाले, इस भयानक परिवर्तनशील संसार में, असार में, सभी गहन दुखों में, कई प्रकार के शरीरों में स्थित असंख्य व्यक्ति जन्म लेते हैं और मर जाते हैं - इसका कोई अंत नहीं है। .

इस संसार में जो भी व्यक्ति सदैव दुखी रहता है वह कभी भी सुखी नहीं माना जाता है। हे मुक्ति के देवता, मुझे बताएं कि वे किस माध्यम से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं, हे भगवान।

5-7. भगवान ने कहा: हे ताक्ष्र्य, सुनो और मैं तुम्हें वह बताऊंगा जो तुमने पूछा है, जिसके श्रवण मात्र से मनुष्य परिवर्तन की दुनिया से मुक्त हो जाता है। सर्वोच्च ब्रह्म के रूप में एक देदीप्यमान भगवान शिव हैं, जो अविभाज्य, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सभी के स्वामी, बेदाग और अद्वितीय, स्वयं-प्रकाशित, अनादि और अनंत, परे, निर्गुण, अस्तित्व, ज्ञान और आनंद हैं। , जिसे व्यक्ति माना जाता है वह उसका एक हिस्सा है।

8-10 ये अग्नि की चिंगारी के समान, शाश्वत अज्ञान से युक्त, दैनिक कार्यों से अलग और शरीर से बंधे हुए, शुभ और अशुभ रूपों से बंधे हुए, सुख और दुख देने वाले, कर्म के कारण शरीर की जाति, आयु और भाग्य से युक्त हैं। . हैं। हैं। हे

पक्षी! उनके पास एक उच्च और अधिक सूक्ष्म शरीर भी होता है, जो मोक्ष तक रहता है।

11-13. स्थावर वस्तुएँ, कीड़े-मकौड़े, बकरी-पक्षी, पशु-पक्षी, मनुष्य, पुण्यात्मा, तैंतीस देवता तथा मुक्त मनुष्य भी चार प्रकार के शरीरों को अपने-अपने क्रम के अनुसार सहस्रों बार ग्रहण एवं त्याग कर तथा सत्कर्मों द्वारा मनुष्य बनते हैं। . , और यदि वे ज्ञानी हो जाएं तो हमें मोक्ष की प्राप्ति होती है। मनुष्य के रूप में जन्म लेने से पहले चौरासी लाख योनियों में जन्म लेने वाला मनुष्य सत्य का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता।

14-16. कभी-कभी लाखों जन्मों के बाद पुण्य संचय के परिणामस्वरूप कोई प्राणी मनुष्य के रूप में जन्म लेता है। इस संसार में उनसे महान कोई मनुष्य नहीं है जो अपने शरीर के लिए मोक्ष का दुर्लभ एवं प्राप्य मार्ग प्राप्त करने के बाद भी स्वयं को मुक्त नहीं कर पाता है। पापी कौन है? जो व्यक्ति इस श्रेष्ठ जीवन और श्रेष्ठ इन्द्रियों को प्राप्त करके भी यह नहीं समझ पाता कि इससे आत्मा को क्या लाभ होता है, वह ब्रह्म-हत्यारा है।

17-19. शरीर के बिना कोई भी मनुष्य जीवन के उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सकता, इसलिए उसे अपने शरीर को धन मानकर उसकी रक्षा करनी चाहिए और पुण्य कर्म करने चाहिए। उसे सदैव अपने शरीर की रक्षा करनी चाहिए, क्योंकि यही सभी का साधन है। जीवित रहते हुए उसे कल्याण की दृष्टि से इसकी रक्षा का हर संभव प्रयास करना चाहिए। फिर गाँव, फिर खेत, फिर पैसा, फिर मकान, फिर अच्छे और बुरे कर्म - फिर कभी शरीर नहीं। 1

20-21. बुद्धिमान पुरुष सदैव शरीर की रक्षा के लिये उपाय करते हैं; यहां तक कि कुष्ठ रोग जैसी बीमारियों से पीड़ित लोग भी इसे छोड़ना नहीं चाहते। कर्तव्य के लिये इसकी रक्षा करनी चाहिये, ज्ञान के लिये कर्तव्य की रक्षा करनी चाहिये, योगाभ्यास के लिये ज्ञान की रक्षा करनी चाहिये - तब वह शीघ्र ही मुक्त हो जाता है।

22-23. यदि वह खुद को नुकसान से नहीं बचाएगा, तो दूसरों की रक्षा कौन करेगा? इसलिए उसे अपने लाभ का ध्यान रखना चाहिए. यहाँ रहते हुए नरक के रोगों से कौन सावधान नहीं रहता; अगर वह बीमारी से पीड़ित है और ऐसे देश में जाएगा जहां दवा नहीं है तो वह क्या करेगा?

24-25. बुढ़ापा शेरनी की तरह आता है, जीवन टूटे हुए बर्तन से पानी की तरह बहता है, बीमारियाँ दुश्मनों की तरह हमला करती हैं। इसलिए उसे सर्वोत्तम के

लिए प्रयास करना चाहिए। जब तक दुख नहीं आता, जब तक प्रतिकूलता नहीं आती, जब तक इंद्रियां क्षीण नहीं होतीं, तब तक सर्वोत्तम के लिए प्रयास करना चाहिए।

26-32. जब तक शरीर है तब तक सत्य का पालन करना चाहिए - मूर्ख मनुष्य कुआँ खोदता है भले ही उसके घर के कोने में आग लगी हो। परिवर्तन की दुनिया में जिनके अलग-अलग अवतार हैं उन्हें मृत्यु का समय नहीं पता है। खेद! सुख-दुख के बीच मनुष्य अपने हित का ध्यान नहीं रखता।

मोह की मदिरा पीने के बाद भी लोग जन्म लेने वाले, दुखी, मृत, विपत्तियों से पीड़ित और दुखी लोगों को देखकर कभी नहीं डरते। पैसा एक सपने की तरह है; यौवन फूल के समान है, जीवन बिजली के समान चंचल है, फिर प्रसन्न रहने वाला तर्कसंगत मनुष्य कहाँ है? जीवन के सौ वर्ष भी बहुत छोटे होते हैं, उसका आधा भाग निद्रा और आलस्य में व्यतीत होता है और वह भी बचपन, रोग और बुढ़ापे के दुःखों के कारण व्यर्थ हो जाता है। वह वह नहीं करता जो उसे करना चाहिए; जब उसे जागना चाहिए तब सोता है; वह वहीं छिप जाता है जहां उसे डरना चाहिए। नमस्ते! ऐसा कोई भी इंसान नहीं है जो डर से पीड़ित न हो। जिसका शरीर पानी के झाग के समान है और जो वस्तुओं में आसक्त है, वह भय से मुक्त कैसे हो सकता है?

33-35. जो यह नहीं जानता कि अपने लिए क्या हितकर है, वह जो अहितकर है उसे हितकारक समझता है, जो अनित्य है उसे स्थाई और जो बुरा है उसे अच्छा समझता है; देखकर भी लड़खड़ा जाता है; सुनकर भी समझ में नहीं आता; पढ़कर भी पता नहीं; दैवीय जादू से भ्रमित. यह संसार मृत्यु के अथाह सागर में डूबा हुआ है, यद्यपि यह मृत्यु, रोग और बुढ़ापे के मगरमच्छों से घिरा हुआ है, फिर भी इसे समझ नहीं आता।

36-38. समय प्रतिक्षण क्षय होते हुए भी अदृश्य रहता है, जैसे पानी में रखा हुआ कच्चा घड़ा अदृश्य हो जाता है। हवा को रोका जा सकता है, आकाश को विभाजित किया जा सकता है; लहरों को वश में किया जा सकता है, लेकिन जीवन को स्थायी नहीं बनाया जा सकता। समय के द्वारा पृथ्वी जल गई है; मज्जा भी चूर्ण हो जाती है; समुद्र का पानी सूख जाता है - शरीर के बारे में क्या कहा जा सकता है?

39-41. मौत का भेड़िया उस नश्वर मेमने को बलपूर्वक मार डालता है जो "मेरी संतान, मेरी पत्नी, मेरी संपत्ति, मेरे रिश्तेदारों" के बारे में बड़बड़ाता है। "यह हुआ है, यह होना है, यह और यह हुआ है या नहीं हुआ है।"

ऐसा बोलने वाले को मृत्यु जीत लेती है। "यह कल करना है, यह आज करना है, सुबह या दोपहर को" - मौत यह नहीं देखती कि यह किया गया या नहीं।

42. तू उस शत्रु की मृत्यु का सामना करेगा, जिसका आना युगों से ज्ञात है, जिसके पास भयानक रोगों की सेना है - क्या तू उद्धारकर्ता को नहीं देखेगा?

43-44. तृष्णा की सुईयों से पीड़ित, इंद्रिय विषयों के सर्प द्वारा डसा हुआ तथा इच्छा और द्वेष की आग में पके हुए मनुष्य को मृत्यु सताती है। मृत्यु बालक, युवा, वृद्ध, भ्रूण आदि को मार डालती है - ऐसा प्राणियों का संसार है।

45-48 यह जीव शरीर छोड़कर यमलोक चला जाता है। स्त्री, माता, पिता, पुत्र आदि की संगति से क्या लाभ? यह परिवर्तनशील संसार ही दुःख का मूल है। इसमें रहने वाला व्यक्ति दुखों से पीड़ित रहता है। जो इसका त्याग करता है वह सुखी है – अन्यथा कभी नहीं।

यह परिवर्तनशील संसार, जो सभी दुखों का मूल है, सभी आपदाओं का स्थान है और सभी पापों का आश्रय है, को तुरंत छोड़ देना चाहिए। लोहे या लकड़ी की जंजीरों में बंधा मनुष्य तो मुक्त हो सकता है, लेकिन अपने पुत्र और पत्नी के बंधनों से कभी मुक्त नहीं हो सकता।

49-51. जब तक प्राणी मोह को अपने मन में सुखदायक बनाएगा, तब तक दुःख की कटार उसके हृदय में चुभती रहेगी। पैसों के चक्कर में लोग आए दिन बर्बाद होते रहते हैं। नमस्ते! इन्द्रियों के भोजन को धिक्कार है, जो शरीर की इन्द्रियों को हर लेता है। जिस प्रकार मांस की लालची मछली को लोहे का काँटा दिखाई नहीं देता, उसी प्रकार सुखों का लालची व्यक्ति अपने शरीर में यम की यातनाएँ नहीं देख सकता।

52-55. हे पक्षी! जो लोग यह नहीं समझते कि उनके लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा, जो लगातार बुरे रास्ते पर चलते हैं और अपना पेट भरने के लिए चिंतित रहते हैं, वे नरक में जाते हैं। नींद, आनंद और भोजन सभी जीवित प्राणियों के लिए सामान्य हैं। जिसके पास ज्ञान है उसे मनुष्य कहते हैं, जिसके पास ज्ञान नहीं है उसे जानवर कहते हैं। मूर्ख मनुष्य दिन निकलते ही प्रकृति की पुकार का शिकार हो जाते हैं; सूर्य के मध्य में होने पर भूख-प्यास से, मैथुन से तथा रात्रि में निद्रा से।

वे सभी प्राणी जो अपने शरीर, धन, स्त्री और अन्य वस्तुओं से आसक्त हैं, अज्ञान से मोहित होकर जन्म लेते हैं और मर जाते हैं, शापित हैं!

56-57. इसलिए मोह को सदैव त्याग देना चाहिए, क्योंकि सब कुछ त्यागना संभव नहीं है। इसलिए मोह से छुटकारा पाने के लिए अच्छे लोगों से मित्रता करनी चाहिए। अच्छाई के प्रति आसक्ति, विवेक और आँखों की पवित्रता - जिसके पास ये नहीं वह अंधा है। वह गलत रास्ते पर कैसे नहीं जा सकता?

58. जो मोहग्रस्त मनुष्य अपने-अपने वर्ण और कुल के कर्तव्यों से विमुख हो जाते हैं और परम धर्म को नहीं समझते, वे सभी व्यर्थ ही नष्ट हो जाते हैं। कुछ लोग अनुष्ठानों में डूबे हैं, उपवास में डूबे हैं; वह लोग अज्ञान में घिरे फिरते रहते हैं।

59-60. जो लोग केवल कर्मकाण्ड में ही लीन रहते हैं, वे नाममात्र, मंत्रजाप, हवन आदि से ही संतुष्ट हो जाते हैं और विस्तृत कर्मकाण्डों में मोहित हो जाते हैं।

61-62. मूर्ख लोग मेरे जादू से मोहित होकर आहार, उपवास तथा अन्य संयमों के द्वारा तथा शरीर को क्षीण करके उसी समय अदृश्य को भी प्राप्त करना चाहते हैं। जिनके पास विवेक नहीं है उन्हें केवल शारीरिक यातना देने से क्या मुक्ति मिलेगी? कौन सा महान साँप केवल एंथिल को पीटकर मारा जा सकता है? 1

63. पाखंडी लोग बुद्धिमान होने का दिखावा करते हैं, बहुत सारे उलझे हुए बाल और हिरण की खाल पहनते हैं और बुद्धिमान लोगों की तरह घूमते हैं और लोगों को धोखा भी देते हैं।

64. जो मनुष्य 'मैं ब्रह्म का ज्ञाता हूं' कहकर परिवर्तनशील लोकों के सुखों में लिप्त रहता है और जो कर्म तथा ब्राह्मणत्व दोनों में हीन है, उसे नीच कुल की भाँति त्याग देना चाहिए।

65-69. गधे नंगे और बेशर्म होकर लोगों के बीच, जंगलों में और घरों में घूमते हैं। क्या वे मोह से मुक्त हैं? यदि मनुष्य कीचड़, राख और धूल से मुक्त हो जाता है, तो क्या कुत्ता, जो हमेशा कीचड़ और राख में रहता है, मुक्त हो जाता है? घास, पत्ते और पानी खाने वाले और सदा वन में रहने वाले सियार, चूहे, हिरण आदि क्या तपस्वी हैं?

क्या जन्म से मृत्यु तक गंगा जल में रहने वाले मगरमच्छ, मछली आदि योगी हो जाते हैं? कबूतर कभी-कभी पत्थर खाते हैं, और चातक पक्षी धरती का पानी नहीं पीते - क्या वे उपवास कर रहे हैं?

70. इसलिये हे पक्षियों के राजा! ये आचरण मनुष्य के लिए सुखदायी हैं - सत्य का प्रत्यक्ष ज्ञान ही मोक्ष का कारण है।

71-73. हे पक्षी! छः दर्शनों में से एक महान् कुएँ में गिरकर प्राणी मुख्य कल्याण को नहीं समझते; वे पशुता के जाल में फँसे रहते हैं। वे वेदों और शास्त्रों के भयानक सागर में इधर-उधर फेंक दिये जाते हैं; छः तरंगों में फँसे, झूठे रह गये।

जो नकलची वेदों, शास्त्रों और पुराणों को तो जानता है, परन्तु मुख्य कल्याण को नहीं जानता, उसके लिए यह सब कौए की आवाज के समान है।

74-76. “यह तो ज्ञात है; यह अवश्य जानना चाहिए” - इस प्रकार, चिंताओं से मोहित होकर, वे दिन-रात धर्मग्रंथ पढ़ते हैं और परम सत्य से दूर हो जाते हैं। वाणी के रूपों से बनी काव्य की मालाओं से विभूषित, मूर्ख चिंता से व्यथित और इंद्रियों से मोहित रहते हैं।

77-78. मनुष्य अनेक प्रकार से अपने आप को कष्ट देते हैं, परन्तु सर्वोच्च सत्य तो भिन्न ही है; वे इसकी अलग-अलग व्याख्या करते हैं, लेकिन धर्मग्रंथों का अंतिम अर्थ भिन्न-भिन्न होता है। वे सर्वोच्च अनुभवों के बारे में बात करते हैं, लेकिन उन्हें स्वयं अनुभव नहीं करते हैं। कुछ लोगों ने अहंकार के कारण उपदेश देना बंद कर दिया है।

78-82. वे वेदों और शास्त्रों का पाठ करते हैं और एक-दूसरे से बहस करते हैं, लेकिन वे सर्वोच्च सत्य को नहीं समझते हैं, जैसे चम्मच भोजन के स्वाद को पहचानता है। सिर पर फूल लगते हैं, नाक गंध पहचानती है। वे वेद-शास्त्र पढ़ते हैं, परन्तु सत्य को समझना उनके लिये असम्भव है। मूर्ख मनुष्य यह नहीं जानता कि सत्य उसके भीतर ही है, इसलिये वह शास्त्रों के चक्कर में पड़ जाता है; मूर्ख बकरी चराने वाला अपने बगल के कुएं में दबे हुए बच्चे को देखता है।

मौखिक ज्ञान बदलती दुनिया के भ्रम को नहीं मिटा सकता; दीपक की बात करने से अंधेरा कभी नहीं मिट सकता. मूर्ख व्यक्ति के लिए पढ़ना अंधे व्यक्ति के लिए दर्पण के समान है, इसलिए बुद्धिमान लोगों के लिए धर्मग्रन्थ सत्य के ज्ञान के पात्र मात्र हैं।

83-84. 'यह ज्ञात है, यह ज्ञात होना चाहिए' - वह सब कुछ सुनना चाहता है। भले ही कोई एक हजार दिव्य वर्षों तक जीवित रहे, फिर भी वह धर्मग्रंथों के अंत तक नहीं पहुंच सकता। धर्मग्रंथ बहुत हैं, जीवन छोटा है, बाधाएं लाखों हैं; इसलिए सार को समझना चाहिए - जैसे हंस पानी से दूध निकाल लेता है।

85-86. मृग वेदों और शास्त्रों का पालन करता है और बुद्धिमान मनुष्य को सत्य जानकर सभी शास्त्रों का त्याग कर देना चाहिए; जिस प्रकार धन से सम्पन्न व्यक्ति भूसी का त्याग कर देता है। जिस प्रकार अमृत से तृप्त व्यक्ति के लिए भोजन का कोई उपयोग नहीं रहता, उसी प्रकार हे तार्क्ष्य! सत्य को जानने वाले के लिए शास्त्र किसी काम के नहीं हैं।

87-88. वेद-शास्त्र पढ़ने से मुक्ति नहीं होती। हे विनता के पुत्र! ज्ञान से ही मुक्ति है, अन्यथा नहीं। जीवन की अवस्थाएँ, दर्शन, कर्म मोक्ष का कारण नहीं हैं, केवल ज्ञान ही मोक्ष का कारण है।

89-90. गुरु के वचन मोक्ष देते हैं, सब ज्ञान दिखावा है। हजारों वनों में से संजीवन 1 सर्वश्रेष्ठ है। अद्वैत, वास्तव में शुभ, कर्म प्रयासों से परे है, और लाखों ग्रंथों के अध्ययन से नहीं, बल्कि गुरु के वचन से प्राप्त होता है।

91. विद्या दो प्रकार की कही गयी है: अध्ययन और बुद्धि. अध्ययन शब्द ब्रह्म का है; ज्ञान से व्यक्ति परब्रह्म को प्राप्त करता है।

92. कुछ लोगों को अद्वैत 2 पसंद है; अन्य लोग द्वैत 3 को पसंद करते हैं, लेकिन वे द्वैत और अद्वैत से परे किसी भी सत्य को नहीं समझते हैं।

93-94. दो शब्द बंधन और मुक्ति के सूचक हैं: "मेरा" और "मेरा नहीं"। जो प्राणी "मेरा" कहता है वह बंध जाता है; जो कहता है "मेरा नहीं" वह स्वतंत्र है। कर्म जो बांधता नहीं, ज्ञान जो मुक्त करता है, वह दूसरा कर्म है, चिंता, दूसरा ज्ञान है उसे कुशलता से निखारना।

95-97. जब तक क्रियाएँ चलती रहेंगी; जब तक बदलती दुनिया के संस्कार रहेंगे, जब तक इन्द्रियाँ चंचल रहेंगी; तब तक सत्य का बोध कैसे हो सकता है? जब तक देह का अभिमान है; जब तक अपनेपन का एहसास है, जब तक ज़ोरदार प्रयास है; जब तक योजनाओं की कल्पना की जाती है; जब तक मन में स्थिरता न हो; जब तक शास्त्रों का मनन न हो, जब तक गुरु के प्रति प्रेम न हो; तब तक सत्य का बोध कैसे हो सकता है?

98-99. जब तक मनुष्य को सत्य की प्राप्ति न हो जाये तब तक उसे तप, व्रत, तीर्थ, पाठ, हवन, पूजा तथा वेदों का पाठ करना चाहिये। इसलिए, हे ताक्ष्र्य, यदि कोई मोक्ष चाहता है, तो उसे हर तरह से और हर स्थिति में सत्य की ओर झुकना होगा।

100. जो मनुष्य तीन दुखों और शेष दुखों से पीड़ित है, उसे मोक्ष के वृक्ष की छाया में शरण लेनी चाहिए, जिसके फूल धर्म और ज्ञान हैं, और जिसके फल स्वर्ग और मोक्ष हैं।

101. अतः आत्मा का सत्य परमात्मा के मुख से जानना चाहिये । ज्ञान से आत्मा परिवर्तनशील संसार के भयानक बंधन से सहज ही मुक्त हो जाती है।

102. सुनो! अब मैं तुम्हें सत्य के ज्ञाता के अंतिम कर्मों के बारे में बताऊंगा, जिन्हें करने से उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है, जिसे ब्राह्मण का निर्वाण कहा जाता है।

103-107. जैसे-जैसे अंत समय निकट आता है, व्यक्ति को भय से मुक्त हो जाना चाहिए और सांसारिक इच्छाओं को त्याग की तलवार से काट देना चाहिए। घर से साहसपूर्वक बाहर आकर, पवित्र स्नान-स्थानों के जल में स्नान करके, विधिपूर्वक तैयार किए गए शुद्ध आसन पर अकेले बैठकर, मानसिक रूप से ब्रह्म के सर्वोच्च त्रिगुण शुद्ध शब्द का अभ्यास करना चाहिए। श्वास पर नियंत्रण रखकर मन को नियंत्रित करना चाहिए और ब्रह्म बीज को नहीं भूलना चाहिए।

सारथी के रूप में मन को बुद्धि के द्वारा इंद्रियों को विषयों से हटा देना चाहिए और मन को कर्मों से हटाकर बुद्धि के द्वारा शुद्ध पदार्थों में लगाना चाहिए। “मैं ब्रह्मा हूं, मैं परमधाम हूं, मैं ब्रह्म हूं, मैं परम गंतव्य हूं” - ऐसा जानकर आत्मा को आत्मा में स्थापित करके ध्यान करना चाहिए।

108. जो मनुष्य शरीर त्यागते समय मेरा स्मरण करके एकाक्षर ब्राह्मण "ॐ" का उच्चारण करता है, उसे परम गति प्राप्त होती है।

109-110. ज्ञान और वैराग्य से रहित पाखंडी लोग वहां नहीं जाते। आइए मैं आपको उन बुद्धिमान लोगों के बारे में बताता हूं जो उस गति को प्राप्त करते हैं। अभिमान और आसक्ति से मुक्त होकर, आसक्ति के विकारों पर विजय प्राप्त करके, सदैव परमेश्वर में स्थित रहकर, इच्छाओं पर विजय प्राप्त करके, सुख

और दुख के बंधनों से मुक्त होकर, वे आसक्ति के बिना उस शाश्वत पथ पर चलते हैं।

111-114. जो मनुष्य मानसिक जल में, ज्ञान के सरोवर में, राग-द्वेष के दोषों को दूर करने वाले सत्य के जल में स्नान करता है, उसे निश्चित ही मोक्ष प्राप्त होता है। जो मनुष्य त्याग में दृढ़ मन से, दूसरों के बारे में न सोचकर, पूर्ण दृष्टि और शांत मन से मेरी पूजा करता है, उसे निश्चित रूप से मोक्ष प्राप्त होता है।

जो मनुष्य मरने की आशा लेकर घर छोड़कर पवित्र स्नान स्थान पर निवास करता है या मोक्ष स्थान पर मरता है, उसे निश्चित ही मोक्ष प्राप्त होता है। अयोध्या, 2 मथुरा, 3 गया, 4 काशी, 5 कांची, 6 अवंतिका, 7 द्वारावती, 8 - मोक्ष देने वाली इन सात नगरियों को जानना चाहिए।

115. हे ताक्ष्र्य! मोक्ष का यह शाश्वत मार्ग तुम्हें बताया गया है - इसे ज्ञान और वैराग्य के साथ सुनने से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

116. जो सत्य को जानते हैं उन्हें मोक्ष मिलता है, धर्मात्मा लोग स्वर्ग जाते हैं, पापी लोग पाताल लोक में जाते हैं, पक्षी आदि मर जाते हैं।

117. इस प्रकार सोलह अध्यायों में मैंने तुम्हें समस्त शास्त्रों का सार बता दिया है। अब आप और क्या सुनना चाहते हैं?

118-120. सूतजी बोले- हे राजन्! भगवान के मुख से ये वचन सुनकर गरुड़जी ने बार-बार हाथ जोड़कर प्रणाम किया और कहा- हे भगवन्! हे देवों के देव! इन अमृत वचनों को सुनकर मैं भवसागर से पार हो गया हूँ। हाय भगवान! हे रक्षक! अब मैं संशय से मुक्त हूं. मेरी मनोकामना पूरी हो गई।" इतना कहकर गरुड़ चुप हो गए और ध्यान में लीन हो गए।

121. जिनके स्मरण मात्र से पाप नष्ट हो जाते हैं, जो यज्ञ में सुख प्रदान करते हैं और जिनकी पूजा से मोक्ष की प्राप्ति होती है, वे हरि हरि हमारी रक्षा करें।

## उपसंहार

जो मनुष्य मात्र  इस पुण्य शास्त्र - 'गरुण पुराण' - ग्रन्थ को निरंतर पढता है , पढ़ाता  है और अन्य लोगों को इसका ज्ञान प्राप्त कराता  है , उन सभी  सारे पढ़ने और  सुनने वाले लोगों का,   इस लोक में तो कल्याण होता ही है और उन सभी का परलोक भी सुधर जाता है। ऐस ऋषि -मुनियों और महात्मा जनों का मानना और विश्वास  है।  अस्तु !

# समाप्त